विधान संग्रह

(तृतीय भाग)

देवाधिदेव भगवान श्री महावीर स्वामी

: सम्पादक :
प्रतिष्ठाचार्य पं. बर्द्धमानकुमार जैन सोंरया

विधान संग्रह

तृतीय भाग

सम्पादक

प्रतिष्ठाचार्य पं० बर्द्धमानकुमार जैन सोंरया

एम. एस–सी, एम. एड.

सम्पादक वीतराग वाणी मासिक, टीकमगढ़ (म. प्र.)

प्रकाशक

वीतराग वाणी ट्रस्ट

सैलसागर, टीकमगढ़ (म. प्र.)

प्रथमावृत्ति	दीपावलि	मूल्य
७००	१९९९	७५=००

विधान संग्रह

(तृतीय भाग)

सम्पादक :

प्रतिष्ठाचार्य पं० बर्द्धमान कुमार जैन सोंरया
सम्पादक- वीतराग वाणी मासिक पत्रिका
टीकमगढ़ (म० प्र०)

प्रथमावृत्ति : ७००

दीपावलि : १९९९

मूल्य : ७५.०० रुपए

प्रकाशक :

वीतराग वाणी ट्रस्ट
सैलसागर, टीकमगढ़ (म० प्र०)

मुद्रक :

अरिहंत ऑफसेट प्रिंटर्स
सैल सागर, टीकमगढ़ (म. प्र.) ४७२००१
फोन (07683) 32592

प्रकाशकीय

मडावरा जिला ललितपुर (उ.प्र.) निवासी स्वनाम धन्य विद्वत् तिलक पंडित प्रवर पूज्य पिता स्व. श्रीमान सिंघई पं. गुलजारीलाल जी जैन सोंरया पूज्यपाद श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी के समय के श्रेष्ठतम विद्वानों में अग्रगण्य रहे है । एवं स्वनाम धन्य देवशास्त्रगुरु भक्त परमआगमनिष्ठ महिलारत्न पूज्य माँ श्रीमती स्व. काशीबाई जी अपने समय की सरल स्वभावी गौरवरत्न धर्मनिष्ठ महिलारत्न थीं । उनकी ही पावन स्मृति में वीतराग वाणी ट्रस्ट की स्थापना की गई है । यद्यपि इस ट्रस्ट की मूलाधार वीतरागवाणी मासिक पत्रिका का गौरव व्यापक रूप में सम्पूर्ण भारत में प्रचारित प्रसारित हुआ है और वर्तमान में दिगम्बर जैन समाज की प्रकाशित पत्रिकाओं में अग्रगण्य श्रेणी में समाहित है । इस मासिक पत्रिका के परम संरक्षकों, संरक्षकों की सदस्यता राशि के द्वारा वीतराग वाणी का अपना ध्रौव फण्ड बना । इसी फण्ड में मैने अपना आर्थिक सहयोग देकर वीतराग वाणी ट्रस्ट की जनवरी 1988 में स्थापना की । माँ जिनवाणी के प्रचार प्रसार में और ट्रस्ट के उद्देश्यों की साकारता में इस ट्रस्ट से जैन साहित्य के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया । और जन आकांक्षाओं के अनुसार लोकोत्तर आराधना ग्रंथों, विधानों को इस ट्रस्ट से प्रकाशित किया गया । अब तक विधान संग्रह प्रथम भाग, विधान संग्रह द्वितीय भाग, चरित्र शुद्धि महामण्डल विधान, श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधानों के बाद विधान संग्रह भाग तीन एवं वृहत वीतरागपूजनसंग्रह का प्रकाशन करते हुए परम प्रसन्नता हो रही है ।

यद्यपि इन ग्रंथों का पूर्व में प्रकाशन श्री बुन्देलखण्ड स्याद्वाद परिषद से हो चुका है जो दातारों की सद् द्रव्य से प्रकाशित होकर निःशुल्क ही वितरित किए गए । बढ़ती मांग को देखकर मैने लागत मूल्य में सशुल्क इन ग्रंथों को प्रदाय करने की दृष्टि से

वीतराग वाणी ट्रस्ट से इन ग्रथों का प्रकाशन किया । सभी ग्रंथ भव्य सुन्दर रोचक मुद्रण के साथ सजिल्द ऑफसेट पर मुद्रित किए गए है । आशा है निरन्तर जैन समाज में होने वाले लघु एवं वृहद् स्तर पर विधानों की साकारता में इन प्रकाशनों की उपयोगिता का समादर होगा। इन ग्रंथों की बिक्री से प्राप्त अल्प लाभांश राशि को वीतराग वाणी ट्रस्ट में समाहार कर भविष्य में अन्य लोकोपयोगी ग्रंथों का प्रकाशन साकार करते रहेंगे । इस ट्रस्ट को शासन द्वारा रजिस्टर्ड कराने का प्रयत्न जनवरी सन् 1998 से ही चालू है । प्रत्येक महान कार्य में व्यवधानों का सामना करना पड़ता है । इस ट्रस्ट के द्वारा समाज के गरीब अध्ययनरत छात्रों, विधवा बहिनों, असहाय विद्वानों, को पर्याप्त आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया जाता है ।

भविष्य में हम इस ट्रस्ट द्वारा शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर कदम बढ़ाने का सुयोग भी साकार करेंगे । आशा है ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ग्रंथों से भारत के धर्मालु श्रावक, एवं विद्वत् जन पर्याप्त लाभ प्राप्त करेंगे ।

दीपावली
7.11.99

प्रतिष्ठाचार्य पं. विमलकुमार जैन सोंरया
अध्यक्ष- वीतराग वाणी ट्रस्ट
एवं प्रधान सम्पादक वीतरागवाणी 'मासिक'
सैलसागर, टीकमगढ़ (म.प्र.)

विधान संग्रह

(तृतीय भाग)

विषय सूची

क्रम	विधान का नाम	लेखक	पृष्ठ
1.	कृतज्ञता ज्ञापन		3
2.	सम्पादक की कलम से		7
3.	पूजन करने की विधि		8
4.	पूजन सामग्री सूची		11
5.	मण्डल विधानों की जानकारी		12
6.	मंगलाष्टक		18
7.	आवश्यक संस्कार मंत्र		19
8.	अंगन्यास, सकलीकरण संक्षिप्त विधि		20
9.	मण्डप शुद्धि		22
10.	अभिषेक पाठ एवं शांतिधारा		23
11.	विनय पाठ, दैनिक पूजा विधि		29
12.	यंत्र पूजा		46
13.	सोलह कारण विधान	(श्री टेकचंद जी रचित)	1
14.	समुच्चय नव देवता विधान	(ब्र. सूरजमल जी)	96
15.	वर्तमान चतुर्विंशति विधान	(श्री वृन्दावनलाल जी कृत)	175
16.	समवशरण विधान	(कुँवरलाल जी कृत)	272
17.	पंचपरमेष्ठी विधान	(श्री टेकचंद जी कृत)	368
18.	वास्तु विधान	(संपादक पं. विमलकुमार जी सोंरया)	401
19.	हवन शांति		433
20.	परिषद के प्रकाशन ग्रंथ		441

समर्पण

जो हमारी कुल परम्परा के
सम्यकज्ञान, सदाचरण और धार्मिक आस्था के
शीर्षस्थ विद्वान के साथ
प्रथम पुण्य पुरुष के रूप में
ज्यातिर्मय दिवाकर रहे ।
जो महामानवीयता के साकार लौह पुरुष थे ।

जिनका महान व्यक्तित्व
एवं अपार कृतित्व हमारी पीढ़ी दर पीढ़ी
स्मरणीय बना हुआ है ।
जिनकी गुणवत्ता, सदाचरणता, धार्मिकता
तथा प्रभुता का प्रभाव
हमारी कुलपीढ़ी पर परम्परागत से चला आ रहा है ।

उन महामना बाबाजी स्वर्गीय
श्रीमान् पं० गुलजारी लाल जी जैन सोंरया
के अनुज विद्वत्वर्य श्रीमान् पं. जम्बूप्रसाद जी जैन शास्त्री
के पावन पुनीत करकमलों में
उनके लिए ही यह कृति सादर समर्पित है ।

बर्द्धमान कुमार जैन सोंरया

मण्डल विधान आरंभ करने की विधि

जिस स्थान पर विधान करना है वहाँ एक छोटा सा मण्डप बनाऐं। मण्डप के मध्य में जो भी विधान करना हो उसका इस पुस्तक में अंकित अनुसार पाँच प्रकार के रंगों से मण्डप की रचना करें पश्चात् मण्डप प्रतिष्ठा विधि से मण्डल की शुद्धि करें । मण्डल के मध्य में एक सिंहासन पर जो विधान किया जा रहा है उसके यंत्र की स्थापना करें, अगर वह यंत्र न हो तो विनायक या सिद्ध यंत्र की भी स्थापना कर सकते हैं ।

सर्व प्रथम एक लोटे में पवित्र जल भरकर जल शुद्धि मंत्र पढ़ते हुए उसमें पुष्प डालें पश्चात् उस मंत्रित जल से मण्डप के चारों तरफ भूमि शुद्धि मंत्र का पाठ करते हुए जल की धारा देते हुए एक परिक्रमा करें पश्चात् शुद्धि मंत्र का पाठ करते हुए मण्डप एवं मण्डल पर जल के छींटे लगाए और मण्डल पर मंगल कलश – अष्ट मंगल द्रव्य आदि की स्थापना करें । इतना कार्य हो जाने के बाद नीचे लिखी विधि पूर्वक विधान सम्पन्न करें ।

मण्डल के चारों कोनों पर चार मंगल कलशों की तथा एक यंत्र के पास बीच मण्डल में मंगल कलशों की स्थापना करें। मंगल कलशों में आठों द्रव्य, सुपाड़ी, हल्दी गांठ, कपूर, चांदी का सांतिया, सवा रुपया डाले तथा लोटे के मुख पर लाल तूस में लपटा रक्षा सूत्र से बंधा नारियल स्थापित करें और मंगल कलश पर ॐ, सांतिया, श्री, ह्रीं, क्लीं यह पांच बीजाक्षर केशर से अंकित करें । मण्डप के उत्तर या पूर्व भाग में एक ध्वजा लगाऐं (मंत्रपाठ) पढ़ते हुए । पश्चात् रक्षा नियोग मंत्र पढ़ते हुए मण्डप को रक्षा सूत्र से 3 वार लपेट कर रक्षित करें तथा ज्योति स्थापन मंत्र पढ़कर अखण्ड ज्योति की मण्डप के पास स्थापना करें । पश्चात नीचे लिखे अनुसार पात्र शुद्धि करें और इस ग्रंथ में अकिंत विधि अनुसार मंगलाष्टक पाठ से विधान शुरु करें ।

जिनेन्द्र पूजन विधि

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।

श्रावक के दैनिक षट्कर्त्तव्यों में सर्वप्रथम कर्त्तव्य भगवान जिनेन्द्रदेव की पूजा करना है। राग प्रचुर होने के कारण गृहस्थों के लिए आचार्यों ने जिनेन्द्र पूजा को प्रधान धर्म कहा है। यद्यपि इसमें पंचपरमेष्ठी की प्रतिमाओं का आश्रय होता है परन्तु पूजा करने वाले के भाव प्रधान हैं। भावों की प्रधानता के कारण पूजक की असंख्यात गुणी पापकर्म की निर्जरा होती है और असंख्यात गुणा शुभ कर्म का उदय होता है।

जिनेन्द्र प्रभू की पूजन से उत्तम फल और सिद्धियों की प्राप्ति होती है जबकि ज्ञान पूर्वक उसकी प्रवृत्ति हमारे जीवन में घटित हो रही हो। एक थाली में मंगल बीजाक्षरों को अंकित कर मन्त्रोच्चार पूर्वक उन बीजाक्षरों पर अर्घ्य चढ़ाते हैं उनका हेतु अवश्य हमें जानना चाहिए। क्योंकि बिना कारण के कार्य की सिद्धि नहीं होती हमारे आगम ग्रंथों में पूर्वाचार्यों ने परम्परा से श्रुत केवलियों द्वारा बताये गये मार्ग के अनुसार पूजा के क्रम और विधियों का व्याख्यान दिया है उसे हम विवेक पूर्वक प्रवृत्ति में आचरित करें जिससे हमारी पूजा प्रवृत्ति मोक्षसिद्धि में साधक बन सके।

बीजाक्षर वाली थाली में सर्व प्रथम हमें ऊपर ॐ बीजाक्षर लिखना चाहिये उसके नीचे 'श्री' तथा 'श्री' के नीचे 'स्वास्तिक' (सांथिया) बीजाक्षरों के नीचे तीन बिन्दु बनाना चाहिये या ह्रीं ह्रीं ह्रीं लिखना चाहिये। दायें हाथ तरफ 'श्री' बीजाक्षर के पार्श्व में पांच बिन्दु एवं बायें हाथ तरफ चार बिन्दु आरोपित करना चाहिए ठोने पर अष्ट पंखुड़ी कमल का आकार बनाना चाहिए। यह ऐसा क्यों और किसलिए किया जाता है इस शंका का समाधान पूर्वक ज्ञान अवश्य प्राप्त करें। उसका समाधान एवं विधि इस प्रकार है-

जब हम देव, शास्त्र, गुरू और सिद्ध भगवान की पूजा करें तो आठों द्रव्य ॐ बीजाक्षर पर ही चढ़ाना चाहिए क्योंकि ॐ बीजाक्षर पंच परमेष्ठी का वाचक बीजाक्षर है इस पर द्रव्य चढ़ासने का मतलब भगवान जिनेन्द्र देव के पादमूल में की जाने वाली हमारी इस पूजा से होने वाला शुभाश्रव जब भी उदय में आये तो मैं पंचपरमेष्ठी जैसे मंगल पद पर अधिष्ठित होऊ। ॐ बीजाक्षर पर आराधना के

साथ अर्पित द्रव्य की आकांक्षा इस हेतु की बोधक है। तथा इस पूजा का फल मुझे यह प्राप्त हो कि ॐ बीजाक्षर मेरी आत्मा के प्रदेशों में आत्मभूत हो। जब तक कोई मन्त्र या बीजाक्षर आत्मभूत नहीं होता तब तक उसका प्रभाव भी स्वयं या अन्य जीवों पर नहीं पड़ता। मन्त्र जब आत्मभूत हो जाता है तभी स्व एवं पर के ऊपर प्रभावी हो सकता है मात्र मंत्र को पढ़लेने से सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

इसी प्रकार ॐ बीजाक्षर अब इस आराधना से आत्मभूत होगा तब हम उस पूजा के फल को अर्थात् पंचपरमेष्ठी के पद को प्राप्त करने की पात्रता प्राप्त कर सकेंगे। ॐ बीजाक्षर के नीचे 'श्री'बीजाक्षर पर हम तीर्थंकरों की पूजा के अष्ट द्रव्य चढ़ायें भूत भावी वर्तमान या विद्यमान कोई भी तीर्थंकर हो तीर्थंकर की पूजा की सामग्री 'श्री' बीजाक्षर पर आरोपित करते हुए पूजक की यह भावना हो कि यह बीजाक्षर मेरी आत्मा में अभिर्भूत हो 'श्री' बीजाक्षर श्रेय का देने वाला है तीर्थंकर की पूजा से हम यही श्रेय प्राप्त करना चाहते हैं कि मेरी आत्मा तीर्थंकर जैसी हो यह तभी सम्भव है जब श्री बीजाक्षर हमारी आत्मा में आत्मभूत हो जाए।

जब हम किसी व्रत या निर्वाण भूमि (तीर्थ क्षेत्र) की पूजन करें तो आठों द्रव्य स्वास्तिक बीजाक्षर पर ही चढ़ायें क्योंकि स्वास्तिक कल्याण का प्रतीक है और व्रत तथा निर्वाण भूमि आदि भी कल्याण का प्रतीक मानी गई है बायें हाथ तरफ चार बिन्दु होते हैं वह अर्हंत, सिद्ध, साधु एवं धर्म इन चार मंगल के प्रतीक हैं। यह चारों ही मंगलमय हैं लोक में उत्तम हैं और इनकी शरण से ही आत्मा अनन्त सुख की पात्र बनती है। पुष्पक्षेपण इन्हीं भावनाओं के प्रतीक होते हैं। अतः पुष्पाञ्जलि इन्ही बिन्दुओं पर करना चाहिए।

दायें हाथ तरफ जो पांच बिन्दु होते हैं उन पर अपवित्रा पवित्रोवा.. पद बोलने के बाद पांच अर्घ्य चढ़ाना चाहिए। अर्घ चढ़ाने के पूर्व उदकचंदनतंदुल.. पद बोलकर मंत्र पूर्वक प्रथम बिन्दु पर अर्हंत सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु के लिए, द्वितीय बिन्दु पर भगवान के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक के लिए, तृतीय बिन्दु पर भगवान के एक हजार आठ गुणों का चौथे बिन्दु पर भगवान के मुख कमल से उद्भूत प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग द्रव्यानुयोग का और अन्तिम पाँचवें बिन्दु पर मोक्षशास्त्र, तत्त्वार्थ सूत्र का अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।

हमारी आगम परम्परा में भी जिस तरह से ऊपर बीजाक्षर थाली में लिखने का निर्देश दिया गया है उसी क्रम से पूजा का विधान पूर्वाचार्यों की परम्परानुसार हम दैनिक रूप में आचरित करते हैं। (सांतिया) के नीचे जो तीन

बिन्दु होते हैं समस्त पूजाओं के बाद हम जिस स्थान पर (नगर या गांव) में पूजा कर रहे हैं उस नगर या ग्राम के ऊपर, मध्य और भूमिगत जितने भी जिन मंदिर, प्रतिमायें हैं उनको अंतिम अर्घ्य चढ़ाकर अंत में शांति विसर्जन पाठ बोलना चाहिए।

वसुनन्दि आचार्य ने लिखा है जल से पूजन करने से पाप रूपी मैल का संशोधन होता है। चन्दन चढ़ाने से मनुष्य सौभाग्य से सम्पन्न होता है अक्षत चढ़ाने से अक्षयनिधि रूपमोक्ष को प्राप्त करता है। वह चक्रवर्ति होता है और सदा अक्षोभ रोग शोक रहित निर्भय होते हुए अक्षीण लब्धि से युक्त होता है। पुष्प से पूजन करने वाला कामदेव के समान समर्चित देह वाला होता है। नैवेद्य चढ़ाने से मनुष्य शक्ति, कान्ति और तेज से सम्पन्न होता है दीप से पूजन करने वाला केवलज्ञानी होता है धूप से पूजन करने से त्रैलोक्य व्यापी यश वाला होता है तथा फलों से पूजन करने वाला निर्वाण सुखरूप फल को पाने वाला होता है।

जिनेन्द्र भगवान के पादमूल में खड़े होकर ही पूजन करना उत्कृष्ट है। बीमारी, वृद्धापन अथवा असहाय अवस्था में बैठकर भी पूजन की जा सकती है।

जिनेन्द्र भगवान के पादमूल में पूजन थाली के बीजाक्षर

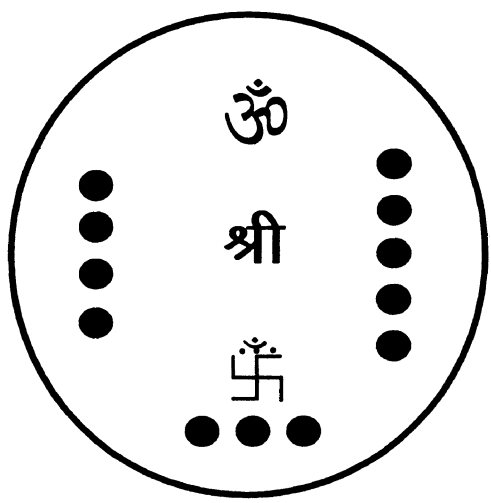

नोट - ठोना (स्थापना) पर आठ पंखुड़ी का फूल बनाऐं कोई बीजाक्षर न लिखा जाय।

सभी मण्डल विधानों के लिए आवश्यक

सामग्री सूची

पूजन सामग्री (10 व्यक्तियों की दृष्टि से)

चावल	लगभग	15 किलो
श्रीफल (नारियल)	,,	25
बादाम	,,	1 किलो
लौंग	,,	200 ग्राम
लायची	,,	100 ग्राम
चिटक	,,	400 ग्राम
केशर	,,	5 ग्राम
धूपदशांग	,,	500 ग्राम
कलावा रक्षासूत्र		100 ग्राम
सावित सुपाड़ी		300 ग्राम
हल्दी गांठ		100 ग्राम
चांदी का रुपऐ		5
चांदी के स्वास्तिक		5
बेंच, पाटा, चटाई, छत्र, चमर सिंहासन, चंदेवा - ध्वजा-मण्डप पर लगाने को, पूजन वर्तन सैट -		5
अभिषेक थाल एवं कलश अभिषेक मंगल कलश हेतु		5 लोटे
लाल तूस		आधा मीटर
घी, माचिस, रुई, दीपक कोयला, कपूर, कलावा		
विधान की पुस्तकें		
पूजन के लिए शुद्ध वस्त्र		

इस संग्रह में संग्रहीत विधानों एवं मण्डल चित्रों की जानकारी

सोलहकारण विधान

तीर्थंकर जैसी पुण्य प्रकृति का आश्रव उस ही एक जीव के होता है । जिसके परिणाम सम्यत्व पूर्वक 16 प्रकार की भावनाओं से सराबोर हों इस व्रत व विधान के करने से जीव शलाका पुण्य पुरुषों में जन्म प्राप्त कर निर्वाण प्राप्त करता है । विधान में 16 पूजायें एवं 312 अर्घ महाअर्घ सहित हैं ।

व्रत विधि–यह व्रत एक वर्ष में भादों, माघ और चैत्र इन तीन महिनों में आता है । कृष्णपक्ष की एकम से द्वितीय माह की कृष्ण एकम तक 32 दिन किया जाता है । उत्तम, मध्यम और जघन्य इस प्रकार तीन विधि से होता है ।

1. उत्तम विधि–बत्तीस दिन के बत्तीस उपवास । 2. मध्यम विधि–सोलह उपवास सोलह पारणा । 3. जघन्य विधि–बत्तीस एकाशन । मर्यादा–उत्तम 16 वर्ष, मध्यम 5 वर्ष, जघन्य 1 वर्ष ।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः । इस मंत्र का त्रिकाल जापकरें ।

सोलहकारण विधान का नक्शा

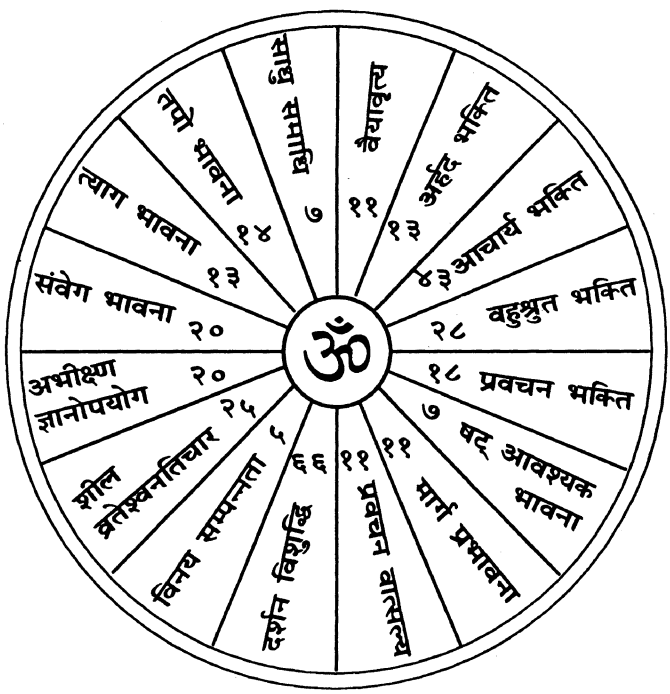

श्री नवदेवता मंडल विधान

नव देवता महा मण्डल विधान की आराधना से प्रत्येक मनुष्य को सांसारिक यश, कीर्ति, धन, दीर्घ आयु एवं लाभ उन्नति का सुयोग मिलता है । तथा तीव्रतर पुण्याश्रव के कारण शलाका पुण्य पुरुषों में जन्म प्राप्त कर निर्वाण को प्राप्त करता है । मिथ्यात्व से मुक्ति एवं सम्यक्त्व की प्राप्ति इस विधान से ही सम्भव होती है । इस विधान में 9 पूजाऐं तथा 261 अर्घ हैं । नित्य पूजन करना अथवा वृहद् रूप से वर्णित विधान करना चाहिए ।

व्रत– नवदेवता का कोई व्रत नहीं है,इसकी जाप करना चाहिए। प्रतिदिन एक माला तथा विधान के समय त्रिकाल जाप करना चाहिए ।

मंत्र– ॐ ह्रीं ऐं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः स्वाहा ।

नवदेवता मण्डल का नक्शा

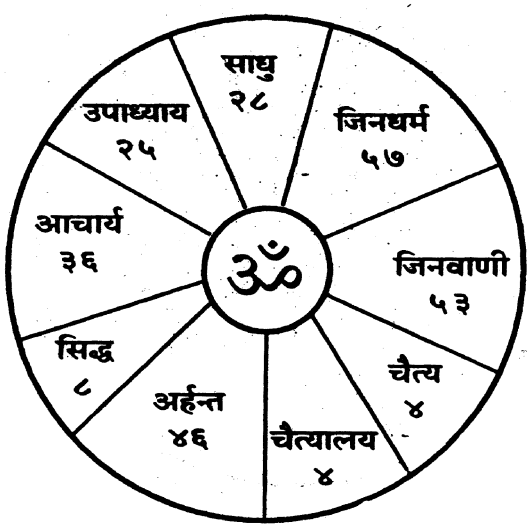

चतुर्विंशति पूजा विधान

भरत क्षेत्र के अवसर्पिणी काल के वर्तमान 24 तीर्थंकरों की आराधना में प्रत्येक तीर्थंकर की पूजाऐं पंच कल्याणकों के अर्घ एवं जपमालाऐं इस विधान में है । हिन्दी भाषा में महाकवि वृन्दावन जी, रवि रामचंद्र जी, कवि वखतावर लाल, कवि मनरंग के साथ आर्यिका ज्ञानमति जी की पूजाऐं प्रकाशित हो चुकी हैं । जन सामान्य में महाकवि वृन्दावन जी की पूजाओं का ज्यादा प्रचलन होने से इस संग्रह में इन्ही कवि की पूजाओं का विधान को समाहार किया गया है । इस विधान में कुल 24 पूजाऐं पंचकल्याणकों के कुल 120 अर्घ एवं 24 जपमालाऐं हैं ।

चौवीसी व्रत– यह व्रत 24 दिन में समाप्त होता है 24 तीर्थंकरों के 24 उपवास करे ।

मंत्र जाप– "ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः"

चौबीसी मण्डल का नक्शा

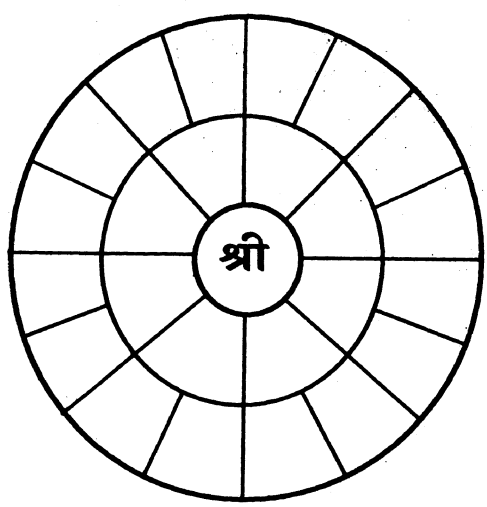

श्री समवशरण विधान

समवशरण तीर्थंकर की धर्मसभा का नाम है । इसमें विविध पूजाओं के माध्यम से समवशरण सभा का परिचय देते हुए जीवन्त वर्णन किया है । इस विधान में कुल 22 पूजाऐं हैं । लेकिन जयमालाऐं दश ही हैं । इसके अतिरिक्त 229 अर्घ हैं ।

समवशरण व्रत– यह व्रत एक वर्ष में समाप्त होता है प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करना होता है । 24 चतुर्दशी पूर्ण होने पर उद्यापन करना चाहिए ।

मंत्र जाप– ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशाय सकलगुणकरण्डाय श्री सर्वज्ञाय अर्हत्परमेष्ठिने नमः । इस मंत्र का व्रत के दिन त्रिकाल जाप करना चाहिए । तथा व्रत वर्ष में एक माला तो प्रतिदिन जपना ही चाहिए ।

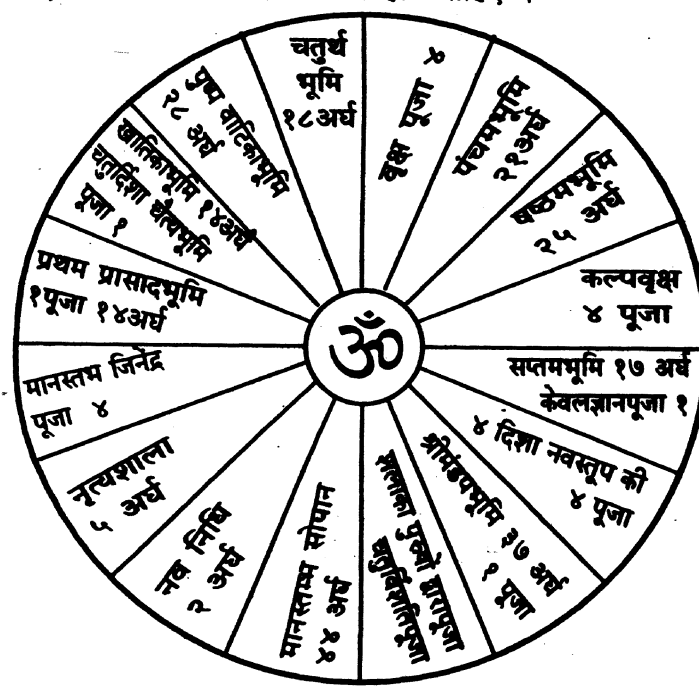

श्री पंचपरमेष्ठी विधान

पंचपरमेष्ठी ही लोक में उत्तम मंगल एवं शरणभूत हैं । आत्मा के कल्याण के लिए इनकी ही आराधना से समस्त ऋद्धियाँ एवं सिद्धपद की प्राप्ति होती है । तीव्र असाता कर्म के उदय में इस विधान को अवश्य करना चाहिए जिससे असाता का समापन और साता आगमन होता है । इस विधान के करने से रत्नात्रय की प्राप्ति होती है । जो संसार सागर से पार कराता है ।

पूर्ण मंत्र जाप– "णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं" इस मंत्र की त्रिकाल माला जपना चाहिए ।

संक्षिप्त मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ।

श्री पंचपरमेष्ठी विधान का नक्शा

पंचपरमेष्ठी व्रत–

भावार्थ-यह व्रत 286 दिन में पूरा होता है, जिसमें 143 उपवास और 143 पारणा होते हैं । यथा-

(1) अरहंतके 46 गुणके 46उपवास 46पारणा-
जन्म के 10 अतिशयों के दश दशमियों के 10 उपवास और 10 पारणा ।
केवलज्ञान के अतिशयों के दश दशमियों के 10 उपवास और 10 पारणा ।
आठ प्रातिहार्य के आठ अष्टमियों के 8 उपवास और 8 पारणा ।
चार अनंत चतुष्टय के चार चतुर्थियों के 4 उपवास और 4 पारणा ।
देवनकृत चौदह अतिशयों के 14 चतुर्दशियों के 14 उपवास और 14 पारणा ।

(2) सिद्धों के 8 गुणों के 8 उपवास और 14 पारणा-
आठ गुणों के आठ अष्टमियों के 8 उपवास और 8 पारणा ।

(3) आचार्यों के 36 गुणों के 36 उपवास और 36 पारणा-
बारह तप के 12 द्वादशियों के 12 उपवास और 12 पारणा ।
छह आवश्यक की 6 षष्ठियों के 6 उपवास और 6 पारणा ।
पंचाचारों के पांच पंचमियों के 5 उपवास और 5 पारणा ।
दशलक्षण के दस दसमियों के 10 उपवास और 10 पारणा ।
तीन गुप्तियों के तीन तीजों के 3 उपवास और 3 पारणा ।

(4) उपाध्याय के 25 गुणों के 25 उपवास और 25 पारणा-
पूर्व 14 के 14 चतुर्दशियों 14 उपवास और 14 पारणा ।
अंग 11 के 11 एकादशियों 11 उपवास और 11 पारणा ।

(5) सर्व साधु के 28 गुणों के 28 उपवास और 28 पारणा-
पांच महाव्रत के 5 पंचमियों के 5 उपवास और 5 पारणा ।
पांच समितियों के 5 पंचमियों के 5 उपवास और 5 पारणा ।
पांच इन्द्रियविजय के 5 पंचमियों के 5 उपवास और 5 पारणा ।
छह आवश्यक के 6 षष्ठियों के 6 उपवास और 6 पारणा ।
शेष सात गुणों के 7 पडिमा के 7 उपवास और 7 पारणा ।

इस प्रकार व्रत पूर्ण करें । पूर्ण होने पर उद्यापन करें ।

श्री वास्तु विधान

वास्तुविधान नवनिर्मित श्री जिनमंदिर-जिनवेदी निर्माण के बाद उसकी प्रतिष्ठा के पूर्व करना चाहिए नए निवास भवन में प्रवेश के पूर्व इस विधान को सम्पन्न करने से भूमि भवन तथा स्थान विशेष की समस्त बाधाऐं निर्मूल हो जाती हैं । इस विधान को करने के बाद ही श्रीयाग महामंडल या शांतिविधान भी करना चाहिए इस विधान को सम्पन्न करने के लिए नीचे लिखे अनुसार जमीन पर लाल वस्त्र फैलाकर उस पर सप्त प्रकार की धान्य का मण्डल बनायें उसके सामने चौकोर तीर्थंकर कुण्ड बनायें तथा आरम्भ में विधान अनुसार यन्त्र अभिषेक पूजन कर वास्तु देवों को क्रमशः मण्डल के ऊपर सर्वप्रथम श्लोक बोलकर आह्वान मन्त्र में प्रथम कोष्ठक में पुष्प क्षेपण करें, फिर आहुति मन्त्र बोलकर कुण्ड में धूप की आहुतियाँ दें पश्चात अर्घ बोलकर उसी खाने में श्री फल, रोली, जनेऊ, रक्षासूत्र, दीपक, अगरबत्ती, पान के पत्ते पर यथा योग्य अंकित भोज्य पदार्थ ध्वजा चढ़ायें पश्चात शान्ति धारा दें । इस प्रकार प्रत्येक श्लोक पाठ के साथ ४९ खानों में यही क्रम से आराधना करें यह कार्य सुयोग्य मन्त्रवादी प्रतिष्ठाचार्य विद्वान के द्वारा ही कराये क्योंकि गलती होने पर अनिष्ट की सम्भावना होती है ।

मंत्र जाप- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आउसा सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र की कम से कम ११ मालाऐं जपें व हवन शान्ति के बाद दशांश आहुति देकर इस विधान को यथा विधि समाप्त करें ।

वास्तु विधान का मण्डल नक्शा

मूंग	जौ	उड़द	ज्वार	चना दाल	गेहुँ	चावल
चावल	मूंग	जौ	उड़द	ज्वार	चना दाल	गेहुँ
गेहुँ	चावल	मूंग	जौ	उड़द	ज्वार	चनादाल
चना दाल	गेहुँ	चावल	मूंग	जौ	उड़द	ज्वार
ज्वार	चना दाल	गेहुँ	चावल	मूंग	जौ	उड़द
उड़द	ज्वार	चना दाल	गेहुँ	चावल	मूंग	जौ
जौ	उड़द	ज्वार	चना दाल	गेहुँ	चावल	मूंग

मंगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुट - प्रद्योतरत्नप्रभा
भास्वत्पादनखेंदवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।१।।

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं
मुक्तिश्री नगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रूयालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।२।।

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तराः विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।३।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते)मंगलम्।।४।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला, येऽष्टाविधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।५।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां ।

शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।६।।

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।७।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।८।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ।
ये शृण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।९।।

।। इति श्री मंगलाष्टकम्।।

आवश्यक संस्कार मंत्र

शुद्धि (मण्डप मण्डल और पात्र शुद्धि के लिए) -

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतं द्रावय द्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूँ ब्लूँ द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

रक्षा नियोग मंत्र (मण्डप पर रक्षा सूत्र लपेटते समय) -

ॐ णमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

ज्योति स्थापन मंत्र

ॐ अज्ञानतिमिर हरं दीपकं स्थापयामि ।

ध्वजा चढ़ाने का मंत्र-

ॐ णमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्ति स्वाहा।

भूमि शुद्धि मंत्र -

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा।

जल शुद्धि मंत्र -

ॐ ह्रीं ह्रों ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म तिगिंच्छ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिंधु रोहिद्रो हितास्या हरिदरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णरुप्य कूलारक्ता रक्तोदा पयोधि शुद्ध जल सुवर्ण प्रक्षालित नवरत्न गन्धाक्षत पुष्पोर्जिता मोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा ।

संक्षिप्त अंगन्यास एवं सकलीकरण क्रिया

अपने दाहिने हाथ में जल लेकर नीचे लिखा मंत्र पढ़कर जल को मस्तक पर डालें ।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूँ ब्लूँ द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं झ्वीं हं सः स्वाहा

नीचे लिखा मंत्र पढ़कर पुनः अंजुलि में जल लेकर समस्त शरीर पर छिड़कें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वांग शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

(नीचे लिखा मंत्र पढ़कर दोनों हाथों की दशों ऊंगलियों को पानी में भिगो कर हाथ जोड़कर यंत्र को प्रणाम करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां, ॐ ह्रूँ णमो आइरीयाणं ह्रूँ मध्यमाभ्यां, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमो नमः स्वाहा ।

(नीचे लिखे मंत्रों को पढ़ते हुए यथा वर्णित स्थान पर पीले सरसों अथवा पुष्पों को डाले)

ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं ह्राँ मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम बदनं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं ह्राँ पूर्व दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिम दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अस्माकं, वस्त्रं, पूजाद्रव्यं, स्थलं, सर्व जगत रक्ष रक्ष सर्व विघ्नं निवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

(नीचे लिखा मंत्र पढ़कर सिर, माथा, दोनों कर्णों, वक्षस्थल, दोनों भुजाओं तथा पीठ पर चंदन के तिलक लगाऐं)

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्द कुन्दाद्याः जैन धर्मोऽस्तुमंगलम् ।।

(नीचे लिखा मंत्र पढ़कर यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनें)

ॐ नमः परम शान्ताय शान्ति कराय पवित्री करणायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा ।

(नीचे लिखा मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ में तीन फेरा लगाकर तीन गांठ लगाते हुए रक्षा सूत्र पहने)

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्र: अ सि आ उ सा सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु कुरु, ॐ णमो अर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षा बंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नम: स्वाहा ।

मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि

नीचे लिखे मंत्र को 5 बार पढ़कर मण्डप पर जल के छीटें छिड़क देवें ।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धिं कुर्म: ।

(मण्डप की आठों दिशाओं में क्रमश: नीचे लिखे मंत्र पुष्प क्षेपते हुए मण्डप शुद्धि करें ।)

1. ॐ आं क्रौं ह्रीं नम: चतुर्णिकाय देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

2. ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्व दिशा के प्रतिहारी कुमुदेश्वर देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

3. ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्निकोण दिशा के प्रतिहारी यमेन्द्र देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

4. ॐ आं क्रौं ह्रीं दक्षिण दिशा के प्रतिहारी वामन देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

5. ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋतकोण दिशा के प्रतिहारी नैऋतेन्द्र देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

6. ॐ आं क्रौं ह्रीं पश्चिम दिशा के प्रतिहारी अंजन देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

7. ॐ आं क्रौं ह्रीं वायव्यकोण दिशा के प्रतिहारी वायुकुमार: देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

8. ॐ आं क्रौं ह्रीं उत्तर दिशा के प्रतिहारी पुष्पदंत देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

9. ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशान दिशा के प्रतिहारी ऐशान्नेद्र देवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

10. ॐ आं क्रौं ह्रीं वास्तुकुमारदेवा:, मेघकुमारदेवा:, नागकुमारदेवा: विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

(अंत में नीचे लिखा मंत्र पढ़कर मण्डप एवं पात्रों के ऊपर पुष्पक्षेपण करें ।)

ॐ ह्रूँ फट् किरीटिं किरीटिं घातय घातय पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्त्रखड़ान कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान भिंद भिदं क्षां क्षं व: फट् स्वाहा ।

अभिषेक पाठ

श्रीमन्नतामर शिरस्तटरत्नदीप्ति,
तोयावभासि चरणाम्बुज युग्ममीशम् ।
अर्हन्त मुन्नतपदप्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेकविधिं करिष्ये ।।1।।

अथ पौर्वान्हिकदेववन्दनाया पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा स्तववन्दनासमेतं श्रीपंचमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़े)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः ।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा-
त्तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि ।।2।।

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीयकीर्तिं
सेन्द्राः सुराप्तमदवारणगाः स्तुवन्ति ।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया
पुष्पांजलिं मलयजातमुपाक्षिपेऽहम् ।।३।।

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेककी प्रतिज्ञा करें)

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः श्रीप्रस्तरे पूर्णशशांककल्पे ।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह श्रीलेखनं करोमि।

(यह पढ़कर अभिषेककी थालीमें केशरसे श्री लिखें)

कनकादिनिभं कम्रं पावनं पुण्यकारणम् ।
स्थापयामि पर पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर सिंहासन स्थापित करें)

भृगांरचामरसुदर्पणपीठकुम्भ-
तालध्वजातपनिवारकभूषिताग्रे ।
वर्धस्व नन्द जय पाठपदावलीभिः
सिंहासने जिनभवन्तमहं श्रयामि ।।६।।

वृषभादिसुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान् ।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम् ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।

(यह पढ़कर प्रतिमा अथवा यंत्र विराजमान करें)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः
क्षीराब्धिवारिभिरपूरयदर्थकुम्भान् ।

तांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रे ।।८।।
शातकुम्भीयकुम्भौधान् क्षीराब्धेस्तोयपूरितान् ।
स्थापयामि जिनस्नानचन्दनादिसुचर्चितान् ।।९।।

ॐ ह्रीं चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में चार कलश रखे)

आनन्दनिर्भरसुरप्रमदादिगानै-
र्वादित्रपूरजयशब्दकलप्रशस्तैः ।
उद्गीयमानजगतीपतिकीर्तिमेनां
पीठस्थलीं वसुविधार्चनयोल्लसामि ।।१०।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थिताय जिनायार्घं या यंत्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे, वादित्र नाद तथा जय जय शब्द का उच्चारण करें)

कर्मप्रबन्धनिगडैरपि हीनताप्तं
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम् ।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्त्वम् ।। ११।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह वं मं हं सं तं पं वं वं हं सं सं तं पं पं झं झं क्षीं ह्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्र– तरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

(यह पढ़कर अभिषेक करे)

तीर्थोत्तमभवैर्नीरैः क्षीरवारिधिरूपकैः ।
स्नपयामि जन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान् ।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से 108 धारा छोड़े)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवनवारां विन्दुरेकोऽपि नृणां
प्रभवति विहिधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम् ।। १३।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं ह्वीं ह्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रः ह्रौ ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करे)

पानीयचन्दनसदक्षतपुष्पपुञ्ज-
नैवेद्यदीपकसुधूपफलव्रजेन ।
कर्माष्टकक्कथनवीरमनन्तषक्तिं
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम् ।।१४।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावें)

हे तीर्थपा निजयशोधवलीकृताशाः
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम् ।
सद्द्रव्यहज्जनितपकंकवन्धकल्पा
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु ।।१५।।

(यह पढ़कर शान्ति के लिये पुष्पाञ्जलि छोड़े)

नत्वा मुहुर्निजकरैरमृतोपमेयैः
स्वच्छैर्जिनेन्द्र तव चन्द्रकरावदातैः ।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये
देहे स्थितान् जलकणान्परिमार्जयामि ।।१६।।

ॐ अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर प्रतिमाजी को शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से पोंछे)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्त्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम् ।
जिघृक्षुरिष्टिमिन तेऽष्टतयीं विधातुं
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि ।।१७।।

(यह पढ़कर प्रतिमाको सिंहासनपर विराजमान करे)

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः।
फलैरर्घैर्जिनमर्चे जन्मदुःखापहानये ।।१८।।

ॐ ह्रीं पीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च व्यात्युक्षणेन हरतादघसञ्चयं मे ।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद् भूयाद् भवातपहरं धृतमादरेण ।।१९।।

मुक्तिश्री वनिताकरोदकमिदं पुण्याड़कुरोत्पादकं,
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवी राज्याभिषेकोदकम् ।
सम्यग्ज्ञान चरित्र दर्शनलतासंवृद्धि सम्पादकं,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन स्नानस्य गन्धोदकम् ।।२०।।

(यह पढ़कर गन्धोदक शिरपर लगावे)

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते ।
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत् ।।
मदीयाद् भल्लाटादशुभकर्माटनमभूत् ।
सदेदृक् पुण्यार्हन् मम भवतु ते पूजनविधौ ।।२१।।

(यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि छोड़े)

शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीपार्श्व–तीर्थंकराय द्वादश–गणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यान पवित्राय सर्वज्ञाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्य–मही–व्याप्ताय अनन्त–संसार–चक्र–परिमर्दनाय, अनन्तदर्शनाय, अनन्तज्ञानाय, अनन्तसुखाय, अनन्त–वीर्याय, त्रैलोक्य–वशंकराय, सत्य–ज्ञानाय, सत्य–ब्रह्मणे, धरणेन्द्र–फणामण्डल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका–श्रावक–श्राविका–प्रमुख–चतुः संघोपसर्ग विनाशनाय घातिकर्म–विनाशनाय, अघातिकर्म–विनाशनाय । अपवाद मस्माकम छिन्धि–छिन्धि, भिन्धि–भिन्धि। मृत्युं छिन्धि–छिन्धि भिन्धि 2 । अतिकामं छिन्धि 2 भिन्धि 2। रतिकामं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । क्रोधं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । अग्निं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व शत्रुं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । सर्वोपसर्गं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व विघ्नं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्वभयं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । सर्व राजभयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व–चोर–भयं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । सर्व दुष्ट–भयं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । सर्व–मृग–भयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्वपरमंत्रं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्वमाभयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व शूलभयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व क्षय रोगं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व–कुष्ठरोगं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व ज्वर मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व मजमारिं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्वाश्वमारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व गोमारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व महिष मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व धान्य मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व वृक्ष मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व गुलमारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व पत्र मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व पुष्प मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व फलमारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व राष्ट्रभारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व देश मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व विष मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व क्रूर रोगं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व बेताल शाकिनी भयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व वेदनीय छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व मोहनीय छिन्धि 2 भिन्धि 2 ।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य शान्तिं कुरु 2 । सर्व जनानन्दनं कुरु 2 । सर्व भव्यानन्दनं कुरु 2 । सर्व गोकुलानंदनं कुरु 2 । सर्व ग्राम नगर खेट खर्वट मटम्बन पत्तन द्रोणामुख सहानन्दनं कुरु 2 । सर्व लोकानंदनं कुरु 2 । सर्व देशानन्दनं कुरु 2 । सर्व यजमाना नंदनं कुरु 2 । शीघ्रं व्याधि व्यसन वर्जितं अभय क्षेमा रोग्यं स्वस्ति अस्तु शान्ति रस्तु शिव मस्तु कुल गोत्र धन धान्य सदास्तु चन्द्रप्रभ वासुपूज्य मल्लि बर्द्धमान पुष्पदन्त शीतल मुनि सुव्रतनाथ पार्श्वनाथ परम देवाः सदा शान्तिं कुर्वन्तु कुर्वन्तु ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्व शान्तिम् कुरु कुरु स्वाहा ।

(अभिषेक के बाद विनयपाठ बोले और उसके बाद सामूहिक रूप से नित्य पूजा व यंत्र पूजा करें पश्चात मण्डल विधान करें। पूजा के बाद शान्ति, विसर्जन, स्तुति पढ़ते हुए परिक्रमा करें।)

विनय पाठ

इहि विधि ठाडो होयके प्रथम पढ़ैं जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्म जु आठ ।।१।।
अनंत चतुष्टयके धनी तुम ही हो सिरताज ।।
मुक्ति-बधू के कन्त तुम तीन भुवन के राज ।।२।।
तिहुँ जग की पीडा हरन भवदधि शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्व के शिवसुख के करतार ।।३।।
हरता अघ अँधियार के करता धर्मप्रकाश ।
थिरता पद दातार हो धरता निजगुण रास ।।४।।
धर्मामृत उर जलधि सों ज्ञान भानु तुम रूप ।
तुमरे चरण सरोज को नावत तिहुँ जग भूप ।।५।।
मैं बंदौं जिनदेवको कर अति निरमल भाव ।
कर्मबंध के छेदने और न कछू उपाव ।।६।।
भविजन कों भव कूपतैं तुमही काढ़नहार ।
दीनदयाल अनाथपति आतम गुणभंडार ।।७।।
चिदानंद निर्मल कियो धोय कर्मरज मैल ।
सरल करी या जगत मैं भविजन को शिवगैल ।।८।।
तुम पद-पंकज पूजतैं विघ्न-रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रता कों धरैं विष नरविषता थाय ।।९।।
चक्री खगधर इंद्रपद मिलैं आपतैं आप ।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं नेम सकल हनि पाप ।।१०।।

तुमविन मैं व्याकुल भयो जैसे जल विन मीन ।
जन्म जरा मेरी हरो करो मोहिं स्वाधीन ।।११।।
पतित बहुत पावन किये गिनती कौन करेव ।
अंजन से तारे कुधी जय जय जय जिनदेव ।।१२।।
थकी नाव भवदधि विषै तुम प्रभु पार करेय ।
खेवटिया तुम हो प्रभू जय जय जय जिनदेव ।।१३।।
रागसहित जगमैं रुल्यो मिले सरागी देव ।
वीतराग भेट्यो अबै मेटो राग-कुटेव ।।१४।।
कित निगोद कित नारकी कित तिर्यंच अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान ।।१५।।
तुमको पूजैं सुरपती अहिपति नरपति देव ।
धन्य-भाग्य मेरो भयो करन लग्यो तुम सेव ।।१६।।
अशरणके तुम शरण हो निराधार आधार ।
मैं डूबत भविसिंधु मैं खेउ खेअ लगाओ पार ।।१७।।
इंद्रादिक गणपति थके कर विनती भगवान ।
अपनो विरद निहारिकैं कीजे आप समान ।।१८।।
तुमरी नेक सुदृष्टितैं जग उतरत है पार ।
हा हा डूब्यो जात हों नेक निहार निकार ।।१९।।
जो मैं कह हूँ औरसों तो न मिटै उरझार ।
मेरी तो तोसों बनी तातैं करौं पुकार ।।२०।।
बंदों पाचौं परम गुरु बंदत जास ।
विघन हरन मंगल करन पूरन परम प्रकाश ।।२१।।
चौबीसों जिनपद नमों नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधुनमि रच्यो पाठ सुखदाय ।।२२।।
मंगल मूर्ति परम पद पंच धरो नित ध्यान ।

हरो अमंगल विश्व का मंगल मय भगवान ।।२३।।
मंगल जिनवर पद नमों मंगल अरिहंत देव ।
मंगलकारी सिद्ध पद सो वन्दों स्वमेव ।।२४।।
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मंगल करों वंदों मन वच काय ।।२५।।
मंगल सरस्वति मात का मंगल जिनवर धर्म ।
मंगलमय मंगल करो हरो असाता कर्म ।।२६।।
या विधि मंगलकरन से जगमें मंगल होय ।
मंगल नाथूराम यह भव सागर दृढ़ पोत ।।२७।।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु !
णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं अनादि–मूल–मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं-अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ णमोऽर्हते स्वाहा । (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ।।२।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न - विनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।।३।।
एसो पंच - णमोयारो सव्व - पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ।।४।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म - वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।।५।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष - लक्ष्मी - निकेतनं ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।६।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी -भूत -पन्नगाः ।
विष निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।७।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत)

उदकचन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप - सुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु मंगललोकोत्तम शरणेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरस्य गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप फलार्घ्यकैः ।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।३।।

ॐ ह्रीं द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु -सुदीप -सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाम महं यजे।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्त्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिन शास्त्रमहं यजे।।४।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उमास्वामी देव विरचित तत्वार्थ सूत्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री मज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद - नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतै हेतु-
र्जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाऽभ्यधायि ।।१।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति-प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय ।।२।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ।।३।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलंव्य वल्गन्
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।४।।

अर्हतपुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवन्हौ
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।।५।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान् के नाम के पश्चात् पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः ।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।
श्रीसुपार्श्व. स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः ।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः ।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

(इति जिनेन्द्रस्वस्ति मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नित्याप्रकंपाद्भुत्-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।१।।
कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ - पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।२।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण -विलोकनानि ।
दिव्यान मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।३।।

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।४।।
जंघावलि- श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बतीजांकुर-चारणाह्वः ।
नभोऽगंण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ५।।
अणिम्निदक्षाः कुशलामहिम्नि लघिम्निशक्ताः कृतिनोः गरिम्णि
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।६।।
सकामरूपित्व -वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथा प्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ७।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।८।।
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषा दृष्टिविषं विषाश्च ।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाःस्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।९।।
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः ।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।१०।।

इति परमर्षि स्वस्तिमंगल विधानम्

●

देव शास्त्र गुरु पूजा

(अडिल्ल छन्द)

प्रथम देव अरिहंत सुश्रुत सिद्धान्त जू ,
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर पन्थ जू ।
तीन रतन जग माँहि सो ये भवि ध्याइये,
तिनकी भक्ति प्रसाद परमपद पाइये ।।

(दोहा)

पूजों पद अरिहंत के, पूजों गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार ।।१।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरु समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

(गीता छन्द)

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर, वन्दनीक सुपद-प्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा ।।
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूँ ।
अरिहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

मलिन वस्तु हरलेत सब,जल स्वभाव मल छीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।१।।

ॐ ह्रीं देव–शास्त्र–गुरुभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।। 1।।

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ।।
तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घिसि सचूँ ।
अरिहंत श्रुत - सिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।२।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसार–ताप–विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई ।
अति दृढ़ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही ।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल पुंज धरि त्रयगुण जचूँ ।
अरिहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन ।
जासो पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।३।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति ।।3।।

जे विनयवंत सुभव्य उर अंबुज प्रकाशन भान हैं ।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजगमाहिं प्रधान हैं ।।
लहि कुंद कमलादिक पुहुप, भव भव कुवेदनसों बचूँ ।
अरिहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

विविध भाँति परिमल सुमन,भ्रमर जास आधीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।४।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

अति सबल मद - कंदर्प जाको क्षुधा-उरग अमान है ।
दुस्सह भयानक तासु नाशन, को सु गरुड़ समान है ।।
उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ ।
अरिहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु -निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।५।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपा. स्वाहा।।5।।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने मोहतिमिर महाबलती ।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप, प्रकाश जोति प्रभावली ।।
इह भाँति दीप प्रजाल, कंचन के सुभाजन में खचूँ ।
अरिहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

स्वपरप्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।६।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

जो कर्म ईंधन दहन अग्नि समूह सम उद्धत लसै ।
वर धूप तासु सुगन्धता करि, सकल परिमलता हँसै ।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव ज्वलनमाँहि नहीं पचूँ ।
अरिहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

अग्निमाँहि परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।७।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं ।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं ।।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ ।
अरिहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु, निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

जे प्रधान फल फलविषैं,पंचकरण रस लीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।८।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनमके पातक हरूँ ।।
इहिभाँति अर्घ्य चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूँ ।
अरिहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

वसुविधि अर्घ्य संयोजके,अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।६।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

जयमाल

(दोहा)

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्नभिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार ।।१।।

(पद्धरी छन्द)

कर्मन की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोष राशि ।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुण गंभीर ।।२।।
शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इंद्र नमत कर सीस धार ।
देवाधिदेव अरिहंत देव, वंदौं मनवच तन करि सु सेव ।।३।।
जिनकी ध्वनि है ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप ।
दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत ।।४।।
सो स्याद्वाद मय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग ।
रवि शशि न हरैसो तम हराय,सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय ।।५।।
गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रतनत्रय-निधि अगाध ।
संसार देह वैराग्य धार, निरवांछि तपैं शिव पद निहार ।।६।।

गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस, भवतारन तरन जिहाज ईस ।
गुरुकी महिमा वरनी न जाय, गुरु नाम जपों मन-वचन-काय ।।७।।

(सोरठा)

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरे ।
द्यानत सरधावान, अजर अमर पद भोगवे ।।७।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

श्री जिनके परसाद तैं, सुखी रहैं सब जीव ।
यातैं तन मन वचन तैं, सेवो भव्य सदीव ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घावलि

त्रिकाल तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है ।
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है ।।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै ।
सातशत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै ।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दस क्षेत्र के विषै तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रन हूतैं, थुति पूरी न करी है ।
द्यानत सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार ।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज ।।

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

अथवा

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर–युगमंधर–बाहु–सुबाहु–संजात–स्वयंप्रभ–ऋषभानन–अनन्तवीर्य–सूरप्रभ–विशालकीर्ति–वज्रधर –चन्द्रानन–चंद्रवाहु–भुजंगम–ईश्वर–नेमिप्रभ–वीरसेन–महाभद्र–देवयश– अजितवीर्येतिविंशति विद्यमान तीर्थङ्करेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अकृतिम चैत्यालयों का अर्घ

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकी गतान्,
वंदे भावन-व्यंतर-द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान् ।
सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये ।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसंबंधिजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्ध परमेष्ठी (संस्कृत)

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम् ।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितम् ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य।

सिद्ध परमेष्ठी (भाषा)

जल फल वसुवृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा ।
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम वंदा ।।
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी, अंतरयामी अभिरामी ।
शिवपुर विश्रामी निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी ।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

समुच्चय चौबीसी

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरांत चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं ।

श्री आदिनाथ जिनेन्द

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मनवचकाय ।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द

जल गन्ध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघही ।
कन थाल अर्घ बनाया शिव सुख, 'रामचन्द्र' लहै सही ।।
श्रीचन्द्रप्रभ दुतिचन्द को पद, कमल नखससिलगि रह्यो ।
आंतक दाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्रीवासुपूज्य जिनेन्द

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।
शिवपद राज हेत हे श्रीपति, निकट धरों यह लाई ।।
वासुपूज्य वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।।

ॐ ह्रीं श्रीवासूपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे, अर्घ चढ़ाये मंगल गाय ।
'बखत रतन' के तुम ही साहिब, दीजे शिवपुर राज कराय ।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर, द्वादश मदन तनो पद पाय ।
तिनके चरण कमल के पूजे, रोग शोक दुख दारिद जाय ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र

जलफल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।
अष्टम छितिके राज करन को, जजों अंग वसु नाय ।।
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय ।।दाता०।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये ।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा ।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्री महावीर जिनेन्द्र

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों ।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरो ।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

पाँच बालयति

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं ।
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अती,
नमूँ मन वच तन धरि प्रेम, पाँचों बालयती ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर स्वामी, श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

सोलहकारण

जल फल आठों दरब चढ़ाय,'द्यानत' वरत करों मनलाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमेरु जिनालय

आठ दरबमय अरघ बनाय,'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पाँचोंमेरु असी जिनधाम,सब प्रतिमाजी को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन विजय अचल–मन्दर–विद्युन्माली–पंचमेरु सम्बन्धि– जिनचैत्यालयस्थ–जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दीश्वरद्वीप जिनालय

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों ।।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों ।

वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यः अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशलक्षणधर्म

आठो दरब संभार, 'द्यानत' अधिक उछाहसो ।
भव आताप निवार, दस लक्षण पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीरत्नत्रय

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्न त्रय भजूँ ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना ।
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना ।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण क्षेत्र

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोरकर विनती करौं ।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाश कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवासकों ।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

सरस्वती

जल चंदन अक्षत फूल चरु, अरु दीप धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै ।।

तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवर वाणी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई ।।
ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऋषि–मण्डल

जल फलादिक द्रव्य लेकर, अर्घ सुन्दर कर लिया ।
संसार रोग निवार भगवन्, वारि तुम पद में दिया ।।
जहाँ सुभग ऋषिमंडल विराजैं, पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख,स्वप्न में दुख नहिं कदा ।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव–विनाशन– समर्थाय, रोग–शोक–सर्व–संकटहराय, सर्वशान्तिपुष्टि–कराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अरिहंतादि पंचपद, दर्शन–ज्ञान–चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त ऋषि, बीस चार सूर, तीन ह्रीं, अर्हंतबिम्ब, दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दैनिक पूजा के बाद नीचे लिखी यंत्र पूजा करके विधान करें)

विनायक यन्त्र पूजा

परमेष्ठिन मंगलादित्रय विघ्नविनाशने ।
समागच्छ तिष्ठ तिष्ठ मम संनिहितो भव ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

स्वच्छैर्जलैस्तीर्थभवैर्जराप मृत्यूग्ररोगापनुदे पुरस्तात् ।
अर्हन्मुखान् पंचपदान्शरण्यान् लोकोत्तमान् मागंलिकान्यजेऽहम् ।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमगंललोकोत्तमशरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चन्दनैर्गन्धहृतालिबृन्द - चितैर्हिमांशुप्रसरावदातैः
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान् मागंलिकान्यजेऽहम् ।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमगंललोकोत्तमशरणेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदक्षतैमौक्तिककान्तिपाट - च्चरैः सितैर्मानसनेत्रमित्रैः ।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... अक्षतं ।

पुष्पैरनेकैरसवर्णगन्ध - प्रभासुरैर्वासितदिग्वितानैः।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... पुष्पं ।

नैवेद्यपिण्डैर्घृतशर्कराक्त - हविष्यभागैः सुरसाभिरामैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... नैवेद्यं ।

आरार्तिकैरत्नसुवर्णरुक्म - पात्रार्पितैर्ज्ञानविकासहेतोः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... दीपं ।

आशासु यद्धूमवितानमृद्ध - तैर्धूपवृन्दैर्दहनोपसर्पैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... धूपं ।

फलैरसालैर्वरदाडिमाद्यै - र्हृद्यघ्राणहार्यैरमलैरुदारैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... फलं ।

द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे ह्यनर्घ्यमर्घं वितरामि भक्त्या ।
भवे भवे भक्तिरुदारभावाद् यैषां सुखायास्तु निरन्तराय ।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... अर्घं ।

अनादिसन्तानभवान् जिनेन्द्रान् अर्हत्पदेष्टानुपदिष्टधर्मान् ।
द्वेधाश्रियालिगिंतपादपद्मान् यजामि भक्त्या प्रकृतिप्रसक्त्यै ।।११।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयसमवसरणलक्ष्मीं विभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घं ।

कर्माष्टनाशाच्युतभावकर्मो-द्भतीन् निजात्मस्वविलासभूपान ।
सिद्धानन्तांस्त्रिककालमध्ये गीतान् यजामीष्टविधिप्रसक्त्यै ।।१२।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठगणं भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं ।

ये पञ्चधाचारपरायणानामग्रेसरा दक्षिणशिक्षिकासु ।
प्रमाणनिर्णीतपदार्थसार्थानाचार्यवर्यान परिपूजयामि ।।१३।।

ॐ ह्रीं पञ्चाचारपरायणाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घं ।

अर्थश्रुतं सत्यविबोधनेन , द्रव्यश्रुतं ग्रन्थविदर्भणेन ।
येऽध्यापयन्ति प्रवरानुभावा- स्तेऽध्यापका मेऽर्हणया दुहन्तु ।।१४।।

ॐ ह्रीं द्वादशागंपठनपाठनोद्यतायोपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घं ।

द्विधा तपोभावनया प्रवीणान् , स्वकर्मभूवीध्रविखण्डनेषु ।
विविक्तशटयासनहर्म्यपीठ - स्थितान् तपास्विप्रवरान् यजामि ।।१५।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारचारित्रराराधकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं ।

अर्हन्मगंलमर्चे सुरनरविद्याधरैकपूज्यपदम् ।
तोयप्रभृतिभिरर्घ्यैर्विनीतमूर्धा शिवाप्तये नित्यम् ।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मगंलायार्घं ।

ध्रौव्योत्पादविनाशनरूपाखिलवस्तुबोधनार्थकरम् ।
सिद्धं मंगलमिति वा मत्वार्चे चाष्टविधवस्तुभिः ।।१७।।

ॐ ह्रीं सिद्धमगंलायार्घं ।

यद्दर्शनकृतविभवाद् रोगोपद्रवगणा मृग इव मृगेन्द्रात् ।

दूरं भजन्ति देशं साधुभ्योऽर्च्यते विधिना ।।१८।।

ॐ ह्रीं सिद्धमगंलायार्घं ।

केवलिमुखावगतया वाण्या निर्दिष्टभेदधर्मगणम् ।
मत्वा भवसिन्धुतरीं प्रयजे तन्मंगलं शुद्धयै ।।१९।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घं ।

लोकोत्तममथ जिनराट्पदाब्जसेवनयामितदोषविलयाय ।
शक्तं मत्वा घृतजलगन्धैरर्चे समीडितं प्रभवैः ।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमायार्घं ।

सिद्धाश्च्युतदोषमला लोकाग्रं प्राप्य शिवसुखं व्रजिताः ।
उत्तमपथगा लोके तानर्चे वसुविधार्चनया ।।२१।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायार्घं ।

इन्द्रनरेन्द्रसुरेन्द्रैरर्थिततपसां व्रतैषिणां सुधियाम् ।
उत्तममध्वानमसावर्चेऽहं सलिलगन्धमुखैः ।।२२।।

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमायार्घं ।

रागपिशाचविमर्दनमत्र भवे धर्मधारिणामतुलम् ।
उत्तममपगतकामो वृषमर्चे शुचितरं कुसुमैः ।।२३।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घं ।

अर्हच्छरणमथार्चेऽनन्तजनुष्यपि न जातु सम्प्राप्तम् ।
नर्तन गानादिविधिमुद्दिश्याष्टकर्मणां शान्त्यै ।।२४।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घं ।

निर्व्याबाधगुणादिकप्राग्र्यं शरणं समेतचिदनन्तम् ।
सिद्धानाममृतानां भूत्यै पूजेयमशुभहान्यर्थम् ।। २५।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घं ।

चिदचिद्भेदं शरणं लौकिकमाप्यं प्रयोजनातीतम् ।
त्यक्त्वा साधुजनानां शरणं भूत्यै पूजेयमशुभहान्यर्थम् ।।२६।।

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घं ।

केवलिनाथमुखोद्गतधर्मः प्राणिसुखहितार्थमुद्दिष्टः ।
तत्प्राप्त्यै तद्यजनं कुर्वे मखविघ्ननाशाय ।।२७।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घं ।

संसारदुःखहनने निपुणं जनानां नाद्यन्तचक्रमिति सप्तदशप्रमाणम् ।
सम्पूजये विविधभक्तिभरावनम्रः शान्तिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थसार्थैः ।। २८।।

ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घं ।

जयमाला

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा अग्रेसरं जिन वदन्ति भवन्तमिष्टम्।
आनाद्यनन्तयुगवर्तिनमत्र कार्ये, विघ्नौघवारणकृतेऽहमपि स्मरामि ।।१।।
गणानां मुनीनामधीशत्वतस्ते, गणेशाख्यया ये भवन्तं स्तुवन्ति ।
तदा विघ्नसन्दोहशान्तिर्जनानां, करे संलुठत्यायतश्रायसानाम् ।।२।।
कलेः प्रभावात्कलुषाशयस्य, जनेषु मिथ्यामदवासितेषु ।
प्रवर्तितोऽन्यो गणराजनाम्ना,कथं सं कुर्याद् भव वार्धिशोषम् ।।३।।
यो दृक् सुधातोषितभव्यजीवो, यो ज्ञानपीयूषपयोधितुल्यः ।
यो वृत्तदूरीकृतपापपुञ्जः, स एव मान्यो गणराज नाम्ना ।।४।।
यतस्त्वमेवासि विनायको मे, दृष्टेष्टयोगादविरुद्धवाचः ।
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति, विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ।।५।।

जय जय जिनराज त्वद्गुणान्को व्यनक्ति,
यदि सुरगुरुरिन्द्रः कोटिं वर्ष प्रमाणम् ।
वदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नो चेत,
कथमिव ही मनुष्यः स्वल्प बुद्धया समेतः ।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मन्त्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा ।

श्रियं बुद्धिमनाकुल्यं धर्मप्रीति विवर्धनम् ।
जिनधर्मे स्थितिर्भूयाच्छेयो में दिशतु त्वरा ।।

(इति पुष्पाञ्जलिः)

इसके बाद आपको जो विधान सम्पन्न करना है वह करें यदि उस तिथि में अग्निवास योग ठीक है तो ग्रंथ के अंत में दिया गया हवन शान्ति करे पश्चात नीचे लिखा शांतिपाठ - विसर्जन पाठ पढ़कर पूजन का कार्यक्रम समाप्त करे।

शान्ति पाठ

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील–गुणव्रत–संयमधारी ।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं ।।
पंचम चक्रवर्तिपद धारी, सो लह तीर्थंकर सुखकारी ।
इंद्र नरेंद्र पूज्य जिन नायक, नमो शांतिहित शांति विधायक ।।
दिव्य विटप पहुपनकी बरषा दुंदुभि आसन वाणी सरसा ।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ।।
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई ।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघको ।।

वसंततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके ।
इंद्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ।।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को यतीन को यतिनायकों को ।
राजाप्रजा राष्ट्र सुदेश को लै कीजै सुखी हे जिन शांति को दे ।।

स्रग्धरा छन्द

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा ।
होवै वर्षा समय पै तिलभर न रहै व्याधियों का अँदेशा ।।
होवै चोरी न जारी सुसमय बरतै हो न दुष्काल मारी ।
सारे ही देश धारैं जिनवर–वृष को जो सदा सौख्यकारी ।।

दोहा

घातिकर्म जिन नाश करि पायो केवलराज ।
शांति करो सब जगत में वृषभादिक जिनराज ।।

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का ।
सद्वृत्तों का सुजस कहके दोष ढाकूँ सभी का ।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके आपका रूप ध्याऊँ ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके मोक्ष जौ लौं न पाऊँ ।।

आर्य्या

तव पद मेरे हिय में मम हिय तेरे पुनीत चरणों में ।
तब लौं लीन रहौ प्रभु जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने ।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित जो कछु कहा गया मुझसे ।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुख से ।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी ।
मरण समाधि सु दुर्लभ कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ।।

विसर्जन

बिन जाने वा जान के रही टूट जो कोय ।
तुम प्रसादतैं परम गुरु सो सब पूरन होय ।।1।।
पूजनविधि जानूँ नहीं नहिं जानूं आह्वान ।
और विसर्जन हू नहीं क्षमा करहु भगवान ।।2।।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे देहु चरण की सेव ।।3।।
आऐ जो जो देवगण पूजें भक्ति प्रमाण ।
ते सब जाबहु कृपाकर अपने अपने थान ।।4।।

आशिका लेने का मंत्र

श्री जिनवर की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय ।
भव–भव के पातक कटे, दुःख दूर हो जाय ।।

सोलह कारण विधान

(कविवर श्री टेकचन्द कृत)

व्रत माहात्म्य

दोहा

मानो आनो मन गहो, सोलहकारण भाव ।
नमों जजों जिनपद मिले, भलोमिलो शुभदाव ।।१।।

सोरठा

ये धर्म कारण जान, स्वर्ग मुक्ति इनसों मिले ।
होय पाप की हान, नितप्रति मंगल सम्पजे ।।२।।

चौपाई

यह व्रत मानव ही तें होई, देवों का अवसर नहिं कोई ।
व्रतधारी कों देवा पूजें, व्रतधारी के सब अघ धूजें ।।३।।

पद्धरि छन्द

यह वरत सर्वव्रत ऊंचे जान,ऊंच पद को दायक महान ।
ऊंचे ही नर पै होय सोय, पूजे जो सो भी ऊँच होय ।।४।।

अडिल्ल

कर्मशैल१ को बरत वज्र सम जानिये,
जहाँ वरत तँह अशुभतनी हो हानिये ।
वरत बड़ी सुरवृक्ष देय वांछित फला,
बिन बाँछे जो करे धरे सिध की शिला।।

गीता

यह वरत वन्ही कर्मवन को, पापबेल कुठार जी ।
अशुभ घनका पवन दीरघ,मिथ्यात्वतम रविसार जी ।
करणकरि का हरि समाना, मन कपी को श्रृंखला ।।
शुभध्यान मन्दिर,नाव भवदधि,व्यसनमल जेता भला ।।६।।

चौपाई छन्द

यह व्रत करे विनयजुत कोय, तो चउगति भरमन नहिं होय ।
पूजे यह व्रत मन वच काय, जगत पूज्य पद सा जिय पाय ।।७।।

भुजंगप्रयात छन्द

यह बरत सारं, हरे पापभामं, यह वरतनीका, हरे शोक जीका ।
यह वरत जूना, करे दूर खूना,यह वरत प्यारा,करे पाप न्यारा ।।८।।

छन्द त्रिभंगी

जो यह व्रत ध्यावे, नव निधि पावे, पुण्य बढ़ावे, अघ भानी ।
यह व्रत सुखदाई, देत बड़ाई, सब जिय भाई, हितदानी ।।
यह वरत प्रभावै, पूज्य कहावै ज्ञान बधावै, शिवकारी ।
यह वरत सुमित्ता, कर दे चित्ता, महा पवित्ता, भवतारी ।।९।।

मुनियानंद की चाल

लखो इस वरत की उपमा है घनी,
कही जिनदेव निजवाणि में सब भनी ।
तनिक सी यहाँ कही राग व्रत-कारने,
सुनो भव्य करो यह वरत दुःख टारने ।।१०।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

समुच्चय पूजा

(त्रिभंगी छन्द)

यह सोलहकारण भवदधितारण, काज सुधारण गुणधारी ।
यह पाप नशावे, शुभ फल लावे, ध्यान बढ़ावे शिवकारी ।।
तीर्थंकर पद दे जगथुति फलजे, पूजो भवि ते, हित भारी ।
मैं मनवचकाई, यह गुन भाई, थापन लाई मदटारी ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारंणानि अत्र अवतरत अवतरत सम्वौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

गीता छन्द

तन कर पवित्र सुधार वसु तर, भक्ति मनवच लायजी ।
ले कनक झारी रतन जड़ित सु, चित्त में हरषाय जी ।।
भर नीर गंगा तनों निरमल, गन्ध तँह अधिकाय है ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः जलम् ।।१।।

ले बावनो चन्दन सु निरमल, नीरतें घसि सारजी ।
धर कनकपातर भाव शुभ करि, सकल मदको मारजी ।।
कर काय मनवच शुद्ध परणति, भक्ति उर बहु लाय है ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः चन्दनम् ।।२।।

उज्ज्वल अखंडित बीन नखशिख, लाइये हितकारने ।
बहु गन्धजुत शुभ धोय अक्षत् महा पुनिफल धारने ।।
करि भावना अतिशुद्ध मनवच, काय जोग लगाय है ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः अक्षतान् ।।३।।

ले फूल सुरतरु कनक चाँदी, और कृत्रिम जानिये ।
शुभ गन्ध गुजंत भ्रमर तिनपै, भले पुनि अनुमानिये ।।
धरि भक्ति हिरदें कायमनवच, हर्ष बहु उपजाय हैं ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः पुष्पम् ।।४।।

कर तुरत नेवज आदि मोदक, भले रस मिलवाय जी ।
तिस देखतें नैवेद्य को दुख, रोग भूख नशाय जी ।।
सो लेय निजकर धार हिरदै, भक्ति भाव लगाय है ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः नैवेद्यम् ।।५।।

धर रतनदीपक कनकपातर, आरती शुभचित करो ।
बहु हर्ष मनवचकाय धरि के, मोहतम-नाशन करो ।।
हो ज्ञान ता फल भलो केवल, सकल संशय जाय है ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः दीपम् ।।६।।

धूप दशधा अगर चन्दन, अरु सुगन्ध मिलायजी ।
सो खेयकरि फल कर्मक्षय हो, घनी कहा वरनाय जी ।।
तिस धूप की ले गन्ध लोलुप,भ्रमर शब्द कराय है ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः धूपम् ।।७।।

फल लेय श्रीफल लोंग खारक, भले और बदामजी ।
इन आदि और अनेक शुभफल, लेय सुखके कामजी ।।
कर कायमनवच भक्ति नीकी, राग उर बहुलाय है ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः फलम् ।।८।।

जल सद्य चन्दन सुभग अक्षत, पुष्प चरु दीपक सही ।
फिर धूप फल इमिह आठ द्रव्य, भले भावन अघ दही ।।
धर भक्ति मनवचकाय हिरदें, आरती शुभदाय है ।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः अर्घ्यम् ।।६।।

जयमाला

चौपाई छन्द

षोडशभावन पावन जान, यह तीर्थंकरपद फलदान ।
याको ध्याय भये जिन घने, चार घातिया कर्म जु हने ।।१।।
भी भवि षोढशकारण करो, ताकी विधी हिये में धरो ।
तीन प्रकार वरत को करो, जघन मध्य उत्ष्कृटै धरो ।।२।।
मास एक उपवास कराय, सो उत्कृष्ट जु विधि मन लाय ।
बेले बेले पारण करे, तथा एकान्तर अनशन धरे ।।३।।
जो लघुशक्ति धार जिय होय, पाँचों परवी अनशन जोय ।
यातें भी लघुशक्ति धरे, तो षट्वास नांहि परिहरे ।।४।।
ताकी विधि ऐसी ही जान, आदि अन्त दो पड़वा आन ।
दो आठें दो चौदश वास, ये षट्वासजघन्य विधिभास ।।५।।
बाकी दिन एकासन करे, एक बार सो भोजन धरे ।
फेर न लहे नीर का सोय, ऐसे वरत करत शुधहोय ।।६।।
षोडशवर्ष करे जिय सोय, फिर उद्यापन की विधि होय ।
नाँहीं व्रत को दुगना करे, पीछे शक्तिसदृश व्रत धरे ।।७।।
जो फिर शक्ति होय तो धीर, आयु लगें करनों वरवीर ।
यह सामान्य वरत विधिजान,और विशेष ग्रन्थतें मान ।।८।।
सोरठा-या विधि षोडशभाव, जो भवि पूजे भावसों ।
सो जन जिनपद पाय, और कहा फल गाइये ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः महार्घ्यम् ।।

१-दर्शनविशुद्धि भावना पूजा

(मुनयानन्द की चाल)

भावना दर्शनशुद्धि सो जानिये, तास मधि दोष पच्चीस नहिं मानिये ।
या विना मोक्षकों और अंग ना करे,जजों इमिजान इहाँ थापि सो अघहरे।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

गंगका नीर अति निर्मलो जानिये, रतनतें जड़ित शुभपात्र में आनिये ।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया,या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै जलम् ।।१।।

सुभगचन्दन घस्यो नीरगंगा थकी, कनकझारीधरों भक्ति मुखतें छकी ।।पू.

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै चन्दनम् ।।२।।

सुभग अक्षत महा ऊजरे गंधमई,भक्तिभावन थकी अखत कर में लई ।।पू.

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अक्षतान् ।।३।।

फूल सुरवृक्ष के गन्धजुत लाइये, होय परफुल्ल उर फूल चढ़वाइये ।।पू.

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै पुष्पम् ।।४।।

सुभग चरु लेय षट् रस तनै सारजी,कनकपातर विषै भक्तितैं धारजी ।।पू.

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै नैवेद्यम् ।।५।।

दीप मनके हरा रतनमय सारजी,कनककरि थाल भरि आरती धारजी ।।पू.

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै दीपम् ।।६।।

धूप दशधा महागन्ध जुत सब लई, खेय वन्ही विषें भक्ति मुखतैं चई ।।पू.

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै धूपम् ।।७।।

सुभगश्रीफल भला आनिफल सारजी,भक्तकों देत हैं मुक्तिफल धारजी ।।पू.

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै फलम् ।।८।।

नीर चंदनाक्षतं पुष्पचरु दीपजी, धूपफल लेयकारै अर्घ्य शुभटीपजी ।।पू.

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।।९।।

भावना भली यह दर्शसंशुद्धिया,
सकल धर्म अंग के मुख्य यह जिन चया ।
या भये मोक्षमग निकट भासे सही,
जानि इमि भली हम अर्घ्य करते ठही ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै महाअर्घ्यम् ।।१०।।

प्रत्येकार्घ्यं (मुनयानंद की चाल)

धर्ममारग विषें, शंक ताके नहीं, होय निर्भय गुरू देव धर्म पद ठही ।
भेदविज्ञान में, शंग नहिं आय है, भावसो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री निःशंकितगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

धर्म सेवे नहीं, चाह हिरदे करे, भोग चक्री सुरा इन्द्र के परिहरे ।
एक शिवचाह अनि, भूल नहिं पाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री निःकांक्षितगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

देख परवस्तुचित, घिन नहीं आनि है,
रूप शुभ अशुभ सब, पौद्गलिक मानिहै ।
निर्विचिकित्सगुण यही, जीव हितदाय है,
भाव सों दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री निर्विचिकित्सागुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

देव गुरु धर्म को, परखसेवे सही, बिन परीक्षा गुरु देव सेवे नहीं ।
दृष्टि सांची सरध, उर विषें पाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री अमूढ़दृष्टिगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

स्वपर के दोष कों, नाँहिं मुखतें कह, दोष परके सदा, ढाँकना उर चहै ।
सदाचित्त शान्त, करुणामई पाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री उपगूहनगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

धर्म से डिगत को थिरी सो करत है,देत उपदेश मन-भरम को हरत है ।
धर्मधर आप फिर और धर्मदाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री स्थितिकरणगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

देख धर्मी भली, प्रीति तासों करे,
गऊ लख पुत्र ज्यों, हर्ष मन में धरे ।
धर्म अंग धार हित-कार गुण पाय है,
भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्यगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

मन वचन काय धन,बुद्धि तपये सही,मति श्रुतज्ञान मन-पर्ज अवधी कही।
धर्म परभाव इनतें करे भाव है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रभावनागुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

आठ गुन ये धरे, शुद्ध सरधा करे, तत्त्व सरधान में, भरम नाँहीं परे ।
आप चिद्रूप, पर देख जड़ भाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

मातृपक्ष मदकरे, हर्ष मन में धरे,नान मम मान बहु, धान धन अनुसरे ।
जाति मद जान यह, नांहि उर लाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री जातिमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

पितामह पिता मम,बड़े पदधार हैं,द्रव्य बहु हुक्म को, सके नहिं टार हैं ।
जान यह कुलमद, नांहि उर लाय हैं,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री कुलमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

द्रव्य बहु लाय हूं बुद्धिबलतैं सही,दीप दधि मैं फिरयो माल पैदा करी ।
लाभप्रद जान यह नाँहि उर लाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री लाभमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

रूप हम तनु जिसो, काम तन है नहीं,
नैन कर शीश मुख, महासुख की मही ।
जान यह रूपमद, नाँहि उर लाय है,

भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री रूपमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

करों तप मास, दो मास, षट् मास जी,
और वह तप करों, धारि अति सांसजी ।
जान तपमद यही नाहिं इमि भाय है,
भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

मो समान और में, नांहि बल जानिये,
मैं बली महा परचण्ड अति मानिये ।
जान बलमद यही, नाहिं उर लाय है,
भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री बलमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

मैं पढ्यो काव्य व्याकर्ण प्राकृत सही,
निमित्त ज्योतिष घनैं, ग्रन्थ देखे सही ।
जान यह ज्ञानमद, नांहि जो लाय है,
भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यामदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

मो हुकम आज नृप,पंच सब मान है,लोक में हम बड़े और नहिं आन हैं।
जान अधिकार मद, उर नहीं लाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री अधिकारमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

जाति अरु लाभ कुल, रूप तपबल सही,
ज्ञान अधिकार मद, आठ ये दुख मही ।
जान दुखदाय मद, अष्ट नहिं लाय है,
भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

धर्म सेवन विषें शंक जो चित धरे, नांहि निर्भय थकी, धर्म बिच संचरे ।

जान सम्यक्त्व को, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री लंकादोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

धर्मको सेय सुख, चाहता लोक में, तासतें आपने, किये सब शुभ हने ।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री कांक्षादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

देख पर वस्तु को, घृणा आने सही,कर्मको ठाठ समझे, नहीं उर मही ।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री विचिकित्सादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

देव धर्म गुरु जे परख बिन सेय हैं,मूढ़बुद्धिधार ते, अशुभ फल लेय हैं ।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय हैं,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री मूढ़दृष्टिदोष रहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

देख परदोष शठ, आप मुखतें कहे, दोषजुत चित्त उर, मांहि दुर्जन रहे ।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री परदोषभाषणदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

धर्मसेवनविषें खेद जो जिय करे, अथिरता भाव उपजाय धर्म परिहरे ।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री अस्थितिकरणदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

जीव धरमी थकी, दोष जो उर करे, भाव वात्सल्यका सकल वो परिहरे ।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री अवात्सल्यदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

धर्म परभावना, ताहि नहिं उर चहे, देख परभावना, हर्ष नाहीं लहे ।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री अप्रभावनादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

दोष शंकादि ये, आठ मन आनिये, इन भये नाश सम्यकतनों जानिये ।
अशुभ यह जानकर, नांहि हरषाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री शंकादिअष्टदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

योनिधर देव नहिं प्रभुपद तिनविषें,तन धरे फिर मरे,तिनहिं प्रभुपद अखे।
न यह नायतन, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री कुदेव प्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

बिन दिगम्बरत्व जग,देव जे हैं सही,भक्त इन देव लखि भला माने वही ।
जानि यह नायतन, दोष जो ढाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री कुदेवभक्तप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

जीवघाती धरम, पापकी खानि है,जीव भोरे हने महाशुभ मानि है ।
जान यह नायतन, दोष जो ढाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री कुधर्मप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

जीवघाती धरम, सेवका खानि है, ताहि पर शंसते नायतन होय है ।
जान यह नायतन, दोष जो ढाय हैं,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं ।

विषय उपदेश गुरु,क्रोध मानी सही,तिनहिं गुरु मान जे, चहें शुभकी मही।
जान यह नायतन, दोष जो ढाय हैं,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरुप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

कुगुरु के भक्त जो, सेव नीकी करे, देख ताको भलो, जान शोभा धरे ।
जान यह नायतन, दोष जो ढाय हैं, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरुभक्तप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

देव की परख बिन, प्रभूपद जो कहे, मूढ़ता देव की,जीव सो शिर लहे ।
जान यह मूढ़ता, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री देवमूढ़तादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

दयाशून्य धर्म की सेवमें जो परे,परख बिन धर्म की, सेव जो अनुसरे ।
जान यह मूढ़ता, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री धर्ममूढ़तादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

परख विन सेव जो, गुरुतनी ठानिये,
आप शिर भूलका अशुभ बन्ध आनिये ।

जान यह मूढ़ता, दोष जो ढाय है,
भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री गुरुमूढ़तादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

आठमद आठ शंगादि मल जानिये, नायतन जान षट् मूढ़त्रय मानिये ।
दोष पच्चीस इन, रहित सो भाय है,भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचविंशतिदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

(गीता छन्द)

द्यूत आमिष सुरा गणिका,-खेट चोरी जानिये ।
परनारिवांछा सात हैं, ये व्यसन अघफल मानिये ।।
जो तजे सांची दृष्टि ताके, होय सब सुख आय जी ।
जो धरे दर्शविशुद्धि भावन, भलो जिनपद पाय जी ।।

ॐ ह्रीं श्री सप्तव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

जो द्यूतलेखन चित्त वांछे, पाय दुख अघखेत हैं ।
श्रीमान को करके भिखारी लोकनिन्दा देत हैं ।।
जो जान खोटा तजे याकों, भावसमतालाय जी । जो धरे.

ॐ ह्रीं श्री द्यूतव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

सप्तधातुन माहिं निन्दित, महाघिनकारी सही ।
या देखते ही अशन तजिये,खाय सोजिय अघमही ।।
जियघात विननाहोय आमिष, त्यागनाबुधिलाय जी । जो धरे.

ॐ ह्रीं श्री मांसव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

जो पिये मदिरा, तजे शुधबुध,ज्ञान सकल गमाय है ।
या अमल माहीं मात भगिनी, नार भेद न थाय है ।।
यह व्यसनमदिरा हरे जुगभव, तजेपुण्यलसाय जी । जो धरे.

ॐ ह्रीं श्री मदिरापानव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

यह गिनी गणिका,जगत पातल,जूंठसम बुधजन कही ।
जो रमें याते धर्म खोवे, महा अघकी सो मही ।।

यह व्यसन दुखदा जान त्यागे,महा शुभफल पाय जी ।जो धरे.
ॐ ह्रीं श्री वेश्यारमणव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

(खडगा छन्द)

आपसम जीव को, घात कैसे करे, घाव किमु देय आयुध तनो जी ।
कण्टतैं काय कम्पाय सब आपकी, दुख थकी रोय, कहे मति हनो जी ।।
गोधिया जीव हन, भील या पारधी, ऊंचकुल जीवको ना सतावे ।
त्याग खेटक व्यसन, दया उरमें धरे, दर्शसंशुद्धि भाव सो नाम पावे ।।

ॐ ह्रीं श्री आखेटव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

दाम पर का हरे, हरष मन में भरे, पाप निजशिर, धरे मूढ़ प्रानी ।
चोर के भाव, छलछिद्र अधिको धरे,काय तज दुःख लहे हीनज्ञानी ।।
व्यसन यह चोर, नर्क देय घनघोर,दुःख लहे अधिकाय, नहीं पार पावे ।
त्याग यह व्यसन, परिणति को शुद्धकरे,दर्शसंशुद्धि भाव सो नाम पावे ।।

ॐ ह्रीं श्री चौर्यव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

नारि पर चहे सो, शीश अघ लहे जो, यह त्यागे सो धर्मराह जाने ।
देख परतिया चित्त, मात सम किया,बहिन सम जान, उर ज्ञान आने ।
व्यसन उरनांहि ते, शुद्ध चितमाँहि जिय,होय समभाव, शिवराह जावे ।
त्याग परनारि का, व्यसन शुद्धमन करे, दर्शसंशुद्धि भाव, सो नाम पावे ।।

ॐ ह्रीं श्री परदार रमणव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

व्यसन ये सात नर्क, सात के प्रीतमा, धर्म को दोष, या जान त्यागे ।
होय जिनदास उर-धार शिवआश भव्य,धर्म धार आप, चित मांहि जागे ।।
ते जग जस लहे, सफल भवतें रहे,नाहिं जे व्यसन-वश आप आवे ।
भेद विज्ञानतें, आप पर भिन्न लखे,दर्शसंशुद्धि भाव, सो नाम पावे ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

(वेसरी छन्द)

नहिं संक्रान्ति दान सरधाना, जाने आतमरूप पिछाना ।
नांहि अतत्त्व भाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री संक्रान्तिदिवसदानदोषहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

अग्नि सेव नांहीं मन लावे, इसकी दया ठान शम थावे ।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

ग्रह नक्षत्र पूज नहिं आने, त्रिभुवनपति पूजे सुख माने ।
नाहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री ग्रहनक्षत्रसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

गोयोनी वा पूंछ न पूजे, अघ कारजतें मन वच धूजे ।
नाहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री गोयोनिपुच्छादिसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

मणिपाषाण सेवता नांहीं, जाने पृथ्वीकाय सु ठांही ।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री मणिरत्नपाषाणादिसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

भूमिदेव पूजा परिहारे, पूजे जिन समता उर धारे ।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री भूमिसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

पर्वत पतन थकी सुख होई,यह भ्रम उरमें लहे न कोई ।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री पर्वतपतनरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

नदी-स्नान शुद्धि नहिं माने, ज्ञान-स्नान शुद्ध सरधाने ।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री नदीस्नानश्रद्धान-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

अग्निपाततें मुक्ति न माने, मुक्ति शुद्ध अनुभव तें जाने ।
ज्ञान स्वभाव आप उर भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निपातरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

कुगुरु सेव श्रद्धा नहिं जाके, वीतराग गुरु गणना ताके ।

ताको आतमज्ञान सु भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरुसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

गज तुरंग वृष सेव न ठाने,जिनपद सेये भक्ति सु माने ।
भेदविज्ञान राह समझावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री वाहनसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

जीवघात आयुध तैं होई, सो आयुध पूजे नहिं कोई ।
आतमसेवा जिनको भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री शस्त्रसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

हिंसकदेव न पूजे भाई, वीतराग कों जजे सु जाई ।
जो साँची श्रद्धा उर भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री हिंसकदेवसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

निशि अहार त्याग करिसारा,आतम अनुभव भाव विचारा
भेदज्ञानते निजपर भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री निशाऽऽहाररहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

बिन छाने जल को नहिं पीवे, करुणा कर समतातें जीवे ।
चेतन आप अन्य जड़ भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री जलगालनविधिसहित-रहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

वटफल जीवराशि नहिं खइये,दयाधार उर समता लहिये ।
तन विरक्त शुद्धातम भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री वटफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

पीपलफल जगम जियरासी,खाय नहीं तिन करुणा भासी ।
ममत छाँड़ि निजआतम ध्यावे,तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।

ॐ ह्रीं श्री पिप्पलफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

ऊमरफल अभक्ष्य तजखाना,शुभ आचारी दया निधाना ।
चेतनदेव आपसम भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री उदुम्बरफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

फल कठूंबरा खाय न सोई,शुभ अचार करुणाधर होई ।
निराकार फलको जो भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री कठुम्बरभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

मक्खीवमन निंद्य मधु जानो,शुभ आचारी होय न खानो ।
रसन लोभ त्याग हरषावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे ।।

ॐ ह्रीं श्री मधुभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

(गीता छन्द)

दर्शनविशुद्धी भावना शुभ, दोष बिन निर्मल सही ।
यह मोक्ष वटका बीज नीका, या बिना नहिं शिवमही ।।
या देय तीरथनाथ पदवी, महा मंगलदाय है ।
सो जजों दर्शन भावना, शुभकाय मनवच लाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री सकलदोषरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

(पंचमंगल की चाल)

भो भवि दर्शविशुद्धि भावना जानिये,
दोष पचीस आदि नहिं तामें मानिये ।
सब गुनमें यह भावन पावन सार है,
सकल गुणन की खान मान भवतार है ।।
तारे जु भवदधि नाव जैसे, करम संकट टारनी ।
दे मोक्षथानक पूज्य त्रिभुवन, काज वांछित सारनी ।।
याकी जु महिमा कहे कवि किम, पार गुण ताके नहीं ।
गम्य ज्ञानी सकल जाने, और की मुखतें कही ।।
ये शुभभावन जिनपद-दायक जानिये,
मोक्षवृक्षको बीज मिथ्यातम हानिये ।
याही के परभाव समवसृति थाय है,

होत कल्याणक पाँच सांच शिव पाय है ।।
पाय पंचकल्याण शिवले, फेर जग नहिं आय है ।
तन छांड़ जड़ चिद्रूप निवसै, ज्ञान केवल पाय है ।।
यह सकल महिमा जान याकी, भले फलकी दाय है ।
तातें जु सेय विशुद्ध दर्शन, भक्ति उर बहु लाय है ।।

अब यह दर्शविशुद्धी निरमल भावना,
भाये वांछित मन फल नीका पावना ।
षोडशकारण मांही कारण सार है,
याही ते सब धर्म महा फलकार है ।।

फलकार या बिन धर्म नांहीं, करे विरथा जायजी ।
बहुदान तप तन कष्ट संयम, नाँहि शिवफल दायजी ।।
तातें जु शिवमग लोभिया जे, सुरति भाषित सो करो ।
ये भावना शुभ काय मन बच, आपने हिरदें धरो ।।

मैं भी सफल आप भव तबही मानिहों,
दरशविशुद्धी भावन उर में आनिहों ।
या भावन भाये बिन भववन में फिरयो,
मानि मानि निज ठाँम शीशपै अघ धरयो।।

धारयो जु सिरपै पाप समझे, बिना दुख तातें लये ।
अब काल तिनको निकट आयो, भाव हम ऐसे भये ।
भावै जु दर्शविशुद्धी मन वच, काय जोग लगाय जी ।
ता कियो सबही धर्म नीको, होय इमि समझाय जी ।।

दोहा

दर्श विशुद्धी भावना, भावो मनवच काय ।
तो बांधो पद तीर्थ को, और अधिक कहा गाय ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

२-विनय सम्पन्नता भावना पूजा

(मुनयानन्द की चाल)

विनय सब धर्मको मूल जानो सही,
विनय बिन धर्म विधि सकल निष्फल कही।
जान इमि थापना थाप यहाँ भायजी,
विनय-सम्पन्नता जजों मन लायजी ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसमपन्नता भावना ! अत्र अवतर अवरत सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री विनयसमपन्नता भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री विनयसमपन्नता भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्

नीर गंगातनो, निर्मलो लाइयो, कनकझारी विषैं, धार शुभ पाइये ।
पूजिये विनयतैं विनयभावन सही,तासफल निर्मलो, होय उर जिन कही ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै जलम् ।

लाबनो चन्दना, नीर घसवाइये, रतन पातर विषें धार गुन गाइये ।
पूजिये विनयतें, विनयभावन सही, तासफल चार-गति-पाप विनसे सही ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै चन्दनम् ।

खंडबिन ऊजरे, मुकतफल से कहे,तन्दुला थाल भर, आपने कर लहे ।
पूजिये विनयतें,विनयभावन सही,तासतें अखय फाल, होय जिनधुनिकही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अक्षतान् ।

देवतरुके भले, फूल शुभ आनिये,माल बहु गूँज उर, भक्ति मन ठानिये ।
पूजिये विनयतें, विनयभावन सही, तासफल कामजुर, नाशहो इमि कही ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै पुष्पम् ।

भेलि षट्रसा, नैवेद्य करनो भलो, भक्तिभावन किये, थाल में धर चलो ।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही, भूख की वेदना नाश तासफल रही ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै नैवेद्यम् ।

दीपमणि रतन के,ज्योति तम नाशजी,कनक भरि थाल ले,आरती भासजी।
पूजिये विनयतें, विनयभावन सही, नाश अज्ञान कर ज्ञान प्रगटे मही ।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै दीपम् ।

धूपबन्ही विषें अगर को जारिये,गन्ध महा सुभग धर हाथ निज धारिये ।
पूजिये विनयतें विनय भावन सही,आठ कर्मदहन होय वानि जिन इमिकही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै धूपम् ।

सुभगफल लाय नारेल बादाम जी, आदि खारक घने.महाशोभ ठामजी ।
पूजिये विनयतें, विनयभावन सही,मोक्षफल सो करे, पूजिफल धुनि कही ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै फलम् ।

नीर गन्ध अखत पुष्प,लेय चरु दीपजी,धूप फल अर्घ्य तें कर्म सब टीपजी।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही,तासफल पूज्यपद, लहे निश्चय कही ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अर्घ्यम् ।

प्रत्येकार्घ्य (अडिल्ल छन्द)

पढ़ै विनयतें पाठ विनयतें जो सुने,
धरे विनयतें पुस्तक पुट्ठा शुभ ठने ।
अक्षर चांदी कनक लिखावे सारजी,
विनयसार शुभज्ञान तनों अधिकारजी ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानविनय भावनायै अर्घ्यम् ।

दरशन शुद्ध सरधान,देखनों जानिये,
अवलोकन गुणसार,विनयते आनिये ।
श्रद्धा दृढ़ उरमांहि, विनय सो सारजी,
विनयसार शुभज्ञान तनों अधिकारजी ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविनय भावनायै अर्घ्यम् ।

जतन समिति का करे, गुपति पाले भलो,
महावरत शुध करे, विनययुत सब मिलो ।
करे जतनतें सोय, विनय विधि है सही,
चारित त्रयदश सार जजों विधितें मही ।।

ॐ ह्रीं श्री चारित्र विनय भावनायै अर्घ्यम् ।

यथायोग्य सब ठाम, विनय सबको करे,
देव धर्म गुरु सार, भली थुति उच्चरे ।
पूजे चाव कराय, भाव शुभ लायजी,
सो उपचार सु विनय, महा सुखदायजी ।।

ॐ ह्रीं श्री उपचारावेनय भावनायै अर्घ्यम् ।

विनय चार परकार, और बहुभेद है,
पूजें जो मन लाय, भली तिस टेव है ।
विनय भावना सार, जगत में जानिये,
सो पूजें मनलाय, बड़ी गुनखानि ये ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

विनयभावना बहु सुखदाई, विनयभाव विन भव भरमाई ।।
धर्ममूल सब विनय है भैया, इमि लखि विनय पूजसिरनैया ।
सोलहकारण में सरदारा, विनयभावना है अघजारा ।।
विनय सकलको है सुख दैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया ।
विनयभाव गुरुका जो कीजे, तो शुभहोय पाप सब छीजे ।।
विनय थकी सबने सुख पैया,इमि लखि विनय पूज सिरनैया ।
विनय मानगिरिहरण प्रचण्डा, वज्रदण्ड सम है बलचण्डा ।।
अविनय वनको बन्ही भैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया ।
जगमें विनयधर्म परधाना, विनय सर्वका राखे माना ।।
विनयजिसाबल्लभनहिंभैया, इमि लखि विनय पूजसिरनैया ।
तातें विनयभाव उर लावो, तो सब जग में महिमा पावो ।।
सबमें विनय मुकतिगुन दैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया ।
विनय सकल दोषनको खोवे, विनय मानमल को धो देवे ।।
विनय ज्ञानतरुको पय पैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया ।

कीजे विनय देव गुरु केरा, वृष की विनय हरे भवफेरा ।।
विनयथकी जग विनयकरैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया ।
विनयभाव ताके उर जागे,जा उर कुटिलभाव नहिं लागे ।।
विनयभाव सब दोष हरैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया ।
विनय आदि बहुतक गुणकारी, सबविध मंगल विनयउचारी ।।
तातें और घनी क्या कहिया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया ।

तीर्थंकर पद करनको, समरथ बहु सुखदाय ।
भवदधि तारण नावसी, विनयभावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री विनय भावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

३-शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

पचवाणतें रहित, बाड़ नवजुत सही,
सहस अठारह, अतीचार जामें नहीं ।
सर्व दोषतें रहित, शील सो भावना,
ताके इह शुभ भाय, थापि सिर नावना ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्।
ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अडिल्ल

पदम कुण्डको नीर सुनिर्मल लायके,
झारी रतन भराय भक्ति मन भायके ।
शीलव्रतेषु भाव पूज हो सारजी,
जनम जरामल जाय होय भव पारजी ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै जलम् ।

चन्दन बावन पावनकारी सोहनो,
निर्मल जल घसिलाय गन्ध मन मोहनो ।
शीलव्रतेषु भाव पूज भवि भायजी,
ता पूजाफल ताप जगतदुख जायजी ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै चन्दनम् ।

अक्षत उज्ज्वल, नखशिख शुद्ध बखानिये,
सो ले उज्ज्वल, भाव भक्ति मन आनिये ।
शीलव्रतों में, अनति-चार सुखदाय है,
ताके पूजे दोषरहित पद पाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अक्षतान् ।

देवद्रुम के फूल, गन्ध रँग जुत सही,
कर तिनकी शुभमाल आपने कर लही ।
शीलव्रतों में, अनति-चार सुखदाय है,
ताके पूजे दाह, कामज्वर जाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै पुष्पम् ।

नानारस नैवेद्य भेद बहु लाइये,
मोदक फेनी आदिक थाल भराइये ।
शीलव्रतों में, अनति चार सुखदाय है,
भूखरोग क्षय होय निराकुल थाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै नैवेद्यम् ।

रत्नदीप भरि थाल, जोति परकासिका,
धारि आरती हाथ, करम-तम नासिका ।
शीलव्रतों में, अनति-चार सुखदाय है,
मोहतिमिर हो नाश, इसो फल पाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै दीपम् ।

धूप दशांग बनाय, भक्ति उर लाय है,

अग्नि मांहि ता, जारि महासुखपाय है ।
शीलव्रतों में, अनति-चार सुखदाय है,
अष्टकर्म क्षय होय, निरंजन थाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै धूपम् ।

श्रीफल सार बदाम, दाख पिस्ता सही,
खारक आदि अनेक, और फल सुखमही ।
शीलव्रतों में, अनति-चार सुखदाय है,
ताके पूजे मोक्ष, महाफल पाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै फलम् ।

जल चन्दन अक्षत सुम, चरु दीपक सही,
धूप फला द्रव्य आठ, जोरि अरघै ठही ।
शीलव्रतों में, अनति-चार सुखदाय है,
सिद्ध लोक शुध थान, तासफल पाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ।

प्रत्येकार्घ्य (चौपाई छन्द)

शीलभाव नवबाड़ समेत, सो शिवनारी दे उर हेत ।
आठ द्रव्य कर अर्घ्य बनाय, पूजों शीलवर शुभ भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री नवबाड़सहितशीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ।

रागसहित तियतन नहिं जोय, ताके शील भावना होय ।
सो ही आठों द्रव्य मिलाय, पूजों शीलवर शुध भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री रागसहितस्त्रीतनावलोकनत्याग शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ।

रागवचन मुखतें नहिं कहे, सुनिके ताहि राग नहिं लहे ।
ये लख शीलदोष नहिं लाय,सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री रागवचनरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ।

पूरब भोग न चिन्ते सोय, ताके शील बरत दृढ़ होय ।

शीलभावना सब सुखदाय, सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वभोगचिन्तारहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ।

भोजन वृष्य गरिष्ट न लेय, दूध धीव मावा ना देय ।
शीलभावना सो दृढ़ लाय, सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री गरिष्टभोजनरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ।

पट भूषणतें तन श्रृंगार, करे न शीलव्रतों को धार ।
तातें यह व्रत सुरपद दाय, सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री तनृश्रृंगाररहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ।

नारी जिस शय्या पर सोय, तँह नहिं सोवे व्रतधर कोय ।
या फलजीव सुर शिवपाय,सो मैं शील जजो शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीशय्याशयनरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम।

कामकथा न करे मुख सोय,दे चित कामकथा नहिं जोय ।
ऐसो वरत शील सुखदाय, सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री कामकथारहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम ।

पेट धाप भोजन नहिं खाय, ताके शीलवरत मन आय ।
शीलदोष बिन सो शिवदाय,सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्णोदर भोजनरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम

काम चाहतै सोच बढ़ाय, उपजे चित दुख धीर न पाय ।
यो तजशीलभाव शुध भाय,सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री कामेच्छारहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम ।

हो सन्ताप कामवश सोय, ता वेदनतें अति दुख होय ।
यो तजि शुद्धशील मन भाय,सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री सन्तापकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं ।

कामवाण जाके मन सोय, मन उदास उच्चाटन होय ।
यो तजि शुद्धशील मनभाय,सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री उच्चाटनकामवाणरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं।

वशीकरण विधि शुध विसराय,तावश और न काज सुहाय ।
या बिन शील भाव सुखदाय, सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री वशीकरणकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं।

मोहनविधिमोहित चित सोय, ताको हौल दिला चित होय ।
या बिन शील शुद्धता थाय, सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री मोहनकामवाणरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं ।

ये ही पाँच काम के वाण, हैं लौकीक शील ही हान ।
इन बिन भाव शील हितदाय,सो मैं शील जजों शिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचकामवाणरहितलौकिकशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं ।

अब सुन पंच कहे श्रुति वाण सु काम के,
शीलहरण को सूर नाहिं किस आनि के ।
यातें रहित सुशील शुद्ध मनभाय है,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचवाणकामरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं ।

कामवाण करि पीड़ित चित जिस होय है,
देख तिया मन मुलकन हास्य बहोय है ।
या दूषण ते रहित शील शुध भाय है,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री कामौत्सुक्यहास्यकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं ।

बारबार तिय देखनकी बांछा रहे,
और न कछु सुहावे अवलोकन चहे ।
ऐसे मलतें रहित शील शुध भाव है,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाव है ।।

ॐ ह्रीं श्री अवलोकनकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यं।

देख नारि की ओर हास्य चितको करे,
कामवचन तन ठान घनो कौतुक धरे ।
ऐसे अरितें रहित शील शुध भाव है,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाव है ।।

ॐ ह्रीं श्री हास्यकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम

सैन सैना बतावन कामी चित रहे,
नैन बाणतें हाथ करन किरिया लहे ।
ऐसे औगुण रहित शील जो भाय है,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री नेत्रसंचालनकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम

काम सतावे जाहि जीव उर इमि रहे,
मन्द हास्य उर लहे देख तिय सुख चहे ।
ऐसे पातकरहित शील जो भाव है,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री मन्दहास्यकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम।

नारितनों सत्कार घनों कर आदरे,
नाना पट भूषण भोजन देय खुशी करे ।
ऐसे दूषण रहित शील शुभभाव हैं,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीसत्कारदोषरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम।

नारि मिलन की चाह सदा उर मांहि जी,
कामबाण यह जान महा दुखखान जी ।
ऐसे अशुभ निवार शील गुणदाय है,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीमेलकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम।

मन वच काय लगाय काम ऐसो करे,
तातें वीरज क्षरे हरष मनमें धरे ।
या दूषणतें रहित शील शुभ भाव है,
सो मैं पूजों मनवचकाय लगाव है ।।

ॐ ह्रीं श्री वीर्यपातातिचाररहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम।

दोहा- इत्यादिक-दूषण-रहित, शीलवर जो भाव ।
तीरथपद यातें मिले, मैं पूजों करि चाव ।।

ॐ ह्रीं श्री दोषरहितशीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै महार्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- सकल धर्म यातें रहें, या बिन धर्म अधर्म ।
तातें सबमें शील शुभ, काटत खोटे कर्म ।।

(मुननायानन्द की चाल)

शील सब धर्मको मूल मन आनिये, शीलगुण पूज्य सुरलोकतें जानिये ।
शीलसो सार गुण और नहिं पाय है,मैं नमों शीलगुण शीशकर लाय है ।।
शील ही सर्वदा सांच शिवराह है, शीलगुण कामकी हरत सब दाह है ।
शील जगपूज्य मुनिराज इमि ध्याय है,मैं नमों शीलगुण शीश कर लाय है।।
शील शिव-राह को वाहना सार जी,शील ही मोक्ष दे करे भवपार जी ।
शील भवसागरा तार नौकाय है,मैं नमों शीलगुण शीश कर लाय है ।।
शील सरदार सब धर्म अंग में सही,शीलरवि कामतमनाशि जिनधुनि कही।
शील ही पापतरु-हरण असि पाय है,मैं नमों शीलगुण शीश कर लाय है।।
शील कपि काम-बन्धन भली सांकरी,शील मदमदनगजहरन हरि बांकरी ।
शीलधर्मकेतु का दण्ड शुभ भाय है,मैं नमों शीलगुण शीश कर लाय है ।।
शील समभाव का दाव कर चाव है,शील सरिता हरे काममलभाव है ।
शील धर्मचक्र की किरण सुखदाय है,मैं नमों शीलगुण शीशकर लाय है ।।
शील शुभ शरण अरु करण मंगल सही,शील जिनदेव-पदवी भली दे कही।

शील शाश्वत भला सर्वदा दाय है,मैं नमों शीलगुण शीश कर लाय है ।।
शील सो सार उत्तम नहीं कोयजी,ताफलै सकलसुख सहज ही होयजी ।
शीलगुण सेवना शर्मदा भाय है,मैं नमों शीलगुण शीश कर लाय है ।।

सोरठा-शील शिरोमणि धर्म, शील शाश्वती पद करे ।
शील हरे सब कर्म, शील जजों यातें सही ।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

४-अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना पूजा

(चौपाई)

करे निरन्तर ज्ञान अभ्यास, ज्ञान थकी शिवमारग भास ।
ज्ञानभावना मंगलदाय, सो मैं थाप जजों श्रुति लाय ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(चौपाई)

क्षीरोदधिको निरमल नीर, कनकझारि को भर हर-पीर ।
पूजों ज्ञानभावना सार, ताफल होय जनममृतिछार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै जलम् ।

चन्दन पावन पावन लाय, धार करों उर भक्ति बढ़ाय ।
पूजों ज्ञानभावना सार, तातें भव आताप निवार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै चन्दनम् ।

अक्षत उज्ज्वल मोति समान, खंड बिना शोभे सुमहान ।
पूजों ज्ञानभावना सार, अक्षयफल की जो दातार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै अक्षतान् ।

सुरतरु फूल गन्ध रंग वान, तिनकी माला ले अमलान ।
पूजों ज्ञानभावना सार, मेटन मनमथ काम विकार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै पुष्पम् ।

नानारस नैवेद्य बनाय, कंचनथाल भरे शुभ लाय ।
पूजों ज्ञानभावना सार, क्षुधारोग करने को छार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै नैवेद्यम् ।

दीपक मणिका विपुल प्रकाश,कंचनथाल भरे थुति भास ।
पूजों ज्ञानभावना सार, मोह तिमिर ताफल परिहार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै दीपम् ।

धूप अगर चन्दन की लाय,अग्नि खेवने को उमगाय ।
पूजों ज्ञानभावना सार, कर्म अष्ट जालन दुखटार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै धूपम् ।

श्रीफल सार बदाममहान, खारक आदिभले फल आन ।
पूजों ज्ञानभावना सार, वांछित मोक्षफले हितकार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै फलम् ।

जल चन्दन अक्षत सुम जेय,चरू दीपकअरु धूप फलेय ।
पूजों ज्ञानभावना सार, अद्भुत फलदायक निरधार ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

प्रत्येकार्घ्य चौपाई

मतिज्ञान उपयोग सु जान, इन्द्रिय मन द्वारे है ज्ञान ।
अधिक छतीस तीनसै भेव, इनकी मनवच करिहों सेव ।।

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

श्रुतज्ञान मय वरते सोय,जो उपयोग धनी विध होय ।
द्वादशांग के जाने भेव, इनकी मनवच करिहों सेव ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानोपयोग भावनायैम् अर्घ्यम् ।

(गीता छन्द)

ज्ञान निमित्त सु आठ मांही, मन वचन बरते सही ।
निशदिन करे अभ्यास तिनको,मरमको लख सब कही ।।

सो जान ज्ञानोपयोग नीको, भली जुत गिनों ।
मैं जजों मनतन वैन शुधकर, अज्ञानतम ताफल हनो ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

आकाश में रवि चन्द्रतारा, मेघ पटलादिक लखे ।
सन्ध्या समय के चिन्ह और, अनेक बातन को अखे ।।
सो होय इनके निमित्त सेती, शुभाशुभ सो जानिये ।
अन्तरीक्ष निमित्त-पयोग ज्ञानसु, जजों बहुथुति आनिये ।।

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

भूमि में मणि रतन कंचन, धातु खान सु जान है ।
इन आदि और अनेक चिन्हसु, भौम के सब थान हैं ।।
सो लखे ज्ञानोपयोग धारी, शुभ अशुभ जाने सही ।
अन्तरीक्ष भौम निमित्त नीको, सो जजों बहु धुनि कही ।।

ॐ ह्रीं श्री भौमनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

मनुष तिर्यक देह के शुभ, अशुभ चिन्ह सु जानिये ।
रस प्रकृति रुधिरादिक सुलखिके,अशुभ शुभ पहिचानिये।।
यह अंगनिमित्त जु ज्ञान अद्भुत महासुख उपजायजी ।
मैं जजों ज्ञानोपयोग ऐसो, भलो अरघ मिलायजी ।

ॐ ह्रीं श्री अंगनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

सुन शब्द नर तिर्यंच केरा, शुभाशुभ जाने सही ।
खर शब्द घूघू काक स्याल सु सारसा जो धुन कही ।
इन आदि वच सुनि कहे सुखदुख,स्वरनिमित्त सु जानिये।
मैं जजों यह उपयोग ज्ञानी, शीश नय थुति आनिये ।।

ॐ ह्रीं श्री स्वरनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

जो मसा तिल सिर पीठ दाढ़ी, पांव कर में जोय है ।
तिस निमित्त ज्ञान सु सकल जाने शुभाशुभ जो होय है ।।
यह ज्ञान व्यजंन निमित नीको, भला शुभ उपयोग है ।

मैं जजों मनवचकाय शुध करि, जान सुखदा भोग है ।।

ॐ ह्रीं श्री व्यजंननिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

तन विषैं स्वस्तिक कलश वज्र सु,मच्छ इन आदिक सही।
शुभ होय लक्षण देख इनको, शुभाशुभ भाखे कही ।।
यह ज्ञान लक्षण निमित आछ्यो, भले फल को दाय है ।
सो जजों मनवचकाय यह, उपयोग ज्ञान सु भाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री लक्षणनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

तँह पट आभूषण शीश करके, उर पगों के जानिये ।
तिनको सु काटे मूषिकादिक, भेद तिनको आनिये ।।
यह देख शुभ अरु अशुभ भाखे,भेद सुख दुख दाय जी।
यह छिन्न निमित उपयोग जानो, जजों मनवचकाय जी ।।

ॐ ह्रीं श्री छिन्ननिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

जो लखें सुपना शुभाशुभ को, भेद सुखदुख जान है ।
इन आदि अंग अनेक समझे, सकल भेद सु आन है ।।
यह ज्ञान स्वप्न निमित्त नीको, बड़ अतिशय धारजी ।
सो जजों ज्ञानोपयोग मनवच,काय सुखमय सारजी ।।

ॐ ह्रीं श्री स्वप्ननिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

अडिल्ल छन्द

अन्तरीक्ष फिर भौम अंग सुर व्यंजना,
लक्षण छिन्न जु सुपन निमित्त वसु भ्रम हना ।
इनका चितवन दिना रैनि सो भाय है,
ज्ञानोपयोग सु जजों अरघ शुभ लाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

गीता छन्द

अब अवधिज्ञान विचार निशदिन भले भाव लगाय है ।
तिसरूप ही उपयोग वरते, तत्त्वीभेद सु पाय है ।।

इस ज्ञान के त्रय भेद अद्भुत, मूरती सब ही लखे ।
यह जान ज्ञानपयोग अवधि सु,जजों ज्यों बहु अघ सुखे।।

ॐ ह्रीं श्री अवधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

यह जानि देशा-अवधि षट् विध, कौन इस महिमा कहे ।
सब लोकमें हो मूरती द्रव्य, भेद ताको सब लहे ।।
इस रूप जो उपयोग वरते, तत्व-ज्ञान बतावता ।
सो जानि ज्ञानपयोग पूजों, भली विधि जस गावता ।।

ॐ ह्रीं श्री देशावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

सुन अवधि परमा अधिक जाने, तास की महिमा घनी ।
द्रव्यक्षेत्र काल सुभाव सबही, जान हैं गुण के धनी ।।
जाने असंख्या लोक खेतर, मूरती विधि सोय है ।
मैं जजों ज्ञानपयोग विधितें, नहीं तँह दुख कोय है ।।

ॐ ह्रीं श्री परमावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

परमावधीतें अधिक जाने, द्रव्य क्षेत्र व काल की ।
सर्वावधी सो जान भविजन, छिपे नाँहीं बाल की ।।
जाने असंख्या लोक अधिके, काल भी संख्या गुना ।
तारूप जो उपयोग वरते, ज्ञान सो पूजों मना ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

जो सरल रूपीचित्तचिन्तित, जान है त्रयकाल की ।
सो ऋजू मनपरजय सुज्ञानी, पूज्य जग गुन पालकी ।।
ता रूप जो उपयोग बरते, ज्ञान सुखदा सारजी ।
मैं जजों मनवचकाय नमि नमि, भक्ति मुखतें धारजी ।।

ॐ ह्रीं श्री ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

सरल मन व वक्र मनकी, शुभाशुभ जो भावना ।
ते होय निज पर जीव विकलप,भेद सो सब पावना ।।
जो विपुल मनपर्यय सुज्ञानी रहे समभावन सही ।

ते जजों ज्ञानपयोग मनवचकाय , नमि नमि थुति कही ।।

ॐ ह्रीं श्री विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

(अडिल्ल छन्द)

केवलज्ञान महान सकलविध जान है,
ज्यों ज्यों भइ व होय होयगी मान हैं ।
मूरति और अमूरति काल अनन्त को,
जानत सारी बात जजों अरिहन्त को ।।

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् ।

गीता छन्द

भेद और अनेक हैं सो, सकल जिनधुनि में कहै ।
यहां अल्प से व्याख्यान मांही, कथन -प्रयोजनवान है ।।
उपयोग भेद अपार जानो, भेद को पावे सही ।
वश भक्ति द्रव्य मिलाय पूजों, ज्ञान केवल शिव मही ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै महार्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- ज्ञानाभ्यास सदा करे, मनवच काय लगाय ।
अन्तर कहुँ पावे नहीं, ज्ञानपयोग सु पाय ।।

ज्ञानपयोग निरन्तर ध्यावे, धरमध्यान में काल गमावे ।
ज्ञानाभ्यास तुल्य वृष नाहीं, सब धर्मन में यह अधिकाही ।।
ज्ञानाभ्यास तत्त्व बतलावे, ज्ञानाभ्यास ध्यान उपजावे ।
ज्ञानाभ्यास विराग बढ़ावे, ज्ञानाभ्यास मोक्ष उपजावे ।।
ज्ञानाभ्यास थकीजग-पूजा, ज्ञानाभ्यास थकी अघ धूजा ।
ज्ञानाभ्यास त्यागबुधि लावे, ज्ञानाभ्यास दोष सब ढावे ।।
ज्ञान गुणाकर ज्ञान वंधावे, ज्ञानाभ्यास मुक्ति परणावे ।
ज्ञान सकलसन्तनको प्यारा, ज्ञान सर्व जगमांहि उजारा ।।

ज्ञान सूर्य मिथ्यातम नासे, ज्ञानमेघ भवतप को फांसे ।
ज्ञान सकल संशयको खोवे, ज्ञान पापमल को सब धोवे ।।
ज्ञान क्रोधवन्ही को नीरा, ज्ञानतरू संजम पय वीरा ।
ज्ञानाभ्यास जगत का बन्धू, ज्ञानाभ्यास हरे दुख अन्धू ।।
सोरठा- ज्ञानाभ्यास सदीव, सुखदाई संसार को ।
तातें कर भवि जीव, जो चाहे समभाव को ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै पूर्णार्घं ।

५-संवेग भावना पूजा

अडिल्ल

यो जग दुखभण्डार, रोगशोकै भरचो,
ताको लख भवि जीव, भयानक चित करचो ।
भवदुखतें भय खाय, विरक्ति तनतें करे,
सो संवेगता थाप, जजों भव-तप हरे ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थानपम् ।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(बेसरी छन्द)

क्षीरोदधि का जल ले आई, कनकझारि भर चित हरषाई ।
भाव संवेग पूज हों भाई, भव दुख फेर होय ना आई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै जलम् ।

चन्दन नीर थकी घस लाया,शुभ पातर धरि अति हरषाया ।
भाव सँवेग पूज हों भाई, ताफल जग आताप नसाई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै चन्दनम् ।

अक्षत मुक्ताफल सम प्यारे, हरष धारि पातर में धारे ।
भाव सँवेग पूज हों भाई, ताफल अक्षय पद उपजाई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अक्षतान् ।

सुरतरु फूल लाय गँध धारी, माल करी शोभा अतिभारी ।
भाव सँवेग पूज हों भाई, ताफल कामनाश हो जाई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै पुष्पम् ।

नानारस नैवेद्य बनाया, कनकपात्र भरि आनंद पाया ।
भाव सँवेग पूज हों भाई, ताफल भूख रोग नस जाई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै नैवेद्यम् ।

दीपक रतन जोत परकासी,सो भरथाल भक्ति सुख भासी ।
भाव सँवेग पूज हों भाई, तातें मोह निशा नस जाई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै दीपम् ।

धूप अगर चन्दन की आनो,वन्ही खेय हरष अति मानो ।
भाव सँवेग पूज हों भाई, तातें अष्टकर्म जरि जाई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै धूपम् ।

श्रीफल लोंग बदाम सुपारी, खारक पिस्तादिक फलभारी ।
भाव सँवेग पूज हों भाई, मोक्षथान ताके फल पाई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै फलम् ।

जल चन्दन अक्षत सुम लाई, चरु दीपक फल धूप सुभाई ।
भाव सँवेग पूज हों भाई, अभयधाम ताफल मिल जाई ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अर्घ्यम् ।

प्रत्येकार्घ्यं (बेसरी छन्द)

यह संसार महा भयकारा, चारगती दुखरूप भंडारा ।
याते विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे ।।

ॐ ह्रीं श्री संसारमयभीतायै संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

देव मरणकालें दुख पावे, ज्ञानी सो गति भूल न चावे ।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे,सो संवेग जजों भव भागे ।।

ॐ ह्रीं श्री देवगतिदुःखभीतायै संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

मानुषगति अति दुखका भारा, यातें ज्ञानी को भयकारा ।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे,सो संवेग जजों भव भागे ।।

ॐ ह्रीं श्री मनुष्यगतिदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

नारकगति वेदन लख भाई, ज्ञानी पाप थकी भय लाई ।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे,सो संवेग जजों भव भागे ।।

ॐ ह्रीं श्री नरकगतिदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

पृथ्वीकाय तने दुख भारी, छेदनभेदन अति दुखकारी ।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे,सो संवेग जजों भव भागे ।।

ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीकायदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

जल के दुखकी का मुख गावे, जाने सो जिय पाप कमावे ।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे,सो संवेग जजों भव भागे ।।

ॐ ह्रीं श्री जलकायदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

अग्निकाय दुख ही का गेहा, यातें किम उपजे मन नेहा ।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे,सो संवेग जजों भव भागे ।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निकायदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

पवनकाय में दुख अति भाई, हाथ पांव लागे क्षय जाई ।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे,सो संवेग जजों भव भागे ।।

ॐ ह्रीं पवनकायदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

अडिल्ल

छेदनभेदन ताड़न मर्दन दुख घने,
और महादुख जान जाँय ते किम् गिने ।
वनस्पती दुख जोय पापभय चित धरे,
सो संवेग जु भाव जजों भवभ्रम हरे ।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

एक स्वास में बार अठारह जो मरे,
एकै स्वासै मांहि अठारह तन धरे ।

ऐसी वेदन लख निगोदके मांहिजी,
हो भयभीत सुजजों सँवेग जु ठांहि जी ।।

ॐ ह्रीं निगोददुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

वे-इन्द्री लट जोंक गिंडोला अलसिया,
बाला कौड़ी संख आदि दुख में हिया ।
इनकी वेदन देख चित्त भय लाय है,
सो संवेग जजोंलख अघ थर्राय है ।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

चींटी खटमल जुआं तिरूला जानिये,
और कुंथवा आदि त्रीन्द्रिय मानिये ।
या गति वेदन जोय पाप तज वृष धरे,
सो संवेगता जजों जगतभय थरहरे ।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

माखी मच्छर भ्रमर और टीडी सही,
डाँस पतंगा आदि जीव चब-अख कही ।
इन तन वेदन जोय पापभय लाय है,
सो संवेगता भाव जजों वृषदाय है ।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

हाथी घोड़ा देव मनुज नारक सही,
सिंह सूर मृग आदि और पँच अख कही ।
ताकी उत्पति मृत्यु देखि भय लाय है,
सो संवेग जजों वृषधरि हरषाय है ।।

ॐ ह्रीं पँचेन्द्रियदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

जनम रोग दुख करे मीत उर इमि सहे,
तल सिर ऊपर पांव लिप्त मलतें रहें ।
इत्यादिक दुख जनम जान विरकत सही,

सो पूजों संवेग भाव शिवदा मही ।।

ॐ ह्रीं जन्मदुःखविरक्ततायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

बिच्छू लाखों डसे तुल्य दुख मरण का,
इने आदि दुख और कालवश परनका ।
मरण महादुख जान जीव विरकत सही,
सो पूजों संवेग भाव शिवदा मही ।।

ॐ ह्रीं मरणदुःखविरक्तताये श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

(गीता छन्द)

इष्टवस्तुवियोग का दुख, जगत में भरपूर है,
धन पुत्र नारि पितादि सज्जन, मरणबार हूँ दूर हैं ।
इन आदि इष्ट पदार्थ विनसे, देख जो विरकत सही,
सो पूजि हों संवेग भावन, ताहि में यह दुख नहीं ।।

ॐ ह्रीं इष्टवस्तुवियोगदुःखरहितायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

जो मिलें वैरी सिंह सूर अरु, जीव दुष्ट अनेकजी ।
यह है अनिष्ट संयोगका दुख, कहे तिनको टेकजी ।।
इन आदि कारण और दुखको,जानिके विरकत भये ।
सो जजों भाव संवेग मनवच, तासफल बहु शिव गये ।।

ॐ ह्रीं अनिष्टवस्तुवियोगदुःखरहितायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

तन रोग पीड़ा होय बहुती, कण्ठ तन आयुध लगे ।
नित स्वास कास जलोदरा तन, आयतें पीड़ा जगे ।।
इन आदि पीड़ा मिलनके दुख, जानके विरकत भये ।
सो जजों भाव संवेग मनवच, तासफल बहु शिव गये ।।

ॐ ह्रीं पीड़ासंयोगदुःखरहितायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

इन आदि कारण और दुखके, जगत में पूरण सही ।
तिस सहित चउगति जीव भरिये, देखिये सबही मही ।।
इमि जान विरचे जगत सेती, धर्म में अति दृढ़ भये ।

सो जजों भाव संवेग मनवच, तासफल बहु शिव गये ।।

ॐ ह्रीं अनेकदुःखमयजगदबलोकनरहितायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- अथिर दशा संसार की, देख जु भये उदास ।
भये मगन निजरूप में, करें स्वगुण परकास ।।

(बेसरी छन्द)

जग लख चपल भाव बैरागे, तब आतमरस माँही लागे ।
भव में जाने दुःख अपारा, सो संवेग भाव जग न्यारा ।।
मात तात सुत सज्जन भाई, नारी आदि और सुखदाई ।
ये सब स्वारथ के लख सारा, धर संवेगभाव जग न्यारा ।।
तन धन राजलक्ष्मि क्षयकारी, बिजली जिसी चपल है सारी ।
राखी रहे न इक छिन प्यारा, धर संवेगभाव जग न्यारा ।।
देव इन्द्र का सुख नश जावे, खग चक्रीपद देखत ढावे ।
इमि लखि जगत महादुखकारा, धर संवेगभाव जग न्यारा ।।
काल अनादि जगत भरमाये, नानातन धरि अति अकुलाये ।
लखानसुख सब दुखका भारा, धर संवेगभाव जग न्यारा ।।
पाप किये जिय नरक सिधायो, या तिर्यंची विषें दुख पायो ।
अब ओसर नीका है प्यारा धर संवेगभाव जग न्यारा ।।
पुण्य उदय नर देव बनाया, तंह मनवांछित बहु सुख पाया ।
सो भी भये देख क्षयकारा, धर संवेगभाव जग न्यारा ।।
कौन महादुख जग के भाखे यह जिय इन्दी सुख अभिलाखे।
तातें तजों जान क्षयकारा, धर संवेगभाव जय न्यारा ।।

सोरठा- जग दुखरूप विचार, विरचे भवतें साधवा ।
जगसुख नाशि विचार, पूजों मैं संवेगता ।।

ॐ ह्रीं श्री संवेगभावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

६-त्याग भावना पूजा

सोरठा- त्याग-भावना सार, भवदधि नौका जानिये ।
इमि लखि मनवच धार, थापन कर पूजों सही ।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

पद्धरि छन्द

जल कनकझारि धरि भाव लाय, अति उज्जवल क्षीरसमुद्र भाय ।
पूजों सु त्याग भावन महान, ताके फल जनमजरा न जान ।।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै जलम् ।

चन्दन घसि निर्मल नीर लाय, धरि कनकपात्र में भक्ति भाय ।
पूजों सु त्याग भावन महान, ताके फल भवतप नाँहि जान ।।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै चन्दनम् ।

अक्षय मुक्ताफल से बखान, बिनखण्ड गन्ध उज्जवल महान ।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताफल अखण्ड पद होय आय ।।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै अक्षतान् ।

सम कलपतरू गँध वर्ण धार, तिनकी करि माला भक्ति सार ।
पूजों सु त्याग, भावन सुभाय, ताके फल काम न जोर पाय ।।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै पुष्पम् ।

षट् रस नैवेद्य बनाय सार, धरि सुभग पात्र में हरष धार ।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताफलें क्षुधागद तुरत जाय ।।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै नैवेद्यम् ।

दीपक मणिमय अति जोतरूप, धरि थाल आरती कर अनूप ।
पूजों सु त्याग भावन शुभाय, ताके फल मिथ्यातम नसाय ।।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै दीपम् ।

कर धूप अगर चन्दन सुगन्ध, वन्ही में खेऊँ भगनि बन्ध ।

पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल क्षय हो कर्म जाय ।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै धूपम् ।

श्रीफल बदाम खारक अनूप, पुंगीफल आदिक ले सुरूप ।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल पावें मोक्ष ठाँय ।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै फलम् ।

जल चन्दन अक्षत सुमन सार, चरु दीप धूप फल अर्घ्यकार ।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल पदवी सुभग पाय ।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

(प्रत्येकार्घ्यं चौपाई)

रोगी को शुभ भेषज देय, सब जिय साता बांछे तेय ।
औषधिदान तासको नाम, सो भी देनो शिवपुर काम ।।

ॐ ह्रीं श्री औषधिदानभावनायै अर्घ्यम् ।

सबको हितदा ज्ञान विचार, दे श्रुतदान महाबुध धार ।
सबको चाहे केवलज्ञान, सो ही ज्ञानदान हितदान ।।

ॐ ह्रीं श्री शास्त्रदानभावनायै अर्घ्यम् ।

आप समान सकल जिय जान,अभयदान दे सबको मान ।
दयाभाव राखे मन मांहि, अभयदान सो भाव जजाहिं ।।

ॐ ह्रीं श्री अदयात्यागायै अभयदानभावनायै अर्घ्यम् ।

भोजन देय कायथिति काज,मुनिकों भक्ति दया सुख साज ।
यथायोग्य जे दान कराय, सो अनदान सकल सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री आहारदानभावनायै अर्घ्यम् ।

ये ही दान चार विध जान, त्याग-भावना में पहिचान ।
तीर्थंकर पद दाय बताय सुरतरु-सम जिनवाणी गाय ।।

ॐ ह्रीं श्री चतु. प्रकारदानभावनायै अर्घ्यम् ।

करुणासागर दीनदयाल, सब जीवन के हैं प्रतिपाल ।
त्याग जीवकी घात सयान, सो व्रत जजों अर्घ्य ते आन ।।

ॐ ह्रीं श्री हिंसात्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

प्राण जांय तो झूठ न कहे, महाधीर सतवादी रहे ।
सत्यवचन सब धर्म महान, सो व्रत जजों अर्घ्यतें आन ।।

ॐ ह्रीं श्री असत्यत्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

परधन-ग्रहण महा अघ जान, छूवें नहीं दया की खान ।
चोरी त्याग होय गुणथान, सो व्रत जजों अर्घ्यतें आन ।।

ॐ ह्रीं श्री चौर्यत्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

नारी चार जाति की सोय, देव मानुषी आदिक होय ।
चारों मन वच त्यागी जान, सो व्रत जजों अर्घ्यतें आन ।।

ॐ ह्रीं श्री कुशीलत्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

परिग्रह त्याग करे जिस सोय, जाके शिव कीं वांछा होय ।
पापकार आरम्भ पिछान, सो व्रत जजों अर्घ्यतें आन ।।

ॐ ह्रीं श्री परिग्रहत्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

तनतें ममता-भाव निवार, शिवके हेत नगनपद धार ।
सहें परीषह खेद न लांय, तनुविरक्त के पूजों पांय ।।

ॐ ह्रीं श्री तनुममत्वत्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

भोग सम्पदा सकल निवार, सहस छ्यानवे सुरसी नार ।
सब तजि मोक्ष भावना भाय, सो त्यागी पूजों मन लाय ।।

ॐ ह्रीं श्री राजभोगत्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

इत्यादिक त्यागी जे होंय, शिववांछक जियरक्षक सोय ।
भवत्यागी रागी निर्वान, सो मैं जजों त्याग भवहान ।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

सोरठा- त्याग मोक्षमग लोय, जगत पूज्य त्यागी सही ।
बिना त्याग भव होय, तातें त्याग जजों सही ।।

मुनियानन्द की चाल

त्यागभावन बिना, मोक्ष जावना नहीं,
त्याग ही मोक्षमग, जान सब श्रुत कही ।
त्याग मोह हरनको, महाभट जानिये,
त्याग ही मूल समता तनो ठानिये ।।
त्याग ही कर्मगिरि, वज्रसम है सही,
त्याग मनविकलता रोकने पटु कही ।।
त्याग शिवदायको जान मन लाइये,
त्यागके बल थकी, कर्मदेव जालिये ।
त्याग मुनिराज को, भलो भूषण सही,
त्याग को नमे सुर, खगा चक्री मही ।
पूजि हैं त्याग को, इन्द्र थुति लायजी,
मैं जजों त्याग मन, वचन तन आयजी ।।
त्याग विनराग होत कर सके सोहनो,
रागजुत जीव को, हार भागे मनो ।
त्याग कल्पवृक्षसम देय वांछित सही,
त्याग इमि जानि मैं, जजों सिर दे मही ।।
त्याग त्रिभुवन विषें, सार धर्म अंग है,
त्याग के जोर तें, होय कर्मभंग है ।
त्याग को देख का-सुर नरा धूजि हैं,
त्याग को मैं जजों, और भवि पूज हैं ।।
त्यागफल उदयतें, होय है आय जी,
इंद्र वा देव खग चक्रधर थाय जी ।
मोक्ष ताही भवे, तथा कर्म तें लहे,
मैं जजों त्यागभवि, जजों जिनधुनि कहे ।।

त्याग जग पूज्य है, त्यागधर पूज्य जी,
त्यागतें अवधि मनपर्ज सब सूझ जी ।।
त्याग तारे समुद्र, जगत अति दुद्धरा,
मैं जजों त्याग को, और पूजो नरा ।।
त्याग खोटे किये, कर्म को झट हरे,
त्यागतें सुभट मन, और इन्द्री मरे ।
त्याग ही मरण का, भय निवारे सही,
मैं जजों त्याग को, मनवचन तन कही ।।

दोहा- त्याग तरन तारन सही, त्याग जगत गुरु सोय ।
मैं पूजों मन वचन तन, त्याग भावना जोय ।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

७- तपो भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

तप ही वज्रसमान, पापगिरि को सही,
तप ही भवदधि-नाव,धरे शिव की मही ।
तप ही भव शरण, हरे भव दुख सबै,
सो तप मैं इहां थापि, जजों मन वच अबै ।।

ॐ ह्रीं श्री तपो भावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(गीता छन्द)

पदमद्रह को नीर निर्मल, कनकझारी में धरों ।
उर भक्ति करि गुण गाय तपके, शीशतें नमकी करो ।।
इह भली भावन तप सु केरी, कौन उपमा गाय है ।
मैं जजों तप मनवचन काया, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै जलम् ।

घसि अगर चन्दन नीर सेती, महागँध का भारजी ।
मैं कनकझारी मांहि धरिहों, नमों तप गुन धारजी ।।
ताफलै भव आताप नाशे होय समता भाय है ।
मैं जजों शुभ तपभावना को, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै चन्दनम् ।

अक्षत अखण्डित धवल नखसिख, शुद्ध गन्ध मई कहै ।
धरि सुभग पातर भावनातें, आपने कर में लहै ।।
पद अखय पावन चाह मेरे, तास यों मन भाय है ।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै अक्षतान् ।

फूल चांदी कनक के करि, तथा सुर तरु के सही ।
करि माल नीकी शोभदाई, भ्रमर गुंजत गँध मही ।।
तिस देख कम्पै मदन को उर, यह चढ़ी जिनपाय जी ।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै पुष्पम् ।

नैवेद्य षटरस सार मोदक, तुरत के बनवाय जी ।
तिस देख उर अनुराग उपजे, क्षुधारोग नसाय जी ।।
तब होय निर्वांछक स्थिर हो, ध्यान स्थिर थाय है ।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै नैवेद्यम् ।

करि दीप मणिमय नाश तम् को, कनक थाली में धरों ।
कर आरती शुधभाव सेती, भक्ति बहु मनमें करों ।।
ताफलै तुरत अज्ञान जावे, ज्ञान परगट भाय है ।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै दीपम् ।

धूप दशधा गन्ध धारी, अग्निमधि जारों सही ।

उर हरष करले आप करमें, कर्मरिपु मारों सही ।।
तब होय शिवपद कर्म नाशे, तास यह विधि पाय है ।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै धूपम् ।

ले लौंग खारक और श्रीफल, जान सुभग बदामजी ।
फिर जान पिस्ता आदि नीका, भला फल अभिरामजी ।।
ताफलै शिवफल होय निश्चल, और बहु कहा गाय है ।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै फलम् ।

जल गन्ध अक्षतफूल चरु ले, दीप धूप फला सही ।
कर अर्घ्य आठों द्रव्य ले के, महाशुभफल की मही ।।
ताफलै अद्भुत होय फल सो, कौन मुखतें गाय है ।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै अर्घ्यम् ।

प्रत्येकार्घ्यं (सोरठा छन्द)

जो करना उपवास, एक दोय पख मास के ।
सो अनशन तप नाम, मै पूजों जल आदिते ।।

ॐ ह्रीं श्री अनशनतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

भूख थकी लघु खाय, अर्ध तथा दोय ग्रासजी ।
सो ऊनोदर भाय, मै पूजों जल आदितें ।।

ॐ ह्रीं श्री ऊनोदरतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

रोज वस्तु परमान, राख लेय दृढ़ भावतैं ।
सो व्रतसंख्या जान, मैं पूजों जल आदितें ।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतपरिसंख्यानतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

रोज रसन को त्याग,षट रस वा दो एक जी ।
रसपरित्यागव्रत लाग, मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्यागतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

आसनादि दृढ़ भाव, नांहि छले खग देवतैं ।
सो शय्यासन चाव, मै पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्त शय्यासन तपोभावनायै अर्घ्यम् ।

निमित्त कष्ट को लाय, समता भावन जो रहे ।
काय कलेश सु भाय, मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेशतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

ये तप बाह्य बखान, जगतपूज्य फल दें सही ।
महा उच्च गुणजान, ते पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री बाह्यषट्तपोभावनायै अर्घ्यम् ।

लगे दोष शुध होंय, जानें सो गुरु दे सही ।
सो प्रायश्चित जोन, मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्ततपोभावनायै अर्घ्यम् ।

विनय करे गुरु देव,धरम तथा धरमी तनों ।
सो तप विनय स्वमेव, मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

मुनि के चम्पै पाव, जो तन में तप खेद हो ।
सो वैयावृत भाय, मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

निशदिन जिनधुनि पाठ,पूछे सुनि चितवन करे ।
सो स्वाध्याय तप ठाठ,मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्यायतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

तनतें ममत निवार, इक थल तिष्ठै धैर्यसो ।
सो व्युत्सर्ग तप सार, मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

मन वच तन इक ठाम,चिंते वृष शुध भावना ।

ध्यान तिको शुभ नाम, मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यानतपोभावनायै अर्घ्यम् ।

ये तप द्वादश जान, दुविध महा अघके हरा ।

कर्मन वज्र-समान, मैं पूजों जल आदितैं ।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशतपोभावनायै महार्घ्यम् ।

जयमाला

बेसरी (छन्द)

जा, तप कर हरे अघ सारा, होय सकल कर्मनते न्यारा ।
ये तप परभवके सगसाथी, ये तप कर्मदलन को हाथी ।।
तप ही भवदधि नाव बताया, तपबलतैं सबने शिव पाया ।
तप की अग्नि दहै विधिकाठा, तपतें रहे नहीं अरि आठा ।।
तप की चाह करें सुरपति से,तपकों राज तजें नरपति से ।
तप को जजे वो हि तप पावे,तप बिन प्राणी जगत भ्रमावे ।।
तप दे कल्पवृक्ष मन चाया, तप आगम में बन्धु बताया ।।
तप को तपें कीर्ति को पावें, कनक जिसो बन्ही संग थावे ।।
तपको चहे चित्त भर प्रानी, तपको करे तिनै धुनि जानी ।
तपको पूजे सो तप चेरा, तप धारे सो साहिब मेरा ।।
मैं तो तपकी सेव कराऊं, कब तप मिले भावना भाऊं ।
जबलों मिले नहीं तप त्राता, तबलों मै तप पूजों भ्राता ।।
तपका शरण भवान्तर पाऊं,तपको भव भव में सिर नाऊं ।
तप ही तें गुरु देव कहावे, तप जगबन्धु सकल सुख पावे ।।

दोहा- तरुणपने तप जे धरें, तिरें नेम जिन जेम ।
तातें मैं तपकों नमों, वसु द्रव ले धर प्रेम ।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

८- साधुसमाधि भावना पूजा

दोहा

जाविध मुनिको सुख बढ़े, साधु समाधि सुजान ।
सो मैं इत थापन करों, पूजों मन वच आन ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(चौपाई छन्द)

नीर निरमले गंगा तनो, सो मैं कनकझारि ले घनो ।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल मिटे कर्म को दाव ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै जलम् ।

बावन चन्दन नीर घसाय, रतन-जड़ित झारी धर लाय ।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल भव आताप नशाय ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै चन्दनम् ।

अक्षत उज्ज्वल मोती समा, सुभग रकेबी में धर रमा ।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताके फल अक्षयपद पाव ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै अक्षतान् ।

फूल भले सुरतरुके लाय, गूंथी माल भक्ति मन लाय ।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल मदननाश का पाव ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै पुष्पम् ।

बहुबिध रस नैवेद्य बनाय, उज्ज्वल पातर ले हरषाय ।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल क्षुधानास को पाव ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै नैवेद्यम् ।

दीपक मणिमय थाल भराय,मनवचतन करि भक्ति बढ़ाय
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल नाशे मिथ्या दाव ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै दीपम् ।

धूप जु दसविध गन्ध मिलाय,अग्नि विषें खेऊं मनभाय ।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल अष्टकर्म-क्षय जाय ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै धूपम् ।

श्रीफल लौंग बदाम अपार,खारक आदि और फल सार ।
पूजों साधुसमाधी भाव, ताफल सिद्धिथान-फल पाव ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै फलम् ।

जल चन्दन अक्षत सुमलेय,चरु अरु दीप धूप फल जेय ।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल अद्भुत फल उपजाय ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् ।

प्रत्येकार्घ्यं चौपाई छन्द

मूलगूणों में जो अतिचार, लागे जाहि यती कों सार ।
सो पुलाक मुनि सातादाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री पुलाकमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् ।

भोजन मांहि कछू रति लहे, वकुश जाति सो मुनिवर कहे ।
तिनकी सातविधि मन लाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री वकुशमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् ।

मुनी कुशील कहे जुग भेद, इक कषाय प्रति सेवन वेद ।
तिनकी साता विधि मन लाय,साधु समाधि जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री कुशीलमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् ।

उत्तरगुन में कछु अतिचार, सो प्रतिसेवन साधु विचार ।
तिनको सातविधि मन लाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रतिसेवनाकुशीलमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् ।

दशमें गुणथानक लों सही, तबलों मोह उदय अस कही ।
सो कषाय कुशील मुनिराय, साधुसमाधि जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री कषायकुशीलमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् ।

जब जिस मुनिका केवल होय,साधु सनातक कहिये सोय ।

तीन लोक पूजत मन भाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री स्नातकमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् ।

ये पांचों मुनि हैं शिवनाव, सबही नगन जानकर ध्याव ।
शिवनायक दायक शिवभाव, साधुसमाधि जजों सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचप्रकारमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

मुनियानन्द की चाल

भावना साधु-समाधि सो जानिये,
जती तन विषें सुख, होय जिमि ठानिये ।
रोगवश मुनि मन, नांहि थिर होयजी,
रोगविधि नाश ऋषि, ध्यान शुध जीवजी ।।
देव खग नरा पशु, दुष्ट जो दुख करें,
ताहि जो दूर कर, मुनिको सुख भरे ।
जती समभाव शिव-साधना लाय है,
साधू-समाधि सो, भावना भाय है ।।
साधु की भक्ति शिव, शाश्वती देतजी,
साधु साता हरे, जगत फेरा सही,
साधु की भक्ति शुद्ध, ठाम की है मही ।।
साधु सुख बंधैको, काज सो कीजिये,
साधु की सेवतें, सासते जीजिये।
मैं सदा साधुका, भक्ति चाहों सही,
होय मोकों शरण, आगले भव मही ।।
साधुको सुख करे, तिको निज अघ हरे,
साधु की विनयजुत, वेदना क्षय करे ।
साधू समाधि सो, भावना जानिये,

तास फल तीर्थपद, करम को हानिये ।।

दोहा- साधु समाधी भावको, जो भावे-भवि कोय ।
जो साधू को सुख करे, सो तीर्थंकर होय ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

९- वैयावृत्य भावना पूजा

गीता छन्द

मुनिराज को मग चलत मन में, खेद जब उपजे सही ।
वा घने तपके जोर सेती, काय कछु खीनी भही ।।
ता समय दावे पांव सिर कर, भाव या विधि जो करे ।
सो जान वैयावृत्य पूजो, थाप यहां सो अघ हरे ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

नाराच छन्द

निरमलो सुनीरलाय, कनकमारिका धरों,
अति सुगन्ध क्षीरपय, तास मांहि ये करों ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै जलम् ।

नीर मांहि बावनो, सुचन्दना घसाय हों,
धरों सुकनकझारिका, महा सुभक्ति भाय हों ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै चन्दनम् ।

अक्षता अंखड खंड-नाहिं उज्ज्वला सही,
महा सुगन्ध सोहना सुभक्ति भला ज्यों कही ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै अक्षतान् ।

भले सुफूल गन्धधार, देवद्रुम के सही,
करी सु माल पोय गूंथ भाव भक्ति ले ठही ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै पुष्पम् ।

लिये भले सुमोदकादि, तुरतके किये सही,
धरे जु पात्रमांहि भाव, भक्ति ले हिये सही ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै नैवेद्यम् ।

दीपिका बनाय रत्न, अन्धके विनाशिया,
भले सुपात्र माँहि धार, ज्ञान का विकासिया ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै दीपम् ।

लई जु धूप गन्ध सार, भ्रमर को भ्रमावनी,
सुखेय वन्हि मांहि ताहि, भावकी बँधावनी ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै धूपम् ।

श्रीफला बदाम लोंग, आदि जे फला सही,

धरे जु पात्र मांहि भक्त,भावना हिये कही ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै फलम् ।

जला सुगन्ध अक्षता, भले जुपुष्प जानिये,
चरूसु दीप धूप फला, अर्घ्य लेय आनिये ।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है,
फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

प्रत्येकार्घ्यं चौपाई छन्द

गुण छतीस के धरक सोय, संघनाथ आचारज होय ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

गुण पचीस के धारनहार, उपाध्याय शिक्षा-दातार ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

तप जो दुद्धर बहुविध करें,तपसि जात मुनि ते अघ हरे ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री तपस्विवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

गुरुवर से जो पढ़े सुजान,शैक्ष्य जाति सो मुनि पहिचान ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री शैक्ष्यजातिमुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

रोगसहित तन समताभाव,सो गिलान मुनि भवदधि नाव ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री ग्लानजातिमुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

वयकरि बड़े तथा गुण चढ़े,इनका सँघ सो गण मुनि बड़े।

इनको वैयाव्रत् मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री गणवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

दीक्षा दायक स्नातक जोय, ते कुलजाति-मुनी अवलोय ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री कुलवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

मुनि आर्या श्रावक श्राविका,इनको सँघ कहिये अघ थका ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुःप्रकारसंघवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

बहुत दिनों के दीक्षित होय, साधुजाति-मुनि कहिये सोय ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुजातिमुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

ज्ञान तपस्या में पटु भया, सो मनोज्ञ यति पावन थया ।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

ये दस जाति मुनी भवतार,इनकी सेव करे भवपार ।
जो इन वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री दशजतिमुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- वैयावृत सब व्रंतन में, बड़ी वरत मन लाय ।
याकी सेवा जो करे, सो शिव पहुँचे जाय ।।

(बेसरी छन्द)

वैयावृत्य धरम का मूला, वैयाव्रततें अघक्षय थूला ।
वैयाव्रत कीजे गुरु केरा, तातें मिटे जगत का फेरा ।।
वैयावृत महागुण प्यारा, वैयाव्रत भवदधि का तारा ।
वैयव्रत वृष अँग का डेरा, तातें मिटे जगत का फेरा ।।

वैयाव्रत वृषबीज बताया वैयावृत जगबन्धू गाया ।
वैयाव्रत-सा धन नहिं नेरा, तातें मिटे जगत का फेरा ।।
वैयाव्रत आभूषण जाके, जा सम शोभा और न काके ।
वैयाव्रत दुख बन्ही नीरा, तातें मिटे जगत की पीरा ।।
वैयाव्रत जाके उर आवे, सो जिय सब सज्जन मन भावे ।
वैयाव्रत सब दोषविनासी, या फल जगलक्ष्मी हो दासी ।।
वैयाव्रत तें वैर नसावे, वैयावृत जगनेह बढ़ावे ।
वैयाव्रत को जो भवि पासी, ताफल हो जगलक्ष्मी दासी ।।
वैयाव्रत जाके मन मांही, सो जगपूज्य कहो जगठांही ।
वैयाव्रत को मैं सिर नाऊँ, ताके फल जगमें न भ्रमाऊं ।।
वैयाव्रत सब धर्म निशाना, वैयाव्रत तें होय मनाना ।
ताफल लहे हिये में ज्ञाना, तातें वैयाव्रत परधाना ।।
वैयाव्रत तप में परधाना, वैयाव्रततें भवदधि हाना ।
वैयाव्रत शिवराह बतावे, वैयाव्रत को जग जस गावे ।।
वैयावृत्य छिनक अघमारा, वैयाव्रत सन्तन को प्यारा ।
वैयाव्रत सा और न मिन्ता, वैयाव्रत मेटे भवचिन्ता ।।
दोहा-वैयाव्रत में गुन घने, कबलों कहों बनाय ।
तातें मुनितन टहल को, करो सुमन वचकाय ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

१०- अर्हद्भक्ति भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

प्रातिहार्य वसु नान्त चतुष्टय जानिये,
दस जन्मत दस केवल उपजत मानिये ।
चौदह देवा करें सकल छ्यालीस गुन,
इन जुत अर्हत जजों थाप इहां शुद्ध मन ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(चौपाई)

पद्यकुण्ड को निर्मल नीर, कनकझारिका धरिमन धीर ।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन बावन नीर घसाय रतनजड़ित झारी भर लाय ।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत उज्ज्वल खण्ड न कोय,कनकथालमें धर शुध होय
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

देवद्रुम के फूल सुलाय, माला कर सेवों जिन पाय ।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नानारस नैवेद्य करेय, मोदक आदि सुभग कर लेय ।
पूजों मन वच काय लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक रतनमई कर लिया,सुभगथाल भर सनमुख भया ।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप दशांग बनाय सु प्यार, बह्निमध्य जारों मजधार ।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल लोंग बदाम अनार, खारक पुंगीफल ले सार ।

पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चन्दन अक्षत सुमलेय,चरु दीपक सुधूप फल लेय ।
अर्घ्यं बनाय शीश का नाय, पूजों अर्हद्भक्ति सुभाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्येकार्घ्यं (अडिल्ल छन्द)

वृक्ष अशोक सुजान ताहि देखे सही,
रहे नहीं उर शोक होय उर सुख कही ।
याके धारी अर्हद् देव महान हैं,
पूजों अर्हद्भक्ति भाव गुनथान है ।।

ॐ ह्रीं श्री अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

देव पहुप की वृष्टि करें थुति लायके,
नभतें आवे जेम रतनसे भायके ।
मानों ज्योतिष देव भूमि पै आय हैं,
इन जुत देव नमों सुभावना भाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

खिरे दिव्यधुनि सारसु जिनवरकी सही,
प्रातिहार्य यह जान सकल जिय हित मही ।
या जुत अर्हद्देव भक्ति शुभ भावना,
मैं पूजों थुति आन अर्घ्य धर पावना ।।

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

उज्ज्वल जिमि गंगधार रतनमय सारजी,
चँवर सुढोरें देव भक्ति के लारजी ।
प्रातिहार्य यह इन जुत अर्हद्देवजी,
ताकी भक्ति सुभावन करिहों सेवजी ।।

ॐ ह्रीं श्री चामरप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

सिंहासन जिमि मेरु रतन करकै जडया,
प्रातिहार्य जगपूज्य किन्हीं यह ना घडया ।
इनके धारक देव कहे अरिहन्त जी,
तिनके भक्ति सुभावन शिव का पंथजी ।।

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

जिनके तनकी ज्योति-चक्र ताको सही,
ताके देखे लखे पूर्वभव की मही ।
प्रातिहार्य यह इन जुत अर्हद्देव जी,
ताकी भक्ति सुभावन करहों सेवजी ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रभामण्डलप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

देव बजावें नभ में बहुविध बाजना,
तिनकी धुनि चहुंओर महा अघ की हना ।
प्रातिहार्य इन सहित देव अर्हत सही,
इनको भक्ति सुभावन पूजों शुभ मही ।।

ॐ ह्रीं श्री दुन्दुभिप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

छत्र तीन सिर धरें जगतत्रय नाथजी,
प्रातिहार्य जुत भले विराजे तातजी ।
जगत देव अरिहन्त सुगुण के धार हैं,
ताकी भक्ति सुभावन पूजों सार है ।।

ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रयप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

धरै अनन्तो ज्ञान, लखे सब जग तनी,
तीन काल की कथा, सकल जो जो बनी ।
या अतिशयजुत देव जान अरिहन्तजी,
तिनको भक्ति सुभावन सेवन सन्तजी ।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तज्ञानसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

देखे जो त्रयकाल पदारथ सकल ही,
तिनतें छानी नाहिं सकल सुख की मही ।
या गुण धारक देव कहे अरिहन्तजी,
तिनको भक्ति सुभावन सेवत सन्तजी ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तदर्शनसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

सुख अनन्त के धार जगत गुरु सार जी,
अविनाशी दुख नाँहि भवोदधि-पारजी ।
यह गुण अतिशय धार देव अरिहन्त जी,
याको भक्ति सुभावन सेवत सन्तजी ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तसुखसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

बल अनन्त के धार देव अरिहन्त जी,
यह अतिशय इनमाँहि और नहिं अन्तजी ।
इनकी भक्ति सुभावन सुख की दाय है,
सो जन तीरथपद को निश्चय पाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तबलसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

(गीता छन्द)

इन आदि अतिशय और सुखद, लहे तिनमें सारजी ।
सो देव हैं अरिहन्त जग में, भविकजन के तारजी ।।
इन भक्ति भावन जोकरे जिय, लहे जगथुति की मही ।
अरिहन्तभक्ति सुभाव भावे, तें लहें शिव की सही ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

(बेसरी छन्द)

अर्हद्भक्ति भाव जो भावे, सो उत्कृष्ट स्वपद को पावे ।
अहद्देव महा गुण गेहा, देव जजें बहु कर कर नेहा ।।

जनमत जो दस अतिशय पावें, ये गुण और न जन्मत पावें ।
दस अतिशय पावें फिर देवा, केवलज्ञान हुये स्वयमेवा ।।
चौदह अतिशय देव करावें, तिनकी महिमा किम मुख गावें ।
आठ प्रातिहारज फिर होई, ये गुण प्रभू बिन लहे न कोई ।।
अनन्त चतुष्टय मंगलकारी, सो गुण भी जिन के आधारी ।
सब गुण मिल छयालीस धरैया, सो अरिहन्त देव जज भैया ।।
या जिन सेव सकल अघ टारे, जिनकी सेव भवोदधि तारे ।
अर्हत्सेव बिना सुख नांही, मोक्ष मिलेनहिं जिनथुति पांही ।।
या प्रभू की सेवा मैं चाहूं, जिनथुति कर भव सफल कराहूं ।
मो मन वांछा है यह भाई, अर्हद्भक्ति मिले सुखदाई ।।
जबलों मोकों मोक्ष न होई, तुम थुति चहूं और नहिं कोई ।
तातें अरज यही अरिहन्ता, आप भजन काटे जगतन्ता ।।

दोहा- अरिहन्त इन गुणधार जों,भाव भक्ति इन भाय ।
ताफल जिनपद पाय है सो मैं पूजों आय ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

11- आचार्यभक्तिभावना पूजा

चाल जोगीरासा छन्द

द्वादस तप वृष दसविध, षडावश्य शुध भाई ।
पंचाचारज तीन गुप्ति मिल, गुण छत्तीस कहाई ।।
इनके धार अचारज सोई, इनकी भक्ति सुभावा ।
सो इहां थाप जजोंमनवचतन, मेटन भव का दावा ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(चौपाई छन्द)

नीर पदमद्रह को ले सार, मणिमय झारी तें कर धार ।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं मन वच तन सोय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन अगर नीर घस लाय, शुभ पातर में धर उमगाय ।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, मैं पूजों भव-दुखक्षय होय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत उज्ज्वल मोती जेम, सो मैं लेय धार कर प्रेम ।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं अक्षय-फल होय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प सुगन्ध वर्ण अधिकाय, कल्पवृक्ष के ले हरषाय ।
आचार्यभक्ति-भावना साथ, पूजों मैं मनमथक्षय होय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

षट्रस कर नैवेद्य कराय, मोदक आदि महाशुभ भाय ।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों रोग क्षुधा क्षय होय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप रतनमय ज्योति जगाय, कर्पूरादि बहुविध लाय ।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं मिथ्यातम खोय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दसधा धूप मिलाय सुगन्ध, अगनि मांहि खेऊं अघबन्ध ।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं कर्म-क्षय होय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल लोग बदाम अनार, खारक पुंगीफल सुखकार ।
आचार्य-भक्ति भावना, सोय,पूजों मैं शिवफलजिमि होय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जलचन्दन अक्षत सुमसार,चरु दीपक फल धूप सम्हार ।

आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं अघ नाशै होय ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्येकार्घ्यं (चौपाई छन्द)

तप द्वादश दो विध मनलाय, अन्तर बाहर भेद बताय ।
इनको धरे आचारज सोय, ते गुरु जजों अरघतैं जोय ।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशतपसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

इक उपवास मास पख जान,वर्ष आदि उपवास बखान ।
इनको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भावशुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री अनशनतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

भूख थकी लघु खावे सही, अवमौदर्य नाम तप यही ।
इनको करें आचारज सोय,ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री अवमोदर्यतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

नितप्रति वरत करे परमान, सो व्रतसंख्यातप अघहान ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतपरिसंख्यानतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

रोज रसनको त्यागे सही, रसपरित्याग नाम तप यही ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्यागतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

दृढ़ आसनलखके थितिकरा,विविक्तशय्यासन तप वोधरा ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशय्यासनतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तनको कष्ट करे सम रहे, कायकलेश नाम तप यहे ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेशतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

ये षट् बाह्य तनें तप जान, पापबेल हर करबत मान ।
इनको करें आचारज सोय,ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री बाह्यषट्तपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

लगे दोषको जो सुध करे,सो प्रायश्चिततप अघवन हरे ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्ततपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

आप थकी गुरु का सत्कार,सोही विनय नाम तप सार ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

मुनि को खेद निवारन काज, हाथ पाँव चम्पैं गुरु राज ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

निशदिन जिनवानी अभ्यास, सो स्वाध्याय महातपवास ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्यायतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

काय ममत परिहार कराय, सो व्युत्सर्ग नाम तप भाय ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

थिर मन आर्तरोद्र परिहार,सो ही ध्यान नाम तप भाय ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यानतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

येतप द्वादश शिवमग जान,तप के करत होय उर ज्ञान ।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजोंभाव शुभ होय ।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

(बेसरी छन्द)

सब जीवन ते समता भावा, उत्तम धर्म सु शिवमग नावा ।
याको आचारज तिन भावे, तिनपद जजोंभाव शुभ ध्यावे ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

मानभाव सबही निरवारा, मार्दव धर्म जान यह प्यारा ।
याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

कुटिलाई जिनके उर नाँही, आर्जवभाव धरमहित ठाँही ।
याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमार्जवधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

प्राण जांय पै असत न भाखे,सत्यधरम अपनो दिढ़ राखे ।
याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

परकी वस्तु चाह नहिं ताके, शौचभाव निर्मल उर जाके ।
याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

इन्द्रिय कसे जीवको पाले, सो संयमवृष अघको टाले ।
याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

द्वादशतप दोविध मन लाय, सो तपधर्म स्वर्ग शिवदाय ।
याको करे आचारज सोही, तिनपद जजों रहोंनहिं मोही ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपौधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तन धनआदि वस्तु पर जेती, ममत नहीं दीसे तन सेती ।
यो तप त्याग आचारज धारे,तिनपद जजों फलै अघ हारे ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

दो विधपरिग्रहत्यागसु नगना, सोहि अकिंचनधर्मसु मगना ।
याको आचारज उर लावे, तिनपद जजों फलैं शिव पावे ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

मनवचतन नारी को त्यागे, सो वृष ब्रह्मचर्य भय भागे ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजोंफलैं शिव होई ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

ये दशधर्म कर्मक्षयकारी, इनतें जाय पापमय हारी ।
आचारज इस वृषको धारे, तिनपद जजों पापक्षय कारे ।।

ॐ ह्रीं श्री दशधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

आरत रोद्र भाव का त्यागे, तब सामायिक में मन लागे ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलैसुख होई ।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिकावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

थुति अरिहन्तसिद्ध कीकीजे,सो स्तवना-वश्यक गिन लीजे ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों भले सुख होई ।।

ॐ ह्रीं श्री स्तवनावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

बन्दन नमस्कार नति कीजे, अरिहन्तन को शीश नमीजे ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई ।।

ॐ ह्रीं श्री बंदनावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

लगे दोषको जो निरवारे, प्रतिक्रमण आवश्यक धारे ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमणावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

मन वच काय पाप विधि त्यागे, प्रत्याख्यानावश्यक जागे ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों रहों नहिं मोही ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तनको मोह जबै सब त्यागो, कायोत्सगविश्यक जागो ।
याको करे आचारज सोही, इन पूजा फल रहे न मोही ।।

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्गावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

ये षट् आवशि करे मुनिन्दा, सो जगनाथ हरे भवफन्दा ।
आचारज इन गुन के धारी, तिनपद धोक अरघ दे भारी ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

(चौपाई छन्द)

मनकपि ध्यान रज्जु बँधवाय, पापविचार विषें नहिं जाय ।
आचारज मन इमि वश करे,तिनपद जजों फलै अघ हरे ।।

ॐ ह्रीं श्री मनोगुप्तिसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

वचन कहे जिनधुनि अनुसार, वचनगुप्ति जानो जग तार ।
याको आचारज प्रतिपाले, तिनपद जजों फलै अघ टाले ।।

ॐ ह्रीं श्री वचनगुप्तिसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

काय थकी अघकाज न करे, ध्यानाध्ययन मांहि संचरे ।
कायगुप्ति आचारज ध्याय, तिनपद जजों सुभग फलदाय ।।

ॐ ह्रीं श्री कायगुप्तिसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

ये हीतीन गुप्ति सुखकार, मनवचतन अघ रोनक हार ।
इनको करे अचारज सोय, तिनके पद पूजों मद खोय ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिगुप्तिसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

(बेसरी छन्द)

ज्ञानाचार ज्ञान सुध आने, सकल पदारथ भेद बखाने ।
याको करे अचारज सोई, तिनपद जजों फलै सुध सोई ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

दर्शनाचार दृष्टि सुध लावे, दोष पच्चीस तहां नहिं पावे ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलै सुध होई ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनाचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तेरह विधशुभ चारित धारे, सहे परीषह आप न हारे ।
याको करे अचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई ।।

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तप बहु करे खेद नहिं आने,तपाचार सो अघगिरि भाने ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई ।।

ॐ ह्रीं तपश्चरणाचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

वीर्याचार शक्ति को फोरे, शिवमग लहे कर्म अरि तोरे ।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई ।।

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

अडिल्ल छन्द

द्वादश तप दश धर्म षडावशि जानिये,
तीन गुप्ति आचार पंच सरधानिये ।
ये छत्तीस गुन धरें आचारज होय जी,
तिनपद पूजों अर्घ्यलेय मद खोय जी ।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुणसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

मुनियानन्द की चाल

संघ के नाथ आचार्य सो होय हैं,
तिन विषे मुख्य गुण तीस षट् सोय हैं ।
और गुण घने तिन, माहि शुभ पाईये,
इन चरण-भक्तिफल, तीर्थपद पाईये ।।
मति श्रुत अवधि इन आदि होय ज्ञान जी,
कहे भव्य जीवको भवान्तर जान जी ।
मन विषें भक्ति के होय सो पाइये,
इन चरणभक्तिफल, तीर्थपद पाइये ।।
कहे उपदेश जिस, जीव साता लहे,
सुरग शिव राह निज,जानआनि को कहे ।।
बिना कारण सकल, सत्त्वबन्धु पाइये,
इन चरणभक्ति फल तीर्थपद पाइये ।।
सकल श्रुति जान अभि-मान ताके नहीं,
फुरी बहु ऋद्धि गुण थूल तिन उर मही ।

तीन जगपूज्य बिनराग सम पाइये,
इन चरण भक्तिफल, तीर्थपद पाइये ।
दोहा- इन्हें आदि आचार्य में, गुण पावन है सार ।
जे भवि इनपद थुति करें, ते उतरें भवपार ।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

१२- बहुश्रुतभक्ति भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

एकादश अँग पूरब चौदह धारजी,
शिष्यनको जु पढ़ावें तप के भारजी ।
ऐसे गुणके धार उपाध्याय सारजी,
पूजों इन पद थापन कर थुति धारजी ।।
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(मुनियानन्द की चाल)

नीर शुभ निर्मलो, गंगको लाइये,
कनकझारी भरों, भली थुति गाइये ।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी,
पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी ।।
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर घसि बावनो, चन्दना सारजी,
भक्ति कर कनक के पात्रमधि धारजी । तीर्थपद.
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षता समुज्ज्वला खण्ड बिन सारजी,
मुक्तिका-समान शुभ पात्र में धार जी । तीर्थपद.
ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूल सुरवृक्ष के, गन्ध शुभ रंगमई,
गूंथकर मालको हाथ अपने लई । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुभग रस लेय, नैवेद्य कर लाइये,
पात्र धर सुभग मुख,भक्तिगुण गाइये । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप मणिमय सुभय ज्योति परकाशिका,
धार शुभपात्र कर, आरती दासिका । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप दसविध करी, गन्ध बहु धारजी,
अग्नि मधि खेवने, चले सुखकारजी । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफला लोंग शुभ, खारका जानिये,
आदि इन फला ले भक्तिचित ठानिये । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गन्ध तन्दुला, फूल नैवेद्य-जी,
दीप शुभ धूप फल,अर्घ्य निरखेद जी । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्येकार्घ्यं मुनियानन्द की चाल

अंग एकादशा, पूर्व चौदह सही,
इन सबै जान बहु-श्रुत गुणकी मही ।
जजे इनको तिको, इन पदी पायजी,
मैं जजों बहुश्रुत, भक्ति मनलायजी ।।

ॐ ह्रीं एकादशांग चतुर्दशपूर्वगुणधारकायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

जतनतें चालिये, जतन उठ बैठजी,
जतनतें काज सब, कहे गुण पैठजी ।

अंग आचार मधि, जतनतें अघ नहीं,
या धरा मुनिबहु-श्रुत जजों शुभ मही ।।

ॐ ह्रीं आचारांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

विनयविधि और अध्ययन श्रुत को सही,
आप मत और मत, भेद ता मधि कही ।
सूत्रकृतांग अंग के, माँही इमि जानिये,
या धरा मुनिबहु-श्रुत थुति आनिये ।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तहां जिय थान इक, आदि उन्नीस जी,
षट् अधिक चार शत् कहे जगदीश जी ।
यह स्थानासु अंग, मांहि सब इमि कही,
या धरा मुनिबहु-श्रुत जजों शुभ मही ।।

ॐ ह्रीं स्थानांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

काल द्रव्य क्षेत्र इन, आदि सम गाइये,
सकल सम वस्तु जो, जगत में पाइये ।
सकल समवाय अंग, माँहि या विधि कही,
या धरा मुनिबहु-श्रुत जजों शुभ मही ।।

ॐ ह्रीं समवायांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

जीव अस्ती तथा, नास्ती है सही,
एकवा अनेक जिय,आदि सब विधि कही ।
अंग व्याख्या प्रज्ञप्ति, नाम इमि चयो,
या धरा मुनिबहुश्रुतपदवि जजि नयो ।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तीर्थ जिनदेव के, कहे अतिशय सही,
दिव्यधुनि समोसर्ण, आदि शोभा कही ।
अंग ज्ञातृकथा मांहि, इमि सबही कहे,

या धरा मुनि बहु-श्रुत पदवि जजि लहे ।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथंगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

प्रतिमाभेद ग्या-रह तहां वरणए,
और आचार श्रा-वक तनै बहु चए ।
उपास काध्ययन सो, अंग या विधि कही ।
या धरा मुनिबहु-श्रुत जजों सुख मही ।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

एक इक तीर्थ समै, ये जु दस दस भये,
आयु अन्त काय तजि, ज्ञान ले शिव गये ।
अन्तःकृतांगदशम के, माँहिइनविधि कही,
या धरा मुनि बहु-श्रुत जजों शुभ मही ।।

ॐ ह्रीं अन्तःकृतदशांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

एक इक जिन समै, भये दस दस मुनी,
अन्त काय तजि, पदवि अहमिंद ठनी ।
यह अनुत्तरोपपाद, दशमअंग इमि कही,
या धरा मुनि बहु-श्रुत जजों थुति ठही ।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादकदशांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

गई वस्तु तथा मूठि-तनी वस्तु जानजी,
और होनहार विधि, लिखे सब आन जी ।
प्रश्न व्याकर्ण अंग, धार उत्तर करे,
या धरा मुनि बहु-श्रुत जजों अघ हरे ।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

शुभाशुभ कर्म का, फल तिको जानिये,
तीव्र मन्द जैसे अनु-भाग रस आनिये ।
सूत्र सु विपाक अंग, मांहि इमि भास है,
या धरा मुनि बहु-श्रुत थुति राशि है ।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

अंग आचार इन, आदि ग्यारह सही,
महाश्रुतज्ञान यह, ऋद्धि बहु इस मही ।
तीन जग गुरु जग, नाथ मुनि सोयजी,
अंग सब धार बहु-श्रुत जजों जोय जी ।।

ॐ ह्रीं एकादशांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

वस्तु उत्पाद व्यय, ध्रौव्य लक्षण सही,
द्रव्य पर्याय गुण, साधना-दिक कही ।
पूर्व उत्पाद सो, तास में इमि चयो,
या धरा बहुश्रुत, पाय मैं सिर नयो ।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तास मैं सुनय वा, कुनय व्याख्यान जी,
द्रव्य क्षेत्रर तने भाव को मान जी ।
कथन इन आदि अग्राणि पूर्वकथ्यो,
या धरा बहुश्रुत, पाय जजि धनि भयो ।।

ॐ ह्रीं अग्रायणीपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

आत्म वीरज तथा, काल वीरज सही,
भाव तप वीर्य वा, क्षेत्र वीरज कही ।
वीर्य अनुवाद पूरब, विषें इमि कह्यो,
या धरा बहुश्रुत, पाय जजि धनि भयो ।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

द्रव्य अस्ती तथा नास्ती इमि कह्यो,
भावद्रव्य क्षेत्र काल आदि तहां सब चयो ।
पूर्व अस्ति नास्ति में, कहीयों विधि सही,
या धरा बहुश्रुत, पाय जजि शुभ मही ।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

ज्ञान वसु मति श्रुत, आदि जे फल कहे,
और सब ज्ञान के, भेद वर्णन ठहे ।
ज्ञानपरवाद पूरब, तिको जानिये,
या धरा बहुश्रुत, जजों थुति ठानिये ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

वचनके भेद सत, असत अनुभय उभय,
समिति गुप्ती तने, भाव-भाखे समय ।
सत्यपरवाद पूरब विषें सब कहे,
या धरा बहुश्रुत, जजों मन वच ठये ।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

जीव निश्चय नयें, और व्यवहार है,
जीव अस्तित्व विधि, कथन अनुसार है ।
पूर्व यह आत्मपर-वाद में सब कहो,
या धरा बहुश्रुत, जजों मन वच सही ।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

कर्मबन्ध उदय सत, मूलकर्म जानिये,
प्रकृति उत्तर तनें, भेद बहु मानिये ।
कर्म परवाद पूरब विषें इमि कही,
या धरा बहुश्रुत, जजों मन वच सही ।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

या विषें समिति व्रत, तप निदेशा सही,
सकल अघ त्याग की, रीति तामें कही ।
यह प्रत्याख्यान पूरब सबै वरनयो,
या धरा बहुश्रुत, जजों सब सँग नयो ।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

या विषें तप विद्या, साधने मन्त्र जी,
विद्या सामर्थ्य फल, और विधि अन्यजी ।
पूर्व विद्यानुवादा विषें इमि कही,
या धरा बहुश्रुत जजों मन वच सही ।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तीर्थ जिन जन्म कल्याण आदिक सही,
भानु शशि जोतिषी, और महिमा कही ।
पूर्व कल्याण इस, बाद में इमि चयो,
या धरा बहुश्रुत जजों मन वच सही ।।

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

वैद्य ज्योतिष कथन, तासमें पाइये,
विषो विष नाशनै, मन्त्र जहाँ गाइये ।
पूर्व प्राणानुवाद, मैं यह सब कही,
या धरा बहुश्रुत, जजों मन वच सही ।।

ॐ ह्रीं प्राणनुवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

छन्द अलंकार सँगीत नृत तहां कहे,
तिया चौंसठ कला, शिल्पविधि सब कहे ।
पूर्व किरिया सु विशाल में इमि कही,
या धरा बहुश्रुत, जजों मन तन सही ।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

कथन त्रयलोक का, मोक्ष साधन सही,
गिनति जानन करण, सूत्रविधि सब कही ।
पूर्व त्रयलोकबिन्दु मांहि यह सब कह्यो,
या धरा बहुश्रुत, पूज मैं धनि भयो ।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकबिन्दुपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

अंग ग्यारह भले, पूर्व चौदह सही,
भेद इनका लहे, गुरु ते हम कही ।
पढ़े निजपाठ औरन थकी कहतजी,
जजों ते बहुश्रुत, ज्ञान गुण सहत जी ।।

ॐ ह्रीं एकादशांगचतुर्दशपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

मुनयानन्द की चाल

बहुश्रुत जगतगुरु, सकल गुणधार है,
श्रुतसागरतनों, लहे प्रभु पार है ।
राग बिन जगत के, बन्धु सम हितकारा,
नमों तिन चरण फल, होय मो अघहरा ।।
आप पढ़ि शिष्यन को, देत उपदेश जी,
तासको धार भव्य लहे मुनिभेष जी ।
ध्यानाध्ययन मांहि, निश-दिना सुखमय खरा,
नमोंतिन चरण फल, होय मो अघ-हरा ।।
करै बहुभांति तप, ऋद्धि तिनपै घनी,
पापकी बेल जड़मूलतें सब हनी ।
करत दर्शन लहे, पुण्य बड़ शुभधरा,
नमों तिन चरणफल, होय मो अघ-हरा ।
नाम गुरु का लिये, ठाम नीको लहे,
ज्ञान उर उपजे वा, पाप अरिको दहे ।
बहुश्रुत भक्ति तें भरम भागे खरा,
नमों तिन चरण फल होय मो अघ हरा ।।
चहों भव भव विषें, भक्ति बहु शास्त्रकी,
और नहिं चाह मोहि, राज सब भरत की ।

अरज यह मो तनी, भक्ति दे जग गुरा,
नमो तिन चरण फल, होय मो अघ-हरा ।।
दोहा- भक्ति उपाध्या की किये, भव उपाधि नश जाँय ।
मरण मिटे जनमें नहीं, इमि लख पूजत पांय ।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

१३- प्रवचनभक्ति भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

जिनकी वाणी सिद्धान्त अग ग्यारह सही,
चौदह पूरब और प्रकीर्णक धुनि कही ।
षटकायिक जिय राखन को जननी-समा,
सो इहां थापि जजों, काय मनवचरमा ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

चौपाई छन्द

पदमकुण्ड को निर्मल नीर, रतनजड़ित झारी धरि धीर ।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताते जनम मरण नहिं होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन बावनघस जल डारि, कनकपियाले धर हित धार ।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताफल भवतप कबहुँ न होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत मुक्ताफलसम जान, पातर मैं धरि निजकर आन ।
पूजों प्रवचनजिनधुनि सोय, ताफल अखयथान शिव होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूलकनक सुरतरु के लाय, माल करी मनमें हरषाय ।
पूजों प्रवचनजिनधुनि सोय, ताफल कामनाश सब होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नानारस नैवेद्य बनाय, सुभग पात्र में मोदक लाय ।
पूजों प्रवचनजिनधुनि सोय, ताके फलें क्षुधा नहिं होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

रतनदीप तमनाशक जान, कनकथाल भर आरति ठान ।
पूजों प्रवचन जिनधुनिसोय, ताफल मिथ्यातमक्षय होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप करीदसविध गंध लाय, अगनि मांहि खेऊं हरषाय ।
पूजों प्रवचनजिनधुनि सोय, ताफल अष्टकरम क्षय होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल खारक लोंग बदाम, पूंगीफल आदिक शुभ नाम ।
पूजों प्रवचनजिनधुनि सोय, ताके फलशिव को पद होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नीरगन्ध तन्दुल सुम जान,चरु दीपक फल धूप बखान ।
पूजों प्रवचन अर्घ्य सँजोय, ताफल आवागमन न होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्येकार्घ्यं (चौपाई छन्द)

एकादश अंग जिनकी वान, तामधि नानाभेद बखान ।
ये सब संशय नाशनहार, पूजों प्रवचन है सुखकार ।।

ॐ ह्रीं एकादशांगसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

चौदह पूरबजिन धुनि सही, मिथ्यातम-नाशन-रवि कही ।
ये सब संशय-नाशनहार पूजों प्रवचन है सुखकार ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

प्रकीर्णक अंगे प्रवचन सार, ताके चौदह भेद निहार ।
ये सब संशय-तम-हर सूर, सो मैं जजों भाव भरपूर ।।

ॐ ह्रीं प्रकीर्णकांगसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

सब जीवन तें समताभाव, तप संजम करने अति चाव ।
सो सामायिक प्रवचन जान, पूजों मैं वसुद्रव अर्घ्य आन ।।

ॐ ह्रीं सामायिकसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

तामें चौबिस जिन कल्यान, और स्तवन तिनों का जान ।
चदुविंश स्तवन अंग सोय, सो मैं जजों भाव शुध होय ।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवनसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

जिनप्रतिमा जिननाम सुभाय, तीर्थंकर इनको सिरनाय ।
वन्दन प्रवचन में इमि कही, सो मैं जजों शुद्ध चित सही ।।

ॐ ह्रीं वन्दनासहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

किये दोष यातें क्षय होय, जामें ऐसो कथन जु होय ।
सो प्रतिक्रमण प्रवचन जान, सो मैं जजों भक्ति उर आन ।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

देव धर्म गुरु विनय बखान, और विनय विधि बहुतीजान ।
विनयक अँगमें यह विधि कही,सो मैं जजों अरघ ले सही ।।

ॐ ह्रीं वैनयिकसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

पंच परमेष्ठी थुति विधि तहां, नमस्कार परदक्षिण जहां ।
कृतीकर्म में यों विधि कही, सो मैं जजों भाव शुभ मही ।।

ॐ ह्रीं कृतिकर्मसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

मुनिअहारइमि करे इमि चलै,जती अचार और तहां मिलै ।
दशवैकालिक इस विधि कही,सो मैं जजों भाव शुभ ठही ।।

ॐ ह्रीं दशर्वकालिकसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

परिषह सहन सहन उपसर्ग, इनका फल परसन के वर्ग ।
उत्तराध्ययन विषें इमि कही, सो मैं जजों भाव शुध मही ।।

ॐ ह्रीं उत्तराध्ययनसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

यह मुनि योग्य आचरणजोय, भये अयोग्य दँड ले सोय ।
कल्पविहार अँग इमि कही, ते मै जजों भाव शुध मही ।।

ॐ ह्रीं कल्पविहारसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

या द्रव्य खेतर कालर भाव,मुनि की क्रिया योग्य यह ठाव ।
कल्पाकल्प अंग इम कही, ते अंग जजों शुद्ध चित सही ।।

ॐ ह्रीं कल्पाकल्पसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

जिनकल्पी थिरकल्पी साध, और महा नर क्रिया समाध ।
महाकल्प में या विधि कहो, ते अँग प्रवचन पूजों सही ।।

ॐ ह्रीं महाकल्पसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

चार प्रकार देव किम होय, तहां उपजन की तपविधि सोय ।
पूजा दान आदि तँह जान, सो पुँडरीक जजों अँग मान ।।

ॐ ह्रीं पुण्डरीकांगबाह्यसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

इन्द्र अहमिंद्र होनको सही, तपश्चरण आदिक विधि कही ।
महापुण्डरीक अंग सो जान, सो मैं जजों अर्घ्य शुभ आन ।।

ॐ ह्रीं महापुण्डरीकांगबाह्यसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

क्रिया प्रमाद थकी अघ सोय, ताके नाश होन विधि जोय ।
सो निषद्यका अँग में कही, सो मैं जजों भाव शुध सही ।।

ॐ ह्रीं निषद्यकांगबाह्यसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

अँग पूर्व प्रकीर्णक भंग, जिन मुखतें उपजे सुभरंग ।
सो सिद्धान्त जगत हितकार, सो मैं जजों दयो दधिसार ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोत्पन्नप्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- यह जिनवाणी जगत हित, करुणासागर जान ।
षट्कायिक रक्षक जननि, सो जजि हों सुखदान ।।

(बेसरी छन्द)

यह जिनवानी शिवसुखदानी, लगे पाप नाशे मुनि मानी ।
यातें सुरग मोक्षको पावे, तातें भवि हम शीश नमावें ।।

या बिन उरके पट नहिं खूटे, या बिन कर्मबन्ध नहिं छूटे ।
यह भवदधि को नाव बतावें, तातें भवि हम शीश नमावें ।।
याही तें मुनि शिवमग पाया, या बिन आतम जग भरमाया ।
सफलभवा जब जिनधुनि पावें, तातें भवि हम शीश नमावें ।।
यह जिनवानि भुवनत्रय दीवा, यातें निजपद लखे सुजीवा ।
दयानिधान जगत जस गावें, तातें भवि हम शीश नमावें ।।
हरि सुर याको पूजें भाई, याफल सुरगलक्ष्मी को पाई ।
गुणधरमुनि याकोनित ध्यावें, तातें भवि हम शीश नमावें ।।

दोहा- जिनवाणी गुण कथन को, समरथ नाहीं कोय ।
ता ध्याये जिनपद मिले, इमि लखि पूजों सोय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

१४- षट् आवश्यक भावना पूजा

गीता छन्द

सामायिक स्तवन प्रतिक्रम, बन्दना मन लाइये ।
प्रत्याख्यान कायोत्सर्ग ले, षडावश्यक गाइये ।।
ये करें मुनिवर रोज निहचें अवशिकें बिसरें नहीं ।
इहां थापि षडावश्यक शुभावन, पूजहों मन वच ठही ।।

ॐ ह्रीं श्री षट्आवश्यकभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(पद्धरि छन्द)

गंगाजल निर्मल गन्धधार, धरि रतनझारि लायो विचार ।
मनवचनकाय शुभभक्ति लाय, पूजों षट् आवशिशीश नाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन घसि निर्मलनीर डार, धर सुभगपात्र में थुति उचार ।
जिनको षद या फल होय आय,पूजों षट् आवशि शीश नाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय अखण्ड उज्ज्वल सुगन्ध, मुक्ताफल मानो धरे स्कन्ध ।
धर भक्तिभाव ले हाथ आय, पूजों षट् आवशि शीश नाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुम कल्पबेल के गन्ध धार, नाना रँगधारी शुभ अकार ।
तिनकी कर माला भक्ति लाय,पूजों षट् आवशि शीश नाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नाना रसजुत नैवेद्य जान, कर मोदक शुभ आचार ठान ।
धरि सुभग थाल उरभक्ति भाय,पूजों षट् आवशि शीशनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

मणिदीप ज्योति मय तम विनाश,भरथाल आरती थुति प्रकाश ।
अंग सकल नाय मन शुद्ध लाय,पूजों षट् आवशि शीश नाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

ले अगर आदि दशगन्ध सोय,कर इकठी धूप बनाय जोय ।
खेऊं अगनी में भक्ति लाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल बदाम खारक अनूप, पूंगीफल पिस्ता लोंग रूप ।
धर भले पात्र में भक्ति लाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चन्दन तन्दुल पुष्पसार, चरु दीप धूप फल अरघ धार ।
धर भक्तिभाव ले आय पाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्येकार्घ्यं चौपाई छन्द

सब जीवनतें समता-भाव, तप संयम करने को चाव ।
सो सामायिक आवशि जोय, मैं पूजों वसुद्रव्य सँजोय ।।

ॐ ह्रीं सामायिकसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् ।

चौबीसों जिनकी थुति होय, स्तवनावश्यक कहिये सोय ।
ताको वसुद्रव अर्घ्य बनाय, पूजाविधि ठाने मन लाय ।।

ॐ ह्रीं स्तवसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् ।

सो जिनवर को शीशनमाय, पूजाविधि ठाने मन लाय ।
वँदनावश्यक कहिये सोय, ताको पूजों अर्घ्य सँजोय ।।

ॐ ह्रीं वन्दनासहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् ।

जो प्रमादतें लागे दोष, ताको दूर करन को पोष ।
सो प्रतिक्रमणावश्यक जान, पूजों अर्घ्य धार सो आन ।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् ।

पापक्रिया को त्याग सुजान, वरते सावधान बुधिमान ।
प्रत्याख्यानावश्यक जोय, ताको मैं पूजों मद खोय ।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् ।

मन वचतन का त्यागीहोय, वरते ममतरहित चित सोय ।
कायोत्सर्गावश्यक जान, याको मैं पूजों मन आन ।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् ।

ये षट् आवश्यक मुनि करे, इनविन वरत दोष को धरे ।
तातें अवश्य करे मुनिनाथ,मैं यह भाव जजों सिर हाथ ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

(बेसरी छन्द)

ये षट् आवश्यक मुनिवृष राखें, खेत बाड़ ज्यों रक्षा भाखें ।
अवश्य कर तातें सुनि भाई, नामावश्यक जिनधुनि गाई ।।
आवश्यक ये जजें सु प्रानी, सो अवश्य शिव लहेमहानी ।
तीर्थंकर पद याते पावे, और नाहिं जग में भरमावे ।।
आवश्यक हरता अघ-धारा, आवश्यक ते कर्म कुठारा ।
आवश्यक मुनिवृष जड़ जानो, आवश्यक मुनिमित्र बखानो ।।

आवश्यक भावन जो भावे, सो भवि अवशि अमर हो जावे ।
आवशि ध्यान आवश्यक धारे सो प्राणो कर्मारी मारे ।।
आवशि तें आरति नश जावे, आवशि तें आतमहित पावे ।
हरे पाप वृषको उमगाया, तातें आवशि भाव सुभाया ।।
आवशि समताभाव बढ़ावे, आवशि तपसंजम समझावे ।
आवशि जिनथुतिजाननहारा, आवशि प्रभुपूजाविधिसारा ।।
आवशि लगे पाप को धोवे, आवशि पापत्यागविधिजोवे ।
आवशि तनतें नेह तुड़ावे, सो आवशि मैं जजों सुभावे ।।

दोहा- आवशिभाव अनूप धर्म, भावे जो सुधभाव ।
लहे तीर्थपद सो भविक. आवशि भाव कराव ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

१५- मार्गप्रभावना भावना पूजा

स्थापना (अडिल्ल छन्द)

मन वच तन धन लाय बुद्धि तप भावतें,
धर्म उद्योत करे भवि अति ही चावतें ।
मार्गप्रभावना भाव तीर्थपद दाय जी,
सो मैं थापन थाप जजों थुति लाय जी ।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक मुनियानान्द की चाल

क्षीरदधि तनों ले, नीर निरमल सही,
कनकझारी धरयो, महापुण्य की मही ।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी,
पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी ।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दना नीर घसि गन्धमय सारजी,
सुभग पातर विषें, जुगत तै धार जी ।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी,
पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी ।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षता खण्ड-बीन नखशिख सही,
उज्ज्वला कली जिम,जाय कैसी कही । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूल सुरवृक्ष के, गन्धमय सार जी,
रंग शुभ लेयकर,माल थुति धार जी । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

लय नैवेद्य रस, धार सुखकार जी,
मोदकादिक सुभग, थाल में धार जी । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप तम के हरा, रतन के लाय जी,
थाल भर आरती,भक्ति बहु भाय जी । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप शुभ गन्ध की, धार मन लायके,
अग्नि मैं खेय हों,भक्ति मुख गायके । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफला लोंग पूंगीफला आन जी,
और फल सुभग ले,पात्रमें ठान जी । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गन्ध अक्षता, पहुप चरु लाइये,
दीप फल धूप कर, अर्घ्यगुन गाइये । तीर्थपद.

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्येकार्घ्यं मुनियानन्द की चाल

द्रव्य बहु खरचजिन, मन्दिर बनवाय हैं,
तीर्थ सिद्ध क्षेत्र को, संघ चलवाय हैं ।
दीन का दान देय, दया मन लायजी,
सो जजों मार्गपर-भावना भायजी ।।

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यतःमार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

आप लखते नही, धर्म घाते सही,
धर्म के कारणें, मरण माड़े मही ।
तास लख जोर बहु, सकल कम्पे जना,
जोरतें धर्म पर-भाव पूजों घना ।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

हुकुम ताके थकी, सकल कम्पै मही,
देख धरमी नहीं, धर्म लंधे कहीं ।
धर्मधोरी महा, धर्म का धारजी,
जजों यह भाव पर-भावना सार जी ।

ॐ ह्रीं श्री आज्ञातः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

देख तप तास सब, चकित मन में रहे,
देहतें ममत तज, वास दुद्धर लहे ।
नाँहि मोही तबै, काज ऐसो बनें,
तप थकी मार्ग पर-भाव इह जज नमें ।।

ॐ ह्रीं श्री तपस्तः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

मन सदा धर्म पर-भावना चाहि है,
इन्द्र चक्री जिसा, उछल मन भाय है ।
देख सुन धर्म उद्योत सुख पायजी,
मन थको धर्म पर-भाव जज याहिजी ।।

ॐ ह्रीं श्री मनस्तः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

देख तिस ज्ञान जग, महा चक्रित रहे,
ज्ञान केवल थकी, कालत्रय की कहे ।
ज्ञान ऐसो नहीं, और मत पायजी,
ज्ञान कर धर्म पर-भाव जज भायजी ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानतः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

देख तिस दान को, सकल अचरज लहे,
दान ऐसो नहीं, और मत में कहे ।
या जिसो धर्म नहिं, और जग इमि कहे,
धर्म पर-भाव जज, दान कर शुभ लहे ।।

ॐ ह्रीं श्री दानतः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

न्याय कर धर्म जग, माँहि परगट करे,
धर्म पर-भावना, भाव जजि अघ हरे ।।
देख भक्ति तासकी सबैं जन धनि कहे,
या समाभक्ति जग-माँहि नहिं अनि रहे ।

ॐ ह्रीं श्री न्यायतः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

भक्ति कर धर्म परगट करे सोय जी,
मार्ग पर-भावना भक्ति जजि जोय जी ।
देख समभाव कहें, धन्य है ताहि जी,
धर्म यासो नहीं, और जग ठांहि जी ।।

ॐ ह्रीं श्री भक्तितः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

भाव समता थकी, धर्म परगट करे,
मार्ग पर-भाव जजि सकल अघ को हरे ।।

ॐ ह्रीं श्री समताभावतः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

और बहु धर्म के अँग हैं सार जी,
तिन थकी धर्म पर-गट करे भार जी ।
काज सो ही कर, धर्ममहिमा लहे,

सो जजों धर्म पर-भावना अघ दहे ।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- वृष विकास जासों लहे, सो ही करिये काज ।
ताफल तीर्थंकर बने, लहे निरंजन राज ।।

(बेसरी छन्द)

वृष प्रभावना जो भवि ठाने, सो जगके सब पातक हाने ।
धर्म प्रकाशन करो महानो, सो प्रभावना अंग बखानो ।।
दान देय मन वांछित सोई, कल्पवृक्ष सम पूरे जोई ।
ताकर धर्मोद्योत करावे, सो प्रभावना अंग कहावे ।।
संघ चलावे तीरथ ठांही, मनवांछित द्रव खर्च करांही ।
विनयसहित उत्सव बहु आने, सो प्रभावना अंग बखाने ।।
जिनमन्दिरजिनबिम्ब करावे, फेर प्रतिष्ठा कर हरषावे ।
कर उछाह धर्म परभावा, सो प्रभावना अंग सुनावा ।।
तप बहु करे उग्र सुख पावे, सिंहनिःक्रीडित आदि करावे ।
भारीउग्र महातप आने, सो प्रभावना अंग जु ठाने ।।
मतिश्रुत अवधिज्ञानतें भाई, मनपरजय आदि सुखदाई ।
इनतें जगके संशय खोवे, सो प्रभावना अंगमयहोवे ।।

दोहा- परभावन के भेद बहु, करे भव्य मन सोय ।
ताको जिनपद होत है, अधिक कहे क्या कोय ।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै पूर्णार्घ्यम् ।

१६- प्रवचनवात्सल्य भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

तिनकी वानी प्रवचन जग में सार है,
करुणासागर सोइ करत भव पार है ।

याको वत्सल भाव प्रीति मन लाय है,
सो इहां प्रवचन थाप भावना भाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावना ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

(बेसरी छन्द)

गंगानदी की निर्मल नीरा, उज्ज्वल सुभगगन्ध ज्यों क्षीरा ।
भले पात्र में धर थुति गाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन वावन पावन कारी, घसिहों नीर डार हितधारी ।
कंचनझारी धर मन लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत उज्ज्वल बीन अनूपा,नखशिख जुत मुक्ताफल रूपा।
भले पात्र में धर कर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूल गन्ध शुभ रँग के धरी, सुरतरु पुष्प भावना कारी ।
गूँथ माल अपने कर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

षटरस जुत नैवेद्य बनाई, मोदक भले बनाकर लाई ।
नीके पात्र मांहि धर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक रतन ज्योति परकासो, तमनाशक निधूम सुवासी ।
कनक थाल भर आरति लाई, पूजों प्रवचन वत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप अगर चन्दन की ठानी,दसविध गन्ध और धरआनी ।
अगनि मांहि मैं खेवन लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल लोंग सुपारी जानो,खारक आदि भले फल आनो ।
स्वच्छ पात्र में धर कर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गन्ध अक्षत सुभ भाये, चरु दीपक फल धूप सु लाये ।
अरघ बना अपने कर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्येकार्घ्यं मुनियानन्द की चाल

पत्र शुभ ऊजरे, पुष्ट चिकने सही, दीर्घ मौली किये, हर्ष मन की मही ।
तासमें बानि जिनसूत्र उतराइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री शुभपत्रोत्कीर्णन प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

अंक चांदी तथा,कनक के मांड़िये,सुभग आकार धर,भक्ति अघ छाँड़िये ।
या विधो हर्ष सिद्धान्त उतराइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञाक्षरलेखनप्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

तास जर चिकन किमखाब मसरू सही,और उत्कृष्ट बहुमोल तिनको कही।
लाय उर भक्ति, औछांड बनबाइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञबहुमूल्यबन्धन प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

भले श्रुत राखने,कनक चांदी तने,काष्ठ के सुभग पट्ट, उग्र तिनके बने ।
करे पट्टा इसी, भाँति मन लाइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री सुभगकाष्टपत्रकरण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

कनक मय जड़ित, चाँदी तने जानिये,
भरत वा घटित अनि, धातु कर आनिये ।
काष्य चित्राम चौकी सु बनवाइये,
भाव प्रवचन वात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री वाचनहेतुसुभगचतुष्पादकरण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

बांचिये वानि जिन, मन वचन कायजी,
एक कर चित्त उर, भक्ति उमगाय जी ।

वानि जिन विनयते, पाठ पढ़वाइये,
भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतः शास्त्रपठन प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

मन वचनकाय थिर, ठान जिन धुनि सुने,
धारणा धार अघतें डरे शुभ ठने ।
विनयजुत श्रवन कर, आप धनिध्याइये,
भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतः शास्त्रश्रवण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

जाय पुस्तक धरे, ठाम शुभ जोय जी,
विनयते काय मन, शुद्ध अति होय जी ।
जतन को राखि मन, हर्ष बहु लाइये,
भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतः शास्त्रधरण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

जतनतें लेय पुस्तक, विनय ठान जी,
भक्ति मन वचन शुभ, कायतें आन जी ।
महा आदर करत, शास्त्र ले आइये,
भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतः पुस्तकस्थापनानयन प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् ।

धरण पुस्तक भलो, ठाम बनवायबो,
नाहिं शरदी तहां, टीप करवायबो ।
विनयतें पुस्तके, तहां धरवाइये,
भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री सविनयपुस्तकधारणस्थाननिर्माणरूपायै श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम्

अंग इन आदि बहु, विनयविधि ठानिये,
प्रीति अति अन्तरें भक्ति शुभ आनिये ।
जान जिनवानि आ-दर विनय लाइये,

भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै महार्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- वात्सल्य प्रवचन भावसों,जिनध्वनि तें अतिनेह ।
विनयसहित वरते सदा, सफल तिन्हों की देह ।।

बेसरी (छन्द)

जिनवानीतें वत्सल भावा, मैटत है जगका सब दावा ।
ताकी सुर नर सेव करावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे ।।
जो श्रुत सुने भाव हरषावे, आवा पर भेद तत्त्व सु पावे ।
तिनतें सब जग प्रीति करावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे ।।
प्रवचनपाठ करे मन लाई, ताको जस गाव सुरराई ।
ताके पाप निकट नहिं आवें, जो जिय प्रवचनवत्सल भावें ।।
जिन धुनि सुने हने अघ सोही, याको भेद लहे नहिं मोही ।
सर्वलोक का प्रेम जु पावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे ।
विनयसहित पुस्तक को राखे,ताका विनयो सब जग भाखे ।
प्रीति घनी जिन धुनिते लावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे ।।
कनक रजत के पत्र महाने, सुन्दर महामूल्य के आने ।
तिनपै जिनधुनि का लिखवावे,जो जिय प्रवचनवत्सल भावे ।
श्रुतको बेठन सुभग करावन, लावे पट अतिसुन्दर पावन ।
डोरी सुभग आन हरषावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे ।।
आगम धरने ठाम अनूपा, बनवावे दृढ़ सुन्दररूपा ।
तहां सुमोहन चित्र करावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे ।।
दोहा-इत्यादिक गुन जों लहे, दहे कर्मवन सोय ।
भावे प्रवचनभावना, अति चितवत्सल होय ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै महार्घ्यम् ।

समुच्चय जयमाला

दोहा

सोलहकारण भावना, भावे जो भवि सोय ।
सो तीर्थंकर पद लहे, धनो कहे क्या कोय ।।

मुनियानन्द की चाल

षोड़शकारण यह, भावना भाय है,
तहां न मद आठ षट् नायतन पाय है ।
अष्ट सम्यक तने, दोष नहिं जानिये,
मूढ़ता तीन नहिं, ज्ञान शुद्ध आनिये ।।
विनय गुरु देव की, राह जाने सही,
भूल अविनय विषे, बुद्धि राखे नहीं ।
जगत जस पाय अघ, ढाय समता लहे,
जीव जो भावना भाय षोडश यहे ।।
नारि पशु देव की, मनुष की जान जी,
काठ चित्राम यह, जीव बिन मान जी ।
चार विध नारि तजि, शील भावन सही,
कारण षोडश यह, भावनाएं कहीं ।।
ज्ञान उपयोग सो, पाठ जिनधुनि करे,
श्रुति अध्ययन में, नाँहि अन्तर परे ।
पढ़े उपदेश करि, प्रश्न बहु ले सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
देख जग चपल नहिं, विषयसुख राचि है,
मात सुत नारि तन, मांहि नहिं माचि है ।
धरे वैराग्य उर, माँहि आनंद सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।

त्याग धन तन करें राजलक्ष्मि सार जी,
मात सुत पिता तिय देख बन्धकार जी ।
छाड़ि परभाव, निजमांहि राचे सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
करे तप दुर्धरा, देख कायर डरें,
मास वर्ष पक्ष लो, नांहि अनजल करें ।
शीश गिरि तरुतलें, नदी तट पै सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
मुनि तन विषें जिम, होय साता भली,
सोहि विधि करें उर, भक्ति भावां मिली ।
साधू-समाधी यह, भावना है सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
राह जब चले मुनि खेद तन में लहे,
तथा बहु तप थकी काय निर्बल रहे ।
देख इन तबै भवि, पांव चंपै सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
देव जिनराज की, भक्ति पूजा करे,
कण्ठ मधुरे थकी, गान शुभ उच्चरे ।
भक्ति अरिहन्त सो भाव जे हैं सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
संघपति जगतगुरु, तीस षट् गुण धरे,
लखे पर मन तनी, भाव समता भरे ।
धर्म तीरथ तने, धीर धारी सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
अंग ग्यारह लखे, पूर्व दसचार जी,

और गुन बने त्रय ज्ञान चव धार जी ।
भक्ति इन तनी यह भाव शुभदा सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
भक्ति जिनवाणि की, करे मन लाय जी,
मुनि आवशि करें, भक्ति तिन भाय जी ।
भाव सो प्रवचन, ज्ञान सुखदा सही,
कारण षोड़श ये, भावनाऐं कहीं ।।
मनवचन काय धन, लाय हरषाय जी,
धर्म उद्योत करि पुण्य उपजाय जी ।
मार्गपरभावना, अंग सुखदा सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।
वानिजिनविनयतें, सुने पढ़ि है भली,
भाव वात्सल्य, प्रवचन पुण्य की रली ।
या थकी भी महा, पुण्यफल ले सही,
कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं ।।

दोहा

इत्यादिक ये भावना, षोडश भेद अनूप ।
भावे इनको भक्तितें, 'टेक' मोक्ष सिध रूप ।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः महार्घ्यम् ।

(इति षोड़शकारण विधान उद्यापन समाप्त)

समुच्चय नव देवता पूजा

गीता-छन्द

मैं पंच परमेष्ठि यजुं अरु चैत्य चैत्यालय सदा ।
अरु सप्त भंगी नमुं वाणी, धर्म जिनवर ने कहा ।।
नव देव हैं ये जगत मांही स्थापना हम कर रहे ।
आव्हान हो धरकर-हृदय में पाप पुंजी को दहे ।।

ॐ ह्रीं पंच परमेष्ठी जिन चैत्य चैत्यालय जिनवाणी स्याद्वाद जिन धर्मेति नवदेव समूह अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ २ ठः २ स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकं-गीता

भर स्वर्ण झारी मिष्ट जल की भक्ति दिल में जोड़िए ।
त्रय रोग नाशन हेतु धारा तीन दिन पद छोड़िए ।।
पूज्य है नव देव जग में जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूर्वक हों पृथक भव जाल से ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूर चन्दन है सुगन्धित केशरी घिस लाय है ।
संसार का दुख मेटने को चरण में चर्चाय हैं ।। पूज्य.

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्द्र सम उज्ज्वल अखण्डित अक्षतों को लीजिए ।
अक्षय निधि के हेतु जिनवर पुंज पद में कीजिए ।। पूज्य.

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

संसार में भटका बहुत ही ब्रह्मचारी ना बना ।
उस काम दुष्ट विनाशने को पुष्प छोडू हूँ घाना ।। पूज्य.

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहेभ्यः काम वाणं विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

दौड़ता मैं इत उते हीं भूख जोरों से लगी ।
पकवान नाना भांति छोड़े क्षुधा डाकिन ही भगी ।। पूज्य.

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह की फांसी चढ़े हम ज्ञान शुद्ध न पाइया ।
हे प्रभो घृत दीप छोडुं मोह तम नश जाइया ।। पूज्य.

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन कर्म रिपुने हे प्रभो जी दाबदी मम आत्मा ।
लेकर सुगन्धित धूप खेउं होय रिपु का खात्मा ।। पूज्य.

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहेभ्योऽष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सेव नारंगी सुदाडिम श्री फलादिक फल खरे ।
लेकर चढ़ाऊं पद कमल में शीघ्र शिवरमणी वरे ।। पूज्य.

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहेभ्यों मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर चन्दन अक्षतादि द्रव्य मनहर कीजिये ।
पूज हो धर भक्ति उरमें मोक्ष पद फिर लीजिए ।। पूज्य.

ॐ ह्रीं श्री नव देव समूहभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं ।।६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः स्वाहा । (१०८ बार जाप करे ।)

जयमाला

दोहा- पूज्य श्री नवदेव है जो अनुपम सुखदाय ।
कहूँ महा जयमालिका कर्म हरे दुख दाय ।।

छन्द नाराच

देव जिन राज को नमत्त सुर गुरु सदा ।
पूजते भक्ति नहीं रंच दुख हो कदा ।।
देव अरहन्त का शर्ण हम ले लिया ।
मैं नमु त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ पालिया ।।

गर्भ छह मास पूर्व रत्न वृष्टि करत है ।
होत जन्म देव गण मेरु ले धरत हैं ।
देव अरहन्त का शर्ण हम ले लिया ।
मैं नमुं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ पालिया ।।
पंचमी क्षीर सागर सु जल लाइया ।
करत अभिषेक इन्द्र देव हर्षाइया ।।देव।।३
अघ घघ घघ घघ, अघ घघ जोर से ।
घघ घघ घघ घघ, ढुलत कलश शोर से ।।देव।।४
जय जय जय जय जयति जय जय जय ।
करत यहां देव जय जय जय जय ।।देव।।५
धृगततं धृगततं होत मिरदंग ही ।
करत मंजीरिया किमं किं तरंग ही ।।देव।।६
बजत सारंगी सु, सन सनं सन सनं ।
नचत शक्रराज ले, धरत पग छम छमं ।।देव।।७
इस भांति उत्सव करे देव गण आय कर ।
लहत सम्यक्त्व का भक्ति उर धार कर ।।देव।।८
सुहोत वैराग्य जिस काल जिन आपको ।
आय लोकान्ति देव करत अनुमोद को ।।देव।।९
लोच पंच मुष्ठि से आपने कर लिया ।
त्याग सर्व संग को साधु व्रत धर लिया ।।देव।।१०
उग्र उग्र तप कर साधि निज आत्मा ।
लेय ध्यान खड्ग कर कर्म किये खात्मा ।।देव।।११
देव अरहन्त ने घात्ति कर्म नाशिया ।
हो सुखद गुण अनन्त आपने पालिया ।।देव।।१२
जन्म के होत दश ज्ञान के दश कहा ।

सुमन चतुर्दश करे महा अतिशय लहा ।।देव।।१३
अष्ट प्रातिहार्य सब महतता को करे ।
अनन्त दर्श ज्ञान व्रत वीर्यता को धरे ।।देव।।१४
दोष अष्टादशा होत नहीं देव ही ।
वाणि सप्त भंगी को प्रकाशते एव ही ।।देव।।१५
कर्म महा त्रेशठी प्रकृति नाश कीनिहो ।
ध्यान धार आत्म नासाग्र दृष्टि दीनिहो ।।देव।।१६
वीतरागी आप हो सर्वज्ञता को लहै ।
भूत भावि सम्प्रति पर्याय दृष्ट हो रहे ।।देव।।१७
जीव तीन लोक का हितोपदेश देत हो ।
हो हितोपदेशी आप बन्धु विनहेतु हो ।।देव।।१८
जीवादि सप्त तत्व नव पदार्थ को भासिया ।
होत गुणथान अरु मार्गणा देशिया ।।देव।।१९
समास प्ररूपणा गत्यादि भी हे सही ।
स्याद्वाद तत्व आप अन्यथा है नही ।।देव।।२०
नाश अष्ट कर्म को अष्ट गुण पालिया ।
निजात्म सुक्ख मग्न हो कर्म मैल धोलिया ।।
देव महा सिद्ध का शर्ण हम ले लिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष सुख पालिया ।।२१।।
ज्ञान है शरीरि आप सिद्ध लोक राज ते ।
हो अनन्त सुक्खवान निकल ही विराजते ।।
देव महा सिद्ध का शर्ण हम ले लिया ।
मैं नमुं त्रिकाल आप मोक्ष सुख पा लिया ।।२२।।
पंच महाव्रत्त पंच समीति को आदरे ।
करत वश अक्ष आचार पंच आचरे ।

देव महा सूरि की शर्ण हम लेलिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२३।।
पालते षडावश्यक शेष गुण को धरे ।
पाल तीन गुप्ति सूरि मनमे कष्ट ना करे ।।
देव महा सूरि की शर्ण हम ले लिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२४।।
पालते आचार आप शिष्य को पलावते ।
होय छत्तीस गुण सूरिं पद पावते ।।
देव महा सूरि की शर्ण हम लेलिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२५।।
हो उपाध्याय मुनि तपो व्रत आचरे ।
धरत महा सकल व्रत्त रोष तोष ना करे ।।
देव उपाध्याय की शर्ण हम लेलिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२६।।
अंग एकादर्श पूर्व चतुर्दश कहे ।
होत ज्ञान आपको नाम पाठक लहे ।।
देव उपाध्याय की शर्ण हम लेलिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२७।।
धन्य धन्य साधु अष्ट बीस गुण धारते ।
होत ना अधीर कभी मोह कर्म टारते ।
देव महासाधु की शर्ण हम लेलिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२८।।
जिन देव महा विम्बभी शोभते अपार ही ।
स्वर्ण रत्न उपल के होत निर्विकार ही ।।
देव जिन बिम्ब की शर्ण हम लेलिया ।

मैं नमूं त्रिकाल आप दर्श सुख पा लिया ।।२९।।
बिम्ब तीन लोक में अनादि आदि जानिए ।
है अगण्य जो लहे सदैव सिर नाइए ।।
देव जिन बिम्ब की शर्ण हम लेलिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप दर्श सुख पा लिया ।।३०।।
भवन त्रैलोक्य में ही असंख्या लहे ।
है अनादि आदि महादेव गणधर कहै ।।
देव जिन जिनालया हर्ष कर पूजिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप दर्श सुख पा लिया ।।३१।।
हम रत्न उपलमय शोभते महान ही ।
नमन करे बार बार होत कल्याण ही ।
देव जिन जिनालया हर्ष कर पूजिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप दर्श सुख पा लिया ।।३२।।
निकसि जिन वदन ते भव्य महाभाग से ।
झेल गणधर महा प्रकाशि अनुराग से ।।
मात जिन वाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ।।३३।।
होत सप्त भंग मय देवि निर्दोषिका ।
आदि अन्त एक हो होत नहीं दोषिका ।।
मात जिन वाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ।।३४।।
पूज्य हो मात हम करत श्रद्धान को ।
पाप पुण्य नाश कर लहत शिव थान को ।।
मात जिनवाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ।।३५।।

देव अरहन्त ने भासिया धर्म को ।
स्याद्वाद है वह नष्ट करे कर्म को ।।
धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप जन्म सफल कर लिया।।३६।।
क्षमादि दश धर्म अरु रत्नत्रय जानिए ।
है अहिंस आदि धर्म भव्य पर मानिए ।।
धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप जन्म सफल कर लिया।।३७।।
धरत भव्य धर्म को होत कल्याण ही ।
है अगाध धर्म तत्व होत ना बखान ही ।
धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।
मैं नमूं त्रिकाल आप जन्म सफल कर लिया।।३८।।
होत नव देव ये ग्रन्थ में गाइया ।
कहत "सूर्य मल्ल" जिन चरण सिर नाइया ।।
नमत नव देव को हर्ष उर धारिया ।
करत पूज शुद्ध मन पाप सब जारिया ।।३९।।

घत्ता-छन्द

जय जय नव देवं, कर्म नशेवं, सुरकृत सेवं पुण्य करम ।
जय पूज रचावे गुण गण गावे, पाप मिटावें मुक्ति वरम ।।४०।।

ॐ ह्रीं अरहन्तादि नव देव समूहेभ्योऽर्घ्यं ।।

गीता- नव देव है ये वीतराग नाशते भव भय सदा ।
पूजहूँ वसु द्रव्य लेकर आदि व्याधि न हो कदा ।।
पुत्र मित्ररु पौत्र वाढ़ै स्वर्ग सम्पत्ति आय है ।
नष्ट होवे कर्म सारे मोक्ष नारी पाय है ।।४१।।

इत्याशीर्वादः

श्री अरहन्त पूजन

जोगीरासा-स्थापना

नाश घातिया कर्म आपने, पद पाया अरहन्ता ।
बैठ समवसृत दिव्य ध्वनि से तारे भव्य अन्नता ।
ऐसे उन त्रैलोक्य प्रभु का मन वच काय त्रियोगा ।
आव्हानन् हृदि स्थापन करके नाश करूं भव रोगा ।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशद्गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिन् अत्रावतराव तर संवौषट् आव्हान । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टक (जोगी राशा)

क्षीरोक्षधि को प्रासुक जल ले मन हर्षित भरलाया ।
जन्म जरामृति दूर करन को श्रीजिन चरण चढ़ाया ।।
श्री अरहन्त सकल परमात्म केवल ज्ञानी राजै ।
होवे भव भव मांहि सहाई याते भव भय भाजे ।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।

मलयागीरी गोशीर सुगन्धित केशर संघ घिसलाऊं ।
लेप करूं अरहन्त प्रभुपद संसृति ताप मिटाऊं ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं ।

अनियारे शुभ अक्षत ताजे चन्द्र किरण सम लाऊं ।
पुंज करूं जिनराज चरण ढिग अक्षयनिधि को पाऊं ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत गुणोयेत परमेष्ठिभ्योऽक्षयपद प्राप्तयै अक्षतान् ।

भांति भांति के पुष्प सुगन्धित डाली भर कर लाया ।
छोड़े प्रभु के उत्तम पद में मदन वाण विनिशाया ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिभ्यः कामबाण विनाशनाय पुष्पं।।४।।

घेवर वावर लाडु पेडा बहु विधि व्यंजन ताजे ।
थाल सजाकर भेंट चरण ढिग रोग क्षुधा सब भाजे ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत श्रीअरहन्तपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

गोधृत अरु कर्पूर रतन को दीपक सुन्दर जोऊं ।
आरती करुं जिनराज प्रभु की मोहतिमिर को खोऊं ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ।

दश विधि द्रव्य की धूप बनाई, अति सुगन्धित भाई ।
अष्ट कर्म के नाशन कारण अग्नि मांही जलाई ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं ।

मोच चोच अति उत्तम श्रीफल दाडिम अमृत लावें ।
छोड़े श्री जिन राज चरण में मोक्ष महाफल पावें ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं ।

तोयं चन्दन अक्षत नीरज व्यंजन दीपक जोवे ।
धूप महाफल अर्घ चढ़ाऊं अविनाशी पद सोवे ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद् गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं ।

अथ प्रत्येक अर्घं

(जन्म के १० अतिशय)

दोहा- जन्म तने जिनराज के अतिशय दश बतलाय ।
स्वेद रहित प्रभुजी सदा पूजू अर्घ चढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं पसेव रहित अतिशय सहित अरहन्त देवभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

होत नहीं मल मूत्र जिन,निर्मल तन सुखदाय ।
ये अतिशय अरहन्त के पूजो अर्घ चढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं मल मूत्र रहित अतिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

समचतुरा संस्थान है घाट बाध नहीं होय ।
यह अतिशय तीजा कहा पूजो अर्घ संजोय ।।

ॐ ह्रीं समचतुर संस्थान अतिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

वज्र वृषभ नाराच हे सहनन उत्तम धाधार ।
यह अतिशय प्रभु के कहा पूजुं अर्घ उतार ।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच सहनन अतिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

सुरभित तन सुखदाय है यह अतिशय बतलाय ।
अर्घ संजोऊं थाल भर पूजुं मन बच काय ।।
ॐ ह्रीं सुगन्धित शरीर अतिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

रूप महा सुन्दर घनों काम देव शर्माय ।
उत्तम अर्घ बनाय कर पूजूं हर्ष बढ़ाय ।।
ॐ ह्रीं महारूपातिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

आठ अधिक पुन इक सहस लक्षण गुणकी खान
पूजो अर्घ संजोय के होय कर्म की हान ।।
ॐ ह्रीं शुभ लक्षण अतिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्यं ।।७।।

श्वेत वर्ण श्रोणित महा तन में प्रभु के जान ।
यह अतिशय अनुपम सही पूजू रुचिमनठान ।।
ॐ ह्रीं श्वेत वर्ण श्रोणितातिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्यं ।।८।।

मधुर मधुर वाणी कहै जन मोहित जो जाय ।
नीरादिक से पूजि हो कर्म रिपु नश जाय ।।
ॐ ह्रीं मधुर वचनाति सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।९।।

बल अनन्त प्रभुका कहा अन्य पुरुष नहीं होय ।
भाव भक्ति उर धार के पजू अर्घ संजोय ।।
ॐ ह्रीं अनन्त बलातिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्यं ।।१०।।

अतिशय श्री अरहन्त के जन्म तने दश जान ।
पूजूं अर्घ्य संजोय के पाऊं पद निर्वाण ।।
ॐ ह्रीं दश अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योपूर्णार्घ्यं ।।११।।

केवल ज्ञान के दश अतिशय

(अडिल्ल)

जहां जिनेश्वर बैठ समवसृत हाल जी ।
वहं योजन शत होय नही दुष्कालजी ।।
ऐसो अतिशय होय महा जिन राय के ।

मन वच तन से पूजूं प्रभु सिर नाय के ।।

ॐ ह्रीं शत योजन दुर्भिक्ष निवारक अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।११।।

होय गमन आकाश प्रभु का जान जी ।
देव भक्ति में आय करे गुण गान जी ।। एसो.

ॐ ह्रीं आकाश गमनातिशय अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१२।।

जहां विराजे ईशसु भवि हितकार जी ।
मार सके तिस ठौर नहीं किस बार जी ।। एसो.

ॐ ह्रीं अदया भावातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१३।।

होय नहीं उपसर्ग प्रभुजी आपको ।
देव मनुष्य पशु करे नहीं सन्ताप को ।। एसो.

ॐ ह्रीं उपसर्ग रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१४।।

क्षुधो रोग से पीड़ित सब जन देखिया ।
जीत क्षुधा आहार प्रभु नहीं लेखिया ।। एसो.

ॐ ह्रीं कवला हार रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१५।।

तिष्ट समवसृत बीच प्रभु जी राजते ।
मुख दीखे चहुं और महा सुख काजते ।। एसो.

ॐ ह्रीं चतुर मुखविराजमाना अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१६।।

सब विद्या के ईश्वर हो जिन रायजी ।
ध्यावे प्रभु को कर्म नशे दुख दायजी ।। एसो.

ॐ ह्रीं सकल विद्या धिपत्यातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१७।।

पुद्गल पुंज सु एक होय यह तन बना ।
छाया नहीं प्रभु होय आप अतिशय घना ।। एसो.

ॐ ह्रीं छाया रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१८।।

बढ़े नहीं नख केश कभी किसी काल में ।
नाश घातिया कर्म रहे निज चाल में ।। एसो.

ॐ ह्रीं नख केश वृद्धि रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१९।।

टमकत नाहीं पलक बन्द नाहीं खुले ।
नासा दृष्टि लगाय कर्म सब दल मले ।। एसो.

ॐ ह्रीं नेत्र भों चपलता रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२०।।

दोहा- ये अतिशय केवल तने हे आगम परमाण ।
पूजूं अर्घ्य संजोय के उपजे केवल ज्ञान ।।

ॐ ह्रीं केवल ज्ञान दश अतिशय रहित अरहन्त देवेभ्योपूर्णार्घ्यं ।।

देवकृत १४ अतिशय (चौपाई)

अर्द्ध मागधी भाषा जान, सब जीवों को सुखद वखान ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत है जिन श्रुत गाय ।।

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषा अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२१।।

सब जीवों मैं मैत्री होय पूजूं प्रभु को अर्घ संजोय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री भाव अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२२।।

षट् ऋतु के फल फूले जोय जहं जिनराज विराजे सोय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।

ॐ ह्रीं षट् ऋतु फल पुष्पातिशयंसहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२३।।

एना सम भूमि चमकाय धरत चरण जहं आप सुखाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।

ॐ ह्रीं दर्पण सम भूमि अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२४।।

सुरभित मन्द पवन हितदाय सब जीवों के मन को भाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।

ॐ ह्रीं सुरभित पवनातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२५।।

सर्वानन्दि होय जिनेन्द्र वन्दे सुरपति आदि खगेन्द्र ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।

ॐ ह्रीं सर्वानन्द कारक अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२६।।

कंटक रहित भूमि शुभजान जहं विराजे हो भगवान ।

यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं कंटक रहितातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२७।।

नभ में होता जय जय कार सब जीवों को सुखद अपार ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं आकाशे जय जय कार शब्दातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२८।।

गन्धोदक की वृष्टि सुखार करत देव सुख लहत अपार ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं गन्धोदक वृष्ट्यातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२९।।

पदतल प्रभु के कमल रचाय महिमा है जिनवर सुखदाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं पदतल कमल रचनातिशय अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३०।।

अति निर्मल आकाश लखाय सब जीवों का मन हर्षाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं गगन निर्मल अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३१।।

धूम रहित सब दिश शोभन्त, जहां विराजे श्री भगवन्त ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं सर्व दिशा निर्मल अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३२।।

धर्म चक्र प्रभु आगे सोय महिमा जिनवर कहत न होय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं धर्म चक्रअतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३३।।

मंगल द्रव्य अष्ट शुभ लेय, देव भक्ति वश करत स्वमेव ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोंकृत हैं जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्रीं देवकृत अष्ट मंगल द्रव्यअतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३४।।

दोहा- चवदह अतिशय करत है सुमन भक्ती में आन ।
पूजे अर्घ्य चढ़ाय के पावे पद निर्वाण ।।
ॐ ह्रीं चतुर्दश अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योपूर्णार्घ्यं ।

अष्ट प्रातिहार्य

(जोगी राशा)

वृक्ष अशोक महा सुखदाई दीखे सुन्दर भाई ।
शोक हरे सब जीवों का प्रभु यह महिमा अधिकाई ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजों वसु विधि द्रव्य संजोकर अविनासी पद हो है ।।

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३५।।

देव भक्ति में आकर प्रभु की पुष्पों को वर्षावे ।
स्तुति पढ़े, करे पद अर्चन निर्मल गुण को गावे ।। प्रातिहार्य.

ॐ ह्रीं पुष्प वृक्ष वृष्टि प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३६।।

दिव्य ध्वनि शुभ वर्षे जिनवर सब जीवों सुखदाई ।
पाप विनाशे शुभ पथ भासे पुण्य बढ़े अधिकाई ।। प्रातिहार्य.

ॐ ह्रीं प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३७।।

पर्वत से ज्यों जल की धारा पड़त लगे वह प्यारी ।
त्यों प्रभु चंवर ढुरे चतु षष्टी सुमन करे जयकारी ।। प्रातिहार्य.

ॐ ह्रीं चतुषष्टी चामर विज्यमान प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३८।।

रत्न जड़ित सिंहासन सुन्दर लागे वह अति प्यारा ।
अधर विरजे उस पर जिनवर देव करे जयकारा ।। प्रातिहार्य.

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३९।।

कोटी सूर्य लज्जित हो जावे तनु भामण्डल भारी ।
तापे सप्त भवों कि वाते दर्शन है सुखकारी ।। प्रातिहार्य.

ॐ ह्रीं प्रभामण्डल प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४०।।

देव बजावे नाना बाजे दुन्दुभि शब्द कहावे ।
सुमन करे गुण गान भक्ति,में मन में बहु हर्षावे ।। प्रातिहार्य.

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभि प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४१।।

चन्द्रकान्ति सम छत्र तीनशुभ,रत्न जड़ित सुखकारी ।

रत्नमालिका लटके उसमें तीन जगत दुखहारी ।। प्रातिहार्य.

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४२।।

दोहा- तरु अशोक शुभ पीठ है भामण्डल सुखदाय ।
चंबर ढुरे चौसठ विमल पुष्प वृष्टि वर्षाय ।।
दिव्यध्वनि नित खिरत है वजत दुन्दुभि सोय ।
तीन छत्र सिर सोहते पूजे मन शुध होय ।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य विभूति सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।

अनन्त चतुष्टय अर्घ

(सुन्दरी छन्द)

दर्शगुण भी अनन्त लखावही ध्याय जिनवर शिव सुखपावही ।
सो यजूं सर्वज्ञ जिनेश को अर्घ दे पद पाऊं मोक्ष को ।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४३।।

होय ज्ञान अनन्त सु मानिए, तीन लोक चराचर जानिए ।
सो यजूं सर्वज्ञ जिनेश को अर्घ दे पद पाऊं मोक्ष को ।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४४।।

सुख अनन्तानन्त सु पाइया,ध्यान बल जिन कर्म खिपाइया ।
सो यजूं सर्वज्ञ जिनेश को अर्घ दे पद पाऊं मोक्ष को ।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४५।।

अनन्त वीर्यत्व प्रकाशिया, अन्तराय सुभट अरि नाशिया ।
सो यजूं सर्वज्ञ जिनेश को अर्घ दे पद पाऊं मोक्ष को ।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं ।।

गीता- दृग अनन्त ज्ञान अरु सुख वीर्य गणधर ने कहै ।
होत है सर्वज्ञ प्रभु के मोक्ष नारी वे लहै ।।
पूज हूं उर भक्ति धरकर पाप मेरे नाश हो ।
अन्त शिव नारी वरुं मैं ज्ञान भानु प्रकाश हो ।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय सहित अरहन्त देवेभ्यो पूर्णार्घ्यं ।।४६।।

जन्म दश दश ज्ञान केवल देव कृत चौदह भने ।
वसु प्रातिहार्य सु है चुतुष्टय गुण छियालिस शुभबने ।।
ये है सु अतिशय जगत गुरु के प्रीति मन में लाइया ।
नीरदि वसु विधि द्रव्य ले जिन देव पद में चढ़ाइया ।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिशद्गुणोपेत अरहन्त देवेभ्यःपूर्णार्घ्यं ।

ॐ ह्रीं अरहन्त परमेष्ठि देवेभ्यो नमः स्वाहा । (यहां ९ बार जाप करें ।)

जयमाला

दोहा- छह चालीस गुण को धरे, सकल प्रभु कहलाय ।
गाऊं अब जयमालिका दुरित महा मिटि जाय ।।

त्रोटक

नहीं दोष अठारह है तुममे, अरहन्त देव हम कहत तुम्हें ।
जय ऊर्ध्व अधो अर मध्य तने,सब जीव नमे तब भक्ति सने ।।१।।
षट् मास पूर्व प्रभु गर्भ तने, अरु गर्भ रहे नव मास भने ।
जय रत्नसु वृष्टि कुवेर करे, जय नृप आंगण में मोद भरे ।।२।।
जय अष्ट कुमारी सु मात सेय, हर विधि से उनको मोद देय ।
जय जन्म हुआ प्रभु आप ज्ञान, घर घर में मंगल गाय गान ।।३।।
जय तीन लोक में हर्ष छाय, जय नर्क जीव समता लहाय ।
यह अतिशय प्रभुजी आप जान,नहीं होय अन्य प्राणी महान ।।४।।
जय इन्द्र मोद धर बैठ नाग, ऐरावत ले परिवार भाग ।
इन्द्राणी जाय प्रसूति थान, प्रभु लेय गोद में हर्ष ठान ।।५।।
निज पति को दे सम सूर्य बाल, वह निरख कहै प्रभु है कमाल ।
जब तृप्त हुआ नहीं दर्श पाय, हज्जार नयन सु धर बनाय ।।६।।
कर तांडव नृत्य सु भक्ति धार, हर्षे शचीन्द्र मन में अपार ।
पग धरे छमा छम ठुमुक चाल, जय बजे घूंघरू के सु जाल ।।७।।
फिर चढ़ गज मेरु सिखर जाय, अरु क्षीरोदधिका नीर लाय ।

तब न्हवन किया त्रैलोक्य राय,सिर कलश ढोल आनन्द पाय ।।८।।
शची किया नेत्र अंजन सु आय, प्रभु वस्त्रा भूषण दिये पिनाय ।
जय द्वितीय मयंक समान प्रभु,बढ़ चले आप त्रय ज्ञान विभु ।।९।।
जय अथिर लखा संसार खार, वैराग्य हुआ तब सुखद सार ।
लौकान्तिक आये स्वर्ग ब्रह्म, संवोध पधारे जिन सु ब्रह्म ।।१०।।
जय बैठ शिबिका गये अरण्य, कचलोच किये प्रभु धन्य धन्य ।
जय मनपर्यय प्रभु प्रगटज्ञान,हो तपकर धर तुम शुक्लध्यान ।।११।।
जय घाति कर्म चक चूर किया, जय केवल ज्ञान सु आप लिया ।
जय समवसरण उपदेश देय, भवि जीवो को भव उद्धरेय ।।१२।।
जय जन्म तने अतिशय दश है, जय केवल ज्ञान लहे दश है ।
जय देव चतुर्दश हर्ष करे, वसु प्राति हार्य सुख सज्ज खरे ।।१३।।
जय नन्त चतुष्टय आप गहै, प्रभु गुण छियालिस नित्य रहै ।
जयलक्षण सहसरु अष्ट शुद्ध,हो लसे आप में अति विशुद्ध ।।१४।।
जय मोक्ष मार्ग के नेता हो, अरु कर्म शैल के भेत्ता हो ।
जय भूत भविष्यत् वर्तमान, पर्याय झलकति आप ज्ञान ।।१५।।
नहीं कवला हार सु आप लेय, सब जान पदारथ नित्य हेय ।
शिव रमणी के भर्तार आप, जय कर्म काटने हो सुचाप ।।१६।।
जय सकल ज्ञेय के ज्ञाता हो, पर निजानन्द के पाता हो ।
हो देव मेरे हिए आन वसो, तब ध्यान धरे हम कर्म नसो ।।१७।।
तब गुण चिन्ते हम बार बार, जिससे टलती आपद अपार ।
प्रभु आप जगत के भूषण हो, अरु नाना रहित कुदूषण हो ।।१८।।
जय महिमा अगम अपार आप, जय शुद्ध चेतना करत जाप ।
जय परमदेव परमातम हो, जय ध्याता ध्यान गुणातम हो ।।१९।।
जय हरि हर ब्रह्म आप कहैं, जय शंकर विष्णु नाम लहै ।
नवकेवल लब्धि आप लसे, जय ध्यान महा शुभ आप बसे ।।२०।।

मैं भ्रमण किया प्रभु भूल आप, फल पाया बहु जिस पुण्य पाप ।
अब हरो हमारी पीर नाथ, याते पकड़े प्रभु आप साथ ।।२१।।
जय स्याद्वाद शासन अनूप, नहीं बाधित हो मिथ्या स्वरूप ।
सब विद्या के प्रभु आप ईश, जय पाप हरो मम हे जगीश ।।२२।।
तब नाम लेत सब विघ्न जाय, जय भूत प्रेत सब ही नशाय ।
संसार लखे यह अथिर रूप, दुख पाये जिससे त्रिजग भूप ।।२३।।
हो परम देव गुण अपार, हम तुच्छ बुद्धि नहि लहत पार ।
पद पंकज में हा नमस्कार, जय 'सूरज' को प्रभु तार तार ।।२४।।
घत्ता-जय जय जयमाला परम रसाला गावें ध्यावें पाप हरे ।
नाशत भव ज्वाला गुण मणिमाला पावे सुक्ख अनन्त खरे ।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशद् गुण सहित अरहन्त परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।

अडिल्ल- जो भवि पूजे महा जिनेश्वर राय जी ।
पाप ताप अरु विघ्न टरे दुख दाय जी ।।
पुत्र मित्र और सम्पत्ति हो अधिकाय जी ।
अनुक्रम से शिव नार वरे सुख दाय जी ।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

श्री सिद्ध पूजा

अडिल्ल- अर्घ्व लोक के अन्त बात में जानिए ।
ज्ञान शरीरि कर्म रहित पहिचानिए ।।
अष्ट गुणो को धार निकल जिन आप ही ।
करूं प्रभु आव्हान मिटे सन्ताप ही ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री परमेष्ठिन् अरावतरावतर संवौषट इत्याव्हान् ।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रींणमो सिद्धाणं श्री परमेष्ठिन् अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं (त्रिभंगी)

गंगा जल लाया धार चढ़ाया अति हुलसाया सिद्ध महा ।
त्रय रोग नशावे भक्ति बढ़ावे होवे सुक्ख अनन्त अहा ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मैं गाऊं ध्याऊं कर्म नशाऊं शिव पद पाऊं हुलसन्ता ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।।१।।

शुभकेशर चन्दन दाह निकन्दन भवभय भंजन शुद्धअहो ।
हूं चरण चढ़ाया तापनशाया सुख उपजाया नष्ट न हो ।। जय.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिभ्यः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं ।।२।।

अक्षत अणियारे उज्जवल प्यारे धोय संभारे हम लावे ।
बहु पुंज चढ़ावे तुम गुण गावें सुख अति पावे हर्षावे ।। जय.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिऽभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् ।।

चम्पा मच कुन्दा अमल सुगन्धा भ्रमर अनन्दा थालभरा ।
मैं फूल चढ़ाऊं श्रेष्ठ कहाउं काम नशाउं दुष्ट खरा ।। जय.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिभ्यः काम वाण विनाशनाय पुष्पाणि ।।४।।

ले घेवर फेणी लाडु पेडा व्यंजन से बहु थाल भरे ।
जिनपद में चोडु दुई कर जोडु क्षुधा रोग तत्काल हरे ।। जय.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

हम घृत भर लावें मन हर्षावे चरण चढ़ावे दीप महा ।
मोहान्ध नशावे तुम गुण गावें पावे सम्यग्ज्ञान अहा ।। जय.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ।।६।।

बहु धूप दशांगी है बहु चंगी बैसांदर मैं हम खेवें ।
हम कर्म उडावे शिवसुख पावे जिनगुण गावे पद सेवे ।। जय.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्ट कर्म विनाशनाय धूपं ।।७।।

नारिंग सुपारी दाडिम प्यारी फल अति भारी थाल भरा ।
जिन चरण चढ़ाउं शिव पद पाऊं शीस नवाऊं सिद्धवरा ।। जय.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्योः मोक्ष फल प्राप्तये फलं ।।८।।

ले द्रव्य समारा अष्ट प्रकारा हर्ष बढ़ाकर ल्यावत है ।
जिन चरण चढ़ावे मंगल गावे सिद्ध महापद पावत है ।। जय.

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तेय अर्घ्यं ।।९।।

प्रत्येक अर्घ्यं (गीता)

ये पंच ज्ञाना वर्णीघति ज्ञान केवल पाइया ।
लोक त्रय का प्रगट देखे निज स्वरूप लखाइया ।।
लोकाग्र राजे निज सु साजे गुण सु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढ़ाइया ।।

ॐ ह्रीं पंच प्रकार ज्ञाना वर्णी कर्म विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

हे कर्म दूजा दर्शवर्णी दर्श गुण सब ढक लिया ।
नष्ट कर नव प्रकृति तिस की दर्शगुण जिन पालिया ।।लोकाग्र.

ॐ ह्रीं नव प्रकार दर्शनावर्णी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

हे वेदनी इक कर्म तीजा, दुःक्ख सुख वह देत हैं ।
नाश कीना सहज में जिन, सुख अबाधसु लेत हैं ।।लोकाग्र.

ॐ ह्रीं द्वि प्रकार वेदनी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

इक कर्ममोहनी दुष्टहै जो जगत जन सब बस किया ।
नाश कीना ध्यान अग्नि पाप समकित सुख लिया ।।लोकाग्र.

ॐ ह्रीं अष्टाविंश मोहनी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

संसार के सब जीव देखे चार आयु वसि भये ।
ध्यान भासुर कर्म जारे नार शिव प्रिय तुम भये ।।लोकाग्र.

ॐ ह्रीं चतु प्रकार आयु कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

ज्यों चितेरा चित्र खींचे नाम तद्वत जानिया ।
यहनाशकर जिनराज तुमने सुख सु अविचन ठानिया।।लोकाग्र.

ॐ ह्रीं त्रय नवति नाम कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

गोत्र कर्म सु दोय विधि है नीच ऊंच बखानिया ।

करनाश रिपु यहहै जिनेश्वर अगुरुलघु गुण जानिया ।।लोकाग्र.
ॐ ह्रीं द्वि प्रकार गोत्र कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।७।।

अष्टमसु रिपु का नाश करके, जाय अष्टम भू बसे ।
वीर्यत्व शक्ति पाय करके आत्म निज मे तुम लसे ।।लोकाग्र.
ॐ ह्रीं पंच प्रकार अन्तराय कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।८।।

दोहा- अष्ट कर्म को नष्ट कर, अष्ट महागुण पाय ।
वसु विधि सुन्दर द्रव्य से पूजे जिनवर आय ।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशकः सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णाऽर्घ्यं ।
ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिदेवेभ्यो नमः स्वाहा । (यहां ६ बार जाप्य करें ।)

जयमाला

दोहा- उर्ध्व लोक में सिद्ध जे, राजे सुखद महान ।
सुख अनन्त का पारहे, गावे हम गुण गान ।।१।।

पद्धडी

जय सिद्ध शिरोमणी जगतदेव, त्रैलोक्य प्रभु हम नमत एव ।
जय वीतराग हो परम शांत, जय रोग रहित निर्भय सुकान्त ।।२।।
जय उर्ध्व लोक के अन्त जान, जयवात वलय में राज मान ।
उत्पाद सुव्यय ध्रुव युक्त आप, हम करते प्रभु तुम नित्याजाप ।।३।।
जय संसृति भंजन हो निसंग, जय समता रस के आप गंग ।
जय बंध कषाय विहीन आप, जय नाश हुए सब कर्म पाप ।।४।।
जय ज्ञाना वर्णी प्रकृति पंच, तुम नाश करी नहीं रही रंच ।
जय पूर्णज्ञान प्रभु प्रकट होय, ज्यों मेघ नशे रवि उदित होय ।।५।।
जय नाश दर्शना वर्ण आप, नव प्रकृति नशीधर ध्यान चाप ।
जय दर्शन गुण पायो महान्, ज्यो लोक अलोक प्रकाश मान ।।६।।
जय कर्म वेदनी हो विलीन, सुख पाया अन्व्याबाध चीन ।
जय मोह राज से विजय पाय, सम्यक्त्व महागुण तु लसाय ।।७।।

जय आयु कर्म को हनि विशाल, जय अवगाहन गुणधर विशाल ।
जय नाम कर्म से रहित होय, सूक्षम गुण पायो विमल सोय ।।८।।
फिर गोत्र कर्म का कर विनाश, ले अगुरु लघु गुण तुम प्रकाश ।
प्रभु अन्तराय का मूल नाश, वीर्यत्व शक्ति पाई विकाश ।।९।।
जय अष्ट महागुण धरत आप, शिव नारी संग करते मिलाप ।
जहां एक सिद्ध राजे महान्, तामध्य अनन्तानन्त जान ।।१०।।
यह भूमि आठवीं सुखद भास, कहलाते सिद्धों का निवास ।
जो ध्यान धरे उन सिद्धराज,पावे अविचल शुभ सुक्खसाज ।।११।।
हम नमन करे उर भक्ति धार, सूरजमल विनवे बारबार ।
यह आश हमारी पूरपूर, प्रभु, कर्म महारिपु चूर चूर ।।१२।।

धत्ता- जय सिद्ध महन्ता शिवतियकन्ता आत्म रमन्ता ध्यावत हूं ।
जय कर्म विनाशी सुगुण प्रकाशी शुभ गुण राशी याजत हूँ ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिऽभ्योऽर्घ्यं ।।

सोरठा-पूजो भाव सुधार सिद्ध महा जिन राज को ।
ते उतरे भवपार राज करे शिव राय को ।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री आचार्य परमेष्ठी पूजा

(हरि गीता)

निर्ग्रन्थ सूरिपद विराजे, ध्याय आतम ध्यान को ।
गुणतीस छह पालत सदा ही कहत हित मित बानि को ।।
हम करत आव्हानन प्रभोजी मो हृदय में आइये ।
अष्ट विधि से पूजते हम कर्म अष्ट नशाइये ।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य परमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकं-नन्दीश्वर पूजन (चाल)

शुचि निर्मल जल भृंगार भरकर मैं लायो ।
तुम चरणन दे हम धार जन्म मरण ढायो ।।
श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावें ।
हम उतरे भवदधि पार याते गुणगावें ।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।।१।।

गोशीर सुगन्धित सार कुं कुं घिस लावें ।
प्रभु भव आताप निवार मनमें हर्षावें ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणोपेत श्रीआचार्यपरमेष्ठिदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं।।२।।

ले चन्द्र किरण समश्वेत अक्षत धोय धरे ।
हम अक्षय निधि के हेत पदमें पुंज करे ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणोपेत श्रीआचार्य परमेष्ठिदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

ले करके बहु विधि फूल, डाली भर लाये ।
प्रभु हरो काम तिरसूल भवभव दुख पाये ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणोपेत श्रीआचार्यपरमेष्ठिदेवेभ्यः कामबाण विनाशनाय पुष्पं ।।४।।

ले व्यंजन नाना भांति मनहर सुखदाई ।
तुम भेंट धरे तज आंट मनमें हर्षाई ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणोपेत श्रीआचार्यपरमेष्ठिदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

घृत दीप मनोहर ल्याय जगमग होत अहा ।
हम करें आरती आय नाशे तिमिर महा ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणोपेत श्रीआचार्यपरमेष्ठिदेवेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

बहु द्रव्य सुगन्धित सार ताकि धूप करी ।
खेवे वैश्वानर डार कर्म विनाश करी ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं ।।७।।

ले केले उत्तम सार आम्र अनार घने ।

फल भरुं सरस शुभथाल सुन्दर सहजसने ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योः मोक्षफल प्राप्तये फलं ।।८।।

जल चन्दनादि बहु ल्याय अर्घ चढ़ावत हूं ।
गाउं प्रभु गुण हर्षाय भक्ति बढ़ावत हूं ।। श्री.

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

अथ प्रत्येक पूजा

दोहा- दुष्ट पीड़ा करे क्षमा भाव उर लाय ।
पूजो पद आचार्य के मन वच काय लगाय ।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

कोमलता उरमें धरे मार्दव वृष अमलान ।
शुद्ध द्रव्य से पूजिए सरि पद गुण खान ।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

अन्तर बाहर एक हैं माया रंच न पाय ।
आर्जव गुण को धारते सूरि पूजो आय ।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

सत्य वचन बोले सदा सत्य धर्म कहलाय ।
आचारज यह धारते अर्चत हम गुण गाय ।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

तन स्वभावसे अशुचिहै किसविध होय न शुद्ध।
ज्ञान ध्यान तप आचरे करे आत्म प्रति बुद्ध ।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

इन्द्रिय पांचों वश करे काय छहों प्रतिपाल ।
इहविधि दो संयम धरे आचारज नमिभाल ।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

द्वादश विधि तप आचरे अन्तर बाहिर जान ।
खेद नहीं मनमें करे पूज मिले शिव थान ।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।७।।

परद्रव्यन से भिन्न है राग द्वेष नहीं होय ।
त्याग धर्म निश्चय कहे आचारज पद सोय ।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।८।।

अन्तर बाहर भेद से संग कहें हैं दोय ।
त्यागा उन मुनिराज न धर्म अकिंचन होय ।।

ॐ ह्रीं उत्तम अकिंचन धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।९।।

निजपर की तिय त्यागकर व्रतधारा असिधार ।
पूर्ण ब्रह्मचारी भये नमन करूं त्रय बार ।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१०।।

(अथ १२ तप अर्घ)

भुजंग प्रयास

एक दिन चार दिन अष्ट पक्ष मास लो ।
मास दोय मास छह त्याग अन्न जल भलो ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

भूख से अर्द्ध ले भाग चवथा गहै ।
ग्रास दोय ग्रास एक वृत्त एसो लहे ।। सूरि.

ॐ ह्रीं उनोदर तप धारक आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

गोचरी जाय जब वृत्त संख्या करे ।
लाभ नहीं लाभ मैं तोष रोष ना धरे ।। सूरि.

ॐ ह्रीं वृत्तपरिसंख्यान तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

लेय छह रस विषे एक दो ही भले ।
नीरसी खाय कभी रसन वश ना चले ।। सूरि.

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

विविक्त आसन धरे गहत नहीं मान को ।

जीव दुष्ट आयकर खण्ड नहीं ध्यान को ।। सूरि.

ॐ ह्रीं विविक्त शय्यासन तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

त्याग तन मोह को ध्यान में लीन हो ।
आय उपसर्ग तो भाव सम कीन हो ।। सूरि.

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

होत गमन इत उते, प्रमाद जीव संघरे ।
दोष होय गुरु निकट प्रायश्चित्त को धरे ।। सूरि.

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।७।।

ज्येष्ठ की विनय कर वृत्त को आदरे ।
विनय से सकल गुण आप आपो वरे ।। सूरि.

ॐ ह्रीं विनय तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।८।।

सेव गुण धार अरु गुरुजनों की ठानिए ।
देवश्रुत सेव कर मोक्ष मग आनिए ।। सूरि.

ॐ ह्रीं वैयावृत तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।९।।

रात दिवस पाठ स्वाध्याय में लीन हो ।
प्रश्न गुरु ठान बहु चिन्तवना कीन हो ।। सूरि.

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१०।।

आय उपसर्ग को हर्ष से सहत है ।
त्याग मन मोह निजआत्म को भजत हैं ।। सूरि.

ॐ ह्रीं व्युत्कर्ग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।११।।

ध्यान जब धारते हो अडोल जाप में ।
चिन्तवे असार सब लीन हो आप में ।। सूरि.

ॐ ह्रीं ध्यानतप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१२।।

कथित तप द्वादशं धारते वीर ही ।
पाय नहीं मोहि जीव होत है अधीर ही ।। सूरि.

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१३।।

षढावश्यक अर्घ्य (सखी)

सब जीव विषे सम भावा, दुर्ध्यानन मन में लावा ।
करते सामायिक सुखदाई, अर्च्चु सूरि पद हर्षाई ।।

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

चतुबीस जिनेश्वर जो हैं, अरुपंच परम गुरु सो हैं ।
तिन करहुं स्तुति गुणगाई अति निर्मल भाव लगाई ।।

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

बन्दन देव करे जिन थाना,सबदोष रहित गुण नाना ।
नाशे पाप महा दुख दाई, सब अर्ध यजोरे भाई ।।

ॐ ह्रीं बंदनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

मनवचकाय लगे जो दोषा, अहोरात रहे मन सदोषा ।
ता आलोचन उर लाई, वह होवे प्रतिक्रम भाई ।।

ॐ ह्रीं बंदनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

मनवच कायसु वस्तु त्यागे,नाही रोष करे बड़ भागे ।
उस प्रत्याख्यान बताई, सूरि नित्य करे सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

छोड़ा मोहप्रबल तन सोई,आतमध्यान धरे निज जोई ।
कायोत्सर्ग कहे भगवाना सूरि राज करे गुणवाना ।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

दोहा- ये षट् आवश्यक करे सूरि पद को धार ।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय कर होवे भवदधिपार ।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।७।।

पंचाचार ५ अर्घ्य (सुन्दरी)

तत्व जीव अजीव सु जानते, ध्याय निज में निज पहचानते ।
होय ज्ञानाचार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

कहत तत्व जिनेश्वर भाव से,धरत श्रद्धा सूरि स्वभाव से ।
होय दर्शन चार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं दर्शनाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।
त्याग सर्व सुसंग विराजते, पाल समिति गुप्ति सुराजते ।
कहत चारित चार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं चारित्राचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।
कर्मनाशक शक्ति बढ़ावते, धरत संयम तप अति चाव से ।
कहत वीर्याचारसु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं वीर्याचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।
तप तपे विधि द्वादश जानिए कर्महनि फिर शिवपुर ठानिए ।
होय तप आचार सुजानिए पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्रीं तपाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

(अडिल्ल)

ज्ञान दर्श चारित्र वीर्य तप आचरे, ये ही पंचाचार कहे सुख कार रे ।
पाले इनको सूरि महा गुणवान जी,पूजे मन वच काय हर्ष उर आनजी ।।
ॐ ह्रीं पंचाचार चारित्र प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

गुप्ति अर्घं (राधेश्याम्)

मन अति चंचल बस कर जग को इधर उधर दौड़ाता है ।
याते आतम ध्यान न पावे मोक्ष मार्ग नहीं पाता है ।।
धन्य धन्य गुरु आप जगत में मनको बस में कीना है ।
ध्यान धरत हो निज आतम का मोक्ष पन्थ को लीना है ।।
ॐ ह्रीं श्री मनोगुप्ति प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।
वचन बोलते हित मित मीठे कभी नहीं परमाद वहै ।
ऐसी भाषा कबहु न भाषे याते प्राणी पाप गहै ।। धन्य.
ॐ ह्रीं श्री वचनगुप्ति प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।
निज काया को वश में ठाने अरु चंचलता टारी है ।

रहित प्रमादी राखे थिरता दुरित जाल नहीं धारी है ।। धन्य.

ॐ ह्रीं श्री कायगुप्ति प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

दोहा- परम पूज्य आचार्य हो, पालो गुण छत्तीस ।
वसु विधि अर्घ्य चढ़ायकर, सदा नमाऊं शीस ।।

ॐ ह्रीं श्री षटत्रिंशद् गुण प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठि देवेभ्यो नमः स्वाहा ।

(यहां ६ बार जाप्य करें ।)

जयमाला

दोहा- छत्तीसों तुम गुण सहित,सूरी पद मुनिराज ।
गावें तब गुणमालिका, होय सफल मम काज ।।

पद्धडी

आचार्य परम गुरु धन्य आप, हम आगावें तुम यश प्रताप ।
जय परमशांत गुणगण समेत,हम ध्यावें नित प्रति सुगति हेत ।।१।।
यह वर्तमान जो कलि काल, कहते पंचम दुखमा जु काल ।
फिर पावे इसमे जीव ताप, जहां घोर महा मिथ्या कलाप ।।२।।
हर थान वामि पन्थि अपार, आरोप किया जिन धर्म सार ।
फैलाया था मिथ्यात्व अन्ध, सब जीव हुए सम्यक्त्व मन्द ।।३।।
उस वक्त प्रभु जिन धर्म हेतु, तुम प्रगट हुए थे धर्म सेतु ।
हो नष्ट किया पाखण्ड मार्ग, बतलाया था तुम मोक्ष मार्ग ।।४।।
अरु की प्रभावना आप सार, कर खण्ड खण्ड मिथ्याप्रचार ।
बतलाया सम तुम तुर्यकाल, जय सूरि हो तुम सुगुणपाल ।।५।।
जय भूत भविष्यत वर्तमान, आचार्य हुए जो सुगुणवान ।
उन स्याद्वाद वाणी अपार, जय हित मित प्रिय हो सुखदसार ।।६।।
दश धर्मादिक सेवत महन्त, अरु द्वादश विधि तुम तप तपन्त ।
षट आवश्यक मनमें उतार, अरु गहते पंचाचार सार ।।७।।

जय गुप्तित्रय वश में सु आन, इह विधि षटत्रिंषद गुण महान् ।
इन पाले श्रद्धा धार आप, कहलाते सूरि धर प्रताप ।।८।।
हो परम तपस्वी गुण निधान, जय मोह सुभट को नष्ट ठान ।
तुम शिक्षा दीक्षा दो अनूप, चारित्र बताया है स्वरूप ।।९।।
हो नग्न दिगम्बर तीर्थ रूप, भविजीव निकारे नीच कूप ।
सब भारत वर्ष बिहार कीन, उपदेश दिया तुम समीचीन ।।१०।।
हो करुणा सागर गुण अगार, अनुप्रेक्षा चिन्ते बार बार ।
बावीस परिषह हर्ष ठान, तुम सहते गुरुवर सुगुणवान ।।११।।
तब कथिर शास्त्र मंगल स्वरूप, जो बांचे सरधे हित अनूप ।
विपरीत करे जो ज्ञान गर्व, पावे नरकों का कष्ट सर्व ।।१२।।
तब नाम लेत कल्मष नशाय, अरुपावे सुख शिवनगरी जाय ।
सूरजमल तब चरणोंमें जाय,कर नमस्कार भव दुख नशाय ।।१३।।

घत्ता- जय सूरि महन्ता गुणगण सन्ता ध्यान धरन्ता ज्ञानी हो ।
जय भव भय भंजन आतम रंजन दुरित विभंजन ध्यानी हो ।।

ॐ ह्रीं षटत्रिंशद मूलगुण प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं ।।१४।।

दोहा- ध्यान धरे आचार्य का, जो प्राणी सुखदाय ।
करे कर्म की निर्जरा, अनुक्रम से शिव पाय ।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री उपाध्याय परमेष्ठि पूजा

(गीता)

पूज्य हो परमेष्ठि चौथे ध्याय पाठक राज जी ।
पालते गुण पंचविंशति हो मुनि सिरताजजी ।।
आव्हान हो गुरु आपका उर थापना हम कर रहे ।
सब हमारे दुरित मेटो ध्यान तब मन धर रहे ।।

ॐ ह्रीं पंचविंशति गुणोपेतोपाध्याय परमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट आव्हाननं । अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकं (त्रिभंगी)

गंगा नदी का जल अति उत्तम झारी लेकर मैं भरलाय ।
धार देऊं मैं श्री गुरुवर पद जन्म जरामृति दूर भगाय ।।
श्री सुपाठक परम् मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के मांही याते मैं पूजूं तुम पाय ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

गोशीर सुगन्धित ले कर्पुरो,केसर संगमें घिसु मनलाय ।
संसृति ताप मिटावन कारण चरण चढाउं बहु हर्षाय ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

चन्द्रकिरण सम उज्ज्वल अक्षत खंड विवर्जित धोकरलाय ।
पुंज करे हम पद पंकज में अक्षय निधि पावे सुखदाय ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्योःअक्षय पद प्राप्तये अक्षतानू निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

जुई चमेली वकुल केवड़ा, मरुवा दोना फूल मंगाय ।
चरण चढ़ावे मन हर्षा कर कामबाण मम तुरत नशाय ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यः कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

पकवान बनाया थाल भराया,रसना इन्द्रिय को सुखदाय ।
क्षुधा रोग तत्काल हनन को पद पंकज में छोडू आय ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

जगमग जगमग होत उजालो, कनकथाल में दीपक जोय ।

मोह तिमिर नाशे दुखदाई, आतम ज्ञान जगावो मोय ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो मोहन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

अगर तगर चन्दन का चूरा, और अनेकों द्रव्य मंगाय ।
धूप बनाकर खेय अग्नि में अष्ट कर्म नाशे दुखदाय ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्योऽष्ट कमं दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

सेव नारंगी आम्र विजोरा श्रीफल आदिक थाल भराय ।
महा मोक्ष फल पाउं याते पूजू पद पंकज में जाय ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक व्यजन नाना भांति बनाय ।
दीपधूप फल थाल संजोकर अर्घ चढ़ाऊं मनवच काय ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्री पंचविंशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

प्रत्येक अर्घ्य (पद्धडी)

जय पहलो आचारंग जान, मुनि पावे व्रत जिसका प्रमाण ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित यत्याचार सूचक अष्टादश सहस्र १८००० पद प्रमाणमाचारागस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

जय धर्म रूप किरिया विशाल जावर्णी सूत्र कृतांगहाल ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित ज्ञरन विनय छेदोपस्थापना क्रिया प्रतिपाद षट्त्रिंशत सहस्र ३६००० पद प्रमाण सूत्रकृतांगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

जय जीव थान जिसमें बताय जय स्थानाअंगसु बुद्धिगाय ।
इस अंग तनो जिस होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित षड़द्रव्यकाद्युत्तरस्थान व्याख्यान कारक द्वाचत्वारिंशत सहस्र ४२००० पद प्रमाण स्थानांगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

षड् द्रव्य त्रिलोकों का स्वरूप, है समवायांग सुकथ अनूप ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित धर्माधर्म लोकाकाशैक जीवसप्त नरक मध्य विल जम्बू द्वीप सवार्थसिद्धि विमान नन्दीश्वर द्वीप वापिका तुल्यैक लक्ष्य योजन प्रमाण निरूपकं भव भाव कथकं चतुषष्टी सहस्राधिक लक्ष १६४००० पद प्रमाण समवायांगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

जय अस्ति नास्ति का जान भंग, होवे व्याख्या प्रज्ञप्तिअंग ।
इस अंग तनो जिस होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित जीव किमस्ति नास्तिवा इत्यादि गणधर कृत प्रश्न षष्ठीसहस्र प्रतिपादक अष्टाविंशति सहस्राधिक द्विलक्ष २२८००० पद प्रमाण व्याख्या प्रज्ञप्ति अंगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

जय तीर्थंकर गणधर चरित्र जो ज्ञातृ कथा वर्णे पवित्र ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित तीर्थंकर गणधर कथा कथिका षटपंचाशत सहस्राधिक पंचलक्ष ५५६००० पद प्रमाण ज्ञातृ कथा अंगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

जय उपासकाध्ययना अंगहोय जो श्रावक धर्मसु कहतसोय ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित श्रावकाचार प्रकाशकं सप्तति सहस्राधिकैकादशलक्ष ११७००० पद प्रमाण उपासकाध्ययन अगस्य ज्ञाता उपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।७।।

जय तीर्थकर चौबीस जान हर तीर्थकर के तीर्थ आन ।
जय दशदश होवे मुनि सुजान,उपसर्ग सहनकर शिव प्रयाण
तिनकथा निरूपण है प्रसार,जय अन्तः कृत दश अंगसार ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित तीर्थंकराणां प्रतितीर्थं दशदश मुनयो भवन्ति ते उपसर्गान् सोढ्वा मोक्षयान्ति तत्कथा निरुपकमष्टाविंशति सहस्राधि त्रयोविंशति लक्ष २३२८००० पद प्रमाणमन्तःकृत दशांगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।८।।

चतुर्विंशति तीर्थंकर महान् हर तीर्थकर के समय आन ।
दश दश मुनि हो उपसर्गवान पंचानुत्तर पद ले महान् ।।
तिन कथा निरूपण जन लुभाय आनुत्तर उपपादिक लहाय ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित तीर्थंकराणां प्रतितीर्थ दश दश मुनयो भवन्ति ते उपसर्गान् सोढ्वा पंचानुत्तर पद पाप्नुवन्ति तत्कथानिरूपकं चतुर चत्वारिंशत सहस्राधिक द्विनवति लक्ष ९२४४००० पद प्रमाणमनुत्तरोप पादिकसस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।९।।

जय नाना प्रश्नोत्तर प्रदाय शुभ प्रश्न अंग व्याकरण गाय ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित नष्ट मुष्टयादिक प्रश्नानामुत्तर प्रदायकं षोडश सहस्राधिक त्रिनर्वात लक्ष ९३१६००० पद प्रमाणं प्रश्नव्याकरणांगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।१०।।

जय उदय उदीरण कर्मजान है सूत्र विपाकसु उदय जान ।
इस अंग तनो जिय होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित कमेणामुदयोदीरणा सत्ता कथक चतुरशीति लक्षाधिक कोटी १८४००० पद प्रमाणं विपाक सूत्रांगस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।११।।

हरि गीता- अंग एकादश विषेये, चार कोटि सुजानिए ।
अरु लक्ष पन्द्रह सहस दोहे पद महा यह मानिए ।।
पूजि हो हम भक्तियुत हो द्रव्य वसुविधि थालभर ।
सब दुरित हरि है नाथ मेरे में यजू हर्ष धर ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित द्वि सहस्राधिक पंचदश लक्ष चतुष्कोटी ४१५०२००० पद प्रमाणमेकादशांगानां ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।१२।।

१४ पूर्वाणां अर्घ्य (अडिल्ल)

शास्त्र महा उत्पाद पूर्व जिन वाण है ।
जन्म नाश ध्रुव वस्तु महा गुण गान है ।।

उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित वस्सुनामुत्पाद व्यय ध्रोव्यादि कोटि १०००००० पद प्रमाणमृत्पाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।

सप्त तत्व षट द्रव्य पदारथ जे कहै ।
पूरव है अग्राय नाय शुभ जेल है ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित अंगनामग्रभूतार्थ निरूपकं षण्णवति लक्ष ९६००००० पद प्रमाणमग्रायणीय पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१३।।

तीर्थंकर चक्रीस हरि शुभ गाइयो ।
नाम वीर्य अनुवाद चरित्र बताईयो ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित बलदेव चक्रवर्ति शक्र तीर्थंकरादि बलवरणकं सप्तति लक्ष ७००००० पद प्रमाण वीर्यानुवायद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१४।।

सर्व वस्तु में सप्त भंग शुभ कहत है ।
अस्तिनास्ति परवाद नामवसु लहत है ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित जीवादि वस्त्वास्ति नास्ति चेतिप्रकथकं षष्ठि लक्ष ६०००००० पद प्रमाणमस्ति नास्ति प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं।।१५।।

अष्ट ज्ञान उत्पत्ति सुकारण जानिये ।
स्वामी ज्ञान प्रवाद सु पूरब मानिए ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित अष्ट ज्ञान तदुत्पत्ति कारण तदाधार पुरुष प्ररूपकमेंकोन कोटि ९९९९९९९ पद प्रमाण, ज्ञान प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१६।।

वर्ण थान दो अक्ष आदि संस्कार है ।
सत्य प्रवादा पूर्व कहै जग सार है ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित वर्ण स्थान तदाधार द्विद्रिन्यादि वचन गुप्ति संस्कार प्ररूपकं षडधिक कोटि १००००००६ पद प्रमाणं सत्य प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१७।।

गमना गमन सुलक्षण जीवों का सही ।
पूरब आत्म प्रवाद नाम शुभ है यही ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित ज्ञानाद्यात्मक कर्तृत्वादियुतात्म स्वरूप निरूपकं षडविंशति कोटि २६०००००० पद प्रमाण आत्म प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।१८।।

बन्ध उदय कर्मों की सत्ता जानिए ।
कर्म प्रवादा पूरब कहत सु मानिए ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित कर्म वन्धोदयोपशमोदीरणा निर्जरा कथकमशीति लक्षाधिक कोटि १८००००० पद प्रमाण कर्म प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१९।।

प्रत्याख्यानरु द्रव्य तथा पर्यय कहै ।
प्रत्याख्यानी पूर्व नाम याका लहै ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देवकथित द्रव्यपर्यायरूप प्रत्याख्यान निश्चलन कथकं चतुरशीतिलक्ष ८४००००० पद प्रमाण कर्मप्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२०।।

पंच महाशत विद्याशत सत लघु सही ।
हैनिमित्त अष्टांग सुजिनवर विधिकही ।।
विद्या साधन फल भी जिनके वर्णये ।
है विद्या अनुवाद पूर्व संज्ञा लये ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित पंचाशत महा विद्या सप्तःशत क्षुद्र विद्या अष्टांग महानिमित्तानि प्ररूपयनदशलक्षाधिक कोटि ११००००० पद प्रमाण विद्यानुवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ।।२१।।

तीर्थंकर बल भद्र आदि जो हो गये ।
पुण्य कहै कल्याण वाद पूरब ठये ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित तीर्थंकर चक्रवर्ति बल भद्र वासु देवेन्द्रादिनां पुण्य भ व्यावर्णकं षट् विंशति कोटि २६०००००० पद प्रमाण कल्याणवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२२।।

मन्त्र तन्त्र अरु ज्योतिष विद्या है सही ।

भूतप्रेत की नाशक विधि विस्तर कही ।।
अष्टअंग के निमित्त कहे जिस सारजी ।
प्राणावायं पूरब नाम प्रचार जी ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित अष्टांग वैद्यविद्या गारुढ़ी विद्या मन्त्र तन्त्रादि निरूपकं त्रयोदश कोटि १३०००००० पद प्रमाणं प्राणावायं पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२३।।

गीत नृत्य है छन्द सु विधि जिसमें सही ।
सकल शास्त्र नयकला महा उसमें कही ।।
अलंकार का वर्णन जहां विशाल है ।
जानो परब किरिया नाम कमाल है ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित छन्दोलंकार व्याकरण कला निरूपकं नव कोटि ९०००००० पद प्रमाण क्रिया विशाल पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२४।।

लोकतीन सुख दुःखको वर्णन जानिए ।
मोक्ष हेतु है लोक विधि यह मानिए ।।उपाध्याय.

ॐ ह्रीं श्रीअरहन्तदेव कथित निर्वाणपदसुख हेतु भूतं सार्द्ध द्वादश कोटि १२५००००००० पद प्रमाण लोक बिन्दुसार पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।।२५।।

दोहा- ग्यारह अंग विशाल है चौदह पूरब जान ।
इनके ज्ञानी है सही पाठक गुरु महान ।।

ॐ ह्रीं श्री एकादशांगचतुर्दश पूर्वाणां ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।।२६।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठि देवेभ्यो नमः स्वाहा । (यह मन्त्र ९ जाप करें)

जयमाला

दोहा- पाठक परमेष्ठि महा, भव भव में सुखदाय ।
तिनके गुण की मालिका भवि जन कंठ धराय ।।

पद्धडी

जय पाठक हो परमेष्ठि आप, हम ध्यावें भक्ति मिटत ताप ।
जय नगन दिगम्बर आप राय, गुण-गावे मुनिवर मुक्ति पाय ।।१।।

जय ध्यान धरा हो आत्म सार, जिससे मिटता भव दुख अपार ।
जय मिथ्या तम नाशक दिनेश, सिर नावें सुरपति नर खगेश ।।२।।
जय आर्तरौद्र का कर निकार, धर धर्म शुक्ल आतम विचार ।
जय मोह सुभट को नाशकौन,जय कुसुम बाण को हरप्रवीण ।।३।।
जय आतापन तुम योग धार, दश धर्मादिक सेवत उदार ।
जय रत्नत्रय धर धर्म आप, जय विषय भोग नाशक सुचाप ।।४।।
जय विद्वतरत्न कहत आप, जय चर्चा करते सुख अलाप ।
जय पढ़े पढ़ावे शिष्य जान, याते पाठक तुम नाम मान ।।५।।
जय शिक्षा अद्भुत जगत मान, जय शिष्यों का नाशे कुज्ञान ।
जय गुरुवर हो तुम निर्विकार, जय काम कषायों को विडार ।।६।।
जय अंगसु एकादश प्रमाण, अरु चवदह पूरब है सुमान ।
इन ज्ञान भयो है आप नाथ, कर जोड़े नावे नित्य माथ ।।७।।
तब पाठक सब जग कहत नाम, सब जीव रटत है सरत काम ।
जय सौम्य मूर्ति है परम शांत, गुण पच्चिस धारे हो प्रशांत ।।८।।
जय पाठक हो शिव तिय रमन्त, जय ध्याता ध्यानी कहत सन्त ।
अध्यात्म रसिक हो सुगुण खान,जय ज्ञानामृत का करत पान ।।९।।
तब गावे गुरुवर गुण अपार, याते मिलती है मुक्ति नार ।
सूरजमल करता नमस्कार, संसार जलधि से वेगि तार ।।१०।।

धत्ता- जय पाठक ध्याऊं पूज रचाउं तिन गुण गाउं हर्षधरूं ।
भव ताप निवारी विपत विडारी बहु गुण धारी नमन करुं ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच विंशति मूलगुणोपेत श्री उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं ।।

दोहा

पाठक पूजो भाव से हर्ष महा उर धार ।
सुख सम्पत्ति बाढ़े सदा पुनि पावे शिव नार ।।

(इत्याशीर्वाद)

साधु परमेष्ठि पूजन

(सुन्दरी)

रहत मग्न सुध्यान सुभावते, परम तब कर हर्ष बढ़ावते ।
होय साधु महाव्रत धारते नमनकर हम पूज रचावते ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिन् अत्रावतारावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकम् (गीता)

जल सुप्रासक सुरसरीका स्वर्ण झारी लाइया ।
दे धार चरणों में सु आकर,जन्म मृत्यु नशाइया ।।
साधु हो तुम साधना में साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूं परमात्मा ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुण प्रतिपालक साधु परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।।१।।

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन घिस कटोरी में लिया ।
चर्चु युगलपद हर्ष धरकर ताप भव का नशदिया ।।साधु.

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुण प्रतिपालक साधु परमेष्ठिभ्यः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं ।।२।।

चन्द्र सम उज्वल अखंडित तंदुलों को लीजिए ।
अक्षय निधि के प्राप्ति हेतु पुंज गुरु ढिग कीजिए ।।साधु.

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

चंपा चमेली कुन्द मरुवा मोगरा बहु फूल ले ।
कुसुम इषु के नाश हेतु, चरण छोडू हुं भले ।।साधु.

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यः कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि ।।४।।

पूरी पकोड़ी खीर गूंजा और मोती चूरले ।
भेंट कर सम्यक गुरु के सुख तभी भरपूर ले ।।साधु.

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

शुद्ध घृत करपूर आदिक रत्न का दीपक करुं ।
आरती कर साधुवर की मोह राजा को हरुं ।।साधु.

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुणधारक साधु परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ।।६।।

लेकर सुगन्धित द्रव्य बहुविध धूप मनहर करलिया ।
खेय वेश्वानर के माहीं कर्म आठौ हर लिया ।।साधु.

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुण धारक साधुपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मविनाशनाय धूपं।

बादाम श्रीफल आम केला दाडिमादिक फल भले ।
थालभर छोड़े चरण में भ्रमण भव का सब टले ।।साधु.

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुणधारक साधुपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं ।

नीर चन्दन धवल अक्षत पुष्प मनहर लाइया ।
पकवान दीपक धूपफल सब अर्घ्य चर्ण चढ़ाइया ।।साधु.

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशति मूलगुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं।

अथ प्रत्येक पूजा (छन्द कामिनी)

जीव त्रस थावारा आप सम जानते ।
देय दुक्ख ना कभी योग त्रय हानते ।।
होय महाव्रत्त यह साधु बड़े भाग के ।
पाय मोक्षनार संग राग को त्याग के ।।

ॐ ह्रीं श्री अहिंसा महाव्रत मूल, गुणधारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं अर्घ्यं ।।१।।

नष्ट हो शरीर ना असत्य कभी भासते ।
हो भला जीव जिन वाणी को प्रकाशते ।।होय.

ॐ ह्रीं श्री सत्य महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

दे बिना न ले कभी न याचनाको ठानते ।
हो विरक्त नगन तन आत्म गुण जानते ।।होय.

ॐ ह्रीं श्री अचौर्य महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

नारि चार जाति जान साधु नित्य टारते ।
पाय शील रत्न शुभ काम का विडारते ।।होय.

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्य महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

त्याग संग दोयविध बाह्य अभ्यंतरा ।
छोड़ मोह जाल का लेय समता धरा ।।होय.

ॐ ह्रीं श्री परिग्रह त्याग महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

पंच समिति (जोगीराशा)

हस्त चार लख पद को धारे उर अनुकंपा लावे ।
त्रस थावर की रक्षा करते समता भाव बढ़ावे ।।
ईर्या समिति पाले साधु मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ।।

ॐ ह्रीं श्री ईर्या समिति प्रतिपालक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

सब जीवों से हित मित बोले खेद नहीं उपजावे ।
दे उपदेश रु अघ को टाले शिवमारग दर्शावे ।।
भाषा समिति पाले साधु मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ।।

ॐ ह्रीं श्री भाषा समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

सोधे भोजन ठाड़े लेवे मौन सहित बिन सेना ।
टाले अघ सबदोष असन मुनि मुखसे कहत न बेना
एषणा समिति पाले साधु मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ।।

ॐ ह्रीं श्री एषणा समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

वस्तु उठावे छोड़े भूपर पहले देखे भाई ।

करे नहिं परमाद कभी भी अघ सारे टर जाई ।।
समिति निपेक्षण जे पाले मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ।।
ॐ ह्रीं श्री आदान निक्षेपण समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

त्रस थावर की रक्षा करके मूत्ररु मल को त्यागे ।
करे नहि हे वैर किसी से हिंसा का अघ भागे ।।
समिति धरते प्रतिष्ठापन मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ।।
ॐ ह्रीं श्री प्रतिष्ठापन समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

पंचेन्द्रि रोध (अर्घ) चौपाई

हल्का सु भारी ऊषण ज़ान कोमल ठंडा करकस आन ।
रूक्ष चिकन अष्ट बखान इन्द्रिय कर्म सुभेद प्रमाण ।।
स्पर्शन इन्द्रिय है शैतान वीतरागि जन जीते महान ।
पूजूं वसुविधि अर्घ्य सुआन भाव भक्ति उरमें धरध्यान ।।
ॐ ह्रीं श्री स्पर्श इन्द्रिय विजय प्राप्त साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

खट्ठा मीठा कटुक कषाय चरपरा यह स्वाद कहाय ।
जीते इनको मुनिगण राय पूजूं वसुविधि अर्घ्य चढ़ाय ।।
ॐ ह्रीं श्री जिव्हा इन्द्रिय विजय प्राप्त साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

घ्राणेन्द्रिय है भेद सुदोय वश में इसके सब जग होय ।
जीते इनको मुनिगण राय पूजूं वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय ।।
ॐ ह्रीं श्री घ्राणेन्द्रिय विजय प्राप्त साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

नयना इन्द्रिय पांच सुहाय, विषय कहै है गणधर राय ।
जीते इनको मुनिगण राय पूजूं वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय ।।
ॐ ह्रीं श्री नयना इन्द्रिय विजय प्राप्त साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

कर्णेन्द्रिय के विषय जु सात कहत जिनेश्वर उर हर्षात ।
जीते इनको मुनिगण राय पूजूं वसु विधि अर्घ्य चढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं श्री कर्णेन्द्रिय विजय प्राप्त साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

षडावश्यक ६ अर्घ (पद्धडी)

सब जीवों से समता कराय, नहि राग द्वेष मन में लहाय ।
जे आर्तरौद्र द्वय ध्यान त्याग अरु सामायिक करते सुभाग ।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिक मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

जे करे संस्तवन भक्ति धार, चतुवीस जिनेश्वर गुण विचार ।
यह आवश्यक सु द्वितीय जान,हम पूजे वसु विधि द्रव्य आन ।।

ॐ ह्रीं श्री स्तवन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

जय वंदन करते बार बार, जिन देव तनी है सुखदसार ।
यह वंदन आवश्यक महान, हम पूजें सुन्दर द्रव्य आन ।।

ॐ ह्रीं श्री बंदना मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

जय रात दिवस जो दोष होय, जय ऊठत बैठत गमन होय ।
उस अघ नाशन के हेतु आप, शुभ करे प्रतिक्रम और जाप ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमण मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

मुनि षटरस युत सब वस्तु त्याग,जय करे उपोषण तयजत राग ।
वह होवे प्रत्याख्यान सार, हम पूजें मुनिवर बार-बार ।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यान मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

जिस आसन से मुनि ध्यान धार, वैराग्य चितारे जग असार ।
उपसर्ग होय बहु विध प्रकार, नहि छोड़े आसन निज विचार ।।

ॐ ह्रीं श्री कायोत्सर्ग मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

सप्त शेष गुण (गीता)

जब ऊँच नीच सुहोय भूमि खण्ड कंकर सहित हो ।
शयन करते शुद्ध पृथ्वी, किन्तु प्राणी रहित हो ।।
ते साधु मेरे उरवसो सब पाप क्षण में नाश हो ।
पूज वसु विध अर्घ्य लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ।।

ॐ ह्रीं श्री एकाशन शयन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

नहि रंच आभूषण गहें तन तेल इत्र नसेवते ।
रहत वैरागी वे सब में त्याग मंजन रेवते ।। ते.
ॐ ह्रीं श्री दन्त धावन त्याग मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।
जय रहित वस्त्र सु नगनतन हो,ओढते न विछावते।
सहत शीत उष्णताको आत्म निज को ध्यावते ।। ते.
ॐ ह्रीं श्री नगन तन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।
निजहस्त सिर के मूंछ दाढ़ी केशलुंचन करत हैं ।
नहि चहत है वे पर सहायक जीव रक्षा धरत है ।। ते.
ॐ ह्रीं श्री केशलुंचन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।
इक बार दिन में करत भोजन शुद्ध आतमध्यावते ।
रस रहित नीरस असन लेवें साधु कर्म नशावते ।। ते.
ॐ ह्रीं श्री एक बार भोजन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।
होकर खड़ेजे असन करते राग नहिं मन धरत हैं ।
जे साधते शिवमग सदा ते कर्म रिपु को हरत है ।। ते.
ॐ ह्रीं श्री ठाडे अहार मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।६।।
पवन चालै धूल आवे गातमे चिप जाय है ।
हो मैली देह सारी फिर न्हवन नहि लाय है ।। ते.
ॐ ह्रीं श्री स्नान त्याग मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।७।।
पंच व्रत अरु पंच समिति पंच इन्द्रिय वश करे ।
षट करे आवश्यक निरन्तर सप्तगुण चित आदरे ।। ते.
ॐ ह्रीं श्री अष्टा विंशति मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।।८।।

जयमाला

दोहा- मंगल मय तब नाम से पाप सकल नशि जाय ।
कहुँ श्रेष्ठ जय मालिका जो है शिव फलदाय ।।
जय नगन दिगम्बर रूप धार, जो तीर्थंकर का रूप सार ।
जय मुक्ति नगरी का पन्थ जान,सिर नावे सुरपित नृप महान ।।१।।

जय परम गुरु हो सुखद आप, भवि जीव करे तब नित्य जाप ।
जय मोह रिपू को चूर चूर, जय आतम रस गुण पूर पूर ।।२।।
जय भोग भुजंगा विषय जान, अरु है वे ये सब नर्क खान ।
सब अथिर लखां संसार आप, अरु होता जिसमें नित्य पाप ।।३।।
सब छोड़ चले गुरुवर महान, कदली तरुवर संसार जान ।
जय पंच महाव्रत धरत धीर, जय पंच समिति पालत सुवीर ।।४।।
जय इन्द्रिय पांचों विजय कीन, षट आवश्यक उर धर सुलीन ।
जय सप्त शेष गुण आप धार, ये गुण अट्ठाविस पाल सार ।।५।।
जय शीत कान सरनदियां तीर, अरु चौहट बैठे ध्यान धीर ।
जब चले हवा ठंडी दुखार, गुरु लगे वपु नहीं मन बिगार ।।६।।
ग्रीषम में पर्वत आप जाय, वर्षा ऋतु में है तरु सुहाय ।
द्वावीस परीषह सहत आप, नहीं कष्ट करे धर आत्म जाप ।।७।।
तब शत्रु मित्र में एक भाव, मणि कंचन कांच सु सम स्वभाव ।
जय पितृवन अरु महल देख, नहि पूज अपूजक द्वेष नेक ।।८।।
जय काम विभंजन आप सूर, गुण गावे हम नहि होत पूर ।
संसार भ्रमण से दो छुड़ाय, जय गुरुवर तुम हो जगत राय ।।९।।
जय स्वपर कल्याणक हो महान, संग त्याग दिया चतुवीस जान ।
जय आर्तरौद्र द्रय ध्यान छोड़,जय धर्म शुक्लमें मनसु जोड़ ।।१०।।
जय अन्तर बाहर तप तपन्त, जय द्वादश विधि ये कहत सन्त ।
उपसर्ग अनेकों सहत आप, जय धार हृदय में क्षमा चाप ।।११।।
जय साधु महागुण आपं धार, तप करे बरे हो मुक्ति नार ।
हम चरण शरण में आय आय, सूरजमल वन्दे शीष नाय ।।१२।।

घत्ता- जय जय रिषि राजा भव भय भाजा शिवके काजा आपवरं ।
हम गुण गावे शीष नवावे शिव फल पावे नष्टकरं ।।

ॐ ह्रीं अष्टविंशति मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं ।

दोहा- सर्व साधु परमेष्ठि नमि तारण तरण जहाज ।
मन वच तन से भजत हूं होय सफल मम काज ।।

इत्याशीर्वादः

जिन धर्म पूजा

परम पूज्य है धर्म अहिंसा जीवों को वह अति सुखदाय ।
स्याद्वाद पद महा विभूषित रत्नत्रय का है समुदाय ।।
संस्सृति का पथ भ्रमण मिटाकर अविनाशी ही पद सुखदाय
इनको पूजे जो भवि प्राणी थापन कर उरमे उमगाय ।।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वाद जिन धर्म अत्रावतरातर संवौषट आव्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकम् (सखी) (पाईता)

शीतल मिष्ट सुवासित चंगा, धारा देय महा जल गंगा ।
जन्म मृत्यु जरा नश जाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेवकथित स्याद्वाद जिनधर्मेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं।।१।।

बावन चन्दन सुरभित लाया केशर संघमें घिसी हुलसाया ।
भव्वाताप नशे दुख दायी, जिनवर धर्म यजो रे भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेवकथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं।।२।।

अक्षत धोय महा हितकारी ताके पुंज करो अतिभारी ।
अक्षयपाय निधि सुखदाई जिनवर धर्म यजो रे भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेवकथित स्याद्वाद जिनधर्मेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

कुसुमा नाना भांति सुचोखे, चंपा कुन्द गुलाब अनोखे ।
काम बाण की होय विदाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेवकथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं ।।४।।

गूंजे फेणी अनरसे ताजे वावर बर्फी धेवर साजे ।
डाकिन रोग क्षुधा भगजाई जिनवर धर्म यजो रे भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेवकथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

दीपक रतन अमोलक लाया घनसार सुघृत का जलाया ।
ज्ञान ज्योति महा उर जगाई जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेव कथित स्याद्वाद जिनधर्मेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।।६।।

लेउं धूप दशांगी नव्य, भासुर माहि खिपावो भव्य ।
आठों कर्म तुरत जल जाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेवकथित स्याद्वाद जिनधर्मेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं ।।७।।

आम्र काम्र अनारस केला हेम थाल में कर बहु भेला ।
पावे मोक्ष महा ठकुराई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं ।।८।।

नीर आदिक द्रव्यसु सुन्दर करते अर्चन सतत पुरन्दर ।
पावे पद अविनाशी सुखाई जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

(अथ प्रत्येक पूजा) कामिनी मोहन

क्रोध महानीच है स्वभाव का भुलावते ।
धार प्राणि मात्र क्रोध दुक्ख का पावते ।।
साधु जन जीत क्षमा भाव उर लावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नहीं खावते ।।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम क्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

अष्ट मद जीव से लगे अनादि काल से ।
पाय दुक्ख जीव महा गर्व की चाल से ।।
साधुजन जीत उस गर्व को न ध्यावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नहीं खावते ।।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

कुटिलत धार तिर्यचं गति जावते ।
लाद भार बन्ध वध दुक्ख का पावते ।।

साधुजन जीत मन सरलता लावते ।
पायवह मोक्ष सौख्य भ्रमण नहीं खावते ।।
ॐ ह्रीं श्री आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।
असत्य पाप खान है नीच प्राणि बोलते ।
धार झूंठ राज वसु नर्क भव डोलते ।।
धन्य धन्य साधुराज सत्य उपजावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नहीं खावते ।।
ॐ ह्रीं श्री सत्य धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।
लोभ महादुक्खदा अनन्त सब जीव को ।
होत नहि तोष कभी कष्ट ही सदीव को ।।
धन्य धन्य साधु राज काटि लोभ नीव को ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमण नहीं खावते ।।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।
निःसंयमी जीव दुक्ख पावते लखाय है ।
धार वह मनुष्य भव व्यर्थ में लुटाय है ।।
धन्य धन्य साधु रत्न संयमा को ध्याय है ।
पाय वह मोक्ष सौख्य गोत नहीं खाय है ।।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम संयम धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।
होय दो प्रकार तप बाह्य अभ्यन्तरा ।
करत ना अज्ञानी जीव दुख यो ही भरा ।।
उग्र तप तपत है महा योगीश्वरा ।
पाय वह मोक्ष सौख्य होय जिनवर वरा ।।
ॐ ह्रीं श्री उत्तम तप धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।
त्याग नहीं करत जीव मोह राज चालते ।
धार राग द्वेष ही दुक्ख को पालते ।।
धन्य धन्य सन्तराज त्याग खुश हालते ।

पाय वह मोक्ष सौख्य दुक्ख को टालते ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

संग चतुबीस ही देव जिनवर कहा ।
धारते संग जीव दुक्ख अन्त ना लहा ।।
धन्य धन्य नग्न हो सन्त त्यजते अहा ।
पाय वह मोक्ष सौख्य सन्त संग को दहा ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम आकिंचन धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

देव पशु मनुष्य की नारी को सेवते ।
करत अब्रह्म जो नरक पद लेवते ।।
धन्य साधु राज महा ब्रह्म उपसेवते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य हर्ष मन ठेवते ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१०।।

चरित्र दर्श ज्ञान को धार विपरीत ही ।
सेय मिथ्यात्व का करत है अनीत ही ।।
धन्य धन्य साधु रत्न तीन को साधही ।
पाय वह मोक्ष सौख्य होत है अवाध ही ।।

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रय धर्मेभ्यो अर्घ्यं ।।११।।

२५ मलदोष (जोगीराशा)

देव शास्त्र गुरु धर्म के ऊपर करता शंका भाई ।
सम्यग्दर्शन दोष यही है भव बनमें भरमाई ।।
होय निशंकि जिन वचनों में सम्यगदृष्टी होई ।
पूंजू उत्तम द्रव्य सु लेकर मोक्ष महा पद सोई ।।

ॐ ह्रीं शंकामल दोष रहित निशंकित गुणोपेतं सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

कर्मण परवश अन्तसहित है होय पाप का वीजा ।
ऐसे सुख में करता श्रद्धा समकित मल्ल कहिजा ।।
छोड़ अथिर सब सुखकी आशा समकित शुद्ध कहाया।

पूजूं मन वच काय त्रियोगा वसु विधद्रव्य चढ़ाया ।।

ॐ ह्रीं कांक्षित मल दोष रहित निकांक्षित गुणोपेतं सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

होय स्वभावी वषु अशुद्ध रत्नत्रय से शुद्ध ।
ऐसे मुनि तन ग्लानि करता समकित होय अशुद्ध ।।
होत नहीं है ग्लानि इससे समकित शुद्ध कहाई ।
उत्तम द्रव्यसु अर्घ्य बनाकर पूंजूं मनवच काई ।।

ॐ ह्रीं अनिर्विचिकित्सा मलदोष रहितं निर्विचिकित्सा गुणोपेतं सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

मिथ्यादर्शन पन्थि जनो की थुति करे हर्षाई ।
ये ही दर्शन दोष करत हैं जो भव भव दुखदाई ।।
खोटे मारग पन्थि जनो की नहीं प्रशंस उचरे हैं ।
सम्यग्दर्शन पाले ज्ञानी, भवदधि सें उतरे हैं ।।

ॐ ह्रीं मूढ़दृष्टीमलदोष रहितं अमूढ़ दृष्टि गुणोपेतं सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

पावन सम्यक्रत्न सुमारग अज्ञानी जन हरते ।
निन्दा होती धर्म तनी जब दर्शन मल स्वीकरते ।।
रत्नत्रय का मारग ज्ञाता पर अवगुण का छिपावे ।
करता सम्यग्दर्शन शुद्ध जिन मारग हि दिपावे ।।

ॐ ह्रीं अनूपगुहन मल दोष रहित उपगूहन गुणोपेतं सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं।।५।।

सम्यग्दर्शन चारित्रनग से गिरता है यदि कोई ।
ज्ञानी होकर थिर नहीं करता समक्ति मलिन सहोई।।
धर्म बन्धु जन गिरते जन को फिर से थपित करते।
सम्यग्दर्शन शुद्ध उन्हीं का शिवरमणी को वरते ।।

ॐ ह्रीं अस्थितिकरण मल दोष रहितं स्थितिकरण गुणोपेतं सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं।।६।।

धर्मरु धार्मिक सज्जन ऊपर प्रीति नहीं जो करते ।
सम्यग्दर्शन दोष उनका भवद्धि नाहीं तारते ।।
करते धार्मिक बन्धुजनों में प्रीति महागुण धारी ।

बत्सल अंग कहे उसको गण पूज महा दुखहारी ।।

ॐ ह्रीं अवात्सल्य मलदोषरहित वात्सल्य गुणोपेतं सम्यग्दर्शन जिनधर्मेभ्योऽर्घ्यं।।७।।

ज्ञानी होकर मिथ्यातम को दूर नहीं जो करते ।
नहीं बढ़ावे जैन धर्म का समकित दोष सुहारते ।।
जैसे तैसे प्रसरित तम को नश कर धर्म बढ़ावे ।
सम्यग्दर्शन होता शुद्ध वसु विध द्रव्य चढ़ावे ।।

ॐ ह्रीं अप्रभावनामलदोष रहित प्रभावनांग शुणोपेतं सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।८।।

अष्ट मद - दोहे

करत नहीं मद को कभी पिता भूप हो जाय ।
मदकरता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्रीं पितृभूपमद मल दोष रहितं सम्यग्दर्शन जिन धर्मेभ्योऽर्घ्यं ।।९।।

मनमे नामद लावते मामा नृप बन जाय ।
मदकरता दर्शन मलित कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्रीं मातुल मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।१०।।

रूप नहीं थिर रहत है क्यों फिर मदमन ल्याय ।
मदकरता दर्शन मलित कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्रीं रूप मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।११।।

करत नहीं मद ज्ञान का नरकों में ले जाय ।
मदकरता दर्शन मलित कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानापद मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।१२।।

अथिर रूप इस संग का क्यों कर गर्व कराय ।
मदकरता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्रीं धन मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।१३।।

नाशवन्त तनु शक्ति है मद उरमे न वसाय ।
मदकरता दर्शन मलित कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्रीं शक्ति मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।१४।।

तप का मद करत है व्यर्थ तपस्या जाय ।
मदकरता दर्शन मलित कहत जिनेश्वर राय ।।
ॐ ह्रीं तप मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।१५।।

प्रभूता मुझ में है बड़ी करता मद दुखदाय ।
मदकरता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।
ॐ ह्रीं प्रभुता मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।१६।।

गीता-पूर्णार्घ्यं

जनक भूप सु जजनी भ्राता नृप मेरे बलकार है ।
रूप सुन्दर ज्ञान बहु विध धन मेरा हितकार है ।।
शक्ति प्रभु में है बड़ी तप करत हूं सुखकार हैं ।
प्रभुता अनुपम मुझमें इस विध करत मद दुखकार है ।
ॐ ह्रीं अष्टमद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्यो पूर्णार्घ्यं ।

३ मूढ़ता-गीता

सरित न्हाये नमत पीपल ढ़ेर बालु पूजते ।
पर्वतों से पात करते अग्निमाहीं हूजते ।।
कहत जिनवर लोक मूढ़ा, दोष सम कित दायजी ।
संसार में बहु दिन रुलावे मोक्ष सुख नशायजी ।।
ॐ ह्रीं लोक मूढ़ता मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।

जो रागी द्वेषी देवता को पूजते हर्षायकर ।
प्राप्त होगा वर मुझे यह आश मन में लायकर ।।
कहत जिनवर देव मूढ़ा दोष समकित दायजी ।
संसार में बहुदिन रुलावे मोंक्ष सुख नशायजी ।।
ॐ ह्रीं देव मूढ़ता मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।

जो है सग्रन्थियुक्त हिंसा डूबते संसार में ।
अरु डुबोवे बहु जनों को घूमते वेकार में ।।
सत्कार करता इन जनों का मूढ़ पाखंड होय है ।

ये हि समकित दोष ठाने कर्म मल न धोय हैं ।।
ॐ ह्रीं पाखण्डी मूढ़ता मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।

६ अनायतत-गीता

देवता के हैं न लक्षण देवता जो बन रहे ।
दोष अष्टादश जिन्हों में राग द्वेषी हों रहें ।।
देब कु कहते इन्हों का देव गण धर राय हैं ।
नमन करते प्राणी इनको दोष दर्शन लाय हैं ।।
ॐ ह्रीं कुदेव अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।
अक्ष पंच न वशमें जिसके जो सग्रन्थि है बना ।
जटा धारे भस्म सारे बह गुरु भव में सना ।।
होत ऐसे गुरु मिथ्या देव जिनवर भासिया ।
नमन करते प्राणी इनको दोष दर्शन आंखिया ।।
ॐ ह्रीं कुगुरु अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।
एकान्त से दोषि जो हैं वह मांस खाना है लिखा ।
आदि अन्त न एक जिसका कपिल आदिक का भखा ।।
होत मिथ्या शास्त्र ऐसे देव जिनवर भासिया ।
नमन करते प्राणी इनको दोष दर्शन आखिया ।।
ॐ ह्रीं कुशास्त्र अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।
जो है कुदेबा राग युक्त भार्या के साथ में ।
हस्त में त्रिशूल राखे गंग निकल माथ में ।।
है उपासक इनके प्राणी उन प्रशंसा धारते ।
मलिन कर सम्यक रतन को तुच्छ भव स्वीकारते ।।
ॐ ह्रीं कुदेव उपासक अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।
अन्तर में धारे राग को बाहर में बम्बर ले घने ।
धारले कुमेष मिथ्या जग में गुरु जो है वने ।।
हे उपासक, इनके प्राणि उन प्रशंसा धारते ।

मलिन कर सम्यकरतन को तुच्छ भव स्वीकारते ।।
ॐ ह्रीं कुगुरु उपासका अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।

सर्वज्ञ का भाषित न होवे अल्प ज्ञानी का बना ।
एकान्त मत को पोषता जो शास्त्र मिथ्या है घना ।।
है उपासक, इनके प्राणि उन प्रशंसा धारते ।
मलिन कर सम्यकरतन को तुच्छ भव स्वीकारते ।।
ॐ ह्रीं कुशास्त्रोंपासका अनायतन मलदोषरहित सम्यग्दर्शन जिन धर्मेभ्योऽर्घ्यं ।

७ भय दोहे

नष्ट न होवे इष्ट मम ना अनिष्ट मिल जाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्रीं इह लोक भय मल दोष रहितं सम्यग्दर्शन जिन धर्मेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

स्वर्गगति या दुर्गति होगा चित भरमाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्रीं परलोक भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

मूर्छित होय शरीर में दुख ना मम होजाय ।
भय करता वह रातदिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्रीं वेदना भग मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

मम रक्षक कोई नहीं मन में शंका लाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्रीं आरक्षाभय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

मम वस्तु यह प्रिय अति चुरा नहीं ले जाय ।
भय करता वह रात समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्रीं अगुप्त भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

बाल वृद्ध युवक रहुं मरण नहीं हो जाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्रीं मरण भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

बज्रपात गिरकर कहीं मरण बीच नहीं पाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्रीं आकस्मिक भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।७।।

८ विनय के अंग-नाराच

अंग पूर्व शास्त्र अरु अन्य ग्रन्थ राय के ।
सूत्र अर्थ ज्यों लिखा वाणिमें लायके ।।
करत अभिमान नहीं विनय अन्य ध्यायके ।
पूजहुं द्रव्य वसु भक्ति उर लायके ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित बहुमानाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

व्याकरण अनुसार शब्द शुद्ध उच्चारते ।
करत न प्रमाद जीव अशुद्ध शब्द टारते ।।
होत शब्द शास्त्र जिन वदन ते निकारते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति उर धारते ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित सम्यक शब्दाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

श्लोक के अर्थ को चित्त में उतारते ।
हो यथार्थ शुद्ध ही गलत न चितारते ।।
होत अर्थचार जिन वदन ते निकारते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति उर धारते ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित अर्थाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

अर्थ अरु शब्द शुद्ध ध्यानमें लावते ।
करत न अशुद्ध पाठ अर्थ में लुभावते ।।
होत उभयचार जिन कहत सु भावते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति ना छिपावते ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित उभयाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

करत स्वाध्याय न अकाल में जीव ही ।
बाँधते न पाप समय वांचते सदीव ही ।।

होत कालचार जो कहत जिनदेव ही ।
पूजहूं द्रव्य अष्ट भक्ति जा सदैव ही ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित कालाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

हस्त पैर धोयकर करत स्वाध्याय जी ।
वस्त्र भी शुद्ध हो शुद्ध निज काय जी ।।
कहत विनय चार शिव मार्ग का उपाय ही ।
पूजहूं द्रव्य अष्ट भक्ति जो सदैव ही ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित विनयाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं ।।६।।

श्लोक के अर्थ का चित्त में उतारते ।
हो यथार्थ शुद्ध ही गलत न विचारते ।।
करत स्वाध्याय जिन वाणिका आप जी ।
भूलते ना कभी पाप सर्व जाय जी ।।
होत उपधना-चार कहत गणराज जी ।
पूजहूं द्रव्य अष्ट भक्ति उर ध्याय जी ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित उभयाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं ।।७।।

प्राप्त कर ज्ञान गुरु राय को छिपावते ।
करत पाप दुष्ट जीव नर्क उपजावते ।।
छुपात ना नाम गुरु ऊंच गति पावते ।
होत अनिन्हवाचार ही स्वभावते ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित अनिन्हवाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं ।।८।।

पूर्णार्घ्य-गीता

शंकादि पंच विंशति है दोष समकित जानिए ।
होत नहीं सम्यकत्व शुद्ध रहत इनके मानिए ।।
छोड़कर इन दोष मल को शुद्ध समकित कीजिए ।
नीरादि उत्तम द्रव्य लेकर शुद्ध समकित पूजिए ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथितसर्व मल दोष रहित शुद्ध सम्यक्त्व मार्गेभ्योऽर्घ्यं ।।

पांच ज्ञानों के अर्घ्य-जोगीराशा

इन्द्रिय अरु मन से सदा ही जाने पुद्गल रूप ।
होय वह मति ज्ञानसु उत्तम जिनवर कहत सरूप ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कंचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित मति ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं ।।

वीरज अन्तराय सुश्रुत का होय क्षयोपशम भाई ।
जान वह सब द्रव्य सुज्ञानी अक्षर अनक्षर गाई ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कंचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काम सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित श्रुत ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं ।।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल की सीमा लेकर रूपी द्रव्य ।
जानत अवधि ज्ञान यही है श्रद्धो प्राणी भव्य ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कंचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित अवधि ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं ।।

मन में पर के रूपी द्रव्य होय वह जिस काल ।
जाते मन पर्यय सुज्ञानी नमो सदा शुभ भाल ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कंचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित मन पर्यय ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं ।।

तीन लोक के द्रव्य सुपर्यय जाने युगपद ज्ञानी ।
नाम सुकेवल ज्ञान उसी का होय नहीं अभिमानी ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कंचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित केवल ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं ।

१३ प्रकार चरित्र अर्घ

पंच महाव्रत पंच समीति गुप्तित्रय शुभ कारे ।
होय त्रयोदश चरित्र ये ही मुनिगण इनको धारे ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कंचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदश चारित्रेभ्योऽर्घ्यं ।

नाराच

होय भव्य जीव जो भाय सोल भावना ।
भ्रमत नहीं अथिर भव तीर्थ पद पावना ।।
हे यही देव जिनराज की देशना ।
अर्घ ले पूजते पाप सब नाशना ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनवर देव कथित षोडस कारण भावना जिन धर्मेभ्योऽर्घ्यं ।।
ॐ ह्रीं श्री स्याद्वाद अहिंसा परमो धर्मेभ्यो नमः स्वाहा ।

(यहां ६ बार पुष्पों से जाप्य करें ।)

जयमाला

दोहा- जैन धर्म प्रसाद से दुष्ट जीव तर जाय ।
गाऊं महिमा धर्म की सुगति पंथ लगाय ।।

पद्धडी

जय धर्म अहिंसा सार जान, है सब धर्मों में अति महान ।
निस कारण बन्धु सु धर्म एक, भविध्यावे दुरित न रहे नेक ।।
जो जीव फिरे संसार माहि, उनको तारक है अन्य नाहि ।
जय स्याद्वाद इक धर्म सार, जो ध्यावे मुक्ति तुरत धार ।
जय रत्न त्रय दश धर्म रूप, जय अनेकान्त महिमा अनूप ।
सब भेद अहिंसा धर्म जान, अरहन्त देव की खिरतवान ।
जय रामचन्द्र हनुमान वीर, धर धर्म हुए वे मुक्ति वीर ।

जय पंच शतक मुनि धानिपेल, नहीं डिगे आप प्रिय धर्म सेल ।
जय गंगा में पुनि दिये डाल, चित्तधार धर्म रह गुण विशाल ।
जय तीर्थंकर चक्री महेश, वृषधार गये मुक्ति हमेश ।
आचार्यं मुनि शुचि धर्म धार, हो गये भवो दधि आप पार ।
सति मैना सुनदर एक नार, पति कुष्ट नशाया धर्म धार ।
जय अंजन सीता जानि नारि, जय पावन धर्म हिय विचारि ।
इस विधि अनेकों भविक राज, वृषधर लहै है मुक्ति राज ।
जिन धर्म तनी महिमा महान्, सूरज से प्रभु नहीं होत गान ।
निष्करण बन्धुसु धर्म एक, भवि ध्यावे दुरित न रहे नेक ।

घत्ता- जय जय जिन धर्मं है अति परमं नाशक कर्मं ध्यावत है ।
हम महिमागावें सुख उपजावे मुक्ति रमा को पावत है ।।

ॐ ह्रीं श्री स्याद्वाद जिन धर्मेभ्योऽर्घ्यं ।।१६।।

अडिल्ल- दश लक्षण अरु रत्नत्रय सुखदाय जी ।
भविजन पूजत धर्म अहिंसा पाय जी ।।
सुख संपत बढ़ जाय, दुरित नश जाय जी ।
शिखरमणी भर्तार बने भवि राय जी ।।

इत्याशीर्वादः

जिनवाणी पूजन

श्रीअरहन्त परमगुरु सुख से आई हो सब भरम मिटाय।
सत्यारथ पथ को दर्शाकर सम्यग्ज्ञान की ज्योति जगाय ।।
वह जिनवाणी आ उर मेरे वास करो मम कर्म खपाय ।
आठों विधिसे पूजूं माता मन वच तन इक भाव लगाय।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवी अत्रावतरावतर संवौषट आव्हाननं ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकं-सोलहकारण पूजन चाल

संयम धर मुनिमन सम लेय,झारी भरकर आप चढ़ेय।
पूजूं आय जय जिनवाणी पूजूं आय ।।
जिनवाणी मम माता आप, पूजै मिटे महा सन्ताप ।
पूजूं आय जय जिनवाणी पूजूं आय ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं ।
मलयागिरी शुभ चंदन लाय, अरु केशर संगमे घिसवाय ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ।। जिनवाणी.

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यः संसारताप विनाशनाय चदनं ।
अक्षत धवल धोयकर लाय, माता सनमुख पुंज कराय ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ।। जिनवाणी.

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यो अक्षत पद प्राप्तेय अक्षतं ।
पुष्प मनोहर चुन भरि थार, जाति मरुआ अरु कचनार ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ।। जिनवाणी.

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं ।
लाडू, पेड़,पूरी आन, भरकर थाल धरुं पकवान ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ।। जिनवाणी.

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।
जगमग जगमग होत उद्योत, घृत दीपक की सुन्दर ज्योत ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ।। जिनवाणी.

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ।
धूप दशंगी खेई जोर, भासुर कर्म उडै झक झौर ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ।। जिनवाणी.

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं ।।७।।
केला कमरख अरु बादाम, श्री फल पिस्ता खारिक आम ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ।।

जिनवाणी मम माता आप, पूजै मिटे महा सन्ताप ।
पूजूं आय जय जिनवाणी पूजूं आय ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यो मोक्षफल प्राप्तेय फलं ।।८।।

ले जलादिसब अर्घ बनाय, स्वर्ण थाल भर तुम्हें चढ़ाय ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजूं आय ।। जिनवाणी.

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाँग श्रुत देवीभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तेयऽर्घ्यं ।।९।।

अथ प्रत्येक अर्घं

अंगबाह्य चतुर्दश प्रकीर्णक

दोहा- सामायिक के काल सब मुनिगण के बतलाय ।
शास्त्र महा जो है सही सामायिक कहलाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित सामायिक विस्तार कथकं शास्त्राय अर्घ्यं ।।१।।

चौबीसों जिनराज की, थुति होवे जिस माहीं ।
नाम शास्त्र है संस्तवन,जिनवर मुख निकसाही ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित वृषभादि नाम चतुर त्रिंशदतिशय प्रातिहार्य लक्षण वरणादि व्यावर्णकं चतुर विंशति स्तवन नाम शास्त्राय अर्घ्यं ।।२।।

चौबीसों जिनराज में स्तवन एक का होय ।
नाम बंदना कहत है शास्त्र महा सुख सोय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित अरहन्तादि नाम एकैकशोऽभिवन्दना विधान बोधित वन्दना नाम शास्त्राय अर्घ्यं ।।३।।

रात दिवस जा दोष हो निराकरण जिस माहीं ।
प्रतिक्रमण वह शास्त्र है, नाम प्रथित सुखदाई ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित दिवस रात्री पक्ष चातुर्मास संवत्सरेर्यापथिकोत्मार्थ प्रभव सप्त प्रतिक्रमण प्ररूपकं प्रतिक्रमण शास्त्राय अर्घ्यं ।।४।।

विनयाचार प्रकार का, अर्थ प्रकाशन हार ।
वैनयिक यह नाम है शास्त्र महा सुख कार ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित ज्ञान दर्शनं चरित्रोपचार लक्षण पंच विध विनय प्ररूपकं विनय शास्त्राय अर्घ्यं ।।५।।

शिक्षा दीक्षा कर्म को, बतलावे यह शास्त्र ।
कृति कर्मा तसु नाम है, पढ़त शुद्ध हो गात्र ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित शिक्षा दीक्षादि सत्कर्म प्रकाशक कृति कर्म नाम शास्त्रायअर्घं ।।६।।

द्रुम पुष्पादिक भेद अरु यत्याचार वताय ।
दश वैकालिक शास्त्र को नमो भविक सिरनाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित द्रुम पुष्पादिक दर्शाधकरै मुनिजनाचरण सूचक दश वैकालिक शास्त्राय अर्घ्यं ।।७।।

हो उपसर्ग मुनीश का सहनन फल दिखलाय ।
समय उत्तरययन है नाम जिनेश्वर गाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तदेव कथित नानोपसर्ग सहनन निवेदकं उत्तराध्ययन शास्त्रायऽर्घ्यं।।८।।

योग्य सेवन को कहै, सेवन होय अयोग्य ।
प्रायश्चित बतलाय है गण धर कहत सुयोग्य ।।
शास्त्र महा सुख है, व्यवहारा शुभ जान ।
स्वर्ण थाल में अर्घ ले पूजै मन उमगान ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित यतिनाम योग्य सेवन सूचक अयोग्य सेवन प्रायश्चित कथन कल्प व्यवहार शास्त्राय अर्घ्यं ।।९।।

यति श्रावक आचार को काल देख बतलाय ।
योग्या योग्य विचार के वर्णन कहत सुखाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित काल माश्रित्य यति श्रावक नाम योग्यायोग्य निरूपकं कल्पाकल्प शास्त्राय अर्घ्यं ।।१०।।

यति शिक्षा दीक्षा सही गण पोषण बतलाय ।
नाम महाकल्पं कहा गण धर कहत सुखाय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित शिक्षा दीक्षा गण पोषणात्म संस्कार भावनोत्तमार्थ भेदेन षटकाल प्रतिबद्ध यतिनामा चरणं प्रतिपादय महाकल्प शास्त्रायऽर्घ्यं ।।११।।

स्वर्गो में उत्पत्ति है पुण्य महा सुखदाय ।

पुण्डरीक इस शास्त्र में जिनवर भाषा आय ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित भवन वास्यादि देवेषु उत्पत्ति कारण तम प्रकृति प्रति पादक पुण्डरीक शास्त्रायऽर्घ्यं ।।१२।।

देवसुरी पदवी मिले पुण्य प्रकाशन हार ।
शास्त्र महा पुण्डरीक कहै गणधर कहत विचार ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित देवांगना पद प्राप्ति हेतु पुण्य प्रकाशक महापुण्यरीक शास्त्रायऽर्घ्यं ।।१३।।

पुरुष उमर अरु शक्ति सम सूक्षम थूल जु दोष ।
शक्ति देख दे दण्ड का वर्णन करत अदोष ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित स्थूल सूक्ष्म दोष प्रायश्चित पुरुष वयः सत्वाद्यपेक्षया प्ररुपयन्ति मशीति का शास्त्रायऽर्घ्यं ।।१४।।

गीता-पूर्णार्घ्यं

अशीति सामयिक थुति अरु वंदना प्रति क्रमण है ।
विनय अरु कृति कर्म दश वैकालिक का कथन है ।।
अष्ट उत्तरध्ययन का व्यवहार कल्पाकल्प है ।
वृहत कल्पं पुण्डरीकं वृहद पुंडरिक जल्प है ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित अंग बाह्य चतुर्दश प्रकीर्णन २५०३३८० श्लोकेषु १५ अक्षर पद प्रमाण अंगेभ्योपूर्णार्घ्यं ।।१५।।

अथ ११ अंग अर्घं (सुन्दीर)

महायति चारित जिसमें कहा, कहत आचारंग शुभ लहा ।
सहस अष्टादश पद मानिए अर्घ्यं पूजूं वसु विधि ठानिए ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित अष्टादश सहस १८००० पद प्रमाण सहित आचारागायऽर्घ्यं ।।१५।।

ज्ञान विनया छेदुपथापना कहत सूत्र कृतांग शुभ घना ।
सहस छत्तिसो पद शोभना करत पूजा दुख नहीं होवना ।।

ॐ ह्रीं षट् त्रिंशत्सहस्र ३६०० पद प्रमाण सूत्र कृताँगाऽर्घ्यं ।।१६।।

द्रव्य षट् आदिक व्याख्यान है होय थाना अंग प्रधान है ।

सहस बैय्यालिस पद होत है पूज तिनको दोसव धोक हैं।।

ॐ ह्रीं द्वाचत्वारिंशद सहस्र ४२००० पद प्रमाण स्थागाँगायऽर्घ्यं ।।१७।।

लोकत्रयसु प्ररुपण हैं जहां, नाम समवायांगसु है तहां ।

सहस चौसठ अधिक सुलक्षहै पद जिनेश्वर भाषे दक्ष है।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठ्याधिक सहस्र लक्षैक १६४००० पद प्रमाण सहित समवायांगायऽर्घ्यं ।।१८।।

अस्ति नास्ति सुसप्तहि भंग है कहत व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग है ।

सहस अट्ठाबिस दो लाख है पद जिनेश्वर की शुभ भाख है ।।

ॐ ह्रीं गंणधर कृत प्रश्न, षष्टी सहस्रप्रति पादक अष्टाविंशती सहस्रधिक द्विलक्ष २२८००० पद प्रमाण व्याख्या प्रज्ञप्ति अंगाय अर्घं ।।१९।।

गणधरा अरु हो तीर्थं करा चरित्र पावन जामे सुख भरा ।

सहस्र छप्पन लक्ष सु पांच है अंग ज्ञातृ कथा सु सांच है ।।

ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित पंचाशत् सहस्राधिक पंच लक्ष ५५६००० पद प्रमाण ज्ञातृ कथागायऽर्घ्यं ।।२०।।

उपासका ध्ययनंगं है सही चरित श्रावक का सु कहत ही ।

सहस सप्तति लक्षैकादशा कहंत पद जिन देवसु मनवसा ।।

ॐ ह्रीं अरहन्त देवकथित सप्तति सहस्राधिकैकादश लक्ष ११७०००० पद प्रमाण उपसकाध्ययनंगायऽर्घ्यं ।।२१।।

होय तीर्थंकर के सामने, तीर्थ प्रति मुनिवर दश दश बने ।

कष्ट सहया उन मुनिराय ने पाई शिवनारी गुरु राय ने ।।

चरित्र है जिनका उसमें सही नाम अन्तःकृत दश है यही ।

सहस अष्टाविंशति लक्ष हैं कहत तेविस जिन पद दक्ष हैं ।।

ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित अष्टाविंशति सहस्राधिक त्रयोविंशति लक्ष २३२८००० पद प्रमाण अन्तःकृत दशांमायाऽर्घ्यं ।।२२।।

होय तीर्थंकर जिन रायजी तीर्थप्रतिदश दश मुनिरायजी ।

सहन कर उपसर्ग महानजी पाय पंचोत्तर पद आन जी ।।

हो कथा जिनकी उस अंग में अनुत्तरा उपपादिक भंग में ।

लक्ष वान्नु हजार चवालिसा कहत पद अनुपम शिव नारीशा
ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित चतुष्चतूवारिंशन् सहस्राधिक द्विनवति लक्ष ९२४४००० पद प्रमाण उपपादिकदशांगायऽर्घ्यं ।।२३।।

प्रश्न उत्तर जिसमें सुशोभते प्रश्न व्याकरणं मन मोहते ।
लक्ष तेरानु शुभ पाइया सहस सोलह पद जिन गाह्या ।।
ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित षोडष सहस्राधिक त्रिनवति लक्ष ९३१६००० पद प्रमाण प्रश्न व्याकरणांगायऽर्घ्यं ।।२४।।

उदय उदीर्णा कर्म बखानते कहत सूत्र विपाक सुजानते ।
एक कोटि चौरासी हजार है पद महा जिसमें व्यवहार है ।।
ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित चतुर शीति लक्षाधिक एक कोटि १८४००००० पद प्रमाण विपाक सूत्रागायऽर्घ्यं ।।२५।।

चारकोटि सु पन्द्रह लाख है,सहस दो पद की शुभशाख है ।
अंग एकादश के पद यहा करत पूजन ये नुत हो अहा ।।
ॐ ह्रीं अरहन्त देव कथित द्विसहस्राधिकपंचदश लक्ष चतुष्कोटि पद प्रमाण ४१५०२००० एकादशांगाय पूर्णाऽर्घ्यं ।।२६।।

(अडिल्ल)

अरब एक वसु कोटि सु जिनवर गाइया ।
लक्ष सु अडसट सहस छपन्ना मानिया ।।
पंच पदों कही संख्या अनमोल जी ।
पूजों वसुविधि द्रव्य सु दिल को खोलजी ।।
ॐ ह्रीं दृष्टी वाद अंगस्य पंचाधिकषट्पंचशत सहस्राष्टषष्टी लक्षाष्ट कोटयैकारब पद प्रमाण १०८६८५६००५ पद प्रमाण द्वादशांगेभ्योऽर्घ्यं ।।२७।।

पंच प्रज्ञप्ति अर्घ्यं (अडिल्ल)

चन्द्र आयु गति विभव निरुपण है सही ।
चन्द्र प्रज्ञप्ति नाम लहै इस ही मही ।।
छत्तिस लाख सु पंच सहस पद जिन कहै ।
पूजूं मन वच काय हर्ष उर में लहै ।।

ॐ ह्रीं पंच सहस्राधिक षट्त्रिंशद लक्ष ३६०५००० पद प्रमाण चन्द्रायुगति विभव प्ररुपिका चन्द्र प्रज्ञप्तयेऽर्घ्यं ।।२६।।

रवि आयु गति होय निरुपण है सही ।
सूर्य प्रज्ञप्ति नाम लहै इस ही मही ।।
लक्ष पांच त्रय सहस महापद गण कहा ।
पूजूं मन वच काय हर्ष उर में लहा ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिशत् सहस्रादिक पंचलक्ष ५०३००० पद प्रमाण सुर्यायुगति विभव प्ररूपिका सूर्य प्रज्ञप्तयेऽर्घ्यं ।।२७।।

वर्णन जम्बू दीप तनो जो करत हैं ।
नाम प्रज्ञप्ति जम्बू उसी का धरत है ।।
तीनलाख अरु सहस पचीस सु पद लहा ।
पूजूं मन वच काय हर्ष उर में लहा ।।

ॐ ह्रीं जम्बू दीप वर्णन कथिका पंच विंशति सहस्राधिक त्रिलक्ष ३२५००० पद प्रमाण जम्बूदीप प्रज्ञप्तयेऽर्घ्यं ।।२८।।

सागर द्वीप का वर्णन है जिस ग्रन्थ में ।
सागर द्वीप सु नाम लहै जिस पन्थ में ।।
लक्ष बावने सहस छत्तीस सु पद महा ।
पूजूं मन वच काय हर्ष उर में लहा ।।

ॐ ह्रीं द्वीप सागर स्वरूप निरूपिका षट् त्रिंशत सहस्राधिक द्वीपंचाशतलक्ष ५२३६००० पद प्रमाण द्वीप सागर प्रज्ञप्तयेऽर्घ्यं ।।२९।।

षट् द्रव्यों का कहैं सरस शुभ भावसे ।
व्याख्या प्रज्ञप्ति नाम वही शुभ चावसे ।।
लक्ष चुरासी सहस तीस षट् पद कहै ।
पूजूं मन वच काय हर्ष उर में लहै ।।
पूजूं मन वच काय हर्ष उर में लहा ।।

ॐ ह्रीं रूप्यरूप्यादि षट् द्रव्य स्वरूप निरुपिका षट् त्रिंशत्सहस्राधिक चतुरशीति लक्ष

८४३६००० पद प्रमाण व्याख्या प्रज्ञप्तेऽर्घ्यं ।।३०।।

एक कोटि इक अस्सी लक्ष सु जानिए ।
सहस पांच सु श्लोक सर्व ज मानिए ।।
चन्द्र प्रज्ञप्ति आदि सु पांचों में कहा ।
पूजूं मन वच काय हर्ष उर में लहा ।।

ॐ ह्रीं पंच प्रज्ञप्ति सम्बन्धि पंचाशत सहस्राधिक एकाशीति लक्षैक कोटि १८१५०००० पद प्रमाण पंच प्रज्ञप्तिभ्योपूर्णाऽर्घ्यं ।।

सूत्र अर्घ्यं (गीतिका)

जीव कर्त्ता भोगता है कर्म का बहु काल से ।
है निरुपण जास सारे सूत्र नाउँ भाल से ।।
पद है अठासी लक्ष जिसमें देव गणधर गाइया ।
पूजूं हूँ जिन शास्त्र जी को हर्ष मन उमगाइया ।।

ॐ ह्रीं जीवस्य कर्तृत्वभोगतृत्वादि स्थापकं भूत चतुष्टयादि भवनस्योत्थापकमष्टाशीति ८८००००० लक्ष पद प्रमाण सूत्र कृतागांयऽर्घ्यं ।।३१।।

प्रथमानुयोग

त्रेशट् शलाके पुरुष संयम कथन जिसमें है सही ।
प्रथमानु योगा नाम उसका प्रथित है इस जग मही ।।
सहस पंच सु पद उसी में देव जिनवर गाइया ।
पूजूं हूँ जिन शास्त्रजी को हर्ष मन उमगाइया ।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टि शलाका महापुरुष चरित्र कथक पंच सहस्र पद प्रमाण ५००० प्रथमानुयोगायऽर्घ्यं ।।३२।।

अडिल्ल

अरब एक अरु द्वादश कोटि सु मानिया ।
लक्ष तिरासी सहस अठावन जानिया ।।
पंच महा पद उत्तम जिनवर भासिया ।
पूजूं मन हर द्रव्य सु कलमष नाशिया ।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगानाम पंचाधिकाष्ट् पंचाशत् सहस्र त्रयशीति लक्ष द्वादश कोटयैकारब

११२८३५८००५ पद प्रमाणेभ्योः पूर्णार्घ्यं ।।३३।।

अथ चतुर्दश पूर्व ऽर्घ्यं (भुजंग प्रयास)

उत्पाद व्यय ध्रौव्य वस्तु है युक्तं, उत्पाद पूर्व महा शास्त्र उक्तं ।।
श्लोक एक कोटि हे आप सुराजे, महा भक्ति पूजूं वसु द्रव्य साजे ।।
ॐ ह्रीं वस्तुनामुत्पाद व्यय ध्रौव्यादिक कथमेक कोटि १०००००० पद प्रमाणमुत्पाद पूर्वागांयऽर्घ्यं ।।३४।।

चौबीस देवा हैं बलदेव स्वामी,वसुदेव चक्री जगतमें सु नामी ।।
वीर्यानुवादा कहे इन चरित्रं, पद लक्ष सत्तर है पूजूं विचित्रं ।।
ॐ ह्रीं बल देव वासुदेव चक्रवर्ति शक्र तीर्थंकरादि बल वर्णकं सप्तति लक्ष ७०००००० पद प्रमाण वीर्यानुवाद पूर्वागायऽर्घ्यं ।।३५।।

नाम अस्तिनास्ति प्रर्वाद पूर्व जो है,अस्त्तिव नास्तित्व भंग कहै है ।।
पद लक्ष षष्ठही है इसमें सुराजे,महा भक्ति पूजूं वसु द्रव्य साजे ।।
ॐ ह्रीं जीवादि वस्त्वास्ति नास्तिचेति प्रकथकं षष्ठी लक्ष ६००००० पद प्रमाण मस्ति नास्ति प्रवाद पूर्वागायऽर्घ्यं ।।३६।।

ज्ञानोत्पत्ति निमित्त अधिकारी, कहे इन स्वरूपं सुज्ञान भंडारी ।।
हीन एक कोटि महा श्लोक राजे,महा भक्ति पूजूं वसु द्रव्य साजे ।।
ॐ ह्रीं अष्ट ज्ञान तदुप्पति कारण तदाधार पुरुष प्ररूपकं मेकौनकोटि ९९९९९९९ पद प्रमाण ज्ञान प्रवाद पूर्वांगायऽर्घ्यं ।।३७।।

स्थान वर्णद्वि इन्द्रियादि सु प्राणी,वचनगुप्ति संस्कार भाषे सुज्ञानी ।।
हे नाम सत्य प्रवाद पूर्व राजे, पद एक कोटि सु छेही विराजे ।।
ॐ ह्रीं वर्ण स्थान तदाधार द्वीन्द्रयादि जन्तुवचन गुप्ति संस्कार प्ररूपकं षडधिक कोटि १००००००६ पद प्रमाण सत्य प्रवाद पूर्वांगायऽर्घ्यं ।।३८।।

आत्म प्रवाद सु पूर्व ही जानो,है जिसमें आत्म स्वरूपं बखानो ।।
पद कोटि छत्तीस उसमें सुराजे,महा भक्ति पूजूं वसु द्रव्य साजे ।।
ॐ ह्रीं ज्ञानाध्यात्म कर्तृत्वादि युतात्म स्वरूप निरुपकं षटत्रिंशत कोटि ३६००००००० पद प्रमाण आत्म प्रवाद पूर्वांगायऽर्घ्यं ।।४०।।

बन्ध उदय अरु उपशम होंहे, कर्म उदीरण निर्जर सौहै ।।

कर्म प्रवाद कहै इन स्वरूपं,पद कोटि अस्सी सुलक्षं अनुपम ।।
ॐ ह्रीं कर्मं बन्धोदयोपशमोदीरणां निर्जरा कथकमशीति लक्षाधिक कोटि १८००००० पद प्रमाण कर्म प्रवाद पूर्वांगायऽर्घ्यं ।।४१।।

लहै प्रत्याख्यानं सू पूर्व ही जानो,कहै द्रव्य पर्यय स्वरूपं ही मानो ।।
अहो लाख चोरासी श्लोकं सुराजे,महा भक्ति पूजूं वसु द्रव्य साजे ।।
ॐ ह्रीं द्रव्य पर्ययरूप प्रव्याख्यान निश्चलन कथकं चतुरशीति लक्ष ८४००००० पद प्रमाण प्रत्याख्यान पूर्वांगाय अर्घ्यं ।।४२।।

सुविद्यानुवादं हे शास्त्रं विशिष्टं,शतं पांच विद्या महा गुण गरिष्टं ।।
लघु सप्त सेकड कहै सुस्वरूपं, पद एक कोटि दशं लक्ष रूपं ।।
ॐ ह्रीं पंचशत महाविद्या सप्तशत क्षुद्रविद्या अष्टांग महाविद्या निमित्तानि प्ररुपयनदश लक्षाधिक कोटि ११००००००० पद प्रमाण विद्यानुवाद पूर्वांगाय ऽर्घ्यं ।।४३।।

कल्याण पूर्व महासुख स्वरूपं, कहै तीर्थ चक्री के पुण्यं अनुपम् ।।
पद कोटि छब्बीस जिसमें सुराजे, महाभक्ति पूजूं वसु द्रव्य साजे ।।
ॐ ह्रीं तीर्थंकर चक्रवर्ति बल भद्र वासु देवेन्द्रादि पुण्य व्यावर्णकं षडविंशति कोटि २६००००००० पद प्रमाण कल्याण प्रवांद पूर्वांगाय ऽर्घ्यं ।।४४।।

अष्टांग वैद्यक सुगारुडी विद्या, महामंत्र तंत्रादि नाशक कुविद्या ।।
लहै प्राणवायं सुशास्त्रं महानतम्,यजूं तेरे कोटि महाश्लोक कान्तम् ।।
ॐ ह्रीं अष्टांग वैद्य विद्या गारुडी विद्या मन्त्र प्रमाणं निरुपकं त्रयोदश कोटि १३००००००० पद प्रमाणं प्राणावायं पूर्वांगाय ऽर्घ्यं ।।४५।।

अलंकार छन्दो हे व्याकर्ण जानो,किरिया विशालं कहे तुम प्रमाणो ।।
नव कोटि श्लोकं महान्तं सुराजे, महा भक्ति पूजूं वसु द्रव्य साजे ।।
ॐ ह्रीं छन्दोऽलंकार व्याकरण कला निरूपकं नव कोटि ९००००००० पद प्रमाण किरिया विशाल पूर्वांगाय ऽर्घ्यं ।।४६।।

लोक बिन्दुसारं हैं शास्त्रं अपूर्वं, निर्वाण कारण कहै सुख स्वरूपं ।।
पद साडे बारह कोटि सुराजे, महा भक्ति पूजूं वसु द्रव्य साजे ।।
ॐ ह्रीं निर्वाण पद सुख हेतु भूत सार्द्ध द्वादश कोटि १२५००००००० पद प्रमाण लोक बिन्दु सार पूर्वांगायऽर्घ्यं ।।४७।।

दोहा- कोटि पंचान्नु कहै लक्ष पचासा पांच ।
पूर्व चतुर्दश श्लोक में जिनवर भाषे सांच ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्वांगाय पंचाधिक पंचाशतलक्ष पंचनवति कोटि ९५५०००००५ पद प्रमाणाय पूर्णार्घ्यं ।।४८।।

12 अंग के भेद में पांच चूलिका के अर्घ्य

(जोगीराशा)

वर्षे जल अरु रोके कैसे मन्त्र तन्त्र बतलाती ।
जलगतिं नामसु चूलिक इसका जिनवाणि कहलाती ।।
कोटि दोय अरु लाख सुनव हैं सहस नवासी सौहै ।
द्वौशत् पद भी पूजूं वसु विधि ज्ञान महां गुण मौहे ।।

ॐ ह्रीं जलं स्तंभन जल वर्षादि हेतु भूत मंत्रतंत्रादि प्रतिपादिका द्विशताधिक नवाशीतिं सहस्र नव लक्ष द्वय कोटि २०९८९२०० पद प्रमाण जलगतूचूलिकायैऽर्घ्यं ।।४९।।

अल्प समय में बहुयोजन तक गमनागमन सु होवे ।
मन्त्र तन्त्र सब विद्या इसमें थल गत चुलिक जोवे ।।कोटि.

ॐ ह्रीं स्तोक कालेन बहु योजन गमनागमानादिक हेतु भूत मन्त्र तन्त्रादि निरुपिका पूर्वोक्त २०९८९२०० पद प्रमाण स्थल गत चुलिकायै ऽर्घ्यं ।।५०।।

इन्द्रजाल माया का करना मन्त्र तन्त्र को जानो ।
मायागत है नाम चूलिका जिनवर भाषी मानों ।।कोटि.

ॐ ह्रीं इन्द्र जलादि मायोत्पादक मन्त्र तन्त्रादि निरुपिका पूर्वोक्त २०९८९२०० पद प्रमाण मायागत चूलिकायै ऽर्घ्यं ।।५१।।

गमन गगन में होवे कैसे उपदेशे यह भाई ।
मन्त्र तन्त्र सब विद्या होवे गमन चूलिका गाई ।।कोटि.

ॐ ह्रीं गमनागगनादि हेतु भूत मन्त्र तन्त्रादि प्रकाशिका पूर्वोक्त २०९८९२०० पद प्रमाण आकाश गमन चूलिकायै ऽर्घ्यं ।।५२।।

सिंह व्याघ्र गज घोटक गाई नर सुर रूप धराई ।
मन्त्र तंत्र सब विद्या होई, रूप चुलिका गाई ।।कोटि.

ॐ ह्रीं सिंह व्याघ्र गज तुरग नर सुरादि रूप विधायकमंत्र तन्त्रादि उपदेशिका पूर्वोक्त २०६८६२०० पद प्रमाण रूप गत चूलिकायै ऽर्घ्यं ।।५३।।

अडिल्ल-

कोटि दशी उनचास लाख बतलाइया ।
सहस छियालिस पद महा जिन गाइया ।।
मिलकर पांचो चूलिक के पद जानिये ।
पूजूं मन वच काय हर्ष उर ठानिए ।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत सहस्राधिक नव चत्वारिंशत् दश कोटि १०००४६०४६ पद प्रमाण पंचचूलिकाभ्योऽर्घ्यं ।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोत्पन्न द्वादशांग जिनवाणि मातेभ्यो नमः स्वाहा ।

(यहां 108 बार जाप करें)

जयमाला

मात जिनवाणी सदा तु निर्मला सुख दायिनी ।
जिनदेव पर्वत से निकलकर कुंड गण धर आयनी ।।
हे शारदे अम्बेसदा अज्ञानता को नाशनी ।
गात जयमाला अबे हम सुखद हो मृदु भाषनी ।।

पद्धडी

जय जिनवर वाणी परम रूप, तुम ही भव तारक हो अनूप ।
जय जिन वदनाम्बुज निकसि देवि,जय गण धर गूंथी हर्ष ठेवी ।१।
जय तीन लोक मण्डन स्वरूप, जय भविजन तारक हो अनूप ।
जो श्रद्धे माता हर्ष धार, वह पावे ज्ञानामृत अपार ।२।।
जय मिथ्या तिमिर विनाश सूर्य, जय शिव मग दर्शक हो सु धूर्य ।
जिन ध्यान धरा तज के सुमान, नहि रहा उसे संशय कुज्ञान ।३।

जय तीन शतक छत्तीस जान, मति ज्ञान भेद लखिए प्रमाण ।
श्रुत दोय अनेकों भेद ठान, जय द्वादशांग जिनवर बखान ।४।
जिन गण धर नरपति ऋद्धि खास,जय पुण्य पुराकृत को प्रकाश ।
जय लोक अलोकरु तीन काल, कह लक्षण चारों गति सुहाल ।५।
जय कर्ण योग द्युति है पिछान, है जिनवर की यह सत्य वाण ।
जय चारित्रं जिन कहत सोई,जय जिसमें श्रावक धर्म होई ।६।
चरणानु योग तसु जान नाम, जय पूजे तज हम सर्व काम ।
जय जीवा जीवसु पुण्य पाप,जय सप्त तत्व का है कलाप ।७।
द्रव्यानुयोग चौथा कहाय, ये चार योग जिनवर बताय ।
जय इकसो बारह कोडि जान,जय लाख तिरासी है प्रमाण ।८।
जय सहस अठावन पंचमान, पद द्वादशांग जिनवर बखान ।
जय कोटि इकावन अष्ट लाख, शत छे हजार चोरासी भाख ।९।
जय बीस एक अध श्लोक धाय, जय एक एक पद को बताय ।
जय दोष रहित जिन वाणि मात,जय तुम पद नावे जोड़ हाथ ।१०।
तुम सन्त सुजन योगीन्द्र ध्याय, वह भव दधि से झट पार जाय ।
जय आदि अन्त इक सार आप, सूरजमल तब करता सुजाप ।

धत्ता

जय जय जिनवाणी हैं श्रद्धानी संशय हानि पूजत है ।
जय तत्व प्रकाशक भ्रमतम नाशक ज्ञान निकाशक हूजत है ।।

ॐ ह्रीं श्री जिन सुखोत्पन्न द्वादशांग जिनवाणी मातायै अर्घ्यं ।।

दोहा-

वाणी है अरहन्त की जो भवि कंठ लगाय ।
पूजत हर्ष बढ़ाय कर केवल ज्ञान उपाय ।।

इत्याशीर्वादः

जिन चैत्य पूजा

दोहा- सौम्य सुभग त्रैलोक्यमें, समचतुर संस्थान ।
कृत्रिम अर्कीतम जानिए, विम्बमहा सुखदान ।।
आह्वानं स्थापन करूं हिए विराजो आन ।
पूजूं मन वच काय से पाउंपद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यसमूह अत्रावतरावतर संवौषट ।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकम्–सोरठा

लाउं मिष्ट सुवार सौरभ अति आवे घनी ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यसमूहेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

चन्दन सौरभसार केशर संग घिसाइए ।
चैत्य महाजिन सार, पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति जिनचैत्य समूहेभ्यः संसारताप विनाशकाय चन्दनं ।।२।।

तंदुल धवल सुधार पुंज करूं जिनराज ढिग ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य वर्ति जिन चैत्य समूहेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान ।।३।।

चंपा जुई की डार फूल वनस्पति लाइया ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य वर्ति जिन चैत्य समूहेभ्यः कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि ।।४।।

नाना व्यंजन सार फेणी गूजा पायसी ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य वर्ति जिन चैत्य समूहेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

दीपक ज्योति सुधार मोह अन्ध भागे सदा ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य वर्ति जिन चैत्य समूहेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ।।६।।

सौरभ हे सुखकार धूप अग्नि में डारिये ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य वर्ति जिन चैत्य समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं ।।७।।

आम्र काम्र अनार सेव रसीले लीजिए ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य वर्ति जिन चैत्य समूहेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं ।।८।।

द्रव्य अष्ट प्रकार, लेय चढ़ाउं भावसो ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य वर्ति जिन चैत्य समूहेभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

प्रत्येक पूजा–गीता

इस लोक पातालय में मनहर बने अनादि हे सही ।
शुभ रत्न कंचन उपल निर्मित चैत्य सुन्दर तिस मही ।।
त्रैकाल में मन वचन तन से में नमू नित चरण में ।
वसु द्रव्य उत्तम अर्घ्य पूजूं होऊं उनकी शरण में ।।
ॐ ह्रीं श्री पाताल लोक सम्बन्धि कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्येभ्यो अर्घ्यं ।।१।।

होय मध्यम लोक में जो जैन विम्ब सुहावने ।
है वने अरु जो अनादि मन सभी के भावने ।।त्रैकाल.
ॐ ह्रीं श्री मध्य लोक सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमासंख्या जिन चैत्यभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

लोक ऊपर मे बने हैं बिम्ब जिन सुखदाय है ।
है अकृत्रिम मन हरे अरु पाप सब नशजाय है ।।त्रैकाल.
ॐ ह्रीं उर्ध्वलोक सम्बन्धि असंख्य जिन चैत्यभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

लोक तीनों में मनोहर बिम्ब अति सुखदाय है ।
वसु कोटि छप्पन लक्ष सत नवसहस मन हर्षाय है ।।

अरु चार शत इक बीस प्रतिमा है अनादि काल से ।
जो है असंख्या कृत्रिम पूंजू योग त्रय नमु भालसे ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमासंख्य जिन चैत्येभ्योऽर्घ्यं ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बिम्ब देवेभ्योनमः स्वाहा ।

(नव बार पुष्पों से जपे)

जयमाला

दोहा- चैत्य महा जिन दर्श से भव बेडी कट जाय ।
कहुँ महा गुण मालिका भव्य जीव सुखदाय ।।

पद्धडी

जय वीतराग सर्वज्ञ देव, भवि जीवों के तारक सुएव ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।१।।
तब सुन्दर सुभग ललाम देह, सम चतुर धरे संस्थान एह ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जा कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।२।।
तब दर्शन करते भव्य जीव, वह लहत अनन्ता सुख सदीव ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जो कृत्यकृत्रिम दोय रूप ।।३।।
जय दोषों से हो रहित आप, हम करते प्रभु तुम नित्य जाप ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।४।।
जय पर्यंकासन ध्यान रूप, जय खड्गासन हो प्रभु अनूप ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।५।।
जय अविचल गुण के है न पार,भवि जीवदर्शसम्यक्त्व धार ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।६।।
जय भव्य कमल विकसित दिनेश,जय नरपति सुरपति नुत खगेश।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।७।।
नासाग्रदृष्टिरत सकल धार, भवि जीव नमे तुम बार बार ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।८।।
जय स्वर्ण रत्न निर्मित महान, जय उपल बनी सुन्दर सुजान ।

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।९।।
जय अधोमध्य अरु ऊर्ध्व लोक, जय कृत्या कृत्रिम बिम्ब थोक ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।१०।।
जिन चैत्य नमुं मैं बार बार, सूरजमल को प्रभु तार-तार ।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप, जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।११।।
जय जय जिन प्रतिमा होय, अकृतिमा कृतिमा प्रतिमा ध्यावत है ।
घत्ता-जय पूज रचावे शीष नवावे, शिव सुन्दर का पावत है ।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमासंख्य जिन चैत्य समूहेभ्योर्घ्यं ।

तीन लोक में बिम्ब है कृत्याकृत्रिम सार ।
पूजो मनवच काय से होवें भव दधिपार ।।

इत्याशीर्वादः

श्री जिन चैतालय पूजा

(अडिल्ल)

कृत्याकृत्रिम सुभग जिनालय जानिए ।
ध्वजा फरुखे स्वर्ण दूति सम मानिए ।।
सुन्दर शिखर उतंग मनोहर सोहने ।
पूजों जिनवर निलय महा मन सोहने ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिमा जिन चैत्यालय अत्रावतरावतर संवौषट ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकं (सुन्दरी)

कनक झारी जल भर लाइया, जन्म मृत्यु जरा त्रय ढाइया ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो जलं ।।१।।

दाह भजन चन्दन बावना संघ केशर घिसकर लावना ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो चन्दनं ।।२।।

धोय अक्षत थाल भरीजिए पुंज करके अखय पद लीजिए ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो अक्षतं ।।३।।

केवड़ा अरु चंपक सोहना पुष्प मरुवामन अति मौहना ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो पुष्पं ।।४।।

विविध व्यंजन थाल भराइया, रस मधुर लेकर हरषाई ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं ।।५।।

हेम दीपक घृत भर लीजिए, जगमगातो मोह हनीजिए ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो दीपं ।।६।।

धूप दश विधि सौरभ आवती, खेय भासुर कर्म जलावती ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालयेभ्यो धूपं ।।७।।

फनस दाडिम आदि सुलेधना, सेवकेला फल मन मोहना ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो फलं ।।८।।

नीर आदिक द्रव्य सुलीजिए, शुभ जिनालय अर्घ्य सु पूजिए ।
मैं यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।
ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।९।।

(प्रत्येक पूजा) गीता

पाताल में है निलय सुन्दर जो अनादि काल से ।
सप्त कोटि द्वय लख में नमुं नित भाल से ।।
जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहूं जिन भवन सारे भक्ति भर गुण गाय के ।।

ॐ ह्रीं श्री पाताल लोक सम्बन्धि सप्तकोटि द्विसप्तति लक्षाधिक ७७२००००० कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं ।।१।।

शत चार अट्ठावन भवन शुभ है अकीर्त्तम जेलसे ।
अगणित लसे कीर्त्तम भवन शुभदर्श से पातक नशे।।
जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहूं जिन भवन सारे भक्ति भर गुण गायके ।।

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोक सम्बन्धि अष्ट पंचाशत चतुष्शत अकृत्रिमसंख्यंचकृत्रिमजिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं ।।२।।

उर्ध्वलोकी भवन सुन्दर रत्न के अद्भुत महा ।
चतु अष्ट लक्षा सप्त नवति सहस तेवीसी कहा ।।
जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहूं जिन भवन सारे, कर्म सब नश जाय है ।।

ॐ ह्रीं श्री उर्ध्वलोक सम्बन्धि चतुष्शीतिलक्ष सप्त नवति सहस त्रयो विंशतिं अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं ।।३।।

उर्ध्व अध अरु मध्य माहीं भवन सुन्दर जानिए ।
गणधर असंख्या कहत शुभ जे पूज तिनकी ठानिए।।
पूजते सुर असुर नरपति द्रव्य मनहर चावसे ।
हम भी नमेमन शुद्ध हो जिन भवन भावे भावसे ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि असंख्य कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री जिन चैत्यालयेदेवेभ्यो नमः स्वाहा । (नव बार जपे)

जयमाला

दोहा- कृत्या कृत्रिम है सही तीन लोक जिन थान ।
कहुंमहा जय मालिका होय पाप की हान ।।

पद्धडी

जिन मन्दिर प्रभु के सुभगसार, जय कृत्या कृत्रिम शुभ अपार ।
तिन भुवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।

जय शिखर बने हैं अति उतंग,जहां होवे मानी मान भंग ।
तिन भवन नमे हम बार बार,कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय गगन चुम्बि दीखे अपार,जिन दर्शन नाशे अन्धकार ।
तिन भुवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय स्वर्ण कलश बहु चमचमाय, जय करत प्रशंसा देव आय ।
तिन भवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय ध्वजा उड़े शुभ सिखर सार, मनु स्वर्ण संपदा को पुकार ।
तिन भवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय स्वर्ण रत्न निर्मित लखाय, जय उपल सु मृतिका के लहाय ।
तिन भवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय बने अनादि काल जान, उन कहत अकीरतम है सुजान ।
तिन भवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय पुरुष किये रचना सुसार, जिन कृत्रिम नामसु सुखद सार ।
तिन भवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय अधोमध्य अरु ऊर्ध्व जान, जय तीनलोक में निलय आन ।
तिन भवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जहां बैठ भविक आनन्द पाय, जय जिन गुण गावे प्रीति लाय ।
तिन भवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
हम नमन करे उन भवन सार, सूरजमल भक्ति उर धार धार ।।
तिन भवन नमे हम बार बार, कर भक्ति विनय उर धार धार ।।

घत्ता- जय जय जिन मन्दर पूज पुरन्दर सुन्दर मन से बन्दे है ।
हम भी नित बन्दे बहु आनन्दे काटे भव के फन्दे है ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्यवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं ।

दोहा- जिनागार जिनराज के पूजे मन वच काय ।
नाशे अघ बहु काल के पावे सुख अधिकाय ।।

इत्याशीर्वादः

काशी निवासी स्वर्गीय कविवर वृन्दावनजी कृत

वर्तमान चतुर्विंशति जिनपूजा

बंदौ पांचो परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास ।
विघ्नहरण मंगलकरन, पूरण परम प्रकाश ।।१।।
चोबीसौं जिनपति नमौं, नमौं शारदा माय ।
शिव मगसाधक साधु नमि, रचौं पाठ सुखदाय ।।२।।

।। नामावली स्तोत्र ।।

छन्द नयनमालिनी तथा तामरस व चण्डी –16 मात्रा

जय जिनन्द सुखकन्द नमस्ते, जय जिनन्द जितफन्द नमस्ते ।
जय जिनद वरबोध नमस्ते, जय जिनन्द जितक्रोध नमस्ते ।।
पाप-ताप-हर-इन्दु नमस्ते, अर्ह-वर्ण-जुतबिंदु नमस्ते ।।
शिष्टाचार विशिष्ट नमस्ते, इष्ट मिष्ट उकृष्ट नमस्ते ।।२।।
पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते, मर्म भर्म-घन धर्म नमस्ते ।
दृग्विशाल वरभाल नमस्ते, हृदिदयाल गुनमाल नमस्ते ।।३।।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते, ऋद्धि-सिद्धि-वरवृद्धि नमस्ते ।
वीतराग विज्ञान नमस्ते, चिद्विलास धृतध्यान नमस्ते ।।४।।
स्वच्छ गुणांबुद्धि रत्न नमस्ते, सत्त्वहितंकरयत्न नमस्तं ।
कुनय-करी मृगराज नमस्ते, मिथ्या-खग-वर-बाज नमस्ते ।।५।।

भव्य भवोदधितार नमस्ते, शर्मामृतसितसार नमस्ते ।
दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य नमस्ते, चतुरानन धरधीर्य नमस्ते ।।६।।
हरि हर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते, मोहमर्द्दमनु विष्णु नमस्ते ।
महादान महभोग नमस्ते, महाज्ञान महजोग नमस्ते ।।७।।
महा उग्र तप-शूर नमस्ते, महामौन गुणभूरि नमस्ते ।
धर्मचक्रि वृषकेतु नमस्ते, भव-समुद्र-शत-सेतु नमस्ते ।।८।।
विद्याईश मुनीश नमस्ते, इन्द्रादिक-नुत-शीश नमस्ते ।
जय रत्नत्रय राय नमस्ते, सकल जीव सुखदाय नमस्ते ।।९।।
अशरण शरण-सहाय नमस्ते, भव्य सुपंथ लगाय नमस्ते ।
निराकार साकार नमस्ते, एकानेक-अधार नमस्ते ।।१०।।
लोकालोक विलोक नमस्ते, त्रिधा सर्व गुणथोक नमस्ते ।
सल्ल-दल्ल-दल-मल्ल नमस्ते, कल्लमल्ल जितछल्ल नमस्ते ।।
भुक्तिमुक्ति-दातार नमस्ते, उक्तिसुक्ति श्रृंगार नमस्ते ।
गुण अनन्त भगवंत नमस्ते, जय जय जय जयवंत नमस्ते ।।१२।।

श्री समुच्चय चतुर्विंशति जिनपूजा

छन्द कवित्त

वृषभ अजित शंभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय ।
चंद्र पुहुच शीतल श्रेयांश नमि, वासुपूज पूजित-सुरनाय ।।
विमल अनंत धरम जय उज्जवल, शांति कुन्थु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशति जिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशति जिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभदिवीरांतचतुर्विंशति जिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

अष्टक (चाल–नदीश्वरद्वीप की)

मुनिमनसम उज्ज्वल नीर, प्राशुक गंध भरा ।
भरि कनककटोरी धीर, दीनो धार धरा ।।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्दकन्द सही ।
पदजजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी ।
जिनचरणन देत चढ़ाय, भव-आताप-हरी ।।चौबीसों.

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

तंदुल सित सोमसमान, सुन्दर अनियारे ।
मुक्ताफलकी उनमान, पुंज धरों प्यारे ।।चौबीसों.

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

वर कंज कदंब कुरंड, सुमनसुगन्ध भरे ।
जिन अग्र धरौं गुनमंड़, कामकंलक हरे ।।चौबीसों.

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

मनमोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्रासुक स्वाद,जजत क्षुधादि हने ।।चौबीसों.

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

तम-खंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिरमोह क्षयजाय, ज्ञानकला जागै ।।चौबीसों.

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

दंश गंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूमकरम जारि जाहिं,तुमपद सेवत हों ।।चौबीसों.

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

शुचिपक्व सुरस फलसार सबऋतु के ल्यायो।
देखत दृग-मन को प्यार, पूजत सुख पायौ ।।चौबीसों.

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जल फल आठों शुचिसार,ताको अर्घ करो ।
तुमको अरपौं भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ।।चौबीसों.

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।६।।

जयमाला

दोहा- श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हितहेत ।
गावों गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत ।।१।।

घत्ता- जय भवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा ।
शिवमग परकाशक अरिगननाशक, चौबीसों जिनराज वरा ।।२।।

पद्धरी

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीतवसुअरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर ।।३।।
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्मद्युति तन रसाल ।
जय जय सुपास भवपाश-नाश, जय चंदचंदतनदुतिप्रकाश ।।४।।
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुननिकेत ।
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज ।।५।।
जय विमल विमलपद-देनहार, जय जय अनंत गुणगण अपार ।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति घुष्टी करेत ।।६।।
जय कुंथकुंथबादिक रखेय, जय अर जिन वसुअरि क्षय करेय ।
जयमल्लिमल्ल हतमोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतसल्लदल्ल ।।७।।
जय नमि नित बासवनुत सप्रेम, जय नेमनाथ वृषचक्रनेम ।।
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगरसाथ ।।८।।

घत्ता-

चौबीस जिनंदा आनन्दकन्दा, पापनिकंदा सुखकारी ।
तिनपद जुगचंदा उदय अर्मदा वासववंदा हितकारी ।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं ।

सोरठा- भुक्तिमुक्तिदातार, चौबीसौ जिनराज वर ।
तिनपद मनवचधार, जो पूजे सो शिव लहै ।।१०।।
इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ जिनपूजा

अडिल्ल

परम पूज्य वृषभेश स्वयंभू देवजू ।
पिता नाभि मरुदेवि करैं सुर सेवजू ।।
कनकवरण तन तुंग धनुष पनशत तनों ।
कृपासिंधु इत आइ तिष्ठ मम दुख हनो।।१।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट ।

अष्टक (छंद द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी)

हिमवनोद्भव-वारि सुधारिकै, जजत हौं गुनबोध उचारिकैं ।
परम भाव सुखोदधि दीजिये,जनम-मृत्यु-जरा क्षय कीजिये ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

मलय चन्दन दाय निकंदन, घसि उभय करमें कर वंदनं ।
जजत हौं प्रशमाश्रम दीजिये, तपततापत्रिधा क्षय कीजिये ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

अमल तंदुल खंडविवर्जितं सित निशेष-हिमामियतर्जितं ।
जजत हौं तसु पुंज धरायजी,अखय संपति द्यो जिनरायजी।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

कमल चंपक केतकि लीजिये, मदन-भंजन भेट धरीजिये ।
परमशील महा सुखदाय हैं, समरसूल निमूल नशाय हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

सरस मोदनमोदक लीजिये, हरनभूख जिनेश जजीजिये ।
सकल आकुल-अंतक-हेतु हैं,अतुल शांतसुधारत देतु हैं ।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

निविड मोह महातम छाइयो,स्वपरभेद न मोहि लखाइयो ।
हरनकारन दीपक तासके, जजत हों पद केवल भासके ।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

अगर चंद न आकि लेयकें, परम पावने गंध सुखेयकें ।
अगनिसंग जरैं मिस धूमके, सकल कर्म उडै यह घूमके ।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

सुरस पक्व मनोहर पावने, विविध ले फल पूज रचावने ।
त्रिजगनाथ कृपाअब कीजिये,हमहिं मोक्ष महाफल दीजिये ।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जलफलादि समस्ते मिलायकैं, जजत हौं पद मंगल गायकैं ।
भगतवत्सल दीन दयालजी,करहु मोहि सुखी लखिहाल जी ।।
ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथजिनेनद्राया ऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ।।९।।

पंचकल्याणक (छन्द द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी)

असित दोज अषाढ़ सुहावनी, गरभमंगल को दिन पावनी ।
हरि-शची पितु-मातहि सेवही, जजत हैं हम श्री जिनदेव ही ।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

असित चैत सुनौमि सुहाइयो, जनम मंगल तादिन पाइयो ।
हरि महागिरिपै जजियो तबै, हम जजैं पदपंकजको अबै ।।
ॐ ह्रीं चैतकृष्णानवम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

असित नौमि सुचैत धरे सही, तपविशुद्धि सबै समता गही ।
निजसुधारससों झर लाइयो, हम जजैं पद अर्घ चढ़ाइयों ।।
ॐ ह्रीं चैतकृष्णानवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

असित फागुन ग्यारसि सोहनों परम केवलज्ञान जग्यो भनों ।
हरि समूह जजैं तहें आइकैं, हम जजैं इत मंगल गाइकैं ।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।
असित चौदसि माघ विराजई, परम मोक्ष सुमंगल साजई ।
हरि-समूह जजैं कैलाशजी, हम जजैं अति धार हुलासजी ।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुदश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

धत्ता- जय जय जिनचंदा, आदिजिनंदा,हनि भवफंदा-कंदा जू ।
वासव-शत-वंदा, धरि आनंदा, ज्ञान अमंदा नंदा जू ।।१।।

छन्द मोतियदाम

त्रिलोकहितंकर पूरन पर्म, प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म ।
जतीसुर ब्रह्मविदाम्बर बुद्ध, वृषंक अशंक क्रियाम्बुधि शुद्ध ।।२।।
जबं गर्भागम-मंगल जान, तबै हरि हर्ष हिये अति आन ।
पिता जननीपद-सेव करेय, अनेक प्रकार उमंग भरेय ।।३।।
जये जब ही तब ही हरि आय, गिरींद्रविषैं कियन्हीन सुजाय ।
नियोग समस्त किये तित सार, सुलाय प्रभु पुनिराज-अगार ।।४।।
पिता-कर सोंपि कियो तित नाट, अमंद अनंद समेत विराट ।
सुथान पियान कियो फिर इन्द्र, जहां सुरसेव करैं जिनचंद ।।५।।
कियो चिरकाल सुखाश्रित राज, प्रजा सब आनंदका तित साज ।
सुलिप्त सुभोगनि में लखि जोग,कियो हरि ने यह उत्तम योग ।।६।।
निलांजन नाच रच्यो तुम पास, नवों रवपूजित भाव विलास ।।
बजैं मिरदंग दृमं दृम जार, चले पग झारि झनांझन जोर ।।७।।
घनाघन घंट करै धुनि मिष्ट, बजे मुहचंग सुरान्वित पुष्ट ।
खड़ी छिन पास छिनहि आकाश,लघू छिन दीरघ आदि विलास।।८।।
ततच्छन ताहि बिलै अविलोय, भये भवतैं भवभीत बहोय ।

सुभावत भावना बारह भाय,तहाँ दिवब्रह्म-ऋषीश्वर आय ।।९।।
प्रबोध प्रभु सु गये निज धाम, तबै हरि आय रची शिवकाम ।
कियो कचलौंच विराग अरन्य, चतुर्थम ज्ञान लह्यो जगधन्य ।।१०।।
धरयो तब योग छह मास प्रमान, दियो श्रेयांस तिन्हैं इखदान ।
भयो तब केवलज्ञान जिनेन्द्र, समोसृत ठाठ रच्यो सु धनेंद्र ।।११।।
तहां वृषततव प्रकाशि अशेष, कियो फिर निर्भयथान प्रवेश ।
अनन्त गुणातम श्री सुखराश,तुमैं नित भव्य नमैं शिवआश ।।१२।।

घत्ता- यह अरज हमारी,सुनि त्रिपुरारी,जन्म जरा मृती दूर करो ।
शिवसंपति दीजे, ढील न कीजे, निज लख लीजे कृपा धरो ।।१३।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं ।

आर्या-

जो ऋषभेश्वर पूजैं, मनवचतनभाव शुद्ध कर प्राणी ।
सो पावे निश्चैसों, भुक्ती औ मुक्ति सार सुखथानी ।।१४।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री अजितनाथ जिनपूजा

(छन्द–अशोकपुष्पमंजरी दंडक, अर्धमंजरी तथा अर्द्धनाराच)

त्याग बैजयन्त सार सारधर्म के अधार,
जन्मधार धीर नग्र सुष्टु कौशलापुरी
अष्ट दुष्ट नष्टकार मातु वैजयाकुमार,
आयु पूर्व लक्ष दत्त है बहत्तरै पुरी ।
ते जिनेश श्री महेश शत्रु के निकंद देश,
अत्र हेरिये सुदृष्टि भक्त पै कृपा पुरी ।
आय तिष्ठ इष्टदेव मैं करों पदाब्जसेव,
पर्मशर्मदाय पाय आय शर्म आपुरी ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक–(छंद त्रिभंगी अनुप्रासक)

गंगाहृद्पानी निर्मल आनी, सौरभसानी शीतानी ।
तसु ढारत धारा तृषानिवारा, शांतागारा सुखदानी ।।
श्री अजितजिनेशं नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं ।
मनवांछित दाता त्रिभुवन त्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं ।।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

शुचिचन्दन बावन ताप मिटावन,सौरभ पावन घसि ल्यायो ।
तुम भवतमभंजन हो शिवरज़ंन, पूजारंजन मैं आयो ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दाय भवतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

सितखंडविवर्जित, निशिपतितर्जित, पुंज विधज्जित तंदुलको ।
भवभावनिखर्जित, शिवपदसर्जित, आनंदभर्जित दंदलको ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

मनमथमदमन्थन धीरजग्रथन, ग्रन्थनिग्रनथन ग्रन्थपती ।
तवपाद कुशेसे आदि कुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

आकुलकुलवारन थिरताकारन, क्षुधाविदारन चरु लायो ।
षट रस कर भीने अन्न नवीने, पूजन कीने सुख पायो ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

दीपकमणिमाला जोतिउजाला,भरि कनथाला हाथ लिया ।
तुम भ्रमतमहारी शिवसुखकारी केवलधारी पूज किया ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

अगरादिकचूरं परिमलपूरं खेवत क्रूर कर्म जरैं ।
दशहूँदिशि धावत हर्ष बढ़ावत, अलिगुंजावत नृत्य करैं ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दाय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

बादाम नांरगी श्रीफल चंगी, आदि अभंगीसौं अरचौं ।
सब विघन विनाशैं सुख परकासै,आतम भासै भौविरचौं ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दाय मोक्षफल प्राप्तये फलं ।।८।।

जलफल सब सज्जैं बाजत बज्जै, गुणगणरज्जै मनमज्जै ।
तब पदजुग मज्जै सज्जन जज्जै, तेभवभज्जै निजकज्जै ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्दायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ (छन्द द्रुतमध्यक)

जेठ असेत अमावशि सोहै, गर्भदिना नंद सो मनमोहै ।
इन्द्र फनिंद्र जजैं मनलाई, हम पद पूजत अर्घ चढ़ाई ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावास्यायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।१।।

माघसुदी दशमी दिन जाये, त्रिभुवन में अति हर्ष बढ़ाये ।
इन्द्र फनिंद्र जजैं तित आई, हम नित सेवत हैं हुलसाई ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशमीदिने जन्ममंगलमंडितायं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

माघसुदी दशमी तप धारा, भव तन भोग अनित्य विचारा ।
इन्द्र फनिंद्र जजैं तित आई, हम इत सेवत है सिरनाई ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशमीदिने तपमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

पौषसुदी तिथि चौथ सुहायो, त्रिभुवनभानु सु केवल जायो ।
इन्द्र फनिंद्र जजैं तित आई, हम पद पूजत प्रीत लगाई ।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्थीदिने ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

पंचमि चैतसुदी निरवाना, निजगुनराज लियो भगवाना ।
इन्द्र फनिंद्र जजैं तितआई, हम पद पूजत हैं गुणगाई ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचमीदिने मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा- अष्ट दुष्ट को नष्ट करि,इष्ट मिष्ट निज पाय ।
शिष्ट धर्म भाख्यो हमें, पुष्ट करो जिनराय ।।१।।

(छन्द पद्धडी 16 मात्रा)

जय अजित देव तब गुण अपार, पै कहूँ कछुक लघु बुद्धि धार ।
दश जनमत अतिशय बलअनन्त,शुभलच्छन मधुर वचन भनंत।।२।।
संहनन प्रथम मलरहित देह, तनसौरभ शोणितस्वेत जेह ।
वपु स्वेदविना महरूपधार, समचतुर धरें संठान चार ।।३।।
दश केवल गमन अकाशदेव, सुरभिच्छ रहै योजन सतेव ।
उपसर्गरहित जिनतन सु होय, सब जीव रहितबाधा सु जोय ।।४।।
मुखचारि सर्वविद्याअधीश, कवलाअहारवजित गरीश ।
छायाबिनु नख कच बढ़े नाहि,उन्मेष टमक नहि भूकुटि नाहिं।।५।।
सुरकृत दशचार करौं बखान, सब जीव मित्रता भावजान ।
कंटकविन दर्पणवत सुभूमि, सब धान्य वृच्छ फल रहे झूमि ।।६।।
षटरितु के फूल फले निहार, दिशि निर्मल जिय आनंदधार ।
जहँ शीतल मंद सुगंध वाय, पदपंकजतल पंकज रचाय ।।७।।
मलरहित गगन सुर जाय उचार, वरषा गंधोदक होत सार ।
वर धर्मचक्र आगैं चलाय, वसुमंगलजुत यह सुर रचाय ।।८।।
सिंहासन छत्र चमर सुहात, भामंडलछवि वरणी न जात ।
तरु उच्च अशोकरु सुमनवृष्टि,धुनि दिव्य और दुंदुभी मिष्ट ।।९।।
दृग ज्ञान शर्म बीरज अनंत, गुण छियालीस इत तुम लहंत ।
इन आदि अनंते सुगुन धार,वरणत गणपति नहिं लहत पार।।१०।।
तब समवसरनमहँ इन्द्र आय, पद पूजत वसुविधि दरब लाय ।
अति भगतिसहित नाटक रचाय,ताथेइ थेइ थेइध्वनि रही छाय।।११।।
पग नूपुर झननन झननाय, तननननन तननन तान गाय ।
घननन नन नन घंटा घनाय,छम छम छम छम घुंघरू बजाय।।१२।।
दृम दृम दृम दृम दृम मुरज ध्वान,संसाग्रदि सरंगि सुर भरत तान।
झट झट झट अट पट नटन नाट,इत्यादि रच्यो अद्‌भुत सुठाट।।१३।।

पुनि बंदि इंद्र थुति नुति करंत, तुम हो जगमें जयवंत संत ।
फिर तुम बिहार करि धर्मवृष्टि, तब जोग निरोध्यो परम इष्ट।।१४।।
सम्मेदथ की लिय मुक्ति थान जय, सिद्धशिरोमणि गुणनिधान ।
'वृदावन' बंदत बार बार, भवसागरतें मो तार तार ।।१५।।

घत्ता- जय अजित कृपाला गुणमणिमाला, संजमशाला बोधपती ।
वर सुजसउजाला, हीरहिमाला,ते अधिकाला स्वच्छ अती ।।१६।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द मदावलिप्त कपोल

जो जन अजित जिनेश जजैं हैं, मनवचकाई ।
ताकों होय आनन्द ज्ञानसम्पति सुखदाई ।।
पुत्र मित्र धनधान्य सुजस त्रिभुवनमहँ छावै ।
सकल शत्रुक्षय जाय अनुकमसो शिव पावै।।१७।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री संभवनाथ जिनपूजा

छंद–मदावलिप्त कपोल

जय संभव जिनचन्द सदा हरिगनचकोरनुत ।
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारसुत ।।
तजि ग्रीवक लिये जन्मनगर सावत्री आई ।
सो भवभंजनहेत भक्त पर होहु सहाई ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक छंद–चौबोला

मुनिमनसम उज्ज्वल जल लेकर, कनक कटोरी में धारा ।
जनम जरा मृतु नाश करनको, तुमपदतर डारों धारा ।।

संभव जिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै ।
निजनिधि ज्ञान-दरश सुखबीरज निराबाध भविजन पावैं ।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

तपतदाह को कन्दन-चन्दन, मलयागिरिको घसि लायो ।
जगबन्धन-भौफन्दन-खन्दन, समरथ लखि शरणै आयो ।।संभव.

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ।२।।

देवजीर सुखदास कमल-वासित सित सुन्दन अनियारे ।
पुंजधरो इन चरणन आगें, लहों अक्षयपद को प्यारे ।।संभव.

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

कमल केतकी बेल चमेली, चम्पा जूही सुमन वरा ।
तासौं पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबान विध्वंसकरा ।।संभव.

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।४।।

घेवर बावर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना ।
तासों पद श्रीपति को पूजत, छुधारोग ततकाल हना ।।संभव.

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

घटपट पकाशक भ्रमतमनाशक,तुमढिग ऐसो दीप धरो ।
केवलजोत उद्योत होहु मोहि, यही सदा अरदास करो ।।संभव.

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

अगर तगर कृष्णागर श्री-खंडादिक चूर हुताशनमें ।
खेवत हौं तुम चरनजलजढिग,कर्म छार जरि हैं छिनमें।।संभव.

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

श्रीफल लोंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाख रमें ।
ले फल प्राशुक पूजौं तुम पद,देहु अखय पद नाथ हमैं ।।संभव.

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जल चंदन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया ।
तुमको अरपों भावभगतिधर, जै जै जै शिवरमनि पिया ।।संभव.

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।६।।

पंचकल्याणक (छन्द हंसी मात्रा 16)

माता-गर्भ-विषैं जिन आय, फागुनसित आठैं सुखदाय ।
सेयो सुरतिय छप्पन वृन्द, नानाविध मैं जजौं जिनंद ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय ।।१।।

कार्तिक सित पूनमतिथि जान, तीनज्ञानजुत जनम प्रमान ।
धरि गिरिराज जजैं सुरराज,तिन्हें जजों मैं निजहित काज ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्ममंगलमंडिताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय ।।२।।

मंगसिरसित पून्यू तप धार,सकल संग तजि जिन अनगार ।
ध्यानादिक जल जीते कर्म, चर्चों चरण देहु शिवशर्म ।।

ॐ ह्रीं मार्गशीषपूर्णिमायां तपोमंगलमंडिताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय ।।३।।

कार्तिक कलि तिथि चौथ महान्, घाति लिय केवलज्ञान ।
समवसरन महँ तिष्ठे देव, तुरिय चिह्न चर्चों वसुभेव ।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थीदिने ज्ञानमंगलमंडिताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय ।।४।।

चैत शुकल तिथि षष्ठी घोख, गिरिसमेदतैं लीनों मोख ।
चारशतक धनु अवगाहना, जजो तासु पद थुतिकर घना ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठीदिने मोक्षमंगलमंडिताय श्री संभवनाथजिनेन्द्राय ।।५।।

जयमाला

दोहा- श्री संभवके गुन अगम, कहि न सकत सुरराज ।
मैं वशभक्ति सुधीठ ह्वै, विनवों निज हित काज ।।१।।

जिनेश महेश गुनेश गरिष्ट, सुरासुरसेवित इष्ट वरिष्ट ।
धरे वृषचक्र करे अघ चूर, अतत्त्व-क्षपातम-मर्द्दन-सूर ।२।
सुतत्त्वप्रकाशन शासन शुद्ध, विवेक विराग बढ़ावन बुद्ध ।
दया-तरु-तर्पन मेघ महान, कुनैगिरिगंजन वज्र समान ।३।
सुगर्भरु जन्ममहोत्सवमांहि, जगज्जन आनन्दकन्द लहाहिं ।
सुपूरब साठहि लक्ष जु आय, कुमार चतुर्थम अंश रमाय ।४।

चवालिस लाख सुपूरब एव, निकंटक राज कियो जिनदेव ।
तजे कछुकारन पाय सु राज, धरे व्रत संजम आतमकाज ।५।
सुरेन्द्र नरेन्द्र दियो पयदान, धरे बनमें नित आतम ध्यान ।
कियो चव घातियकर्म विनाश, लयो तब केवलज्ञान प्रकाश ।६।
भई समवसृत ठाठ अपार, खिरै धुनि झेलहिं श्रीगणधार ।
भनै षटद्रव्यतने विस्तार,चहुँ अनुयोग अनेक प्रकार ।७।
कहे पुनि त्रेपन भाव विशेष, उभै विधि हैं उपशम्य जू भेष ।
सुसम्यक् चारित भेद स्वरूप, अबै इमि क्षायक नौ सु अनुप ।८।
दृगौं बुधि सम्यक् चारितदान, सु लाभरु भोगुपभोग प्रमाण ।
सु वीरज संजुत ए नव जान, अठार क्षयोपशमं इमि मान ।९।
मति श्रुत अवधि उभै विधि जान, मनःपर्यय चखु और प्रमान ।
अचक्खु तथाविधि दान-रु लाभ सुभोगुपभोग रु बीरजसाम ।१०।
व्रताव्रत संजम और सुधार, धरे गुन सम्यक् चारितसार ।
भये वसु एक समापत येह, इकीस उदीक सुनो अब जेह ।११।
चहुँ गति चारि कषाय तिवेद, छलेश्यय और अज्ञानविभेद् ।
असंजम भाव लखो इसमाहिं, असिद्धित और अतत्त्व कहाहिं ।१२।
भये इकबीस सुनो अब और, विभेद त्रयं परिणामिक ठौर ।
सुजीवित भव्यत और अभब्व, तरेपन एम भने जिन सब्व ।१३।
तिन्हों महँ केतक त्यागजोग, कितेक गहेतैं मिटैं भवरोग ।
कह्यो इन आदि लह्यो फिर मोख, अनंतगुनाताममंडित चोख ।१४।
जजौं तुम पाय जपौं गुनसार, प्रभु हमको भव सागर तार ।
गही शरणागत दीनदयाल, विलंब करो मति हे गुनपाल ।१५।

घत्ता- जै जै भवभंजन जनमनरंजन, दयाधुरंधर कुमतिहरा ।
'वृन्दावन' वंदित मनआनंदित, दीजै अतमज्ञानवरा ।।१६।।

ॐ ह्रीं संभवनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द अडिल्ल–

जो बांचै यह पाठ सरस संभवतनो ।
सो पावै धनधान्य सरस सम्पति घनो ।।
सकल पाप क्षय जात सुयश जग में बढ़े ।
पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढ़े ।।१७।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री अभिनन्दननाथ जिनपूजा

छन्द मदवलिप्तकपोल

अभिनन्दन आनन्दकन्द, सिद्धारथ-नन्दन ।
संवरपिता दिनन्द चन्द, जिहिं आवत वंदन ।।
नगर अयोध्या जनम इन्द, नागेन्द्र जु ध्यावैं ।
तिन्हें जजनके हेत थापि मंगल गावै ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक (छंद गीता, हरिगीता तथा रूपमाला)

पदमद्रहगत गंग चंग, अभंग धार सुधार है ।
कनकमणिगनजटित झारी, द्वारधार निकार है ।।
कलुषतापनिकंद श्री अभिनन्दन अनुपम चंद है ।
पदकंद वृन्द जजे प्रभू, भवदंद-फंद-निकंद है ।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्दाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

शीतचन्दन कदलिनन्दन, सुजलसंघ घसायकैं ।
ह्वै सुगंध दशों दिशा में, भ्रमैं मधुकर आय कैं ।।कलुष.

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्दाय संसारतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

हीरहिम-शशिफेन-मुक्ता, सरिस तन्दुल सेत हैं ।
तासको ढिग पुंज धारौं, अखय पद के हेत हैं ।।कलुष.

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्दाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

समर-सुभट-निघटन-कारन,सुमन सुमनसमान हैं ।
सुरभितें जापैं करै, झकार मधुकर आन हैं ।।कलुष.

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

सरस ताजे नव्य गव्य, मनोज्ञ चित हर लेयजी ।
क्षुदाछेदन छिमा-छितिपति, के चरन चरचेयजी ।।कलुष.

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

अतितमसु मर्दनकिरनवर, बोधभानु विकास है ।
तुम चरनढिग दीपक धरों,मोहि होहु स्वपरप्रकाश है ।।कलुष.

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

भूर अगर कपूर चूर सुगंध, अगनि जराय हैं ।
सब करमकाष्ट सुकाष्ट में मिस,धूमधूम उड़ाय है ।।कलुष.

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

आम निम्बु सदा फलादिक,पक्व पावन आनजी ।
मोक्षफल के हेत पूजौं, जोरिकैं जुगपान जी ।।कलुष.

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

अष्टद्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही ।
नचत रचत जजों चरनजुग,नाय नाय सुभालही ।।कलुष.

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घ (छंद–हरिपद)

शुकलछट वैशखविषै तजि, आये श्रीजिनदेव ।
सिद्धारथमाता के उरमें, करै शची शुचि सेव ।।
रतनवृष्टि आदिक वर मंगल, होत अनेक प्रकार ।
ऐसे गुननिधिकौं मैं पूजौं, ध्यावौं बारम्बार ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं।।१।।

माघशुकलतिथि द्वादशिके दिन, तीनलोकहितकार ।
अभिनन्दन आनन्दकन्द तुम, लीन्हो जगअवतार ।।

एक महूरत नरकमांहि हूं, पायो सब जिय चैन ।
कनकबरन कपिचिन्हधरन पद, जजौं तुम्हैं दिनरैन ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

साढ़े छत्तिसलाख सुपूरब, राजभोग वर भोग ।
कछु कारन लखि माघशुकल,द्वादशिको धारयो जोग।।
षष्ठम नेम समापति करि लिय, इन्द्रदत्त घर छीर ।
जय धुनि पुष्प रतन गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादाश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

पौष शुकल चौदशिको घाते, घातिकरमदुखदाय ।
उपजायो वरबोध जासको, केवल नाम कहाय ।।
समवसरन लहि बोधिधरम कहि, भव्यजीव सुखकंद ।
मोकौं भवसागरतैं तारो जय जय जय अभिनंदन ।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

जोगनिरोध अघातिघाति लहि, गिरिसमेदतैं मोख ।
माससकल सुखराश कहे, वैंशाखशुकल छठ चोख ।।
चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगतभाव उमगाय ।
हम पूजैं इत अरघ लेय,जिमि,विघनसघन मिट जाय।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठीदिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा

तुंगसु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम ।
कनकवरन अवलोकिके,पुनि पुनि करूं प्रणाम ।।१।।

छंद लक्ष्मीधरा

सच्चिदानंद सद्ज्ञान सदशंनी, सत्स्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी ।
सर्व आनंदकन्दा महादेवता, जासु पादाब्ज सेवैं सबैं देवता ।।
गर्भ औ जन्म निःकर्मकल्यानमें, सत्वकोशर्म पूरे सबै थान में ।
वंशइक्ष्वाकु में आपु ऐसे भये, ज्यों निशाशर्द मैं इंदु स्वच्छै ठये ।।

लक्ष्मीवती छन्द

होत वैराग्यलौकांतसुर बोधियो, फेरि शिविकासु चढ़ि गहन निजसोधियो ।
घाति चौघातिया ज्ञान केवल भयो, समवसरनादि धनदेव तब निरमयो।।४।।
एक है इन्द्रनीली शिला रत्नकी, गोल साढ़ेदशैं जोजने जत्नकी ।
च्यारदिशपैड़िका बीस हज्जार हैं, रत्नके चूरका कोट निरधार हैं ।।५।।
कोट चहुंओर चहुँद्वार तोरन खँचे, तासु आगैं चहूँ मानथम्भा रचे ।
मान मानी तजैं जासु ढिग जायकैं, नम्रता धार सेवैं तुम्हैं आयकैं ।।६।।

छन्द लक्ष्मीधरा

बिंब सिहासनोंपै जहाँ सोहहीं, इन्द्रनागेन्द्र केते मनैं मोहहीं ।
वापिका वारिसों यत्र सोहै भरी जासमें न्हात ही पाप जावे टरी।।७।।
तास आगैं भरी खतिका वारिसों,हंस सू आदि पंखी रमैं प्यार सों।
पुष्पकी वाटिका बागवृच्छैं जहाँ,फूल औ श्री फलें सबही हैं तहाँ।।८।।
कोट स्वर्ण का तासु आगे खड़ा, चार दर्वाजा चौआर रत्न जड़ा ।
च्यार उद्यान चारों दिशा मैं गना,हैधुजापंक्ति औनाटशालाबना ।।९।।
तासु आगैं त्रितीकोट रूपामयी, वूपनौ जासु चारों दिशा मैं ठयी ।
धाम सिद्धांतधारीनके हैं जहाँ,औ सभाभूमि हैं भव्य तिष्ठै तहाँ।१०।
तास आगैं रची गंधकूटी महा, तीन है कट्टिनी सारशोभा लहां ।
एकपैं तो निधैं ही धरी ख्यातहैं,भव्यप्राणी तहाँ लौं सब जात है।११।
दूसरी पीठपें चक्रधारी गमैं, तीसरे प्रातिहार्ये लसै भाग मैं ।
तासपै वेदिका चार थम्भानकी,है बनी सर्वकल्यान के खानकी।१२।

तासपैं हैं सुसिंहासनं भासनं, जासपै पद्म प्राफुल्ल है आसनं ।
तासुपैं अंतरीक्षं विराजै सही, तीनछत्रै फिरें शीसरत्नैं यही ।।१३।।
वृक्ष शोकापहारी अशोकं लसैं, दुंदुभीनाद औ पुष्प खंते खसैं ।
देहकी ज्योतिसो मंडलाकार है सात भौ भव्यतामैं लखैं सार है।१४।
दिव्यवानी खिरै सर्वशंका हरै, श्री गनाधीश झेलैं सुशक्ती धरैं ।
धर्म चक्री तुम्हीं कर्मवक्री हने, सर्वशक्री नमैं मोदधारैं घने ।।१५।।
भव्यको बोधि सम्मेदतैं शिवगये, तब इन्द्रादि पूजे सुभक्तिमये ।
हे कृपासिंधु मोपैं कृपा धारिये, घोर संसारसों शीघ्र मो तारिये ।।

घत्ता- जै जै अभिनन्दा आनन्द कन्दा भवसमुद्रवरपोत इवा ।
भ्रमतमशतखंडा, भानुप्रचंडा, तारि तारि जगरैनदिवा ।।१६।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

कवित्त

श्री अभिनन्दन पापनिकन्दन, तिनपद जो भवि जजैं सुधार ।
ताके पुण्यभानु वर उग्गै, दुरिततिमिर फाट दुखकार ।।१७।।
पुत्र मित्र धनधान्य कमल यह, विकसैं सुखद जगतहित प्यार ।
कछुक कालमें सो शिव पावैं, पढैं सुनैं जिन जजैं निहार ।।१८।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री सुमतिनाथ पूजा

(कवित्त रूपक मात्रा 31)

संजमरतन विभूषन भूषित, दूषनदूषन श्री जिनचन्द ।
सुमतिरमारंजन भवभंजन संजयन्त तजि मेरुनरिंद ।।
मातुमंगला सकलमंगला, नगर विनीता जये अमन्द ।
सो प्रभु दयासुधारसगर्भित आय तिष्ठ इत हरी दुखदंद।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक–छन्द कवित्त तथा कुसुमलता

पंचमउदधितनों सम उज्ज्वल, जल लीनों वरगंध मिलाय ।
कनककटोरी माँहि धारिकरि धार देहु शुचि मनवचकाय ।।
हरिहरवन्दित पापनिकन्दित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय ।
तुमपद पद्म पद्मशिवदायक,जजत मुदितमन उदित सुभाय।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

मलयागर घनसार घसौं वर, केशर अर करपूर मिलाय ।
भवतपहरन चरन पर वारों, जनमजरामृततताप पलाय ।।हरि.

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

शशिसमउज्ज्वल सहितगंधतल, दोनों अनी शुद्ध सुखदास ।
सो ले अखयसंपदाकारन, पुंज धरों तुम चरणनपास ।।हरि.

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

कमलकेतकी बेल चमेली, करना अरु गुलाब महकाय ।
सोलै समरशूलक्षयकारण, जजों चरन अति प्रति लगाय ।।हरि.

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

नव्य गव्य पकवान बनाऊं, सुरस देखि दृगमन ललचाय ।
सोलैं क्षुधारोगछयकारण, धरौं चरणढिग मनहरषाय ।।हरि.

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

रतनजड़ित अथवा घृतपूरित, वा कपूरमय जोति जगाय ।
दीप धरों तुम चरणआगैं, जाते केवलज्ञान लहाय ।।हरि.

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि अगनिमें देत जराय ।
अष्टकरम ये दुष्ट जरतु हैं धूम धूम यह तासु उडाय ।।हरि.

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

श्रीफल मातुलिग वर दाडिम,आम निबु फल प्रासुक लाय ।
मोक्षमहाफल चाखन कारन, पूजत हों तुमरे जुगपाय ।।हरि.

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय ।
नाचि नाचि शिरनाय समरचो, जय जय जय जय जिनराय ।हरि.

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ।

पंचकल्याणक अर्घ (रूप चौपाई)

संजयंत तजि गरभ पधारे, श्रावण सेत दुतिय सुखकारे ।
रहे अलिप्त मुकुर जिमि धाया,जजौं चरण जयजय जिनराया ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयायादिने गर्भमंगलमडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।१।।

चैत शुकल ग्यारह कह जानौं जनमें सुमति सहित त्रयज्ञानों ।
मानो धरयो धरम अवतारा, जजौं, चरणजुग अष्टप्रकारा ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां जन्ममंगलमडिताय श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

चैतशुकलग्यारस तिथि भाखा,तादिन तप धरि निजरस चाखा ।
पारण पद्मसद्मपय कीनों, जजत चरण हम समता भीनों ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां तपःमंगलमडिताय श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

चैतशुकल एकादशि हाने, घाति सकल जे जुगपति जाने ।
समवसरनमहँ कहि वृषसारं, जजहूँ अनन्त चतुष्टयवारं ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

चैतशुकल ग्यारस निरवान, गिरिसमेदतैं त्रिभुवनमानं ।
गुनअनंत निज निरमलधारी, जजौं देव सुधि लहु हमारी ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा- सुमति तीनसौ छत्तिसो, सुमतिभेद दरशाय ।
सुमति देहु विनती करों,सुमति विलम्ब कराय ।१।
दयाबेलितरु सुगुननिधी, भविकमोद-गण चन्द ।
सुमतिसतीपति सुमतिकों, ध्यावौं धरि आनंद ।२।

पंच परावरतन हरन पंच सुमति सित दैन ।
पंचलब्धि दातार के, गुन गाऊं दिनरैन ।३।

छंद भुजंगप्रयात

पिता मेघराजा सबै सिद्धकाजा, जपै नाम जाको सबैं दुःख भाजा ।
महासूर इक्ष्वाकुवंशी विराजै गुणग्राम जाको सबै ठौर छाजै ।४।
तिन्होंके महापुण्यसौं आप जाये, तिहूँलोक में जीव आनंद पाये ।
सुनासीर ताही घरी मेरुधायो,क्रिया जन्मकी सर्व किनी यथायो ।५।
बहुरितातकों सोंपि संगीत कीनों,नमें हाथ जोरे भली भक्ती भीनों ।
बिताई दशैलाख ही पूर्व बालैं, प्रजा लाख उन्तीस ही पूर्व पालै ।६।
कछू हेतु तें भावना बार भाये, तहाँ ब्रह्मलौकांत केह देव आये ।
गये बोधि ताही समैं इन्द्र आयो,धरे पालकी में सु उद्यान ल्यायौ।७।
नमैं सिद्धको केशलोंचे सबै ही धरयो ध्यान शुद्धं जु घाती हनेही ।
लह्यो केवलं औ समोशर्ण साजं,गणाधीश जू एकसौ सोल राजं ।८।
खिरैं शब्द तामैं छहोद्रव्य धारे, गुनौपर्जउत्पादव्यय ध्रौव्य सारे ।
तथा कर्म आठों तनी थित्तिगाजं,मिलैं जासु के नाशतें मोच्छराजं।९।
धरैं मोहिनी सत्तरं कोड़कोड़ी, सरित्पत्प्रमाणं थितिं दीर्घ जोड़ी ।
अवर्ज्ञानदृग्वेदिनी अतरायं धरैं तीसकोड़ाकोड़ि सिंधुकायं ।१०।
तथा नामगोतं कुड़ाकोड़ि बीसं समुद्रप्रमाण धरैं सत्तईस ।
सुतैतीसअब्धि धरें आयु अब्धि, कहीशर्वकर्मोतनी वृद्धलब्धि ।११।
जघन्यप्रकारें धरैं भेद ये ही, मुहूर्त्तंवसू नामगोतं गने ही ।
तथा ज्ञान दृग्मोह प्रत्यूह आयं, सुअंतमुर्हूर्त्त धरैं थित्ति गायं ।१२।
तथा वेदिनी बारहें ही मुहूर्त्तं, धरै थित्त ऐसें भन्यो न्यायजुत्तं ।
इन्हैं आदि तत्त्वार्थ भाख्यो अशेषा,लह्यो फेरि निर्वाण माही प्रवेशा।१३।
अनंत महंत सुसन्तं सुतन्तं, अमन्दं अकन्दं अनन्दं अभन्तं ।
अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं, अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं ।१४।

अवर्णं अघर्णं अमर्णं अकर्णं, अमर्णं अतर्णं अशर्णं सुशर्णं ।
अनेकं सदेकं चिदेकं विवेकं, अखण्डं सुमंडं प्रचण्डं तदेकं ।१५।
सुपर्मं सुधर्मं सुशर्मं अकर्मं अनन्तं गुनाराम जेवन्त वर्मं ।
नमैं दास 'वृदावनं' शर्न आई, सबैं दुःखतैं मोहि लीजै छुड़ाई ।१६।

घत्ता- तुव गुन अनन्ता, ध्यावत सन्ता, भ्रमतमभंजनमार्तंडा ।
सतमतकरचंडा भविकजमंड़ा कुमतिकुबलइन-गन हण्ड़ा ।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द रोड़क

सुमतिचरण जो जजैं, भविक जन मनवचकाई ।
तासु सकलदुखदन्द फन्द, ततछिन छय जाई ।।
पुत्रमित्र धन धान्य, शर्म अनुपम सो पावै ।
'वृन्दावन' निर्वाण, लहै जा निहचै ध्यावै ।।१८।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री पद्मप्रभ जिनपूजा

पदमराग मनि वरन धरन तनतुंग अढ़ाई ।
शतक दण्ड अघ खण्ड, सकल सुर सेवत आई ।।
धरनि तात विख्यात सुसीमा जू कें नंदन ।
पद्म चरन धनि राग सुधापों झकरि वंदन ।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक–चाल होलीकी–ताल जत्त ।

पूजों भावसों श्रीपद्मनाथ पद सार, पूजों भावसों ।।टेक।।
गंगाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय ।
मनवचतन त्रय धर देत ही, जनम जरामृत जाय ।।

पूजों भावसों श्रीपद्मनाथपद सार, पूजों भावसों ।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।
मलयागर कपूर चन्दन घँसि, केशरसंग मिलाय ।
भवतापहरन चरनपर वारों, मिथ्याताप मिटाय ।।पूजों.
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।
तंदुल उज्जल गंधअनीजुत, कनकथार भर लाय ।
पुंज धरो तुम चरनन आगैं,मोहि अखय पददाय ।।पूजों.
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।
पारिजात मंदार कल्पतरुजनित, सुमन शुचि लाय ।
समरशूल निरमूलकरनकों, तुम पद पद्म पढ़ाय ।।पूजों.
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।
घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचि भाय ।
क्षुधारोगनिर्वारन कारन, जजोंहरष उर लाय ।।पूजों.
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।
दीपकजोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम ।
तिमिरमोह नाशनके कारन, जजों चरन गुनधाम ।।पूजों.
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।
कृष्णागर मलयागर चंदन, चूर सुगन्ध बनाय ।
अगनिमाहिं जारोंतुम आगें,अष्टकरम जरि जाय ।पूजो.
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।
सरस-वरन-रसना मनभावन,पावन फल अधिकार ।
तासों पूजों जुगम चरन यह, विघन करमनिरवार ।।पूजों.
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।
जलफल आदि मिलाय गायगुन,भगतिभाव उमगाय ।
जजों तुम्हें शिवतियवरजिनवर, आवागमन मिटाय ।।पूजों.
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक छन्द द्रुतविलम्बित

असित माघसु सट्ट बखानिये, गरभमंगल तादिन मानिये ।
उरधग्रीवकसौं चय राजजी, जजत इंद्र जजैं हम आजजी ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठिदिने गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ।।१।।

सुकलकार्तिकतेरसकों जये, त्रिजगजीव सु आनन्द को लये ।
नगर स्वर्गसमान कुसाम्बिका, जजत हैं हरिसंजुत अम्बिका ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ।।२।।

सुकलतेरस कार्तिक भावनी, तप धरयो वन षष्टम पावनी ।
करत आतमध्यान धुरन्धरो, जजत हैं हम पाप सबैं हरो ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लात्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ।।३।।

सुकल पूनम चैत सुहावनी,परम केवल ता दिन पावनी ।
सुरसुरेश नरेश जजैं तहाँ, हम जजैं पदपंकजको इहां ।।

ॐ ह्रीं चैतशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ।।४।।

असित फागुन चौथ सुजानियो,सकलकर्म महारिपु हानियो ।
गिरिसमेदथकी शिवको गये, हम जजैं पद ध्यानविष लये ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थीदिने मोक्षमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं ।।५।।

जयमाला

धत्ता- जय पद्मजिनेशा, शिवसद्मेशा, पादपद्म जजि पद्मेशा ।
जय भवतमभंजन, मुनिमनकंजन रंजन को दिवसाधेशा ।।१।।

चौपाई

जय जय जिन भविजन हितकारी, जय जय जिनभव सागरतारी ।
जय जय समवसरन धनधारी, जय जय वीतराग हितकारी ।।२।।
जय तुम सप्त तत्त्व विधि भाख्यो,जय जय नवपदार्थ लखि आख्यौ।
जय षट्द्रव्य पंच जुतकाया, जय सबभेद सहित दरशाया ।।३।।
जय गुनथान जीव परमानों, जय पहिले अनंत जिय जानों ।
जय दूजे सासादन माहीं, तेरहकोड़ि जीवथिति आंही ।।४।।

जय तीजे मिश्रित गुणथाने, जीव सु बावनकोड़ि प्रमाने ।
जय चौथे अविरत-गुन जीवा, चार अधिक शतकोड़ि सदीवा ।।५।।
जय जिय देशविरत में शेषा, कोड़ि सातसौ हैं थिति वेशा ।
जय प्रमत षट्शून्य दोय बसु, पांच तीन नव पांच जीव लसु ।।६।।
जय जय अपरमत्तगुन कोरं, लच्छ छयानवै सहस बहोरं ।
निन्यानवे एकशत तीना, एतेमुनि तित रहहिं प्रवीना ।।७।।
जय जय अष्टममें दुई धारा, आठशतक सत्तानों सारा ।
उपशममें दुइसो निन्यानौं, क्षपकमाँहि तसु दूने जानों ।।८।।
जय इतने इतने हितकारी, नवैं दशैं जुगश्रेणी धारी ।
जय ग्यारैं उपशममगगामी, दोसै निन्यानौं अघआमी ।।९।।
जय जय खीणमोह गुनथानों, मुनि शंतपांच अधिक अट्ठानों ।
जय जय तेरहमें अरहंता, जुग नभ पन वसु नव वसु तता ।।१०।।
एते राज तु हैं चतुरानन, हमबंदैं पद थुतिकरि आनन ।
जय अजोग गुनमें जे, देव पन्नसौं ठानों करो सुसेवा ।।११।।
तित तिथि अइउऋलृ लघुभाषत,करि थिति फिर शिवआनंद चाखत।
ए उत्कृष्ट सकल गुनथानी, तथा जघन्य मध्य जे प्रानी ।।१२।।
तीनौं लोक सदन के वासी, पुन-परजाय भेद परकाशी ।
तथा और द्रव्यनके जेते, गुनपरजाय भेद हैं तेते ।।१३।।
तीनों कालतने जु अनन्ता, सो तुम जानत जुगपत संता ।
सोई दिव्यवचनके द्वारे, दे उपदेश भविक उद्धारे ।।१४।।
फेरि अचलथलवासा कीनों, गुन अनन्त निजआनन्द भीनों ।
चरमदेहतें किंचित् ऊनो, नर आकृति तिथि हैं नित गूनो ।।१५।।
जय जय सिद्धदेव हितकारी, बार बार यह अरज हमारी ।
मोकौं दुखसागरतें काढ़ो, 'वृन्दावन' जाचतु हैं ठाढ़ो ।।१६।।

घत्ता- जय जय जिनचन्दा पद्मानन्दा, परम सुमति पद्मधारी ।
जय जनहितकारी दया विचारी,जय जय जिनवर अधिकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द रोड़क

जजत पद्मपदपद्म सद्म ताके सुपद्म अत ।
होत वृद्धि सुतमित्र सकल आनन्दकन्द शत ।।
लहत स्वर्गपदराजा तहांतें चय इत आई ।
चक्रीको सुख भोगि अंत शिवराज कराई ।।८।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री सुपार्श्वनाथ जिनपूजा

छन्द हरिगीता तथा गीता

जय जय जिनिन्द गनिन्द इन्द, नरिंद गुन चिंतन करैं ।
तन हरीहर मनसम हरत मन, लखत उर आनन्द भरै ।।
नृप सुपरतिष्ठ वरिष्ठ इष्ट महिष्ट शिष्ट पृथी प्रिया ।
तिन-नन्दके पद वंद वृन्द, अमन्द थापतु जुतक्रिया ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चाल–द्यानतरायजीकृत सोलहकारण भाषा अष्टककी

तुम पद पूजौं मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय ।
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ।।
उज्ज्वल जल शुचिगंध मिलाय,कंचनझारी भरकर लाय ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम.

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

मलयागरचन्दन घसि सार, लीनोंभवतपभंजनहार ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।

तुम पद पूजौं मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय ।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।
देवजीर सुखदास अखण्ड,उज्ज्वल जलक्षालित सित मंड ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम.
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।
प्रासुक सुमन सुगन्धित सार, गुंजत अलि मकरध्वजहार ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम.
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।
क्षुधा हरन नेवज वर लाय, हरो वेदनी तुम्हैं चढ़ाय ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम.
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।
ज्वलित दीप भरिकर नवनीत, तुमढीग धारतु हों जगमीत ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम.
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।
दशविधि गन्ध हुताशनमांहि, खेवत क्रूर करम जरि जाहिं ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम.
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।
श्रीफल केला आदि अनूप, लै तुम अग्र धरौं शिवभूप ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम.
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।
आठौं दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ।।तुम.
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

(पंचकल्याणक अर्घ) छंद–द्रुतविलंबित

सुकलभादवछट्ट सुजानिये, गरभमंगल तादिन मानिये ।
करत सेव शची रचि मातकी, अरघ लेय जजों वसु भांतिकी ।
ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठिदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

सुकलजेठदुवादशि जन्मये, सकल जीव सु आनन्द तन्मय ।
त्रिदशराज जजैं गिरिराजजी, हम जजैं पद मंगल साजजी ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादशयां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

जनमके तिथि श्रीधरनें धरी, तप समस्त प्रमादनको हरी ।
नृपमहेन्द्र दियो पय भावसों, हम जजैं इत श्रीपद चाबसौं ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां निःक्रमणकल्याणप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।३।।

भ्रमरफागुनछट्ट सुहावनों, परमकेवलज्ञान लहावनों ।
समवसर्नविषैं वृष भाखियों, हम जजैं पद आनन्द चाखियो ।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठिदिने ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।४।।

असितफागुनसांतय पावनो, सकलकर्म कियो क्षय भावनो ।
गिरि समेदथकी शिव जातु हैं,जजत ही सबविघ्न विलातु हैं ।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तमीदिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।५।।

जयमाला

दोहा- तुंग अंग धनु दोयसो, शोभा सागर चन्द ।
मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सुपार्श्व सुखकन्द ।।१।।

छन्द कामिनीमोहन

जैति जिनराज शिवराज हितहेंत हो ।
परमबैरागआनन्द भरि देत हो ।।
गर्भकेपूर्व षटमास धनरदेवने ।
नगर निरमापि बाणारसी सेबने ।।२।।
गगनसौं रतन की धार बहु वर्षहीं ।
कोड़ि क्षयअर्द्ध त्रयवार सब हर्षहीं ।।
तात के सदन गुनवदन रचना रची ।
मातुकी सर्वविधि करत सेवा शची ।।३।।
भयोजब जनम तब इन्द्रआसन चल्यो ।
होय चकित तुरित अवधितैं लखि भल्यो ।।

सप्त पग जाय शिर नाय, वंदन करी ।
चलन उमग्यो तबै मानि धनि धनि घरी ।।४।।
सात विधि सैंन गज वृषभ रथ बाज लै ।
गंधरव निरतकारी सबै साज लै ।।
गलितमदगंड ऐरावती साजियो ।
लक्षजोजन सु तन वदन सत राजियो ।।५।।
वदन वसुदन्त प्रतिदंत सरवर भरै ।
तासु मधि शतकपनबीस कमलिनि खरे ।।
कमलनी मध्य पनबीस फूले कमल ।
कमलपति कमलमहँ एकसौआठ दल ।।६।।
सर्वदल कोडशतबीस परमान जू ।
तासु पर अपछरा नचहिं जुतमान जू ।।
ततता ततता विततता ताथेई ।
धृगतता धृगतता धृततता मैं लई ।।७।।
धरत पग सनन नन सनन नन गगन में ।
नूपुरें झनन नन झनन नन पगनमें ।।
नचत इत्यादि कइ भाँतिसौं मगन में ।
केइ तित बजत बाजे मधुर पगन में ।।८।।
केइ दृम दृम सुदृम दृम मृदंगनि धुनै ।
केइ झल्लरि झननन झननन झंझनै ।।
केइ संसागृदि संसागृदि सारंगि सुर ।
केइ वीनापटह वंशि बाजैं मधुर ।।९।।
केइ तननन तननन तानै पुरैं ।
शुद्ध उच्चारिसुर केइ पाठैं फुरै ।।
केइ झुकि फिरैं चक्रसी भामिनी ।

धृगततां धृगततां परम शोभा बनी ।।१०।।
केइ छिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु ।
धरत वैक्रियकपरभावसौं तन सुभगु ।।
केइ करताल करताल करमें धुने ।
तत वितत घन सुखरि जात बाजै मुनै ।।११।।
इन्हें आदिक सकल साज संग धारिकैं ।
आय पुर तीन फेरी करी प्यार कैं ।।
सचिय तब जाय परसूतथल मौदमें ।
मातु करि नींद लीनों तुम्हें गोदमें ।।१२।।
आन गिरवाननाथहिं दियो हाथ में ।
छत्र अर चमर वर हरि करत माथमें ।।
चढ़े गजराज जिनराज गुन जापियो ।
जाय गिरिराजपांडुकशिला थापियो ।।१३।।
लेय पश्चमउदधिउदक करकर सुरनि ।
सुरन कलशनि भर सहित चर्चित पुरनि ।।
सहस अरु आठ शिर कलश ढारें जबैं ।
अघघ घघ घघ घघ भभभ भभ भौ तबैं ।।१४।।
धधध धध धधध धध धुनि मधुर होत है ।
भव्य जन हँसके हरष उद्योत है ।।
भयै इमि न्होन तब सकल गुनरंगमें ।
पोंछि श्रृंगार कीनों शची अंग में ।।१५।।
आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो ।
बालवय तरुन लहि राजसुख भोगियो ।।
भोग तज जोग गहि चार अरिको हने ।
धारि केवल परमधरम द्वयविधि भने ।।१६।।

नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये ।
ज्ञान दृग शर्म बीरज अनन्ते लये ।।
सो जगतराज यह अरज उर धारियो ।
धरमके नन्दको भवउदधि तारियो ।।१७।।

घत्ता- जय करुणाधारी, शिवहितकारी, तारनतरन जिहाजा हो ।
सेवक नित बंदै, मन आनन्दै, भवभयभेटनकाजा हो ।।१८।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

दोहा- श्रीसुपार्श्वपदजुगल जो, जजैं पढ़ै यह पाठ ।
अनुमोदै सो चतुर नर, पावै आनन्द ठाठ ।।१९।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा

छप्पय

चारुचरन आचरन चरन चितहरन विहनचर ।
चंदचंदतन चरित, चंदथल चहत चतुर नर ।।
चतुक चंड चककचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर ।
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर ।।
चरअचरहितू तारनतरण, सुनत चहकि चिरनंद शुचि ।
जिनचंदचरन चरचो चहत् चितचकोर नचि रच्चि रुचि ।।१।।

दोहा

धनुष डेढसौं तुंग तन, महासेन नृपनन्द ।
मातुलछमनाउर जये, थापों चंदजिनन्द ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक चाल–द्यानतरायकृत नंदीश्वर अष्टककी

गंगाहृदनिरमलनीर, हाटकभृंगभरा ।
तुम चरण जजौं वरबीर, मेटो जनमजरा ।।
श्री चन्दनाथदुति चंद चरणन चंद लगै ।
मनवचतन जजत अमंद आतम जोति जगै ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

श्री खण्डकपूर सुचंग केशररंग भरी ।
घसि प्रासुकजलके संग, भवआताप हरी ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

तंदुल सित सोमसमान, सम ले अनियारे ।
दिय पुंज मनोहर आन, तुमपदतर प्यारे ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतानूं ।।३।।

सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै ।
तासों पद पूजत चंग, कामविथा जावै ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

नेवज नानापरकार, इन्द्रिय बलकारी ।
सौ लै पद पूजों सार, आकुलता हारी ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

तमभंजन दीप संवार, तुमढिग धरतु हों ।
मम तिमिरमोह निरवार,यह गुन धारत हों ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

दशगंधहुतासन माहिं, हे प्रभु खेवतु हों ।
मम करम दुष्ट जरिजांहि, याते सेंवतु हो ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

अति उत्तमफल सु मंगाय,तुम गुनगावतु हों ।
पूजों तन मन हरषाय, विघन नशावतु हों ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।
पूजों अष्टमजिन मीत,अष्टम अवनि गमों ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।६।।

पंचकल्याणक अर्घ (छन्द द्रुतविलंबित)

कलिपंचमचैत सुहात अली, गरभागममंगल मोद भली ।
हरि हर्षित पूजत मातु पिता, हम ध्यावत पावत शर्मसिता ।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

कलि पौषइकादशि जन्म लयो,तब लोकविषैं सुखथोक भयो ।
सुर ईश जजें गिरशीश तबैं, हम पूजत हैं नुतशीश अबैं ।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा, कलिपौष इग्यारसि पर्व वरा ।
निजध्यान विषैं लवलीन भये,धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपःमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

वर केवलभानु उद्योत कियो,तिहुँ लोकतणों भ्रम मेट दियो ।
कलि फागुनसप्तमि इन्द्रजजें, हम पूजहिं सर्व कलंक भजे ।

ॐ ह्रीं फागुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

सितफागुन सप्तमि मुक्ति गये गुणवन्त अनन्त अबाध भये ।
हरि आय जजें तित मोदधरे, हम पूजत ही सब पाप हरें ।

ॐ ह्रीं फागुनशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

हे मृगाँकअंकित चरण, तुम गुण अगम अपार ।
गणधरसे नहिं पार लहिं,तौकौ वरणत सार ।१।।
पै तुम भगति हियेमम, प्रेरै अति उमगाय ।
तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय ।।२।।

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान, भावकानन-हानन-देवप्रमान ।
जय गरभजनममंगल विनद, भवि जीवविकासन शर्मकंद ।।३।।
दशलक्ष पूर्वकी आयु पाय, मनवांछित सुख भोगे जिनाय ।
लहि कारण हवैं जगतैं उदास, चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास ।।४।।
तित लौकांतिक बोध्यो नियोग, हरि शिविका सजि धरियो अभोग ।
तापैं तुम चढ़ि जिनचन्दराय, ताछिनकी शोभा को कहाय ।।५।।
जिन अंग सेत सित चमरं ढार, सित छत्र शीश गलगुलकहार ।
सित रतनजड़ित भूषण विचित्र, सित चंद्रचरण चरचें पवित्र ।।६।।
सित तनद्युति नाकाधीश आप, सित शिविका कांधे धरि सुचाप ।
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व, सित चितमैं चिंतत जात पर्व ।।७।।
सित चंदनगरतैं निकसि नाथ, सित वनमैं पहुंचे सकलसाथ ।
सितशिलाशिरोमणि स्वच्छछाँह,सित तप तित धारयो तुम जिनाह।।८।।
सित पयकोपारण परमसार, सितचन्द्रदत्त दीनों उदार ।
सित करमें सो पय धार देत, मानों बांधत भवसिन्धुसेत ।।९।।
मानों सुपुण्यधारा प्रतच्छ, तित अचरज पन सुर किय ततच्छ ।
फिर जाय गहन सित तपकरंत,सित केवलज्योति जग्यो अनंत।।१०।।
लहि समवसरणरचना महान, जाके देखत सब पाप-हान ।
जहँ तरु अशोक शोभैं उतंग सब शोक तनों चूरै प्रसंग ।।११।।
सुर सुमनवृष्टि नभतैं सुहात, मन मन्मथ तज हतियार जात ।
बानी जिनमुखसौं खिरैं सार, मनु तत्त्व प्रकाशन मुकुरधार ।।१२।।
जहँ चौसठ चमर अमर ढुरंत, मनु सुजश मेघझरि लगि पतंत ।
सिंहासन है जहँ कमलजुक्त, ननुशिवसरवरको कमलशुक्त ।।१३।।
दुन्दुभि जित बाजत मधुर सार, मनु करमजीतकों है नगार ।
सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण, मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण ।।१४।।
तन-प्रभातनों मंडल सुहात, भवि देखत निजभव सात सात ।

मनु दर्पणद्युति यह जगमगाय,भविजन भवमुख देखत सुआय ।।१५।।
इत्यादि विभूति अनेक जान, बाहिज दीखत महिमा महान ।
ताको वरणत नहिं लहत पार, तौ अंतरंगको कहै सार ।।१६।।
अनअंत गुणनिजुत कर विहार, धरमोपदेश दे भव्य तार ।
फिर जोगनिरोधि अघातिहान, सम्मेदय की लिय मुक्तिथान ।।१७।।
'वृन्दावन' वन्दत शीश नाय, तुम जानत हो मम उर जु भाय ।
तातै का कहों सु बार बार, मनवांछित कारज सार सार ।।१८।।

घत्ता- जय चन्दजिनन्दा आनंदकन्दा, भवभय-भंजन राजै हैं ।
रागादिकद्वन्दा,हरि सब फंदा,मुकतिमांहि थिति साजैं हैं ।।१९।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।।

छन्द चौबोला

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजें ।
ताके भव भवके अघ भाजैं,मुक्तिसार सुख ताहि सजैं ।।२०।।
जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं ।
'वृन्दावन' ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं ।।२१।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री पुष्पदंत जिनपूजा

छन्द–मदावलिप्तकपोल

पुष्पदन्त भगवन्त सन्त सुजयन्त तन्त गुन ।
महिमावन्त महन्त कंत शिवतियरमन्त मुन ।।
काकंदीपुर जनम पिता सुग्रीवरमासुत ।
स्वेतवरन मनहरन तुम्हैं थापौंत्रिवार नुत ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चाल होली को–ताल जत्त

मेरीअरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी ।टेक ।।
हिमवतगिरिगत गंगाजल भर, कंचनभृंग भराय ।
करमकंलक निवारनकारन, जजों तुम्हारे पाय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

बावन चंदन कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसाय ।
चरचों चरन हरन मिथ्यातम, वीतराग गुणगाय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंन्दनं ।।२।।

शालि अखंडित सौरभमंडित,शशिसमद्युति दमकाय ।
ताकों पुंज धरों चरणन ढिग, देहु अखयपद राय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

सुमन सुमनसम परिमलमंडित गुंजत अलिगन आय ।
ब्रह्मपुत्र–मदभंजन कारण, जजों तुमारे पाय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

घेवरवावर फेनी गुज्जा, मोदन मोदक लाय ।
क्षुधावेदनी रोगहरनको, भेंट धरों गुणगाय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

वाति कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल ज्योति जगाय ।
तिमिर–मोहनाशक तुमको लखि धरों निकट उमगाय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

दशवर गंध धनंजय के संग खेवत हो गुणगाय ।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरें सो, धूम धूम सु उडाय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

श्रीफल मातृलिंग शुचि चिरभट, दाड़िम आम मँगाय ।
तासों तुमपदपद्म जजत हों विघन सघन मिट जाय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जय फल सकल मिलाय मनोहर,मनवचतन हुलसाय ।
तुमपद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय ।।मेरी.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्रायाऽनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घ (छन्द स्वयंभू)

नवमीतिथिकारी फागुन धारी, गरभमांहि तिथिदेवाजी ।
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत सची तित सेवाजी ।।
रतननकी धारा परमउदारा, परी व्योमतैं सारा जी ।
मैं पूजौं ध्यावौं भगति बढ़ावौं, करो मोहि भवपाराजी ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

मंगसिर सितपच्छं परिवा स्वच्छं, जनमे तीरथनाथाजी ।
तब ही चवमेवा निरजर येवा, आय नये निजमाथाजी ।।
सुरगिरिनहवाये मंगलगाये, पूजे प्रीति लगाई जी ।
मैं पूजौं ध्यावौं भगति वढ़ावौं, निजनिधिहेत सहाई जी ।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपद्दिने जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।२।।

सितमंगसिरमासा तिथिसुखरासा, एकमके दिन धारा जी ।
तप आतमज्ञानी आकुलहानी,मौनसहित अविकारा जी ।।
सुरमित्र सुदानी के घरआनी, गो-पय-पारन कीना है ।
तिनको मैं बन्दौं पापनिकंदौं, जो समता रस भीना है ।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा तपःमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।३।।

सितकातिक गाये दोइज धाये, घातिकरम परंचडा जी ।
केवल परकाशे भ्रमतमनाशे, सकल सारसुख मंडाजी ।।
गनराज अठासी आनन्दभासी समवसरणवृषदाता जी ।
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजैं जगत्राता जी ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

आसिन सित सार आठैं धारा, गिरिसमेद निरवाणा जी ।
गुन अष्टप्रकारा अनुपम धारा, जै जै कृपा-निधानाजी ।।

तित इन्द्र सु आये पूज रचाये,चिन्ह तहां कर दीना है ।
मैं पूजत हो गुन ध्याय महीसौं, तुमरेरसमें भीना है ।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा- लच्छन मगर सुश्वेत तन, तुंग धनुष शतएक ।
सुरनरवंदित मुकतिपति, नमों तुम्हें शिरटेक ।।
पहुपरदन गुनवरन जिम, सागर तोय समान ।
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान ।।

छन्द तामरस तथा नयमालिनी चंड़ी (मात्रा 16)

पुष्पदन्त जयवन्त नमस्ते, पुण्यतीर्थंकर संत नमस्ते ।
ज्ञानध्यान अमलान नमस्ते, चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते ।।
भवभय भंजन देव नमस्ते, गुनिगनकृतपदसेव नमस्ते ।
मिथ्यानिशिदिनइन्द नमस्ते, ज्ञानपयोदधिचन्द नमस्ते ।।
भवदुखतरुनिःकंद नमस्ते, रागदोषमदहंद नमस्ते ।
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते, धर्मसुधारसपूर नमस्ते ।।५।।
केवलब्रह्मप्रकाश नमस्ते, सकल चराचर भास नमस्ते ।
विघ्नमहीधर-विज्जु नमस्ते, जय ऊरधरगतिरिज्जु नमस्ते ।।६।।
जय मकरकृतपाद नमस्ते, मकरध्वजमदवाद नमस्ते ।
कर्मभर्मपरिहार नमस्ते, जय जय अधम उधार नमस्ते ।।७।।
दयाधुरंधर धीर नमस्ते, जय जय गुनगंभीर नमस्ते ।
मुक्तिरमापति वीर नमस्ते, हरता भवभयपीर नमस्ते ।।८।।
व्ययउतपतिथिति धार नमस्ते, निज अधार अविकार नमस्ते ।
भव्यभवोदधितार नमस्ते, वृन्दावन निसतार नमस्ते ।।९।।

धत्ता- जय जय जनदेवं, हरिकृतसेवं परमधरम-धनधारी जी ।
मैं पूजों ध्यावौं गुनगन गावों मेटो विथा हमारी जी ।।१०।।

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द–मदावलिप्तकपोल

पहुपदंतपद संत, जजैं जो मन-वच-काई ।
नाचै गावै भगति करै, शुभपरनति लाई ।।
सो पावै सुख सर्व, इंद अहभिंद तनों वर ।
अनुक्रममतैं निरवान, लहै निश्चै प्रमोदधर ।।११।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री शीतलनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तमातंग तथा मत्तगयंद

शीतलनाथ नमों धरि हाथ, सु माथ जिन्हों भवगाथ मिटाये ।
अच्युततैं च्युत मातसुनंदके, नंद भये पुरभद्दल भाये ।।
वंश इक्ष्वाक कियौ जिनभूषित, भव्यनको भव-पार लगाये ।
ऐसे कृपानिधि के पदपंकज, थापतु हौं हिय हर्ष बढ़ाये ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक–छन्द बंसततिलका

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायौ ।
भृंगार हेमभरि भक्ति हिये बढ़ायौ ।।
रागादिदोषमलमर्द्द नहेतु येवा ।
चर्चो पदाब्ज तब शीतलनाथ देवा ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

श्री खण्डसारवरकुंकुम गारि लीनों ।
कंसंग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनों ।।रा.

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

मुक्तासमान सित तंदुल सार राजैं ।
धारंत पुंज कलिकुंज समस्त भाजैं ।।

रागादिदोषमलमर्द्द नहेतु येवा ।
चर्चो पदाब्ज तब शीतलनाथ देवा ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

श्रीकेतकी प्रमुखपुष्प अदोष लायौ ।
नौरंग जंगकरि भृंग सुरंग पायौ ।।रा.

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं ।।४।।

नैवेद्य सार चरु चारु सँवारि लायौ ।
जांबूनदप्रभृति भाजन शीष नायौ ।।रा.

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

स्नेहप्रपूरित सुदीपक ज्योति राजै ।
स्नेहप्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजै ।।रा.

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

कृष्णागुरु प्रमुखगंध हुताशमाहीं ।
खेवों तवाग्र वसुकर्म-जरन्त जाहीं ।।रा.

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

निम्बाम्र कर्कटि सु दाड़िम आदि धारा ।
सौवर्णगंध फलसार सुपक्क प्यारा ।।रा.

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

कंश्रीफलादि वसु प्रासुकद्रव्य साजे ।
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ।।रा.

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ (छन्द उपेन्द्रवज्रा)

आठैं वदी चैत सुगर्भमाहीं, आये प्रभु मंगलरूप थाही ।
सेवै शची मातु अनेक भेवा, चर्चौं सदा शीतलनाथ देवा ।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जायो, भूलोकमें मंगलसार आयो ।

शैलेन्द्रपै इन्द्र फनीन्द्र जज्जे, मैं ध्यानधारों भवदुःख भज्जे ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जानों, वैराग्य पायो भवभाव हानों ।
ध्यायों चिदानंद निवार मोहा,चर्चौं सदा चर्ण निवारि कोहा ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां तपःकल्याणमंडिताय श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

चतुर्दशी पौषवदी सुहायो, ताही दिना केवललब्धि पायो ।
शोभै समौसृत्य बखानि धर्म, चर्चौं सदा शीतल पर्म शर्म ।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

कुंवारकी आठंय शुद्धबुद्धी, भये महामोक्षरूप शुद्धा ।
सम्मेदतैं शीतलनाथ स्वामी, गुनाकरं तासु पदं नमामी ।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

छन्द लोलतरंग

आप अनन्तगुनाकर राजैं, वस्तुविकासन भानु समाजैं ।
मैं यह जानि गही शरना है, मोहमहारिपु को हरना है ।।१।।

दोहा- हेम वरन तन तुंग धनु, नब्बै अति अभिराम ।
सुर तरु अंक निहारि पद,पुनि पुनि करों प्रणाम ।।२।।

छन्द त्रोटक

जय शीतलनाथ जिनन्द वरं, भवदाघदवानल मेघझरं ।
दुखभूभृतभंजन वज्रसमं, भवसागर नागर पोतपमं ।।३।।
कुहमानमयागदलोभहरं, अरि विघ्नगयंद मृगेन्द्र वरं ।
वृषवारिदवृष्टन सृष्टिहितू, परदृष्टिविनाशन सुष्टिपितू ।।४।।
समवस्रतसंजुतराजतु हो, उपमा अभिराम बिराजतु हो ।
वर बारहभेद सभा थितको, तित धर्म बखानि कियो हितको ।।५।।
पहले महिं श्रीगनराज रजैं, दुतिये महि कल्पसुरो जु सजैं ।
त्रितिये गणनी गुनभूरि धरें, चवथे तिथिजोतिषजोति भरैं ।।६।।

तिय व्यंतरनी पनमैं गनिये, छहमें भुवनेसुरनी भनिये ।
भुवनेश दशों थित सप्तम हैं, वसुमें वसुव्यंतर उत्तम हैं ।।७।।
नवमें नभजोतिष पंच भरे, दशमें दिविदेव समस्त खरे ।
नरवृन्द इकादश में निवसै, अरु बारह में पशु सर्व लसैं ।।८।।
तजि वैर प्रमोद धरैं सब ही, समतारसमग्न लसैं तब ही ।
धुनि दिव्य सुनैं तजि मोहमलं, गनराज असी धरि ज्ञानबलं ।।९।।
सबके हित तत्त्व बखान करैं, करुणामनरंजित शर्म भरैं ।
वर्णे षट् द्रव्यतने जितने, वर भेद विराजतु हैं तितने ।।१०।।
पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना, इक धर्म दुती सुकलं अधुना ।
तित धर्म सुध्यानतणो गनियो, दशभेद लखे भ्रमको हनियो ।।११।।
पहलो अरि नाश अपाय सही, दुतियो जिनवैंन उपाय गही ।
त्रिति जीवविचैं निजध्यावत है चवथो सु अजीव रमावत है ।।१२।।
पनमों सु उदै बलटारन है, छहमों अरिरागनिवारन है ।
भवत्यागनचिंतन सप्तम है, वसुमों जितलोभनआतम है ।।१३।।
नवमों जिनकौ धुनि सीस धरैं, दशमो जिनभाषित हेतु करैं ।
इमि धर्मतणो दशभेद भन्यो, पुनि शुक्लतणो चदुयेम गन्यो ।।१४।।
सुपृथक्त्व वितर्कविचार सही, सुइकत्ववितर्क विचार गही ।
पुनि सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात कही, विपरीतक्रियानिवृत्त लही ।।१५।।
इन आदिक सर्व प्रकाश कियो, भविजीवनिको शिव स्वर्ग दियो ।
पुनि मोक्षविहान कियो जिनजी, सुखसागर मग्न चिरं गुनजी ।।१६।।
अब मैं शरना पकरी तुमरी, सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी ।
भवव्याधि निवार करो अबही,मति ढील करो सुख द्यो सबही।।१७।।

घत्ता- शीतलजिन ध्याऊं, भक्ति बढ़ाऊं, ज्यों रतनत्रयनिधि पाऊं ।
भवद्वंद नशाऊँ, शिवथल जाऊँ, फेर न भव वनमें आऊं ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द मालिनी- दिढ़रथसुत श्रीमान् पंचकल्याण धारी ।
तिनपदजुगपद्मं, जो जजै भक्तिधारी ।।
सहसुख धनधान्यं, दीर्घ सौभाग्य पावै ।
अनुक्रम अरि दाहै, मोक्षकों सौ सिधाबै ।।१८।।
इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा

छन्द रूपमाला तथा हरिगीता

विमलनृप विमलासुअन श्रेयांसनाथ जिनन्द ।
सिंहपुर जनमे सकल हरि पूजि धरि आनन्द ।।
भवबंधध्वंशनहेतु लखि मैं शरन आयो येव ।
थापौं चरन जुग उर कमलमैं, जजनकारण देव ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

छन्द गीता तथा हरिगीता

कलधौतवरन उतंग हिमगिरि पदमद्रहतैं आवई ।
सुरसरित प्रासुकउदकसौं भरि भृंगधार चढ़ावई ।।
श्रेयांसनाथ जिनन्त त्रिभुवनवन्द आनन्दकन्द हैं ।
दुखद्वन्दफंदनिकन्द पूरणचंद जोति अमन्द हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

गोशीर वर करपूर कुंकुम नीरसंग घसौं सही ।
भवतापभंजनहेत भवदधिसेत चरण जजों सही ।।श्रे.

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

सितशालि शशिदुति शुक्ति सुन्दरमुक्तिकी उनहार हैं ।
भरि थार पुंज धरंत पदतर अखयपद करतार हैं ।।श्रे.

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

सद सुमन सुमन समान पावन, मलयतैं अलि झंकरैं ।
पदकमलतर धरतैं तुरति सो मदनको मद क्षय करैं ।।श्रे.

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

यह परममोदक आदि सरस सँवारि सुन्दर चरु लियो ।
तुम वेदनीमदहरन लखि, चरचों चरन शुचिकर हियो ।।श्रे.

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

संशयविमोहविभरम-मत-भंजन दिनंद समान हो ।
तातैं चरणढिग दीप जोऊं, देहु अविचलज्ञान हो ।।श्रे.

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

वर अगर तगर कपूर चूर सुगन्ध भूर बनाइया ।
दहि अमरजिह्वा विषैं,चरणढिग करम भरम जराइया ।।श्रे.

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्व मधुर सुहावने ।
ले भगतिसहित जजौं चरन शिव परमपावन पावने ।।श्रे.

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जल मलय तन्दुल सुमनचरु अरु दीप धूपकलावली ।
करि अर्घ चरचों चरणजुगप्रभु मोहि तार उतावली ।।श्रे.

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रायाऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घ (छन्द आर्या)

पुष्पोत्तर तैं आये, विमलाउर जेठकृष्ण आठैंकों ।
सुरनर मंगल गाये, मैं पूजों नसि कर्मकाठैंकों ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाअष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

जनमें फागुणकारी, एकादशि तीनज्ञानदृगधारी ।
इक्ष्वाकुवंशतारी, मैं पूजौं घोर विघ्न दुखटारी ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं।।२।।

भवतनभोग असारा,लख त्यागो धीर शुद्ध तपधारा ।
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजौं पाद अष्ट प्रकारा ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाअमावस्यायां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

केवलज्ञान सुजानन माघवदी पूर्णतिथि को देवा ।
चतुरानन भवभानन, बन्दौं ध्यावौं करौं सुपदसेवा ।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाअमावस्यायां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

गिरिसमेदतैं पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावनको ।
कलिशायुध गुनगायो, मैं पूजौं आप निकट आवनको ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।

जयमाला

छन्द् लोलतरंग (वर्ण 22)

शोभित तुंग शरीर सुजानो,पांच असी शुभलच्छन मानो ।
कंचनवर्ण अनुपम सोहैं, देखत रूप सुरासुर मोहै ।।१।।

पद्धरी छन्द

जै जै श्रेयांस जिन गुणिगरिष्ठ, तुमपदजुगदायक इष्टमिष्ट ।
जै शिष्टशिरोमणि जगतपाल, जे भविसरोजगन प्रातकाल ।।२।।
जै पंचममहाव्रतजगतसवार, लै त्यागभवदलवल सु लार ।
जै धीरजको दलपति बनाय, सत्ताछितिमहं रणको मचाय ।।३।।
धरि रतनतीन तिहुँ शक्तिहाथ, दशधरमकवच तपटोप माथ ।
जै शुक्लध्यानकर खड्गधार, ललकारे आठौं अरि प्रचार ।।४।।
तामै सबको पति मोहचण्ड, ताको ततछिन करि सहस खंड ।
फिर ज्ञान दरशप्रत्यूह हान, निजगुणगढ़ लीनो अचलथान ।।५।।
शुचि ज्ञान दरश सुख वीर्यसार, हुव समवसरणरचना अपार ।
तित भार्षे तत्त्व अनेक धार, जाकों सुनि भव्य हिये विचार ।।६।।

निजरूप लह्यो आनन्दकार, भ्रम दूरकरनको अति उदार ।
पुनि नयप्रमाण निक्षेपसार, दरशायो करि संशयप्रहार ।।७।।
तामैं प्रभान जुग भेद एक, परतक्ष परोक्ष रजै सुमेव ।
तामैं प्रतक्षके भेद दोय, पहिलो है संव्यवहार सोय ।।८।।
ताक जुगभेद विराजमान, मति श्रुति सोहैं सुन्दर महान ।
है परमारथ दुतियो प्रतच्छ, है भेद जुगम तामाहिं दच्छ ।।९।।
इक एकदेश इक सर्व देश, इकदेश उभैविधि सहित वेश ।
वर अवधि सु मनपरजै विचार, है सकलदेश केवल अपार ।।१०।।
चराअचर लखत जुगपत प्रत्यक्ष, निरद्वन्दरहित परपंचपक्ष ।
पुनि है परोक्षमहँ पंच भेद, स्मरिति अरु प्रत्यभिज्ञानवेद ।।११।।
पुनि तर्क और अनुमान मान, आगमजुत पन अब नय बखान ।
नैगम संग्रह व्यवहार गूढ़, ऋजुसूत्र शब्द अरु समभिरूढ़ ।।१२।।
पुनि एवंभूत सु सप्त एव, नय कहे जिनेसुर गुज जु तेव ।
पुनि द्रव्यक्षेत्र अर काल भाव, निक्षेप चार विधि इमि जनाव ।।१३।।
इनको समस्त भाष्यो विशेष,जा समुझत भ्रम नहिं रहत लेश ।
निज ज्ञानहेत ये मूलमंत्र, तुम भाषे श्रीजिनवर सु तंत्र ।।१४।।
इत्यादि तत्त्व उपदेश देय, हनि शेषकरम निर्वाण लेय ।
निरवान जजत वसु दरब ईश,'वृन्दावन'नितप्रति नमत शीश ।।१५।।

धत्ता

श्रेयांस जिनेशा सुगुन महेशा, वज्र धरेशा ध्यावत हैं ।
हम निशिदिन वंदैं, पापनिकंदैं, ज्यों सहजानंद पावतु हैं ।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

सोरठा- जो पूजै मनलाय, श्रेयनाथ पदपद्म को ।
पावै इष्ट अघाय, अनुक्रमसौं शिवतिय वरैं ।।१।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री वासुपूज्य जिनपूजा

छन्द रूपकवित्त

श्रीमत वासुपूज्य जिनवरपद, पूजनहेत हिये उमगाय ।
थापों मनवचतन शुचि करिकै, जिनकी पाटलदेव्या माय ।।
महिष चिन्ह पद लसै मनोहर, लाल वरन तन समतादाय ।
सो करुणानिधि कृपादृष्टिकरि, तिष्ठहु सुपरि तिष्ठ यहँ आय ।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक (छन्द जोगीरासा)

गंगाजल भरि कनक कुंभ में, प्रासुक गन्ध मिलाई ।
कर्मकलंक विनाशनकारन, धार देत हरषाई ।। जिनपद पूजों मनलाई ।।
वासुपूज्य वसुपूज-तनुज-पद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको,शिवतिय सम्मुख धाई ।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

कृष्णागरु मलयागिर चन्दन केशरसंग घसाई ।
भावआताप निवारणकारण पूजों पद चित लाई ।।जिनपद.वासु.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

देवजीर सुखदास शुद्ध वर सुवरणथाल भराई ।
पुंज धरत तुम चरणन आगैं तुरित अखय पदपाई ।।जिनपद.वासु.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

पारिजात सन्तान कल्पतरु,जनित सुमन बहुलाई ।
मीनकेतु-मदभंजन कारन, तुम पदपद्म चढ़ाई ।।जिनपद.वासु.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

नव्य गव्य आदिक रसपूरित, नेवज तुरित उपाई ।
क्षुधारोग-निरवारन कारण, तुम्हें जजौं शिरनाई ।।जिनपद.वासु.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

दीपक ज्योत उदोत होत वर, दशदिश में छबि छाई ।
तिमिर मोहनाशक तुमको लखि, जजों चरन हरषाई ।।जिनपद.वासु.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

दशविधि गन्धमनोहर लेकर, वातहोत्र में ढाई ।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम सू धूम उड़ाई ।।जिनपद.वासु.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

सुरस सुपक्व सुपावन फल लै, कंचनथाल भराई ।
मोक्ष महाफलदायक लखिप्रभु,, भेंट धरों गुनगाई ।।जिनपद.वासु.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जलफल दरब मिलाय गाय गुण,आठों अंग नमाई ।
शिवपदराजहेत हे श्रीपति ! निकट धरो यह लाई ।।जिनपद.वासु.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घ (छन्द पाईत्ता मात्रा 11)

कलि छट्ट अषाढ सुहायो, गरभागम मंगल गायो ।
दशमें दिवितें इत आये, शतइन्द्र जजे शिर नाये ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

कलि चौदश फागुन जानों, जनमें जगदीश महानों ।
हरि मेरु जजैं तब आई, हम पूजत हैं चितलाई ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

तिथि चौदस फागुन श्यामा,धरियो तपश्री अभिरामा ।
नृप सुन्दर के पय पायो, हम पूजत अतिसुख थायो ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

वदि भादव दोइज सौहै, लहि केवल आतम जो है ।

अनअन्त गुणाकर स्वामी,नित बन्दों त्रिभुवन नामी ।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

सित भादव चौदशि लीनों, निरवान सुथान प्रवीनों ।
पुर चम्पा थानक सेती, हम पूजत निजहित हेति ।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा- चम्पापुर में पंच वर, कल्याणक तुम पाय ।
सत्तर धनु तन शोभनो,जयजयजय जिनराय ।।१।।

छन्द मदावलिप्तकपोल

महासुखसागर आगर ज्ञान, अनन्त सुखामृतभुक्त महान ।
महाबलमंडित खण्डितकाम, रमाशिवसंग सदा विसराम ।।२।।
सुरिंद फनिंद खगिंव नरिदं, मुनिंद जजैं नित पादरविंद ।
प्रभू तुव अन्तर भाव विराग, सुबालहितैं व्रतशीलसों राग ।।३।।
कियो नहिं राज उदाससरूप, सुभावन भावत आतम रूप ।
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त, चिदातम नित्य सुखाश्रितवस्त ।।४।।
अशर्न नहीं कोउ शर्न सहाय, जहां जिय भोगत कर्मविपाय ।
निजातम के परमेसूर शर्न, नहीं इनके विन आपदहर्न ।।५।।
जगत्त जथा जलबुदबद येव, सदा जिय एक लहै फलभेव ।
अनेकप्रकार धरी यह देह, भ्रमें भवकानन आन न नेह ।।६।।
अपावन सात कुघात भरीय, चिदातम शुद्धस्वभाव धरीय ।
धरै इनसों जब नेह तबेव, सुआवत कर्म तबैं वसुभेव ।।७।।
जबै तनभोगजगत्तउदास, धरै तब संजम निर्जर आस ।
करै जब कर्मकलंक विनाश, लहै तब मोक्ष महासुखराश ।।८।।
तथा यह लोग नराकृत नित्त विलोकियते षटद्रव्यबिचित्त ।
सु आतमजानन बोधविहीन, धरे किन तत्त्वप्रतीत प्रवीन ।।९।।

जिनागमज्ञानरु संजमभाव, सबैं निजज्ञान बिना विरसाव ।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव सबैं जिहतें शिव हाल ।।१०।।
लह्यो सब जोग सुपुन्य बशाय, कहो किमि दीजिय ताहि गंबाय ।
विचारत यों लौकांतिक आय, नमें पदपंकज पुष्प चढ़ाय ।।११।।
कह्योप्रभु धन्य कियो सुविचार, प्रबोधि सु येम कियो जु विहार ।
तबै सोधर्मतनो हरि आय,रच्यौ शिबिका चढ़ि आप जिनाय ।।१२।।
धरे तप पाय सुकेवलबोध, दियो उपदेश सुभव्य सम्बोध ।
लियो फिर मोक्ष महासुखराश,नमैं नित भक्त सोई सुख आश।।१३।।

घत्ता-

नित बासव वन्दत,पापनिकंदत,बासपूज्य व्रत ब्रह्मपति ।
भवसंकलखंडित, आनंदमंडित, जैं जै जै जैवंत जती ।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

सोरठा-

वासपूज्यपद सार, जजैं द्रव्यविधि भावसों ।
सोपावैं सुखसार, भक्ति मुक्तिको जो परम ।।१५।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विमलनाथ जिनपूजा

छन्द–मदावलिप्तकपोल (मात्रा 24)

सहस्रार दिवि त्यागि,नगर कम्पिला जनम लिय।
कृतधर्मानृपनन्द, मातु जयसेन धर्मप्रिय ।।
तीन लोक चिरनन्द, विमल जिन विमलकर ।
थापों चरनसरोज, जजनके हेतु भावधर ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक–सोरठा छन्द

कंचनझारी धारि, पदमद्रहको नीर ले ।
तृषा-रोग-निरवारि, विमल विमलगुण पूजिये ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

मलयागर करपूर, देववल्लभा संग घसि ।
हरि मिथ्याऽऽतप भूर,विमल विमलगुण जजतु हों ।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

वासमती सुखदास, श्वेत निशापतिको हंसै ।
पूरैं वांछित आस, विमल विमलगुण जजतु हो ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

पारिजात मन्दार, सन्तानकसुरतरुजनित ।
जजों सुमन भरि थार,विमल विमलगुण मदनहर ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

नव्य-गव्य रसपूर, सुवरणथाल भरायकै ।
क्षुधा-वेदनी चूर,जजों विमलपद विमलगुण ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

मानिक दीप अखण्ड,गो छाई वर गौ दशों ।
हरो मोहतम चण्ड, विमल विमलमति के धनी ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

अगर तरगर घनसार, देवदारू करपूर वर ।
खेवो वसु अरि जार,विमल विमलपदपद्मढिग ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

श्रीफल सेव अनार, मधुर रसीले पावने ।
जजों विमलपद सार, बिघ्न हरैं शिवफल करै ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

आठों दरव संवार, मनसुखदायक पावने ।

जजों अरघ भरथार,विमल विमलशिवतिय-रमन ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।६।।

पंचकल्याणक अर्घ (छन्द द्रुतविलंबत)

गरभ जेठवदी दशमी भनों, परम पावन सो दिन शोभनों ।
करत सेव शची जननीतणी, हम जजैं पदपद्म शिरोमणी ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।१।।

शुकलमाघ तुरी तिथि जानिये, जनममंगल तादिन मानिये ।
हरि तबै गिरिराज विषैं जजे,हम समर्चत आनन्द को सजे ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।२।।

तप धरे सितमाघ तुरी भली, निज सुधातम ध्यावत हैं रली ।
हरिफनेश नरेश जजे तहां, हम जजैं नित आनंदसों इहां ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्री विमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं।।३।।

विमल माघरसी हनि घातिया,विमल बोध लयो सब भासिया ।
विमल अर्घ चढ़ाय जजों अबै, विमल आनंद देहु हमें सबैं ।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्याँ केवलज्ञानप्राप्ताय श्री विमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।४।।

भ्रमरसारढरसी अति पावनों, विमल सिद्ध भये मनभावनों ।
गिरिसमेद हरि तित पूजिया, हम जजैं इत हर्ष धरें हिया ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री विमलनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

गगन चहत उड़गन गगन, छिति थितिके छंह जेम ।
तिमि गुन वरनन बरननन, माहिं होय तब केम ।।१।।
साठधनुष तन तुंग है, हेमवरन अभिराम ।
वर बराह पद अंक लखि,पुनि पुनि करों प्रणाम ।।२।।

छन्द त्रोटक (वर्ण 12)

जय केवलब्रह्म अनन्तगुनी, तुव ध्यावत शेष महेश मुनि ।
परमातम पूरन पाप हनी, चितचिंततदायक इष्ट धनी ।।३।।

भवआतपध्वंसन इन्दुकर, बर साररसायन शर्मभरं ।
सब जन्मजरामृतदाह हरं, शरणागतपालन नाथ वरं ।।४।।
नित सत तुम्हें इन नामानितैं, चितचिंतत हैं गुणगामनितैं ।
अमलं अचलं अटलं अतुलं, अरलं अछलं अथलं अकुलं ।।५।।
अजरं अमरंअहरं अडरं, अपरं अभरं अशरं अनरं ।
अमलीन अछीन अरीर हने, अमदा अगदा अवदातम हो ।।६।।
अछुधा अतृषा अभयागत हो, अमदा अगदा अवदातम हो ।
अविरुद्ध अक्रुद्ध अमानधुना, अतलं अशलं अनअंत गुना ।।७।।
अरसं सरसं अकलं सकलं, अवचं सवचं अमलं सबलं ।
इन आदि अनेकप्रकार सही, तुमको जिन संत जपैं नित ही ।।८।।
अब मैं तुमरी शरना पकरी, दुख दूर करो प्रभुजी हमरी ।
हम कष्ट सहे भवकानन में, कुनिगोद तथा थल आनन में ।।९।।
तित जामनमर्न सहे जितने, कहि केम सकैं तुमसौं तितने ।
सुमुहूरत अन्तरमाहिं धरे, छह त्रै त्रय छः छहकाय खरे ।।१०।।
छिति वहिन वयारिक साधरनं, लघु थूल विभेदनिसों भरनं ।
प्रत्येक वनस्पति ग्यारभये, छहजार दुवादश भेद लये ।।११।।
सब द्वै त्रय षट छःसु भया, इक इन्द्रिय की परजाय लया ।
जुग इन्द्रिय काय असी गहियो,तिय इन्द्रिय साठनि में रहियो।।१२।।
चतुरिंद्रिय चालिस देह धरा, पनइन्द्रिय के चववीस वरा ।
सब ये तन धार तहां सहियो, दुखघोर चितारित जात हियो ।।१३।।
अब मो अरदास हिये धरिये, दुखद्वन्द सबै अब ही हरिये ।
मनबंछित कारज सिद्ध करो, सुखसार सबै घर ऋद्धि भरो ।।१४।।

घत्ता- जै विमलजिनेशा, नुतनाकेश, नागेशा नरईश सदा ।
भवतापअशेषा हरननिशेषा दाता चिन्तित शर्म सदा ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ।

दोहा- श्रीमत विमलजिनेशपद, जो पूजें मनलाय ।
पूरैं बांछित आश तसु, मैं पूजौं गुणगाय ।।१६।।
इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री अनन्तनाथ जिनपूजा

कवित्त छन्द (मात्रा 31)

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या, जनम लियो सूर्या-उर आय ।
सिंहसेन नृप नन्दन, आनन्द अशेष भरे जगराय ।।
गुन अनंत भगवंत धरे, भवद्वंद हरे तुम हे जिनराय ।
थापतु हों त्रयबार उचरिकै,कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(अष्टक) छन्द गीता

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनक भृंग भराइया ।
मलकरम धोवन हेत मन वच, काय धार ढराइया ।।
जगपूज परमपुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनो ।
शिव कन्तवन्त महन्त ध्यावों भ्रंत तन्त नशावनों ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं ।।१।।

हरिचन्द कदलीनन्द कुंकुम, दंदताप निकन्द है ।
सब पाप-रुज संतापभंजन, आपको लखि चंद है ।।जगपूज.

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय भवताप विनाशनाय चंदनं ।।२।।

कनशाल दुति उजियाल हीर, हिमालयगुलकनितें घनी ।
तसु पुंज तुम पदतर धरत,पदलहत स्वच्छ सुहावनी ।।जगपूज.

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

पुष्कर अमर तरू जनित वर,अथवा अवर कर लाइया ।
तुम चरण पुष्पकरतर धरत, सब समर शूल नशाइया ।।

जगपूज परम पुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनो ।
शिव कन्तवन्त महन्त ध्यावों भ्रंत तन्त नशावनों ।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

पकवान नैना घ्राण रसना-को प्रमोद सुदाय है ।
सो ल्याय चरण चढ़ाय रोग, क्षुधाय नाश कराय है ।।जगपूज.
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

तममोहभानन जानि आनन्द, आनि शरण गही अबैं ।
वर दीप धारौं बार तुमढ़िग सुपरज्ञान जु द्यो सबै ।।जगपूज.
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं ।।६।।

यह गन्ध चूरि दशांग सुन्दर, धूम्र ध्वजमें खेय हों ।
वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निजसुधातम वेय हों ।।जगपूज.
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

रसथक्क सुभक्व चक्व सुहावनें, मृदुपावनें ।
फलसारवृन्द अमन्द ऐसों, ल्याय पूज रचावने ।।जगपूज.
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

शुचिनीर चन्दन शालिशंदन , सुमन चरु दीवाधरों ।
अरु धूप जुत फल अर्घ करि,करजोरजुग विनती करों ।।जगपूज.
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

(पंचकल्याणक अर्घ) छन्द सुन्दरी तथा द्रुतविलम्बित

असित-कार्तिक एकम भावनों, गरभको दिन सो गिन पावनों ।
किय सची तित चर्चन चावसौं, हम जजैं इत आनंद भावसौं ।।
ॐ ह्रीं श्री कार्तिककृष्णाप्रतिपदि गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं।।१।।

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी, सकलमंगल लोकविषैं लसी ।
हरिजजे गिरिराज समाजतैं, हम जजैं इत आतमकाजतैं ।।
ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं।।२।।

भवशरीर विनश्वरभाइयो, असित जेठद्वादशि गाइयो ।
सकल इन्द्र जजे तित आइकैं,हम जजैं इत मंगल गाइकैं ।।

ॐ ह्रीं श्री माघकृष्णाद्वादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं।।३।।

असितचैत अमावसको सही, परम केवलज्ञान जग्यो कही ।
लहि समोसृत धर्म धुरंधरों, हम समर्चित विघ्न सबैं हरो ।।

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं।।४।।

असित चैत तुरी तिथिगाईयौ,अघतघाति हने शिवपाइयौ ।
गिरि समेद जजैं हरि आयकैं,हम जजैं पद प्रीति लगाईके ।।

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

तुम गुनवरनन येम जिम, खंविहाय करमान ।
तथा मेदिनी पदनि करि, कीनों चहत प्रमान ।।१।।
जय अनन्त रवि भव्यमन, जलजवृन्द विहसाय ।
सुमति कोकतिय थोक सुख,वृद्ध कियो जिनराय ।।२।।

छन्द नयमालिनी, चंड़ी तथा तामरस (मात्रा 16)

जै अनन्त गुनवन्त नमस्ते, शुद्धध्येय नितसंत नमस्ते ।
लोकालोक विलोक नमस्ते, चिन्मूरत गुणथोंक नमस्ते ।।३।।
रत्नत्रयधर धीर नमस्ते, करमशत्रुकरि कोर नमस्ते ।
च्यार अनंत महंत नमस्ते, जै जै शिवतियकंत नमस्ते ।।४।।
पंचाचार विचार नमस्ते, पंचवर्णमदहार नमस्ते ।
पंच पराव्रत चूर नमस्ते, पंचम गति सुखपूर नमस्ते ।।५।।
पंचलब्धि धरनेश नमस्ते, पंच भाव सिद्धेश नमस्ते ।
छहों दरबगुनजान नमस्ते, छहों काल पहिचान नमस्ते ।।६।।
छहों कायरक्षेश नमस्ते, छहसम्यक उपदेश नमस्ते ।
सप्तविसनवनवन्हि नमस्ते,जय केवल अपरहिन नमस्ते ।।७।।

सप्ततत्त्वगुन भनन नमस्ते, सप्तश्वभ्र गत हनन नमस्तें ।
सप्तभंग के ईश नमस्ते, सातो नयकथनीश नमस्ते ।।८।।
अष्ट करममलदल्ल नमस्ते, अष्ट जोगनिरशल्ल नमस्ते ।
अष्टम धराधिराज नमस्ते,अष्ट गुननि सिरताज नमस्ते ।।९।।
जै नवकेवल प्राप्त नमस्ते, नवपदार्थतिथि आप्त नमस्ते ।
दशौं धरमधरतार नमस्ते, दशौं बन्धपरिहार नमस्ते ।।१०।।
विघ्न-महीधर बिज्जु नमस्ते, जै ऊरधगति रिज्जु नमस्ते ।
तनकनकं दुति पूर नमस्ते, इक्ष्वाकज गनसूर नमस्ते ।।११।।
धनु पचासतन उच्च नमस्ते, कृपासिंधु गन शुच्च नमस्ते ।
सेही अंग निशंक नमस्ते, चितचकोर मृगअंग नमस्ते ।।१२।।
राग दोष मद टार नमस्ते, निजविचार दुखहार नमस्ते ।
सुरसुरेश गन बन्द नमस्ते,'वृन्द'करो सुखकन्द नमस्ते ।।१३।।

घत्ता-

जय जय जिनदेवं,सुरकृतसेवं,नितकृतचित हुल्लासधरं ।
आपदउद्धारं समतागारं, वीतराग विज्ञान भरं ।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द रोड़क–

जो जन मनवचकायलाय,जिन जजै नेह धर ।
वा अनुमोदन करै करावै, पढ़ै पाठ वर ।।
ताके नित नव होय, सुमंल आनन्द दाई ।
अनुक्रमतें निरवान, लहे सामग्री पाई ।।१।।

इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री धर्मनाथ जिनपूजा

छन्द माधवी तथा किरीट (8 सगण व गुरु)

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान, सुभान के आनि अनन्द बढ़ावे ।
जगमातसुवृत्तिके नन्दन होय, भवोदधि डूबत जंतु कढ़ाये ।।
जिनको गुन नामहिं माहिं प्रकाश, है दासनि को शिवस्वर्ग मंढ़ाये ।
तिनके पद पूजन हेत त्रिबार, सुथापतु हों यह फूल चढ़ाये ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(अष्टक) छन्द जोगीरासा

मुनि मनसम शुचि शीर नीर अति,मलय मेलि भरि झारी ।
जनमजरामृत तापहरनको, चर्चों चरण तुम्हारी ।।
परमधरम-शम-रमन धरम-जिन, अशरन शरन निहारी ।
पूजौं पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी ।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

केशर चन्दन कदली नन्दन, दाहनिकन्दन लीनों ।
जलसंगघसि लसि शशिसमशमकर,भव आताप हरीनों ।।परम.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

जलज-जीरसुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो ।
पुंज धरत आनन्द भरत भव, द्वन्द हरत हरषायो ।।परम.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

सुमन सुमनसम सुमनथालभर, सुमनवृन्द विहसाई ।
सुमनमथ-मद-मन्थन के कारन, चरचों चरण चढ़ाई ।।परम.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

घेबर बावर अर्द्धचन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजै ।
सुरस मधुर तासों पद पूजत, रोग असाता भाजै ।।परम.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

सुन्दर नेह सहित वर दीपक,तिमिर हरन धरि आगै ।
नेह सहित गाऊं गुन श्रीधर, ज्यों सुबोध उर जागै ।।परम.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

अगर तगर कृष्णागर तर दिव, हरिचन्दन करपूरं ।
चूर खेय जलजवनमहिं जिमि, करम जरैं वसु क्रूरं ।।परम.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

आम्र काम्रक अनार सारफल, भार मिष्ट सुखदाई ।
सौ लै तुमढिग धरहुं कृपानिधि, देहु मोक्ष ठकुराई ।।परम.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुनगाई ।
बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई ।।परम.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घं (राग टप्पाको चाल)

पूजों हों अबार, धरमजिनेसुर पूजों, पूजों हो ।।टेक।।
आठैं सित वैशाख की हो, गरभदिवस अविकार ।
जगजन वंछित पूजों,पूजों हो अबार,धरमजिनैसुर पूजों ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाअष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।१।।

शुकल माघ तेरस लह्यो हो, धरम धरम अवतार ।
सुरपति सुरगिर पूजों, पूजों हो अबार ।। धर्म.

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।२।।

माघशुकल तेरस लह्यो हो, दुद्धर तप अविकार ।
सुरऋषि सुमननि पूजों, पूजों हो अबार ।।धर्म.

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं।।३।।

पौषशुकल पूनम हने अरि, केवल लहि भवितार ।
गनसुर नरपति पूजो, पूजों हो अबार ।।धर्म.

ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।४।।

जेठशुकल तिथि चौथकी हो, शिव समेदतैं पाय ।
जगतपूजपद पूजों, पूजों हो अबार ।।धर्म.

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा (विशेषोक्ति अलंकार)

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत ।
लिखै शारदा कलम गहि,तदपि न तुव गुण अंत ।।१।।

छन्द पद्धरी (मात्रा 16)

जय धरमनाथ जिन गुणमहान,तुम पदकों मैं नित करों ध्यान ।
जय गरभजनम तप ज्ञानजुक्त,वर मोक्ष सुमंगल शर्म-भुक्त।।२।।
जय चिदानन्द आनन्द कंद, गुनवृन्द सु ध्यावत सुनि अमंद ।
तुम जीवनिके बिनु हेत मित्त,तुम ही हो जगमें जिन पवित्त।।३।।
तुम समवसरणमें तत्त्वसार, उपदेश दियो है अति उदार ।
ताकों जे भवि निज हेत चित्त, धारैं ते पावैं मोक्ष वित्त ।।४।।
मैं तुम मुख देखत आज पर्म, पायो निजआतमरूप धर्म ।
मोकों अब भौभयतैं निकार, निरभयपद दीजे परमसार ।।५।।
तुम सम मेरो जगमें न कोय,तुम ही तैंसव विधि काज होय ।
तुम दयाधुरन्धर धीर वीर, मेटो जगजनकी सकल पीर ।।६।।
तुम नीतिनिपुन विन रागदोष, शिवमग दरशावतु हो अदोष ।
तुम्हरे ही नामतने प्रभाव,जग जीव लहें शिव-दिव सुराव ।।७।।
तातैं मैं तुमरी शरण आय, यह अरज करतु हों शीस नाय ।
भववाधा मेरी मेट मेट, शिवराघासों करि भेट भेट ।।८।।
जंजाल जगतको चूर चूर, आनन्द अनूपम पूर पूर ।
मति देर करो सुनि अरज एव, हे दिनदयाल जिनेश देव ।।९।।
मोकों शरणा नहिं और ठौर, यह निहचै जानों सुगुन-मौर ।
'वृन्दावन' बंदत प्रीतिलाय, सब विघन मेटिये धरम-राय ।।१०।।

घत्ता- जय श्रीजिनधर्म, शिवहितपर्म श्रीजिनधर्म उपदेशा ।
तुमदयादधुरंधर, विनतपुरंदर, कर उरमंदिर परवेशा ।।११।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ।

जोश्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजै भव ।
ताके दुःख सब मिटहिं, लहै आनन्दसमाज सब ।।
सुन-नरपति-पद भोग, अनुक्रमतैं शिव जावै ।
"वृन्दावन" यह जानि धरम, जिनके गुन ध्यावै ।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री शांतिनाथ जिनपूजा

मत्तगयंद छन्द (शब्दाडम्बर तथा जमकालंकार)

या भवकानन में चतुरानन, पापपनानन घेरि हमेरी ।
आतम जानन मानन ठानन, बान न होई दई सठ मेरी ।।
तामद भानन आपहि हो, यह छान न आन न आननटेरी ।
आनगही शरनागतको, अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक छन्द त्रिभंगी

हिमगिरिगतगंगा,धार अभंगा प्रासुक संगा भरि भृंगा ।
जरजन्ममृतंगा नाशि अघंगा, पूजि पडंगा मृदुहिंगा ।।
श्रीशांतिजिनेशं, नुतनाकेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं ।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

वर बावनचन्दन, कदलीनन्दन,घनआनन्दन सहित घसों ।
भवतापनिकन्दन, ऐरानन्दन, बंदि अमंदन, चरनबसौं ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

हिमकर कर लज्जत,मलयसुसज्जत,अच्छत जज्जत,भरिथारी ।
दुखदारिद गज्जत, सदपदसज्जत, भवभयभज्जत अतिभारी ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

मंदार सरोजं कदली जोजं पुंज भरोजं मलयभरं ।
भरि कंचनथारी, तुमडिग धारी,मदन विदारी, धीरधरं ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

पकवान नबीने, पावन कीने, षटरसभीने सुखदाई ।
मनमोदनहारे, क्षुधा विदारे, आगैं धारे गुनगाई ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

तुम ज्ञानप्रकाशे, भ्रमतमनाशे, क्षेय विकासे सुखरासे ।
दीपक उजियारा, यातैं धारा,मोह निवारा, निजभासे ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

चन्दन करपूरं, करिवर चूरं, पावक भूरं माहिजुरं ।
तसु धूम उड़ावै,नाचत आवै अलि गुंजावे,मधुरसुरं ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं, निंबुक भूरं, ले आयो ।
तासों पद जज्जों,शिवफल सज्जों,निजरसरज्जों उमगायो ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

वसु द्रव्य सँवारी, तुमढिग धारी, आनन्दकारी दृगप्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातैं थारी शरणारी ।।श्री.
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

(पंचकल्याणक अर्घ) सुन्दरी तथा द्रुतविलंबित छन्द ।

असित सांतय भादव जानिये, गरभमंगल तादिन मानिये ।
शचि कियो जननी पद चर्चनं, हम करैं इत ये पद अर्चनं ।।
ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है, सकलइन्द्र सु आगत धाम हैं ।
गजपुरैं गज साजि सबैं तबै,गिरि जजैं इतमैं जजि हों अबैं ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

भव शरीर सुभोग असार हैं, इमि विचर तबैं तप धार हैं ।
भ्रमर चौदशि जेठ सुहावनी, धरमहेत जजों गुन पावनी ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्दश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।३।।

शुकलपौष दशैं सुखराश है, परम-केवल-ज्ञान प्रकाश है ।
भवसमुद्र-उधारन देवकी, हम करैं नित मंगल सेवकी ।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादश्म्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

असित चौदशि जेठ हने अरी,गिरि सम्मेदथकी शिवतिय बरी ।
सकलइन्द्र जजै तित आइकैं, हम जजैं इत मस्तक नाइकैं ।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

छन्द रथोद्धता

शांति शांतिगुण मंडितें सदा, जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा ।
मैं तिन्हें भगतमंडितें सदा, पूजिहों कलुषहंडिते सदा ।।१।।
मोक्षहेतु तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुणरत्नमाल हो ।
मैं अबै सुगुनदाम ही धरों, ध्यावतें तुरित मुक्ति-तीवरों ।।२।।

छन्द पद्धरि (6 मात्रा)

जय शांतिनाथ चिद्रूपराज,भवसागरमें अद्भुत जहाज ।
तुम तजि सरवारथसिद्धथान, सरवारथ जुत गजपुर महान ।।१।।
तित जनम लियो आनंद धार, हरि ततछिन आयो राजद्वार ।
इन्द्राणी जाय प्रसूतथान, तुमको करमें लै हरष मान ।।२।।
हरि गोद देय सो मोदधार, सिर चमर अमर ढारत अपार ।
गिरिराज जाय तित शिला पांड, तापै थाप्यौ अभिषेक मांड ।।३।।
तित पंचम उदधि तनों सुवार, सुर कर कर करि ल्याये उदार ।

तब इन्द्र सहसकर करि अनन्द, तु सिर धारा ढारत्यो सुनंद ।।४।।
अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर,भभ भभ भभ धध धध कलश शौर ।
दृमदृम दृमदृम बाजत मृदंग, झन नन नन नन नन नू पुरंग ।।५।।
तन नन नन नन नन तनन तान,घन नन नन घंटा करत ध्वान ।
ताथेई थेइ थेइ थेइ थेइ सुचाल,जुत नाचत नावत तुमहिं भाल।।६।।
चट चट चट अटपट नटत नाट,झट झट झट हट नट शटविराट।
इमि नाचत राचत भगत रंग, सुर लेत जहां आनंद संग ।।७।।
इत्यादि अतुल मंगल सुठाट, तित बन्यौ जहां सुरगिरि विराट ।
पुनिकरि नियोग पितु सदन आय,हरि सौंप्यौ तुम तितवृद्ध थाय।८।।
पुनि राजभाहिं लहि चक्ररत्न, भौग्यो छखंड करि धरम जत्न ।
पुनि तप धरि केवलरिद्धिपाय, भवि जीवनको शिवमग बताय ।।९।।
शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश, गुनमण्डित अतुल अनन्त भेष ।
मैं ध्यावतु हों नित शीश नाय, हमरी भवबाधा हरिजिनाय ।।१०।।
सेवक अपनों निज जान जान, करुणा करि भोभय भान भान ।
यह विघन मूलतरु खण्डखण्ड, चितचिंतित आनंद मंड मंड ।।११।।

घत्ता-

श्रीशांति महंता, शिवतियकंता सुगुन अनन्ता, भगवन्ता ।
भवभ्रमन हनंता, सौख्य अनंता, दातारं तारनवन्ता ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द रूपक सवेया (मात्रा 31)

शांतिनाथ जिनके पदपंकज, जो भवि पूजै मनवचकाय ।
जनम जनमके पातक ताके, ततछिन तजिकें जाय पलाय ।।
मनवांछित सुख पावै सौ नर, बांचै भगतिभाव अति लाय ।
तातें 'वृन्दावन' नित बंदै, जातैं शिवपुरराज कराय ।।१।।

इत्याशीर्वादः (परिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री कुन्थुनाथ जिनपूजा

छन्द माधवी तथा किरीट (वर्ण 25)

अजअंक अजै पद राजै निशंक, हरै भवशंक निशंकित दाता ।
मतमत्त मतंगके माथें गँथे, मतवाले तिन्हें हनें ज्यौं हरिहाता ।।
गजनागपुरै लियो जन्म जिन्हौं रविके प्रभनन्दन श्रीमतिमाता ।
सहकुंथुसुकुंथुनिके प्रतिपालक, थापों तिन्हें जुतभक्ति विख्याता ।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्ट–चाल लालनी मरहठीकी लाला मनसुखरायजी कृत ।

कुन्थु सुन अरज दास केरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी ।
भवसिंधु परयो हों नाथ निकारो बांह पकर मेरी ।।
प्रभु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी ।
जगजाल परयो हों बेग निगारो बांह पकर मेरी ।।टेक।।
सुरतरनीकोउज्जवल जल भरि कनकभृंग मेरी ।
मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरों धार नेरी ।।कुन्थु.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यूविनाशनाय जलं ।।१।।

बावन चन्दन कदलीनन्दन, घसिकर गुन टेरी ।
तपत मोह नाशनके कारन, धरों चरण नेरी ।।कुन्थु.।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

मुक्ताफल समउज्जवल अक्षत् सहित मलय लेरी ।
पुंज धरों तुम चरणन आगैं, अखय सुपद देरी ।।कन्थु.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

कमल केतकी बेला दीना, सुमन सुमनसेरी ।
समर शूलनिरमूल हेतु प्रभु, भेंट करों तेरी ।।कुन्थु.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

घेवर बावर मोदन मोदक, मृदु उत्तम पेरी ।
तासों चरण जजों करुणानिधि, हरो क्षुधा मेरी ।।कुन्थु.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

कंचन दीपमई वर दीपक, ललित जोति घेरी ।
सौ लै चरण जजों भ्रमतम रवि,निज सुबोध देरी ।।कुन्थु.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

देवदारु हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी ।
अष्ट करम ततकाल जरैं ज्यों धूम धनंजेरी ।।कुन्थु.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

लोंग लायची पिस्ता केला, कमरख शुचि लेरी ।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, जजों सुकरि ढेरी ।।कुन्थु.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जल चंदन तदुंल प्रसून चरु दीप धूप लेरी ।
फलजुत जजन करो मन सुखधरि,हरो जगत फेरी ।।कुन्थु.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

(पंचकल्याणक अर्घ) मोतीदाम छन्द

सुसावनकी दशमी कलि जान, तज्यो सरवारथसिद्ध विमान ।
भयो गरभोगममंगल सार, जजैं हम श्रीपद अष्टप्रकार ।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशमी गर्भमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

महावैशाख सु एकम शुद्ध, भयो तब जन्म तिज्ञान समुद्ध ।
कियो हरि मंगल मंदिरशीस ,जजैं हम अत्र तुम्हें नुतशीस ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदि जन्ममंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

तज्यो षटखण्ड विभौ जिनचन्द, विमोहितचित्त चितारि सुछंद ।
धरे तप एकम शुद्ध विशाख, सुमग्न भये निज आनंद चाख ।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदि निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

सुदी तिय चैत सु चेतन शक्त,चहूँ अरि छै करि तादिन व्यक्त ।
भई समवसृत भाखि सुधर्म, जजों पद ज्यों पद पाइय पर्म ।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लातृतीयायां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।
सुदी वैशाख सु एकम नाम लियो तिहिं द्यौस अभै शिवधाम ।
जजे हरि हर्षित मंगल गाय, समर्चतु हौं सु हिया वच काय ।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदि मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

अडिल्ल छन्द

षट खण्डन के शत्रु राजपदमें हने,
धरि दीक्षा षटखण्डन पाप तिन्हें दनें ।
त्यागि सुदरशन चक्र धरमचक्री भये,
करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ गढ़ लये ।।१।।
ऐसे कुन्थुजिनेशतनें पदपद्मकों,
गुण अनन्त भण्डार महासुखसद्मकों,
पूजों अरघ चढ़ाय पूरणानन्द हो,
चिदानन्द अभिनन्द इन्दगनवन्द हो ।।२।।

पद्धरि छन्द

जय जय जय जय श्री कुन्थुदेव, तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिबुकेव ।
जय बुद्धि विदांवर विष्णु ईश, जय रमाकांत शिवलोक शीश ।।३।।
जय दयाधुरंधर सृष्टिपाल, जय जय जगबन्धु सुगुन मोल ।
सरवारथ सिद्धविमान छार,उपजे गजपुर में गुण अपार ।।४।।
सुरराज कियो गिरन्हौन जाय, आनन्द-सहित जुत-भक्ति भाय ।
पूनि पिता सौंपिकर मुदित अंग,हरि तांडव निरत कियो अंभग।।५।।
पुनि स्वर्ग गयो तुम इत दयाल, वय पाय मनोहर प्रजापाल ।
षटखण्डविभौ भोग्यौ समस्त, फिर त्याग जोग धारयो निरस्त ।।६।।

तब घाति घात केवल उपाय, उपदेश दियो सबहित जिनाय ।
जाके जानत-भ्रम-तम विलाय, सम्यकदरशन निरमल लहाय ।।७।।
तुम धन्य देव किरपा-निधान, अज्ञान-छपा-तमहरण भान ।
जय स्वच्छगुनाकर शुक्तशुक्त,जय स्वच्छ सुखामृत भुक्तभुक्त ।।८।।
जय भोभयभंजन कृत्यकृत्य, मैं तुमरो हों निज भृत्यभृत्य ।
प्रभु अशरन शरन अधार धार,मम विघ्नतूलगिरि जार जार ।।९।।
जय कुनय यामिनी सूर सूर, जय वंछित सुख पूर पूर ।
मम करम बंध दिढ़ चूर चूर, निज सम आनंद हैं भूर भूर ।।१०।।
अथवा जब लौं शिव लहौं नार्हि,तऊ लों ये तो नित ही लहार्हि ।
भव भव श्रावक-कुलजनमसार,भव भव सतमत सतसंग धार ।।११।।
भव भव निज आतम-तत्व-ज्ञान,भव भव तप संजम शीलदान ।
भवभव अनुभव नित चिदानंद,भवभव तुम आगम हे जिनंद ।।१२।।
भव भव समाधिजुत मरन सार, भवभव वृत चाहों अनागार ।
यह मोको हे करुणानिधान, सब जोग मिलो आगमप्रमान ।।१३।।
जब लौं शिव सम्पति लहों नाहिं, तबलौं में इनको नित लहांहि ।
यह अरज हिये अवधारि नाथ, भवसंकट हरि कीजै सनाय ।।१४।।

छन्द घत्तानन्द (मात्रा 31)

जय दीनदयाला, वरगुनमाला, विरदविशाला सुख आला ।
मैं पूजों ध्यावौं शीश नमावों, देहु अचल पदकी चाला ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

छन्द रोड़क (मात्रा 24)

कुन्थुजिनेश्वर पाद पदम, जो प्रानी ध्याव,
अलि सम कर अनुराग,सहज सो निज निधि पावैं ।
जो बाँचै सरदहैं, करे अनुमोदन पूजा ।
'वृन्दावन'तिह पुरुष सदृश, सुखिया नहिं दूजा ।।१६।।

इत्याशीर्वादः । (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री अरहनाथ जिनपूजा

छन्द वीररस रूपलंकार (मात्रा 152)

तप तुरंग असवार धार तारन विवेक कर ।
ध्यान शुकल असिधार, शुद्ध सुविचार सुबखतर ।।
भावन सेना धरम दशों सेनापति थापे ।
रतन तीन धर सकति, सकल मंत्री अनुभों निरमापे ।।
सत्तातल सोहं सुभट धुनि त्याग केतु शत अग्र धरि ।
इहविध समाज सज राजकों,अरजिन जीते करम अरि ।।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(अष्टक) छन्द त्रिभंगी । अपुप्रयासक । (मात्रा 32 जगनवर्जित)

कनमनिमयझारी, दृगसुखकारी, सुरसरितारी नीरभरी ।
मुनिमनसम उज्ज्वल,जनम जरादल,सौ लै पदतल,धार करि।।
प्रभु दीनदयालं अरिकुलकालं, विरदविशालं, सुकुमालम् ।
हनि मम जंजालं, हे जगपालम, अरगुनमालं वरभालम् ।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

भवताप नशावन, विरदसु पावन,सुनि मनभावन मोद भयो ।
तातैं घसिबावन, चंदन पावन, तरहिं चढ़ावन, उमगि अयो ।प्रभु.

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

तंदुल अनियारे श्वेत संवारे, शशिदुति टारे, थार भरे ।
पद अखय सुदाता,जग विख्याता, लखि भवताता, पुंजधरे ।प्रभु.

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतानूं ।।३।।

सुरतरुके शोभित,सुरन मनोभित,सुमन अछोभित लै आयो ।
मनमथके छेदन, आप अवेदन, लखि निरवेदन, गुणगायो । प्रभु.

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

नेवज सज भक्षक, प्रासुक अक्षक,पक्षकरक्षक, स्वक्ष घरी ।
तु करमनिकक्षक भस्मकलक्षक दक्षक, पक्षक रक्षकरी ।प्रभु.

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

तुम भ्रमतमभंजन, मुनिमनकंजन, रंजन गंजनमोहनिशा ।
रविकेवलस्वामी, दीप जगामी तुम ढिन आमी, पुन्यदृशा ।प्रभु.

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

दशधूप सुरंगी गंधअभंगी वन्हिवरंगी मांहि हवै ।
वसु कर्म जरावै धूमउड़ावै, तांडव भावै नृत्य पवै ।प्रभु.

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

रितुफल अति पावन, नयनसुहावन, रसनाभावन, कर लीनें ।
तुम बिघनविदारक, शिवफलकारक भवदधि तारक, चरचीनें ।प्रभु.

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

शुचि स्वच्छ पटीरं गन्धगहीरं तंदुल शीरं पुष्पचरुं ।
वर दीपंधूपं, आनंदरूपं, लै फल भूपं, अर्घकरं ।।प्रभु.

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

(पंचकल्याणक अर्घ) छन्द चौपाई (मात्रा 16)

फागुन सुदी तीज सुखदाई, गरम सुमंगल ता दिन पाई ।
मित्रादेवी उदर सुआये, जजे इन्द्र हम पूजन आये ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लातृतीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री अरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।१।।

मंगसिर शुद्ध चतुर्दशि सौहै, गजपुर जनम भयौ जग मोहै ।
सुरगुरु जजे मेरुपर जाई, हम इत पूजैं मनवचकाई ।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री अरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।२।।

मंगसिर सित चौदस दिन राजै, तादिन संजम धरै विराजै ।
अपराजित घर भोजन पाई, हम पूजैं इत चित हरषाई ।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्री अरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।३।।

कार्तिक सित द्वादसि अरि चूरे, केवलज्ञान भयो गुन पूरे ।
समवसरनथितिधरम बखाने, जजत चरन हम पातक भाने ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री अरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।४।।

चैत शुकल ग्यारस सब कर्म, नाशि वास किय शिवथल पर्म ।
निहचल गुन अनंत भण्डारी, जजों देव सुधि लेहु हमारी ।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाद्वादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री अरनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा- बाहर भीतरके जिते, जाहर अति दुखदाय ।
ता हर कर अरजिन भये, साहर शिवपुर राय ।।१।।
राय सुदरशन जासुपितु, मित्रादेवी माय ।
हेमवरन तन वरष वर, नब्बे सहस सुछाय ।।२।।

छन्द तोटक (वर्ण 12)

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपतिजी, जय श्रीवर श्रीभर श्रीमति जी ।
भवभीमभवोदधि तारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।३।।
गरभादिक मंगल सार धरे, जग जीवनिके दुखदन्द हरे ।।
कुरुवंशशिखामनि तारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।४।।
करि राज छखण्ड विभूतिमई, तप धारत केवलबोध ठई ।
गण तीस जहां भ्रमवारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।५।।
भविजीवनिको उपदेश दियो, शिवहेत सबैं जन धारि लियौ ।
जगके सब संकट टारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।६।।
कहि बीस प्ररूपनसार तहां, निजशर्म सुधारस धार जहां ।
गति चार ह्रीषी पन प्रधारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।७।।
षट काय तिजोग तिवेद मथा, पनवीस कथा वसु ज्ञान तथा ।
सुर संजमभेद पसारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।८।।
रस दरशन लेश्यय भव्य जुगं, षट सम्यक सेनिय भेद युगं ।
जुग हार तथा सु अहारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।९।।

गुनथान चतुर्दश मारगना, उपयोग दुवादश भेद भनो ।
इमि बीस विभेद उचारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।१०।।
इन आदि समस्त बखान कियौ, भवि जीवनमें उरधार लियौ ।
कितने शिववादि बंधारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।११।।
फिर आप अघात विनाश सबैं, शिवधाम विषैं थित किन तबैं ।
कृतकृत्य प्रभू जगतारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।१२।।
अब दीनदयाल दया धरिये, मम कर्म कलंक सबै हरिये ।
तुमरे गुनको कछु पार न हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं ।।१३।।

घत्ता- जय श्री अरदेवं, सुरकृतसेवं, समताभेवं, दातारं ।
अरिकर्मविदारन, शिवसुखकारन, जय जिनवर जगत्रातारं ।।१४।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ।

आर्या- अरजिनके पदसारं, जो पूजै द्रव्यभावसों प्रानी ।
सो पावै भवपारं, अजरामरं मोक्षथान सुखखानी ।।१५।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री मल्लिनाथ जिनपूजा

अपराजिततैं आय नाथ मिथिलापुर जाये ।
कुंभराय के नन्द, प्रजापति मात बताये ।।
कनक वरन तन तुंग, धनुष पच्चीस विराजैं ।
सो प्रभु तिष्ठहु आप निकट गम ज्यौं भ्रमभाजैं ।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(अष्टक) छन्द जोगीरासा

सुर-सरिता-जल उज्ज्वल लेकर, मनि भृंगार भराई ।
जनम जरामृत नाशनकारन,जजहुँ चरण जिनराई ।।
रोग-दोष-मद-मोहहरन को तुम ही हो वरवीरा ।

यातें शरन गही जगपतिजी, वेग हरौ भवपीरा ।।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।
बावनचन्दन कदलीनन्दन, कुन्कुमसंग घसायौ ।
लेकर पूजौं चरणकमल प्रभु भव आताप नशायौ ।।राग.
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।
तंदुलशशिसम उज्ज्वल लीने दीने पुंज सुहाई ।
नाचत राचत भगति करत ही तुरित अखैपद पाई ।।राग.
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।
पारिजात मंदार सुमन, संतानजनित महकाई ।
मारसुभट मदभंजनकारन, जजहुँ तुम्हें शिरनाई ।।राग.
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।
फेनी गोंझा मोदनमोदक, आदिक सद्य उपाई ।
सौ लै क्षुधा निवारन कारन,जजहुँ चरन लवलाई ।।राग.
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।
तिमिहरमोह उरमंदिर मेरे, छाय रह्यो दुखदाई ।
तासु नाशकारनको दीपक, अद्भुतजोति जगाई ।।राग.
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।
अगर तगर कृष्णागर चन्दन, चूरि सुगन्ध बनाई ।
अष्टकरम जारनको तुम ढिग,खेवतु हौं जिनराई ।।राग.
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।
श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला केला लाई ।
मोक्ष महाफलदान जानिकैं, पूजौं मन हरखाई ।।राग.
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।
जल फल अरघ मिलाय गाय गुन,पूजों भगति बढ़ाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरण गही मैं आई ।।राग.
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंच कल्याणक अर्घ (लक्ष्मीधरा छन्द)

चैतकी शुद्ध एकैं भली राजई, गर्भकल्यान कल्यानको साजई ।
कुंभराजा प्रजापति माता तने, देवदेवी जजे शीस नाये घने ।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रांतप्रदा गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।
मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी राजई जन्म कल्यानको द्यौस सो छाजई ।
इन्द्र नागेंद्र पूजैं गिरेन्द्रे जिन्हें मैं जजों ध्यायके शीसनावों तिन्हें ।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।
मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी के दिना, राजको त्याग दीक्षाधरी है जिना ।
दान गोक्षीरको नन्दसेने दयों, मैं जजों जासुके पदचर्जे भयो ।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां तपमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।
पौषकी श्यामदूती हने घातिया, केवलज्ञानसाम्राज्य लक्ष्मी लिया ।
धर्मचक्री भये सेव शक्री करैं, मैं जजों चर्न ज्यों कर्मवक्री टरें ।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताये श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।
फाल्गुनी सेत पाचैं अघाती हते, सिद्ध आलै बसे जाय सम्मेदते ।
इन्द्रनागेंद्र कीन्हीं क्रिया आयकें, मैं जजौं सो मही ध्यायकें गायकें ।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।

जयमाला

घत्तानन्द छन्द

तुअ नमित सुरशा,नरनागेशा,रजत गनेशा, भगतिभरा ।
भवभयहरनेशा, सुखभरनेशा, जै जै जै शिवरमनिवरा ।।१।।

पद्धरि छन्द

जय शुद्ध चिदातम देव एव, निरदोष सुगुन यह सहज टेव ।
जय भ्रमतमभंजन मारतंड, भविभवदधितारनको तरंड ।।२।।
जय गरभजनम-मंडित जिनेश, जय क्षायक समकित बुद्ध भेश ।
चौथे किय साते प्रकृति छीन, चौ अनन्तानु मिथ्यात तीन ।।३।।

सातंय किय तीनों आयु नाश, फिर नवं अंश नवमें विलाश ।
तिनमाहिं प्रकृत्त छत्तीस चूर, याभांति कियौ तुम ज्ञानपूर ।।४।।
पहिले महँ सोलह कहँ प्रजाल, निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल ।
हनि थानगृद्धिकों सकल कुब्ब, नर तिर्यग्गति गत्यानुपुब्ब ।।५।।
इक वे ते चौ इन्द्रीय जात, थावर आतप उद्योत घात ।
सूक्षम साधारण एम चूर, पुनि दुतिय अंश वसु करयो दूर ।।६।।
चौ प्रत्याप्रत्याख्यान चार, तीजे सु नपुंसकवेद टार ।
चौथे तियवेद विनाश कीन, पांचै हास्यादिक छहों छीन ।।७।।
नरवेद छठें छय नियत धीर सातयें संज्वलन क्रोध चीर ।
आठवें संज्वलन मानभान, नवमें माया संज्वलनहान ।।८।।
इमि घात नवें दशमें पधार, संज्वलन लोभ तित हूं विदार ।
पुनि द्वादशकेद्वयअंशमांहि, सोरह चकचूर कियो जिनाहिं ।।९।।
निद्रा प्रचला इकभागमांहि, दुति अंश चतुर्दश नाश जाहिं ।
ज्ञानावरनी पन दरश चार, अरि अन्तराय पांचों प्रहार ।।१०।।
इमि क्षय त्रेशठ केवल उपाय, धरमोपदेश दीन्हों जिनाय ।
नवकेवललब्धि विराजमान, जय तेरमगुनतिथि गुन अमान ।।११।।
गत चौदहमें द्वै भाग तत्र, छय कीन बहत्तर तेरहत्र ।
वेदनी असाताको विनाश, औदारि विक्रियाहार नाश ।।१२।।
तैजस्यकारमानों मिलाय, तन पंचपंचबन्धन विलाय ।
संघात पंच घाते महंत, त्रय आंगोपांग सहित भनंत ।।१३।।
संठान संहनन छह छहेव, रसवरन पंच वसु फरस भेव ।
जुगगन्ध देवगति सहित पुव्व,पुनि अगुरु लघू उस्वास दुव्व ।।१४।।
परउपघातक सुविहाय नाम, जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम ।
अपरज थिर अथिर अशुभसुमेव, दुरभागसुसुर दुस्सुर अमेघ ।।१५।।
अनआदर और अजस्य कित्त, निरमान नीच गोतौ विचित्त ।

ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय, तब दूजेमें तेरह नशाय ।।१६।।
पहले सातावेदनी जाय, नरआयु मनुषगतिको नशाय
मानुषगत्यानु सु पूरवीय, पन्चेन्द्रिय जात प्रकृति विधीय ।।१७।।
त्रसवादर परजापतिसुभाग, आदरजुत उत्तम गोतपाग ।
जस कीरत तीरथ प्रकृत जुक्त,ऐ तेरह क्षय करि भये मुक्त ।।१८।।
जय गुन अनंत अविकार धार, वरनत गनधर नहिं लहत पार ।
ताकौं मैं बन्दों बारबार, मेरी आपद उद्धार धार ।।१९।।
सम्मेदशैल सुरपति नमन्त, तब मुकतथान अनुपम लसन्त ।
'वृन्दावन' वन्दत प्रीतलाय, मम उरमें तिष्ठहु हे जिनाय ।।२०।।

घत्ता- जयजय जिन स्वामी,त्रिभुवन नामी,मल्ल विमलकल्यान करा ।
भवद्वन्दविदारन आनन्दकारन, भवि कुमोदनिशि ईश वरा ।।२१।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

शिखरणी- जजे हैं जो प्रानी दरब अरु भावादि विधिसों ।
करै नानाभांती भगति थुति औ नौति सुधिसों ।।
लहै शक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको ।
तथा मोक्षं जावै जजत जन जो मल्लिजिनको ।।२२।।

इत्याशीर्वादः । (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री मुनिसुव्रत जिनपूजा

मत्तगयन्द

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सुराजगृहीमहँ आई ।
श्रीसुहमित्त पिता जिनके, गुनवान महापवमा जसु माई ।।
बीस धनू तनु श्याम छवी, कुछ अंक हरी परवंश बताई ।
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभु कहँ,थापतु हौं इत प्रीति लगाई ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक (गीतीक)

उज्ज्वल सुजल जिमि जस तिहारौ, कनक झारीमें भरों ।
जरमरन जामन हरन कारन, धार तुमपदतर करों ।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनि गुनमाल है ।
तसु चरन आनन्द भरन तारन, तरन विरद विशाल है ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

भवतापघायक शांतिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरों ।
गुनगाय शीशनमाय पूजत, विघनताप सबैं हरों ।।शिव.

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

तन्दुल अखण्डित दमक शशिसम,गमक जुत थारी भरों ।
पद अखयदायक मुकतिनायक, जानिपद पूजा करों ।।शिव.

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

बेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरों ।
जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु, तुम निकटढेरी करों ।।शिव.

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदुगुन विस्तरों ।
सोलये तुम पद तर धरत ही, क्षुधा डाईनको हरों ।।शिव.

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

दीपक अमोलिक रतन मनिमय, तथा पावनघृत भरों ।
सो तिमिरमोहविनाश आतमभाव कारन ज्वै धरों ।।शिव.

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

करपूर चन्दन चूरभूर, सुगन्ध पावकमें धरों ।
तसु जरत जरत समस्त पातक, सार निजसुखको भरों ।शिव.

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

श्रीफल अनार सु आम आदिक, पक्वफल अति विस्तरों ।
सो मोक्षफलके हेतु लेकर, तुमचरन आगे धरों ।।शिव.

शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनि गुनमाल है ।
तसु चरन आनन्द भरन तारन, तरन विरद विशाल है ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जलगन्ध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों बरो ।
पूजों चरणरज भक्तिजत, जाते जगत सागर तरों ।।शिव.

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घ (त्रोटक)

तिथि दोयज सावन श्याम भयो, गरभागममंगल मोद थयो ।
हरिवृन्द सची पितृमात जजे, हम पूजत ज्यौं अघओघ भजे ।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडितायश्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

वयसाख वदी दशमी वरनी, जनमें तिहि द्यौस त्रिलोकधनी ।
सुरमंदिर ध्याय पुरन्दरने, मुनिसुव्रतनाथ हमें शरने ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

तप दुद्धर श्रीधरने गहियो, वयसाख वदी दशमी कहियो ।
निरुपाधि समाधि सुध्यावत हैं,हम पूजन भक्ति बढ़ावत हैं ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां तपमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

वरकेवलज्ञान उद्योत किया, नवमी वयसाख वदी सुखिया ।
घनि मोहनिशाभनि मोखमगा, हम पूजि चहैं भवसिंधु थगा ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां केवलज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।४।।

वदि बारस फागुन मोक्ष गये, तिहुँलोक शिरोमणि सिद्ध भये ।
सु अनन्त गुनाकर विघन हरो, हम पूजत हैं मनमोद भरो ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णाद्वादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा- गुणिगणनायक मुक्तिपति, सूक्तव्रताकर युक्त ।
भुक्तमुक्त दातार लखि, वन्दौं तनमनउक्त ।।१।।

त्रोटक

जय केवलभान अमान धरं, मुनिस्वच्छसरोज विकासकरं ।
भवसंकट भंजनलायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।२।।
घनघातव नन्दवदीप्त भनं, भविबोधतृषातुर मेघघनं ।
नितमंगलवृन्द वधायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।३।।
गरभादिक मंगलसार धरे, जगजीवन के दुखद्वन्द हरे ।
सब तत्त्वप्रकाशन वायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।४।।
शिवमारगमण्डन तत्त्वकह्यो, गुनसार जगत्त्रय शर्म लह्यो ।
रुजरागरु दोष मिटायक हैं, मुनिव्रत सुव्रतदायक हैं ।।५।।
समवसृत में सुरनार सही, गुण गावत नावत भालमही ।
अरु नाचत भक्ति बढ़ायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।६।।
पगनूपुर की धुनि होत भनं, झननं झननं झननं झननं ।
सुरलेत अनेक रमायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।७।।
घननं घननं घन घंट बजैं, तननं तननं तनतान सजैं ।
द्रिमद्रिम मिरदंग बजायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।८।।
छिनमें लघु औ छिन थूल बनें, जुत हावविभाव विलासपनें ।
मुखतें पुनि यों गुणनायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।९।।
धृगतां धृगतां पगपावत हैं, सननं सननं सु नचावत हैं ।
अति आनन्दको पुनि पायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।१०।।
अपने भवको फल लेत सही, शुभ भावानतें सब पाप दही ।
तित तेसुखको सबपायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।११।।
इन आदि समाज अनेक तहां, कहि कौन सकैं जु विभेद यहां ।
धन श्रीजिनचन्द सुधायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।१२।।
पुनि देशविहार कियौ जिनने, वृष अमृतवृष्टि कियो तुमने ।
हमको तुमरी शरणायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।१३।।

हम पै करुणा करि देव अबैं, शिवराज समाज सुदेहु सबैं ।
जिमि होहुँ सुखाश्रमनायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक ।।१४।।
भवि वृन्दतनी विनती जु यही, मुझ देहु अखैपद राज सही ।
हम आनि गही शरणायक हैं, मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ।।१५।।

घत्ता- जय गुणगणधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिद्रूपपती ।
परमानन्ददायक, दाससहायक, मुनिसुव्रत जयवन्त जती ।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय महार्घ्यं ।।

दोहा- श्रीमुनिसुव्रत के चरण, जो पूजै अभिनन्द ।
सो सुर सुरनर सुख भोगिकें, पावै सहजानन्द ।।१७।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नमिनाथ जिनपूजा

रोड़क

श्री नमीनाथ जिनेन्द्र नमों विजयारथ नन्दन,
विख्यादेवी मातु सहज सब पापनिकन्दन ।
अपराजित तजि जये मिथुलपुर वर आनन्दन,
तिन्हें सु थापों यहां त्रिधाकरिके पदवन्दन ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक (द्रुतविलम्बित)

सुरनदीजल उज्जवल पावनं, कनक भृंगभरों मनभावनं ।
जजतु हैं नमिके गुणगायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

हरिमलैं मिलि केशरसों घसों, जगतनाथ भवातपको नसों ।
जजतु हौं नमिके गुणगायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

गुलकके सम सुन्दर तंदुलं, धरत पुंजसु भुंजत संकुलं ।
जजतु हों नमिके गुणगायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

कमल केतुकि बेलि सुहावनी, समरसूल समसत नशावनी ।
जजतु हों नमिके गुणगायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

शशि सुधासम मोदक मोदनं, प्रबल दुष्ट क्षुधामद खोदनं ।
जजतु हों नमिके गुणगायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशकाय नैवेद्यं ।।५।।

शुचि घृताश्रित दीपक जोइया, असममोह महातम खोइया ।
जजतु हों नमिके गुणगायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशकाय दीपं ।।६।।

अमरचिन्ह विषै दशगंधको, दहत दाहत कर्म कबंधकों ।
जजतु हों नमिके गुणगायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

फलसुपक्क मनोहर पावने, सकल विघ्नसमूह नशावने ।
जजतु हों नमिके गुणगायकें,जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जलफलादि मिलाय मनोहरं,अरघ धारत ही भय भी हरं ।
जजतु हों नमिके गुणगायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घ (पाइत्त छन्द)

गरभागम मंगलधारा, जुग आश्विन श्याम उदारा ।
हरिहर्षि जजे पितुमाता, हम पूजें त्रिभुवन ताता ।।
ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वीतीयायां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।१।।

जन्मोत्सव श्याम अषाढ़ा, दशमीदिन आनन्द बाढ़ा ।

हरिमन्दर पूजे जाई, हम पूजें मनवचकाई ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

तप दुद्धर श्रीधर धारा, दशमीकलि षाढ़ उदारा ।
निज आतमरसझर लायौ, हम पूजत आनन्द पायौ ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां तपःमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

सित मंगसिरग्यारस चूरे, चवघाति भये गुनपूरे ।
समवसृत केवलधारी, तुमकों नित नौति हमारी ।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

वयशाख चतुर्दशि श्यामा,हनि शेष वरी शिववामा ।
सम्मेदथकी भगवंता, हम पूजैं सुगुन अनन्ता ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा- आयु सहस दश वर्ष की, हेमवरन तनसार ।
धनुष पंचदश तुंग तन, महिमा अपरम्पार ।।१।।

चौपाई

जै जै जै नमिनाथ कृपाला, अरिकुलगहनदहनदवज्वाला ।
जै जै धरमपयोधर धीरा, जय भवभंजन गुनगंभीरा ।।२।।
जै जै परमानन्द गुनधारी, विश्वविलोकन जन हितकारी
अशरन शरन उदार जिनेशा, जै जै समवसरन आवेशा ।।३।।
जै जै केवलज्ञान प्रकाशी, जै चतुरानन हनि भवफांसी ।
जै त्रिभुवनहित उद्यमवंता, जै जै जै जै नमि भगवंता ।।४।।
जै तुम सप्ततत्त्व दरशायो, तासु सुनत भविनिजरस पायो ।
एक शुद्ध अनुभवनिज भाखे, दोविधि राग दोष क्षय आखे ।।५।।
द्वै श्रेणी द्वै नय द्वै धर्म, दो प्रमाण आगमगुण शर्म ।
तीनलोक त्रयजोग त्रिकालं, सल्ल पल्ल त्रय बात बलालं ।।६।।

चार बंध सज्ञागति ध्यानं, आराधन निक्षेप चउ दानं ।
पंचलब्धि आचार प्रमादं बंधहेतु पैताले सादं ।।७।।
गोलक पंचभाव शिव भौंनें, छहों दरब सम्यक अनुकौनें ।
हानिवृद्धि तप समय समेता, सप्तभंगवानीके नेता ।।८।।
संजम समुदघात भय सारा, आठ करम मद सिध गुनधारा ।
नवों लब्धिनवतत्त्वप्रकाशे, नोकषाय हरि तूप हुलाशें ।।९।।
दशों बन्धके मूल नशाये, यों इन आदि सकल दरशाये ।
फेर विहरि जगजन उद्धारे, जै जै ज्ञान दरश अविकारे ।।१०।।
जै वीरज जै सूच्छमवन्ता जै अवगाहन गुन वरनन्ता ।
जै जै अगुरुलघू निरबाधा,इन गुनजुत तुम शिवसुख साधा ।।११।।
ताकौं कहत थके गनधारी, तौ को समरथ कहै प्रचारी ।
तातें मैं अब शरणें आया, भवदुख मेटि देहु शिवराया ।।१२।।
बार बार यह अरज हमारी, हे त्रिपुरारी हे शिवकारी ।
परपरणतिको वेगि मिटावो, सहजानन्द सरूप मिटावो ।।१३।।
'वृन्दावन' जांचत शिरनाई, तुम मम उर निवसौं जिनराई ।
जबलों शिव नहिं पावों सारा, तबलों यही मनोरथ म्हारा ।।१४।।

घत्ता-

जय जय नमिनाथं,हो शिवसाथं,औ अनाथके नाथ सदं ।
तातें शिरनायो भगति बढ़ायो, चिन्ह चिन्ह शतपत्र पदं ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

दोहा-

श्री नमिनाथ तनें जुगल,चरन जजैं जो जीव ।
सो सुरनरसुख भोग वर, होवैं शिवतिय पीव ।।१६।।

इत्याशीर्वादः (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

छन्द लक्ष्मी, तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा ।

जैति जै जैति जै जैति जै नेमकी, धर्म औतार दातार श्यो चैनकी ।
श्रीशिवानंद भौफंद निःकंदकी, ध्यावैं जिन्हें इन्द्र नागेंद्र ओ मैनकी ।।
परमकल्याणके देनहारे तुम्हीं, देव हो एव तातें करो ऐनकी ।
थापि हों वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै, शुद्धता धार भौपारकूं लेनकी ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(अष्टक) चाल होली, ताल जत्त

दाता मोक्षके, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता. ।।टेक
निगमनदी कुश प्रासुक लीनौ, कंचनभृंग भराय ।
मनवचतनतें धार देत हो, सकल कलंक नशाय ।
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

हरिचन्दजुत कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसाय ।
विघनतापनाशनके कारन, जजौ तिहारे पाय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

पुण्यराशि तुमजस सम उज्ज्वल, तंदुल शुद्ध मंगाय ।
अखय सौख्य भोगन के कारन, पुंज धरों गुनगाय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

पुण्डरीकतृणद्रुमको आदिक, सुमन सुगन्धितलाय ।
दर्पक मनमथ भंजनकारन, जजहूं चरण लवलाय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मंगाय ।
क्षुधावेदनी नाश करनको, जजहुँ चरण उमगाय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

कनकदीपनवनीत पूरकर, उज्ज्वल जोति जगाय ।
तिमिर मोहनाशक तुमकोलखि,जजहुँ चरण हुलसाय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

दशविध गंध बनाय मनोहर,गुंजत अलिगन आय ।
दशोबन्ध जारनके कारन, खेवों तुमढिग लाय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

सुरसवरन रसनामनभावन, पावन फल सु मंगाय ।
मोक्षमहाफलकारण पूजों, हे जिनवर तुम पाय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जलफलआदि साज शुचि लीने,आठों दरब मिलाय ।
अष्टमछितिके राज करनकों, जजों अंग वसुनाय ।।दाता.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्ताये अर्घ्यं ।।९।।

(पंचकल्याणक अर्घ)

सित कातिक छट्ठ अमन्दा, गरभागम आनन्दकन्दा ।
शचि सेय सिवापद आई, हम पूजत मनवचकाई ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठयां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

सित सावन छट्ठ अनन्दा, जनमें त्रिभुवन के चन्दा ।
पितु समुद महासुख पायो,हम पूजत विघन नशायो ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठयां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

तजि राजमती व्रत लीनों, सितसावन छट्ठ प्रवीनों ।
शिवनारि तबै हरषाई, हम पूजैं पद शिरनाई ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठयां तपःमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।

सित आश्विन एकम चूरे, चारों घाती अति कूरे ।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजैं अष्टप्रकारा ।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदि केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।

सितषाढ़ अष्टमी चूरे चारों अघातिया कूरे ।

शिव उर्ज्जयंततें पाई, हम पूजैं ध्यान लगाई ।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाअष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

दोहा- श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुण निधिधाम ।
शंख चिन्हपद में निरखि,पुनि पुनि करों प्रणाम ।।१।।

पद्धरि

जै जै जै नेमि जिनिंद चन्द, पितु समुद देन आनन्दकन्द ।
शिवमात कुमुदमनमोददाय, भविवृन्द चकोर सुखी कराय ।।२।।
जय देव अपूरब मारतंड, तुम कीन ब्रह्मसुत सहस खण्ड ।
शिवतियमुखजलज विकासनेश,नहिं रह्यो सृष्टि में तम अशेष ।।३।।
भविभीत काक कीनों अशोक, शिवमग दरशायो शर्मथोक ।
जै जै जै जै तुम गुणगम्भीर, तुम आगम निपुण पुनीत धीर ।।४।।
तुम केवलजोति विराजमान, जै जै जै जै करुणानिधान ।
तुम समवसरणमें तत्त्वभेद, दरशायो जातैं नशत खेद ।।५।
तित तुमकों हरि आनन्दधार, पूजत भक्तीजुत बहु प्रकार ।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय, जै बल अनन्त गुनवंतराय ।।६।।
जय शिवशंकर बह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष ।
जय कुमतिमतंगनको मृगेन्द्र,जय मदनध्वांत को रवि जिनेन्द्र ।।७।।
जय कृपासिन्धु अविरुद्ध बुद्ध, जय रिद्धिसिद्धि दाता प्रबुद्ध ।
जय जगजनमनरंजन महान, जय भवसागरमहँ सुष्टु यान ।।८।।
तब भक्ति करै ते धन्य जीव ते पावें दिव शिवपद सदीव ।
तुमरोगुन देव विविध प्रकार, गावत नित किन्नरकी जुनार ।।९।।
वर भक्ति माहिं लवलीन होय, नाचैं ताथेइ थेइ थेइ बहोय ।।
तु करुणासागर सृष्टिपाल, अब मोको बेगि करो निहाल ।।१०।।
मैं दुख अनन्त वसुकरम जोग, भोगे सदीव नहिं और रोग ।

तुमको जगमें जान्यो दयाल, हो वीतराग गुनरतनमाल ।।११।।
तातें शरणा अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ।
यह विधन करम मम खंडखंड, मनवांछितकारज मंडमंड ।।१२।।
संसारकष्ट चकचूर चूर, सहजानन्द मम उर पूर पूर ।
निज परप्रकाशबुधि देह देह, तजिके विलंब सुधि लेह लेह ।।१३।।
हम याचत हैं यह बार बार, भवसागरतें मो तार तार ।
नहिं सह्यो जात यह जगत दुख, तातैं विनवों हे सुगुनमुक्ख ।।१४।।

घत्ता- श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं ।
भवभयहरतारं शिवकरतारं, दातारं, धर्माधारं ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं ।

मालिनी- सुख धन यश सिद्धि पुत्रपौत्रादि वृद्धी ।
सकल मनसि सिद्धी होतु हैं ताहि ऋद्धी ।।
जजत हरषधारी नेमिको जो अगारी ।
अनुक्रम अरि जारी सो वरे मोक्ष नारी ।।१६।।

इत्याशीर्वादः (परिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

कवित्त छन्द (मात्रा 31)

प्राणतदेवलोकतें आये, वामादे उर जगदाधार ।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि, अंक हरिततन सुखदातार ।।
जरतनाग जुगबोधि दियो जिहिं, भुवनेश्वर पद परमउदार ।
ऐसे पारसको तजि आरस थापि सुधारस हेत विचार ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

प्रमिताक्षर

सुरदीरघकंचनकुम्भ भरौं, तब पादपद्मतर धार करों ।
सुखदाय पाया यह सेवत हौं,प्रभुपार्श्व पार्श्व गुण बेवत हौं ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

हरिगंध कुंकुम कर्पूर घसों, हरि चिन्ह हेरि अरचों सुरसों ।सु.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं ।।२।।

हि महीर नीरजसमान शुचं, वर तंदुलपुंज तवाग्र मुचं ।सु.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

कमलादिपुष्प धनुपुष्प धरी, मदभंजहेत ढिग पुंज करी ।।सु.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय कामबाणविध्वंसनायभवतापविनाशनाय पुष्पं ।।४।।

चरु नव्यगव्य रससार करों, धरि पादपद्मतर मोद भरों ।सु.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

मनिदीपजोत जगमग्य मई, तब पादकंज तर वार दई ।सु.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

दशगंध खेय मन नाचत है, बहु धूमधूममिसि नाचत है ।सु.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

फलपक्क शुद्ध रस जुक्त लिया,पदकंज पूजत हैं खोलिहिया ।सु.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जलआदि साजि सब द्रव्यलिया, कनथार धार नुतनृत्य किया ।सु.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

पंचकल्याणक अर्घ (त्रोटक)

पक्षवैशाखकी श्याम दुतिया भनो,गर्भकल्याणको द्यौस सोही गनों ।
देवदेवेंद्र श्रीमातु सेवै सदा, मैं जजों नित्य ज्यों विघ्न होवे बिदा ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय अर्घ्यं।

पौष की श्याम एकादशीकों स्वजी, जन्म लीनों जगन्नाथ धर्मध्वजी ।
नाग नागेंद्र नागेंद्र पै पूजिया,मैं जजों ध्यायकें भक्ति धारो हिया ।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय अर्घ्यं ।

कृष्णएकादशी पौषकी पावनी राजको त्याग बैराग धार्‌यो बनी ।
ध्यानचिद्रूको ध्याय साता मई, आपको मैं जजों भक्ति भावें लई ।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय अर्घ्यं ।

चैतकीचौथीश्यामा महाभावनी, तादिनाघातिया घातिशोभा बनी ।
ब्राह्य आभ्यंतरें छन्द लक्ष्मीधरा, जैति सर्वज्ञ मैं पादसेवा करा ।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय अर्घ्यं ।

सप्तमी शुद्ध शोभे महासावनी, तादिना मोक्षपायो महापावनी ।
शैलसम्मेदतें सिद्धराजा भये, आपको पूजते सिद्धकाजा ठये ।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णानवम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंन्द्राय अर्घ्यं ।

जयमाला

दोहा- पाश पर्म गुनराश हैं, पाशकर्म-हरतार ।
पाश शर्म निजवास द्यौ, पाश धर्म धरतार ।।१।।
नगरबनारसि जन्मलिय, वंश इक्ष्वाक महान ।
आयु वरष शततुंग तन, हस्त सुनौ परमान ।।२।।

पद्धरि छन्द

जय श्रीधर श्रीकर श्रीजिनेश, तुव गुणगण मणि गावत अशेष ।
जय जय जय आनन्दकन्द चंद,जयजय भवपंकज को दिनन्द ।।३।।
जय जय शिवतिय वल्लभ महेश, तुब ब्रह्मा शिव शंकर गणेश ।
जय स्वच्छचिदंग अनंगजीत, तुव ध्यावत मुनिगन सुहृदमीत ।।४।।
जय गरभागममंडित महंत, जगजनमनमोदन परम संत ।
जय जनममहोत्सव सुखदधार, भविसा रंगको जलधर उदार ।।५।।
हरिगिरिवरपर अभिषेक कीन, झट तांडव निरत आरंभदीन ।
बाजन बाजत अनहद अपार, का पार लहत वरनत अबार ।।६।।
दृमदृम दृमदृम दृमदृम मृदंग, घननन नननन घंटा अभंग ।
छमछम छमछम छम छुद्रघंट, टमटम टमटम टंकोर तंट ।।७।।

झननन झननन नूपूर झंकोर, तननन तननन नन तानशोर ।
सननन्न ननननन गगनमाहिं, फिरफिरफिरफिरफिरकी लहांहिं ।।८।।
ताथेइ थेइ थेइ थेइ धरत पाव, चटपट अटपट झट त्रिदशराव ।
करिकें सहस्र करकों पसार, बहुभांति दिखावत भाव प्यार ।।९।।
निजभक्ति प्रगट जित करत इंद्र,ताकों क्या कहिं सकि है कविंद्र ।
जहँ रंगभूमि गिरिराज पर्म, अरु सभा इश तुम देश शर्म ।।१०।।
अरु नाचत मघवा भक्तिरूप, बाजे किन्नर बज्जत अनूप ।
सो देखत ही छवि बनत वृन्द, मुखसों कैसे बरनै अमंद ।।११।।
धनघड़ी सोय धन देव आप, धन तीर्थंकर प्रकृती प्रताप ।
हम तुमको देखत नयनद्वार, मनु आज भये भवसिंधु पार ।।१२।।
पुनिपिता सौंपि हरि स्वर्गजाय, तुम सुख समाज भोग्यौ जिनाय ।
फिर तपधरि केवलज्ञान पाय, धरमोपदेश दै शिवसिधाय ।।१३।।
हम शरणागत आये अबार, हे कृपासिंधु गुन अमलधार ।
मो मनमें तिष्ठहु सदाकाल, जबलौं न लहों शिवपुररसाल ।।१४।।
निरवान थान सम्मेद जाय, 'वृन्दावन' बंदत शीशनाय ।
तुम ही हों सब दुखद्वन्द हर्न, तातें पकरी यह चर्ण शर्ण ।।१५।।

धत्ता-

जयजय सुखसागर,त्रिभुवनआगर,सुजस उजागर पार्श्वपती ।
'वृन्दावन' ध्यावत, पूजरचावत, शिवथल पावत, शर्म अती ।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ।

पारसनाथ अनाथनिके हित, दारिदगिरिकों वज्रसमान ।
सुखसागरवर्द्धनको शशिसम, दवकषायको मेघमहान ।।
तिनकों पूजैं जो भविप्राणी, पाठ पढ़ैं अति आनन्द आन ।
सो पावै मनवांछित सुख सब,और लहैं अनुक्रम निरवान ।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री महावीर जिनपूजा

मत्तगयन्द

श्रीमत वीर हरै भवपीर, भरै सुखसीर अनाकुलताई ।
केहरिअंक अरीकरदंक, नये हरिपंकतिमौलि सुआई ।।
मैं तुमको इत थापत् हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई ।
हे करुणाधनधारक देव, इहा अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्र !अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक–

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों ।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करों ।।
श्री वीरमहा अतिवीर सन्मतिनायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ।।१।।

मलयागिर चन्दन सार, केसरसंग घसौं ।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसौं ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं ।।२।।

तंदुलसित शशिसम शुद्ध लीनो थार भरा ।
तसु पुंज धरो अविरुद्ध, पावो शिवनगरी ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।३।।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ भंजनहेत, पूजों पद थारे ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।।४।।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ।।
श्री वीरमहा अतिवीर सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।।५।।

तमखण्डित मण्डितनेह, दीपक जोवत हों ।
तुम पदतर हें सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ।।६।।

हरि चन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा ।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।।७।।

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचनथार भरा ।
शिव फलहित हे जिनराय,तुमढिग भेंट धरा ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ।।८।।

जय फलवसु सजि हिमथार,तनमनमोद धरों ।
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों ।।श्री.

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।।९।।

(पंचकल्याणक अर्घ)

मोहि राखो हो शरणा, वर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो.
गरभ साढ़सित छट्ट लियो थिति, त्रिशला उर अघ हरना ।
सुर सुरपति तित सेव करचो नित, मैं पूजों भवतरना ।मोहि.

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठयां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंन्द्राय अर्घ्यं ।।१।।

जनम चैत सित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना ।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना ।।मोहि.

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंन्द्राय अर्घ्यं ।।२।।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना ।।मोहि.
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपःमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंन्द्राय अर्घ्यं ।।३।।
शुक्लदशैं वैशाखदिवस अरि, घात चतुक क्षयकरना ।
केवललहि भलि भवसरतारे, जजों चरण सुख भरना ।।मोहि.
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेंन्द्राय अर्घ्यं ।।४।।
कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतें परना ।
गनफनिवृन्द जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भरहरना ।।मोहि.
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।५।।

जयमाला

(छन्द हरिगीता 28 मात्रा)

गनधर असनिधर, चक्रधर, हरधर, गदाधर वरवदा ।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा ।।
दुखहरन आनन्दभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं ।
सुकुमाल गुणमणिमाल उन्नत, भालकी जयमाल है ।।
घत्ता- जय त्रिशलानन्दन हरिकृतवन्दन जगदानन्दन, चन्दवरं ।
भवतापनिकन्दन, तनकनमंदन, रहितसंपदन, नयनधरं ।।२।।

त्रोटक–

जय केवलभानु कलासदनं, भविकोक विकासन कंजवनं ।
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञानदृगांवर चूरकरं ।।१।।
गर्भादिक मंगलमंडित हो, दुखदारिदको नित खंडित हो ।
जगमाहिं तुम्हीं सत पंडित हो, तुमही भवभावविहंडित हो ।।२।।
हरिवंशसरोजनको रवि हो, बलवंत लहंत तुम्हीं कवि हो ।
लहिकेवल धर्मप्रकाश कियौ, अबलों सोइ मारग राजति यौं ।।३।।

पुनि आप तने गुणमाहिं सही सुर मग्न रहैं जितने सब ही ।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसो मनभावत हैं ।।४।।
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुब भक्ति विषै पग येमें धरी ।
झननं झननं झननं झननं, सुरलेत तहां तननं तननं ।।५।।
घननं घननननं घनघंट बजे दृमदृं दृमदृं मिरदंग सजै ।
गगनांग न गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता ।।६।।
धृगतां धृगतां गति वाजत है, सुरताल रसालजु छाजत है ।
सननं सननं सननं नभमें, इकरूप अनेक जु धारि भमें ।।७।।
केइनारिसु वीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावति हैं ।
करतालविषैं कर ताल धरें, सुरताल विशाल जुनाद करें ।।८।।
इन आदि अनेक उछाहभरी, सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी ।
तुमही जगजीवनिके पितु हो, तुमही विनकारनतैं हितु हो ।।९।।
तुमही सब विघनविनाशन हो तुमही निज आनन्द भासन हो ।
तुमही चितचिंततदायक हों, जगमांहिं तुम्हीं सब लायक हों ।।१०।।
तुमरे पनमंगलमाहिंसही जिय उत्तम पुण्य लह्यो सब ही ।
हमको तुमरी शरणागत है, तुमरे गुनमें मन पागत है ।।११।।
प्रभु मोहिय आप सदा वसिये, जबलों वसु कर्म नहीं नसिये ।
तबलों तुम ध्यान हिये बरतों, तबलों श्रुतचिन्तन चित्त रतों ।१२।।
तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों ।
तबलों सतसंगति नित्त रहो, तबलों मम संजम चित्तगहो ।।१३।।
जबलों नहिं नाश करों अरिकों, शिवनारि वरों समता धरिकों ।
यह द्यौ तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ।।१४।।

घत्ता- श्रीवीरजिनेशा नमितसुरेशा, नागनरेशा भक्तिभरा ।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावैं,वांछित पावै शर्म वरा ।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय महार्घ्यं ।

दोहा- श्रीसन्मति के जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीत ।
'वृन्दावन' सो चतुर नर लहे मुक्तिनवनीत ।।१६।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्रीसमुच्चय अर्घ

त्रोटक

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी,
तुममें जितने गुन हैं तितनी ।
कहि कौन सकै मुखसों सब ही,
तिहिं पूजतु हो गहिं अर्घ यही ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिदीरान्तेभ्यः चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।।१।।

ऋषभ देवको आदि अन्त, श्रीवर्द्धमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरणकमलको पूजै, जो प्राणी गुणमाल उचार ।।
ताके पुत्र मित्र धन योवन, सुखसमाजगुन मिलै अपार ।
सुरपदभोगभोगि चक्री है, अनुक्रम लहे मोक्षपद सार ।।२।।

इत्याशीर्वादः

।। इति श्री कविवर वृन्दावनकृत श्री वर्तमानजिनचतुर्विंशति जिनपूजा समाप्ता ।।

संवत 1875 कार्तिक कृष्णा 15 गुरुवार को यह पुस्तक पूर्णभया

●

स्व. कविवर कुँवरलाल जी कृत

श्री समवसरण विधान

(द्रुतबिलम्बित छन्द)

परम पावन सुन्दर सोहनो, जगतजीव-तने मन--मोहनो ।
चतुर-बीस जिनेश्वर देव जू, चरण-पूज करूँ नित सेव जू ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।।

अष्टक (अडिल्ल छन्द)

पदम-द्रह को नीर सु उज्जवल लीजिये ।
श्री जिन-सन्मुख जाय सुधारा दीजिये ।।
चौबीसों जिनदेव जजों मन लायके ।
हरष हिये में धार सु जिनगुण गायके ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः जलं ।

चन्दन केशर गारि कटोरी में धरौं ।
श्री जिनचरण-चढ़ाय सु शिवनारी वरों ।।चौ.

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः चन्दनं ।

देवजीर सुखदास आदि चावल खरे ।
चन्द्रकिरण-समउज्ज्वल जिन-आगे धरे ।।चौ.

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अक्षतान् ।

कमल-केतकी पुष्प गुलाब सु लाइये ।
धारि प्रभू के आगे अतिसुख पाइये ।।चौ.

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं ।

गोझा-फेनि-सोहाल-पुवा-पापर खरे ।
देखत क्षुधा विलाय सु जिन-आगे धरे ।।चौ.

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः नैवेद्यं ।

मणिमय दीप अमोल सु जगमग जोति है ।
श्री जिन-सनमुख धारि सुज्ञान उद्योत है ।।चौ.।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः दीपं ।

कृष्णागरु वर धूप दशांगी खेइये ।
अष्ट-करम भग जाँहि सु जिन-पद सेइये ।।चौ.

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः धूपं ।

श्रीफल-दाख-बदाम सु पिस्ता लायके ।
जिनवर-चरण चढ़ाय सु शिवफल पायके ।।चौ.

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः फलं ।

जल-फल वसुविध द्रव्य सु सुन्दरी लायके ।
नाचें गाय-बजाय सु अर्घ्य चढ़ायके ।। चौ.

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं ।

राग-द्वेष-भय-शोक-क्षुधा-चिन्ता धनी ।
व्याधि-बुढ़ापो-जनम-मरण-निद्रा घनी ।।
मोह-पसीना-खेद सु भद-आरति हनी ।
विस्मय-तृषा न जानि जानि त्रिभुवनधनी ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टादशदोषरहित-जिनेन्द्रेभ्यः महार्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

ज्ञानावर्ण के गये ज्ञाननान्त पाय जू । नशे दर्शनावरण दर्श नान्त पाय जू।।
मोहकर्म क्षय हुये परमसुख पाय जू,वीर्यअनन्तो भासि नाश अन्तरायजू ।।

(दोहा छन्द)

समवसरण-लक्ष्मी-सहित चौबीसों जिनराय ।
जिनके गुण छियालीस शुभ सुनो भविक मनलाय ।।

(पद्धरि छन्द)

जय चौबीसों जिनराज देव जय सुर-नर मिल नित करत सेव ।
जय जन्म हि दश-गुण धरत ईश जय तिनकों सुरपति नमत शीश ।।
तन रहित-पसीना-मल न जान उज्ज्वल सुदुग्ध-सम रुधिर मान ।
समचतुर धरें संस्थान देह तन वज्रमयी शोभित सु एह ।।
सुन्दर सु जगत में और नाहिं शुभ-गंध अधिक वपु-जिन सु माँहि ।
इक सहस आठ लक्षण जु सार पर कों हितकारी-वचन धार ।।
जय बल जु अनन्त धरे शरीर दश अतिशय जानो भविक वीर ।
जय केवल उपज्यो जगत देव दश अतिशय प्रापति भई एव ।।
दुर्भिक्ष न वसु सौ कोश जान जब चले गगन में इह प्रमान ।
वध जीव न कबहूँ होय सार आहार-रहित जिनवर विचार ।।
उपसर्ग न जिनकों होय धीर चतुरानन-दर्शन कहो वीर ।
सब विद्या के ईश्वर महान् वपु छाया-रहित यद्यपि महान् ।।
पल-सों न पलक लागें जिनेश नख-केश न कबहूँ बढ़ें लेश ।
केवल अतिशय दश भए सार चौदह देवन-रचियो विचार ।।
जय मागधि भाषा प्रथम गाव सब जीवन के मैत्री सु भाव ।
सब ऋतु फल-फूल फले अपार दरपन-सम भूमि भई निहार ।।
सब जीव परम आनन्दकार जय पवन गन्ध-संयुक्त सार ।
कण्टक अरु धूल उड़े न तीर गन्धोदक बरषा होत धीर ।।
जय दो सौ पच्चिस कमल लाय सुर-रचित बहुत आनन्द पाय ।
धानादि अठारह जाति-भेद फल-फूल-सहित राजत उछेद ।।
निर्मल आकाश लसे अपार दश दिशा सु निरमल दिपे सार ।
जय-जय-जय देव करें अलाप भवि जीव चले आवत सु आप ।।
जय धर्मचक्र आगे सु जाय देवनकृत चौदह कहे गाय ।
जय प्रातिहार्य वसु सुनहु सार भवि-जीवन को आनन्दकार ।।

जय वृक्ष अशोक दिपै अनूप जय वृष्टि-कुसुम की होय भूप ।
जय बानी बरसे मेघ-धार जय चौंसठ चमर ढुरैं सु सार ।।
जय सिंहासन अति जगमगात भामण्डल भव दीखत जु सात ।
जय दुंदुभि-शब्द बजै सु घोर जय छत्र तीन शोभित सु जोर ।।
जय प्रातिहार्य वसु कहे गाय अब नन्त चतुष्टय सुनो भाय ।
श्रीजिन के ज्ञान अनन्तज्ञान दर्शन भी तैसा हो बखान ।।
प्रभु सुख अनन्त धारें सुधीर वीरज सु अनन्ती लहें वीर ।
दश-दश चौदह वसु चार जानि छयालीस जिनेश्वर गुन बखानि ।।
ऐसे गुन-कर शोभित विशाल तिनको पूजत यह 'कुँवरलाल ।
सो करो कृपा हम पर विशाल भवसागर पार करो दयाल ।।

(दोहा छन्द)

श्री जिन गुन छियालीस की माला रची बनाय ।
जो पहिरे भवि कंठ में नित नव-मंगल पाय ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः जयमाला-पूर्णार्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

जो बाँचे यह पाठ सरल मन लायके ।
सुनहु भव्य दे कान सु मन हरषायके ।।
धन-धान्यादिक पुत्र-पौत्र-सम्पति धरे ।
नर-सुर के सुखभोग बहुरि शिवतिय वरे ।।

इत्याशीर्वादः ।

मानस्तम्भ सम्बन्धि सोपान वर्णन

(सुन्दरी छन्द)

दिश सु पूरब सुन्दर पेखिये विजय दरवाजा सु विशेखिये ।
चौक ता आगे सोपान हैं, करत वर्णन जैन-पुरान हैं ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशायां विजयनामकद्वाराग्रे विद्यमानचतुष्कस्याग्रे सोपानसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

द्वार 'वैजयन्त' सु दूसरो पुनि 'जयन्त' सु 'अपराजित' धरो ।
नाम दरवाजों के जानिये चौक और सिवान प्रमानिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्षु चतुर्ण्णां द्वाराणाम् अग्रे चतुष्कस्याग्रे चतुःसोपानसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

गिन हजार सु बीस सिवान जू हस्त एक सु ऊँचे जान जू ।
कोश एक लम्बाई भाषिये हस्त एक सु चौड़े राखिये ।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य विंशतिसहस्र-हस्तोच्चेन एकहस्तायतेन एकक्रोशलम्बेन सोपानसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

और तीर्थंकर तेईस के भाषियो क्रम-हानि सु ईश के ।
चाहिये सो जहाँ जैसी कही सरसबुद्धि विचार गहो सही ।।

ॐ ह्रीं अन्तिम-त्रयोविंशति-तीर्थकराणां यथाविधहीन-हीन-सोपानसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

धनुष पाचं हजार प्रमानिये हाथ बीस हजार सु जानिये ।
चारहस्त सु धनुष गनीजिये सम-सुभूमि ऊँचाई लीजिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्हस्तानाम् एकं धनुर्मत्वा मध्यभूमितः पंचसहस्रधनुः प्रमाणोच्चे समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दोइ ओर सिवानन के बनी सरस वेदी सुन्दर सोहनी ।
धनुष साढ़े सातसै देखिये गिन मुटाई नैनन पेखिये ।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सार्धसप्तशतधनुः स्थूल-सोपान-वेदिकासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

बनी बैठक सुन्दर सोहिनी परमवेदी ऊपर मोहिनी ।
सरस शोभाकर सुविशाल जू, खचित-मणिमय-मोती-माल जू ।।

ॐ ह्रीं वेदिकायाः नानाविध-रचनासम्पन्ने पीठसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(अडिल्ल)

वेदी ऊपर कोट सु गोल विशेषिये, मूलविषैं गनि सूची धनुष जू देखिये ।
गनो सात शतक पंचाशत मानियो, ऊपर गनो सु सूची लघू प्रमानियो ।।

ऊपर कमलाकार पांखुरी सारजू, ता ऊपर शुभ बैठक सरस सुधार जू ।
जगमग-जगमग ज्योति होत सुखकारजू,नाचत देवी-देव लहैं भवपार जू ।।

ॐ ह्रीं वेदिकोपरि मूले सूची ७५० चापोपरि चूलिकास्थले लघुसूचीप्रमाणे गोलाकारकूटे स्थितदेवीदेवकृत-जिनगुणगानसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

गोल विराजै सार पहल तहँ जानिये,
खम्भासहित सु छतरी ऊपर मानिये ।
ऊपरकलशा सरस विराजे सारजू,
सुवरणमणि-गणजड़ित परमसुखकार जू ।।

ॐ ह्रीं उपरि कलशयुक्तछत्रिकायुक्ते अधःस्तम्भसहिते प्रथमविष्ठरसंयुक्ते स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

बैठक दूजी को वरणन अब जानिये,
तामें दरवाजे हैं आठ सु मानिये ।
तीन-तीन दरवाजे सुन्दर देखिये,
आमें-सामें एक-एक सु विशेषिये ।।

ॐ ह्रीं द्वयोः दिशयोः सन्मुख-त्रि-त्रिद्वार-युक्तेन तथा द्वयोः दिशयोः सन्मुखैकैक-द्वारयुक्तेन द्वितीयविष्ठरेण संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वसु दरवाजे भाखे सुन्दर गायकें,
खम्भा भी वसु जान बने शुभ लायके ।
ऊपर गुमठी तीनरहीं सुखकार जू,
तिनपर कलशा ग्यारहि सुन्दर धारजू ।।

ॐ ह्रीं अष्टाष्टस्तम्भयुक्तानां-त्रि-त्रिगुमठीनामुपरि एकादश-एकादश-कलशयुक्तानाम् अष्टाष्टद्वारयुक्तवेदिकासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

ऐसे दूंजी बैठक को सु निहारिये,
वेदी-ऊपर बैठक विपुल विचारिये ।
बनी सु शोभासार कथन कविको करे,
रची आप धरणेन्द्र परमछवि को धरे ।।

ॐ ह्रीं वेदिकोपरि बहुविष्ठर संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

धनुष हजार सु पाँच ऊँचाई जानिये,
प्रथमभूमि ते चढ़ि ऊँचे परमानिये ।
'विजय' नाम दरवाजो सुन्दर सोहनो,
ता आगे है चौक परम मनमोहनो ।।

ॐ ह्रीं समभूमितः पंचसहस्रचापोन्नतस्य विजयद्वारस्य अग्रे चतुष्कसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सुभग चौक के दोऊ ओर सु जानियो,
बनो बैठकें सुन्दर मणिमय मानियो ।
मध्य बनो वर चौक विपुल शोभा लिये,
चित्र बने सुविशाल परमछवि को दिये ।।

ॐ ह्रीं चतुष्कस्याग्रे पार्श्वद्वये विष्ठरेषु मध्ये नानाविधरचनायुक्ते चतुष्कसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

सरस बैठक और सिवान जू, गनि सु वेदी मणिमय मान जू ।
लसत छज्जे तकिया देखिये, परम दल-परदा सु विशेखिये ।।

ॐ ह्रीं विष्ठर-बैठक-सोपानवेदिकामत्तवारणावरक-शोभासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

बहु ध्वजा ऊपर फहरात हैं, मनो भव्यनकों जु बुलात हैं ।।

ॐ ह्रीं रत्नमुक्तानिर्मिते सकम्पबहुध्वजासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(दोहा छन्द)

ऐसी बैठक में जहाँ देवी-देव निहार ।
नर-नारी जिनराज के वर-गुण गावें सार ।।

ॐ ह्रीं पूर्वोक्त-शोभासम्पन्नविष्ठरेषु देवी-देव-नर-नारीकृत जिनराज-गुणगानसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

उपजे नाहीं खेद सिवानों पर चढ़ें,

छिनकमाँहि चढ़ जायें सु जिन-अतिशयबढ़ें।
इन्द्रनीलमणि गोल सिला तहँ देखिये,
वृषभदेव के बारह योजन पेखिये ।।

ॐ ह्रीं जिनातिशयतः यत्सोपानानिखेदं बिना क्षणमात्रचटनसमर्थानि एवम्भूतनीलमणिनिर्मित द्वादशयोजनवर्तुलशिलासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तेईस के क्रम-हानि जान लीजो सही,
समवसरण की रचना ता-ऊपर कही ।
निर्मल शिला विशाल चमक बहु तास में,
सब विभूति प्रतिबिम्बित दीसत जास में ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमत्रयोविंशतितीर्थकराणाम् उत्तरोत्तर-हीनरचनापरिमाण-विशिष्टशिलासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

समवसरण को विभव घेरकर जो रह्यो,
धूलीसाल सु कोट परम सुन्दर कह्यो ।
मानों 'मानुषोत्र' गिरि मन हरषाय के,
सेवत जिनके चरणु सु आपहिं आय के ।।

ॐ ह्रीं धूलिसालदुर्गसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

पंचवरन के रतन चूरकर जो बनों,
इन्द्रधनुष की कान्ति धरे सुन्दर मनों ।
कहुँ श्याम कहुँ हरित झलक पन्ना जिसी,
कहुँ कंचन कहुँ विद्रुम हीरा-द्युति तिसी ।।

ॐ ह्रीं पंचविधचूर्ण-निर्मित-गगनविसारिज्योतिर्युक्त-धूलिसाल-दुर्गसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(काव्य छन्द)

श्री जिन को जु शरीर जानि चौगुनी ऊँचाई,
जोजन एक प्रमान भाग वसु चालिस गाई ।
दोय भाग मोटी सु मूल ऊपर घट जानों,

या विध ऊँचो थूल सु 'धूलीसाल' बखानों।।

ॐ ह्रीं जिनशरीरतः चतुर्गुणोच्च-मूलभागद्वयस्थूले उपरि क्रमशः सूक्ष्मेण धूलिसाल दुर्गेण (कोट) संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दरवाजे हैं चार कोट के नाम सुनीजे,
विजै जान 'वैजन्त''जयन्त' 'अपराजित' लीजे
बनें कँगूरा-गुरज-बैठकें सब सुखदाई,
भव्यजीव जहँ बैठि विलोकें दश-दिश भाई।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्षु कंगूरा-गुरज-बैठक-संयुक्त-चतुर्द्वारसहिते धूलिसाल दुर्गेण (कोट) संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तीन लोक आकार कहूँ दीसै सु निहारें,
अधोलोकचित्राम नरम-दुःख तहाँ विचारें ।
भविक देख चित्राम पाप सु तुरतहिं भागे,
तीन लोक में धर्म सार तासों चित्त लागे ।।

ॐ ह्रीं नानाविधचित्रवलिसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(छप्पय छन्द)

सिला बनी सु विशाल सीढ़ितै सूधी जानों,
चार गली दिस चार वृषभजिन के यों मानों ।
चौड़ी कोस जु एककोस तेइस जु लाँबी,
दोई तरफ सु जान गली के वेदी भावी ।।
दो वेदी के बीच में गलि चौड़ाई आन ।
ताको वर्णन अब करों शोभे फटिक समान ।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवस्य क्रोशैकायतत्रयोविंशति-क्रोशलम्बासु सुसोपानचतुर्गलिषु उभयतः स्फटिकमणिमयवेदिकासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

चौंढ़ी वेदी जान धनुष उर धार जू,
गनो सार्ध-शत चाप बहुत सुखकार जू ।
वेदी गली सु जान लम्बाई एक-सी,

तेइस के क्रम-हानि जान लीजो सही ।।

ॐ ह्रीं अन्तिम-त्रयोविंशति-तीर्थकराणाम् यथागम-क्रमहीन-वेदिका संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

चार गलिन के बीच चार अन्तरपरे,
चार कोटि अरु वेदी पांच बने खरे ।
इन नव के अन्तर वसु भूमि निहारिये,
मिला अन्त में 'धूलीसाल' विचारिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्वीथिकानां मध्ये अन्तरालभूमौ चतुर्णा दुर्गाणां पंचानां वेदिकानाम् अन्तरालेऽष्टानां भूमि-शिलानां पर्यन्ते 'धूलिशाल दुर्गे च संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं

वेदि कोट में इतनो फरक विचारिये,
वेदी भीत-समान सु मन में धारिये ।
कोट-तले चौड़ों सु घाट ऊपर लह्यो,
गनो चौगुनो ऊँचो जिन-तन-तें कह्यो ।।

ॐ ह्रीं जिनदेहाच्चतुर्गुणोच्च-भित्तिकाममसमायताभिः पंचवेदिकाभिः उपर्युपरि क्रमहीनायामोच्चदुर्गेश्च संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वेदी पांचों कंचनवर्ण सु जानियो,
बने कँगूरा मन्दिर-ऊपर मानियो ।
फहरे ध्वजा विशाल ओर रचना घनी,
वर्णन का कवि सरस शोभा बनी ।।

ॐ ह्रीं कंगूरा-मन्दिर-ध्वजा-सुशोभिताभिः कंचनवर्णपंचवेदिकाभिः संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सवैया इकतीसा छन्द)

भूमि चैत्य परसाद प्रथम सु वेदी जान,
भूमि खातिका-प्रमाण दूजी वेदी मानिये ।
पुष्पवाटिका सु भूमि आठों कोट सु,

चौथी उपवन भूमि तीजी वेदी ठानिये ।।
पांचई ध्वजा सु भूमि कोट तीसरो निहार,
कल्पवृक्ष भूमि छठी वेदी चौथी मानिये ।
सातई सु भूमि मन्दिरन को सु चौथा कोट,
फटिक केरंग आठों सभाभूमि जानिये।।

(अडिल्ल छन्द)

चार कोट अरु वेदी पांच प्रमानिये,
एक तरफ के दरवाजे नव जानिये ।
वार दिशा के छत्तिस दरवाजे कहे,
शौभैं परम विशाल कान्ति कर लहलहे ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्षु चतुर्दुर्ग-पंचवेदिका-षट्विंशद् -द्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

प्रथम कोट अरु वेदी प्रथम निहारिये,
तिन द्वारन में गली सु प्रथम विचारिये ।
ऐसे ही दरवाजे और सु जानिये,
तिनके बीच गली को भूमि प्रमानिये ।।

ॐ ह्रीं प्रथमदुर्ग-प्रथमवेदिकाद्वाराणां मध्ये प्रथमवीथिकाभूमिभिन्नद्वाराणां मध्ये द्वितीयादिवीथिकाभूमि संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

आठ भूमि-सम्बन्धी आठ गलीं सही,
पार्श्वन-विषें फटक-निर्मित वेदीं कही ।
तिनके दरवाजे सु कपाट लगे तहां,
चमचमात सुखकार लगे हीरा जहां ।।

ॐ ह्रीं अष्टभूमिसम्बन्धिनीनाम् अष्टवीथिकानाम् उभयपार्श्व-अनेकवज्रमय-कपाटयुक्त स्फटिकनिर्मित-वेदिकाद्वार संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिन गलीन-तें भूमि-विषें जावें सही,
तो इन द्वारन-विषें मनुष आवे तहीं ।

तिन पर बैठक बनी बहुत शोभा धरें,
राजत कलशा तुंग मनो शिव को वरें ।।

ॐ ह्रीं अभ्यन्तर-वीथिकाद्वार-संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

कोट धूलीसाल सु जानिये, चार दरवाजे परमानिये ।
वर्ण कंचनमय सुखकार जू, झलझलात सु जगमग सारजू ।।

ॐ ह्रीं स्वर्णमयचतुर्विंशतिद्वारयुक्त-दुर्गद्वयसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

बीच के दो कोट सु जानिये, सरस वेदी चार बखानिये ।
लसत दरवाजे चौबीस जू, वर्ण श्वेत कहें मुनि ईश जू ।।

ॐ ह्रीं रौम्यमय-चतुर्विंशतिद्वारयुक्त-दुर्ग द्वयसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

फटक कोट सु सुन्दर सारजू,तास आभ्यन्तर सु निहारजू ।
लसत वेदी आठ सु द्वारजू, हरितवर्ण कपाट सु धार जू ।।

ॐ ह्रीं स्फटिकमयदुर्गद्वाराभ्यन्तर-वेदिकाष्टद्वार-हरिद्वर्णकपाट संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

दरवाजे सुन्दर छत्तीस निहारिये, जिन-तनुतैं बारह-गुन तुंग विचारिये ।
जानों ऊँचेवीर सु चौड़े अब भनों,जिन शरीर से जान चौगने यों भनों ।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनदेहतः द्वादशगुणितोच्चचतुर्गुणायत-षट्त्रिंशद-द्वार संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दरवाजे के दोई ओर सु देखिये, बनी बैठकें सुन्दर नैनन पेखिये ।
दरवाजों ऊपर बैठक तिहरी कहीं, तिनके ऊपर खम्भा बहुशोभा लहीं ।।

ॐ ह्रीं द्वाराणाम् उभयपार्श्वे मुकुटयुक्तविष्ठर संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिनके ऊपर गुमठीं बहुत विचारिये,
छोटी-छोटी जान अनेक निहारिये ।
ऊपर कलशा-ध्वजा विराजे सोहने,

बैठ देवी-देव सु जिनगुण को भने ।।

ॐ ह्रीं जिनगुणगायक-देवीदेवविभूषित-क्षुद्रघण्टिकायुक्तानेकगुमठी-विशिष्ट-द्वार संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिनमें रतनमई तोरण शौभें तहाँ, रतनमाल अरु पुष्पमाल घण्टा जहाँ ।
इनकी पँकति बनी सरस शोभारची, नानाविध चित्राम सु रचना है खची।।

ॐ ह्रीं विविधरत्नमाल-पुष्पमाल-क्षुद्रघण्टिकापंक्तियुत-द्वार संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिन दरवाजन में जु किवार रतन-जड़े,नानाविध के जालवृन्द रूमी कड़े।
तिनमें वृक्षाकार फूल फल्ली जड़ी,जगमग ज्योति विलोक सुरी नाचें खड़ी।।

ॐ ह्रीं विविधरचनायुक्त-द्वार-संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

नवद्वारन में द्वारपाल ठांडे भले,
तीन द्वार में ज्योतिषि डण्डा ले खड़े ।
व्यन्तर गुरु जसु लिये दोय दर में खड़े,
भवन सु वासी दो दर मुद्गर लै अड़े ।।

दोहा- गदा धरें दो दरन में, ठांड़े सुर वर-वीर ।
कल्प सु वासी जानिये, महाबुद्धिधर धीर ।।

ॐ ह्रीं विविधानेकद्वारपाल संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सवैया इकतीसा)

चमर-छत्र-झारी अरु कलशा बने विशाल,
ध्वजा-बीजना-ठोना बा आरसी सु जानिये।
मंगल सु द्रव्य सार नाम कहे हैं सु धार,
एक सौ आठ एक-एक कों प्रमानिये ।।
छत्तिस द्वारन की जु पारखें भई कितेक,
एक सौ चवालिस प्रमाण हिये मानिये ।
सहस सुपन्द्रह विचार और पाँच सौ,
बावन छह भये एक-एक द्रव्य हानिये ।।

दोहा-

छत्र जु अष्टगुने करो एक लाख परमान ।
चौबिस सहस जु चार सौ सोलह भये सृजान ।।

ॐ ह्रीं एकलक्ष-चतुर्विंशतिसहस्र-चतुःशत-षोडशमंगलद्रव्यविभूषित-षट्विंशद्द्वार संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

पाण्डुकाल महाकाल ये मानव पद्म सुजान ।
पिंगल रत्न सु शंख सब नैसर्पण परमान ।।

नव-निधि वर्णन

(सवैया इकतीसा छन्द)

पहली अन्न सार देय योग्य वसु दूजी जान,
भाजन सु तीजी चौथी आयुध सु जानिये ।
वस्तु देय पंचमी सु छठी आभरण सार,
सातई सु बाजे देत बाजत बखानिये ।।
आठई सुरत्न देत नवमी सु गेह देत,
सर्व सुखसार देत निधियां परमानिये ।
ऐसी विधि सार सु गाड़ी के आकार खड़ी,
लगे पहिया सु चार मन में यों ठानियें ।।

दोहा- दरवाजे छत्तीस की भई पारखें सार ।
अधिक चवालिस एक सौ परमप्रीति उर-धार ।।
पाण्डुनिधी पन्द्रह सहस पाँच सौ बावन जान ।
इनको करो जु चौगुनी उतनी भई सुजान ।।
उनतालीस हजार गिन एक लाख वर वीर ।
नव सौ अड़सठ कीजिये सर्व पार्श्व में धीर ।।

ॐ ह्रीं एकलक्षोनचत्वारिंशत्सहस्र-नवशताष्टाशीति-निधियुक्त-षट्त्रिंशद्द्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

सोहें दरवाजे छत्तीस सुहावने, तिनके दोऊ पार्श्वे चौ-चौ लाख ने ।
भये एकसौ चालिस चार सु जानिये,गनो पर्श्वमें वीर सु मन में मानिये ।।
तहाँ कंचनमणि-जड़ित सुपरदा देखिये,ता-ऊपर घट जान धूप को पेखिये।
धूप सुगन्ध-प्रवाह सु निकसत धायकें,मानों मेघ-घटा झुक रहि है आयकें।।
उठी धूम कौ घटा चली आकाशकों,रहे सु अलिगण झूम लहें शुभवास कों।
नानाविध शुभगन्ध धुआँ सु लिये सही,कर्मकाठ नित दहत मनो निकसीवही

ॐ ह्रीं गगनव्यापकधूम्रघटायुक्तद्वार संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

नृत्यशाला-वर्णन

(अडिल्ल छन्द)

पहली चौथी अन्तरगली निहारिये,
छटवीं अन्तरगली सु मन में धारिये ।
तहाँ नृत्यशाला सुन्दर सु विशाल जी,
नाचत देवी सुन्दर दे-दे ताल जी ।।

ॐ ह्रीं प्रथमतुर्यष्ठवीथिकानाम् अन्तराले नृत्यशाला-युक्तपार्श्वद्वयसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सवैया इकतीसा)

प्रथम गली के दोउ पार्श्वे विलोकि वीर,
ऊपर सु तिखने बने हैं शोभादार जू ।
एक नृत्यशाला-विषें बत्तिस बखाड़े जान,
शोभें धूप-घटा दोय सुन्दर सु धार जू ।।
एक जो अखाड़ों तामें नाचतीं बत्तीस सुरी,
नाचे भवनवासिनी करें कटाक्ष सार जू ।।
बत्तीस को बत्तीस गुनो करो हो सम्हानि वीर,
सुरी एक सहस सु चौबिस विचार जू ।।

दोहा- चार दिशा की जानियो सोलहशाला आम ।
सोलह सहस सु तीन सौ चौरासी सु बखान ।।

ॐ ह्रीं षोडशनृत्यशालासहित-चतुर्दिशाचतुर्द्वार संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

चौथी अन्तरगली 'नृत्यशाला' कही, कल्पवासिनी देवी नाचत हैं सही ।
एकसहस चौबीस एक पारस भनो,चार पार्श्व के जोड़ जान कितने गनो।।
भये हजार सु चार छियानवे जानिये, चार दिशा के जोड़ इकट्ठे मानिये।
सोलह सहस सु धार तीनसौ सारजू,गिन चौरासी सरब परम सुखकारजू।।

ॐ ह्रीं कल्पवासिनीनृत्ययुक्त-चतुर्थान्तरवीथिकायां पूर्ववत् नृत्यशालासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सवैया इकतीसा छन्द)

छटई जु अन्तर गली के विषें जान भई,
नाट्यशाला बत्तिस विराजत विशाल जू ।
सोहत सु पचखने नृत्ये करें ज्योतिषिनी,
नानाविध गान करें देत समताल जू ।।
बत्तिस हजार सात सै सुरीं विलोक वीर,
नाचत जु अड़सठ गावत सु ख्याल जू ।
वर्णन करो बनाय नृत्यशाला को सु गाय,
परम सु प्रीतिलाय भाखत सु लाल जू ।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत्नृत्यशालयुक्तषष्ठान्तरवीथिकासंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सोरठा

नृत्य करें हरषाय पैंसठ सहस सु पाँच सौ ।
छत्तिस सुरी सु गाय चौंसठ शाला के विषैं ।।

ॐ ह्रीं प्रथमचतुर्थमार्गस्थ-अन्तरवीथिकायां चतुःषष्ठि नृत्यशालासहितसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

अडिल्ल

फिर सिवान पर चढ़ि सुरपति तहँ पेखिये,
धुलिसाल सु कोट नैन भर देखिये ।
'विजै' नाम दरवाजे भीतर जाय के,
पूजत मानस्तम्भ सहज सुख पाय के ।।

पूर्वदिशायाः मानस्तम्भस्थित जिनेन्द्रप्रतिमा पूजा

दोहा

मानस्तम्भ सु मूल में प्रतिमा श्री भगवान् ।
दे प्रदक्षिणा तीन जो पूजत इन्द्र महान् ।।

अडिल्ल

मानस्तम्भ अनुपम सुन्दर सोनो,
मानरहित सब होंहि देखि मन-मोहनो ।
पूरब दिशा कों जानि परम सुखदाय जू,
पूजत मनवचकाय भविक सुख पाय जू ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भस्थितजिनप्रतिमा अत्रावतारावतरत संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टक (अडिल्ल छन्द)

पद्म-द्रह का नीर सु उज्ज्वल लीजिये,
सन्मुख हो जिनराज धार शुभ दीजिये ।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये,
नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः जलं ।

चन्दन केशर गारि कपूर मिलाइये,श्रीजिन चरण चढ़ाय परमसुख पाइये ।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः चन्दनं ।

चन्द्रकिरण-सम उज्ज्वल तन्दुल पावने,पुंजधरों जिनअग्र परम मन-भावने।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः अक्षतं ।

कमल-केतकी-बेल-चमेली वास हैं,श्रीजिन के पद-पूज काम सब नाश है।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं ।

गोझा-फेनि-सुहाल सु मोदक साजहीं,पूज जिनेश्वरपांय क्षुधा-दुःख भाजहीं।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः नैवेद्यं ।

मणिमय दीपक जोय सु जगमग जोति हैं,
मोह-तिमिर को नाश सु जै-जै होति है ।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये,
नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः दीपं ।

धूप सुगन्ध सु लेकरि जिनपद सेइये, अष्टकर्म हों नष्ट अग्नि में खेइये ।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः धूपं ।

श्रीफल-लोंग-सुपारी-पिस्ता लावहीं,प्रभुके चरण चढ़ाय सो शिवफल-पावहीं।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये, नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः फलं ।

जल-चन्दन इत्यादिक अर्घ्य सँजोयकें,
जिन पूजत कवि 'लाल' सु हर्षित होयकें ।
पूरब मानस्तम्भ जिनेश्वर पूजिये,
नाचत गाय बजाय सु हर्षित हूजिये ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं ।

अथ दक्षिणदिशा मानस्तम्भ स्थित जिनप्रतिमा पूजा प्रारंभ

अडिल्ल- मानस्तम्भ अनूपम सुन्दर देखिये,
सुर-नर-मुनि-मन-हरत सु नैनों पेखिये ।
समोसरण में दक्षिण दिशा सुहावनी,
पूजन भविजनवर्ग सु जिनगुन-गावनी ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भस्थितिजिनप्रतिमाः अत्र अवतरतावतरत संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक (सुन्दरी छन्द)

सरस उज्ज्वल नीर सु लीजिये, धार श्री जिनचरण सु दीजिये ।
त्रिविध योग सु उज्ज्वल हूजिये, थम्भ-मानस दक्षिण पूजिये ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः जलं ।

मलयसार सु केसर गाारिये, पूजि जिन भवदाह-निवारिये । त्रिविध.

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः चन्दनं ।

चन्द्र-ज्योति-समान सु अक्षतं, पुंज देत अखयनिधि-कारणम् ।
त्रिविध योग सु उज्ज्वल हूजिये, थम्भ-मानस दक्षिण पूजिये ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः अक्षतान् ।

कमल-कुन्द-गुलाब सु लाइये, मदन-नाश सु हर्ष उपाइये । त्रिविध.

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं ।

सरस मोदक व्यंजन साजहीं, छुधारोग सु देखत भाजहीं । त्रिविध.

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः नैवेद्यं ।

दीप मणिमय जगमग जोति है, मोहनाशि सु जै-जै होति है । त्रिविध.

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः दीपं ।

अगरु-कुमकुम-गंध मिलावहीं, खेय कर्म सु अष्ट जरावहीं । त्रिविध.

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः धूपं ।

फल सु उत्तम सुन्दर ले धरों,जिनसु पूजत शिवनारी वरों । त्रिविध.
ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः फलं ।
धरत भव्य सु अर्घ्य बनायकें, सफल करत सु नरभव पायकें । त्रिविध.
ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं ।

अथ पश्चिमदिशा मानस्तम्भ स्थित जिनप्रतिमा पूजा

(द्रुतबिलम्बित छन्द)

सरस सुन्दरता कर देखिये, परम पावन सुन्दर पेखिये ।
लसत मानस्तम्भ सुहावनो, दिशि सु पश्चिम में मन भनभावनो ।।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनप्रतिमा अत्र अवतर-अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनप्रतिमा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थित-जिनप्रतिमा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टक

सोरठा- उज्ज्वल नीर सु आन रतन कटोरी में भरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ स्थिति-जिनेभ्यः जलं ।

चन्दन-केशर गारि जिन-पूजत भवतप हरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनेभ्यः चन्दनं ।

तन्दुल चन्द्र-समान पुंज सु जिन-आगे धरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनेभ्यः अक्षतानं् ।

कमल-केतकी आन देखत काम सु थरहरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।
ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनेभ्यः पुष्पं ।

बहुत भाँति पकवान् छुधारोग देखत डरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनेभ्यः नैवेद्यं ।

मणिमय दीप प्रकाश मोह देखि आपहिं डरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनेभ्यः दीपं ।

धूप दशांगसु जान खेवत आठ करम हरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनेभ्यः धूपं ।

उत्तम फल सुखदाय पूजि जिनेश्वर शिव वरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनेभ्यः फलं ।

आठों द्रव्य सु ठान अर्घ्य चढ़ाय सु जग तरों ।
मानस्तम्भ महान् पश्चिमदिशि पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भ-स्थिति-जिनेभ्यः अर्घ्यं ।

अथोत्तरदिशा मानस्तम्भ स्थित जिनप्रतिमा पूजा

दोहा- श्री जिन-मानस्तम्भ के पूजन मन-वच-काय ।
उत्तरदिशा सुहावनी जै-जै-जै जिनराय ।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भस्थितिजिनप्रतिमाः अत्र अवतरतावतरत संवौषट् ।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भस्थितिजिनप्रतिमाः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भस्थितिजिनप्रतिमाः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक (जोगीरासा छन्द)

कंचनझारी उज्ज्वल जल ले श्री जिन-चरण चढ़ाऊँ ।
भावसहित श्रीजिनपद पूजों जनम-जनम सुख पाऊँ ।।
मानस्थम्भ की उत्तरदिश में श्री जिनबिम्ब सुहावें ।

देखत हरष होत भवि-जीवन पूजत सुर शिव पावें ।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

कुंकुम-केशर सरस सुवासी खासी लेकर गारो ।
भव-आतप निर्वारन कारन श्री जिनपद पद धारो ।।मान०

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

मुक्ताफल-उनहार सु तन्दुल कान्ति चन्द्र की धारें ।
पुंज करों जिनवर पद आगे अक्षयपद विस्तारें ।।मान०

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।

कमल-केतकी-बेल-चमेली भ्रमर गुंजारै जा-पै ।
पूजत श्री जिनचरण मनोहर काम न आवै ता-पै ।।मान०

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

फेनी-घेवर तुरत सु घी के लाडू-गोझा लावें ।
रोग-क्षुधा-निरवारन-कारन श्री जिनचरण चढ़ावें ।।मान०

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

मणिमय दीप अमोलक लेकर कनक रकाबी धारों ।
मोहतिमिर के नाशन कारन जगमग जोति उजारों ।।मा०

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

धूप सुगन्ध समूह अनुपम खेय अग्नि में बालों ।
अष्टकरम ये दुष्ट भयानक इनको तुरतहिं जालों ।।मान०

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

लोंग-लायची-श्रीफल सुन्दर पिस्ता जाति घनेरा ।
पूजि जिनेश्वर शिवफल पैगे स्वर्गादिक सुख केरा ।।मान०

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

आइ दरब ले अर्घ्य सँजोयो पूजों श्रीजिन भाई ।
भवसागरतें पार उतारो जै-जै-जै जिनराई ।।मान०

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

मानस्तम्भ की चारों दिशाओं की जयमाल

दोहा

चारों दिशा सुहावनी मानस्तम्भ विशाल ।
सुर-नर-मुनि पूजा करें 'लाल' भने जयमाल ।।

(पद्धरि छन्द)

जय-जय श्री मानस्तम्भ सार जय नमन करों कर-शीश-धार ।
जय-जय ताको वर्णन विशाल सुनतहिं छूटे भवि जगत-जाल ।।
जय प्रथम गली के मध्य जान जय दरवाजे शुभ चार मान ।
जय-जय तँह कोट सु तीन वीर जय तिन पर लहकें धुजा धीर ।।
जय प्रथम कोट दूजा सु ठान जय तीजा कोट कहूं बखान ।
जहँ कोट बीच में भूमि गाय तहँ वने सु वन सुन्दर सहाय ।।
जय कोकिल तिनमें करत शोर जय शोभित शोभा करि सु जोर ।
जय लोकपाल के नगर सार जय-जय शोभित नानाप्रकार ।।
जय आभ्यन्तर तीजा सु कोट जय तीन पीठ सोंहें सु मोट ।
जय त्रय कटनी करि शोभमान वैडूर्य-रतन की कान्ति जान ।।
पहिली दूजी मणिमय विशाल सब वर्ण रतन तीजी दयाल ।
जय वृषभदेव के त्रय विचार ऊँची वसु धनुष सु चार-चार ।।
तेइस जिन के क्रम-हान जान जय चौड़ी तीजी पीठ आन ।
इक सहस धनुष भाषे सु काय जय वृषभदेव के यों बताय ।।
तापर श्री मानस्तम्भ सार शोभित नीचे चौकोर धार ।
जय ऊपर गोलाकार जान जय अत उतुंग देदीप्यमान ।।
जय पहल सहस दो जगमगात जय वज्रमयी नीचे सुजात ।
जय लसें फटिकमय बीचमान वैडूर्य मणीमय ऊर्ध्व जान ।।
जय तापर कमल बनो सरूप जापन कलशा शोभें अनूप ।

जय ध्वजा-दण्ड तापर सुहांय जे जगमग-जगमग लहलहांय ।।
जय घण्टा-चमर सु छत्रजान जय रतनमाल माता प्रमान ।
जय नाना मणिमय शोभकार राजत सो मानस्तम्भ सार ।।
ता मूल सु चारों दिश निहार जिन-प्रतिमा सोहैं परम सार ।
सुरगण पूजत जय-जय उचार नाचत ता थेइ-थेइ हरष-धार ।।
वसु प्रातिहार्य राजत सु पर्म जय देखि तिन्हें नाशें जु कर्म ।
जय पंच रतनमय अति सुरंग जय मानस्तम्भ दिपै अभंग ।।
जय मानो मान रहे न कोय जय मानस्तम्भ विलोक सोय ।
जय मानीजन सब मान छोड़ देखत नावत शिर हाथ-जोड़ ।।
जय तासें मानस्तम्भ नाम पायो सुन्दर शोभाभिराम ।
नव सै नब्बे वसु धनुष लीन चौड़ाई गनि लीजो प्रवीन ।।
छह सहस धनुष ऊँची प्रमान, बारह जोजनतैं लखे जान ।
जय ऐसे मानस्तम्भ सार जय चार दिशा आनन्दकार ।।
ताके चहुँदिश वापी सु चार, जय एक दिशा में एक सार ।
जय उज्ज्वल जल में कमल खिले जय मानो भू के ही नैन खुले ।।
जिन राजविभव दुखन जु सार धारे बहु नैन किये सिंगार ।
तिन कमलन पर अलि रहे छाय मानों भू दृग में अंजन लगाय ।।
जय चारों दिश सोलह प्रमान 'नन्दोत्तर' आदिक नाम जान ।
जय मणिमय पैड़ी लसें सार जय हंसचक्र नाचत सुधार ।
जय तिनको उज्ज्वल जल सु लाय जय पूजत भवि जिनराज-पांय।।
जय तिनके पास सु कुण्ड दोय कंचन-मणि जड़ित-विलोकि लोय ।
जै श्रीजिनवर-पूजन सु जाँय ते पग धोवत आनन्द पाँय ।
इक वापी-संग कहे सु गाय दो कुण्ड जान मणिमय सुहाय ।।
जय जग इह वर्णन करो सार कवि कौन लहै जिन-विभव-पार ।
पूरबदिश वर्णन कियो एम दक्षिण-दिश लखियो भव्य तेम ।।

पश्चिम-उत्तर यों हीं बखान चहुँदिश चहुँ मानस्तम्भ जान ।
पर तुच्छबुद्धि कवि 'लाल' पाय जै-जै-जै-जै जिनमाल गाय ।।
उपदेश दयो सब सुख जु राय तब 'लाल' कवी भाषा बनाय ।

दोहा- श्री जिन मानस्तम्भ की गुणमाला सुविशाल ।
जोनर पहिरें कंठ में दिव शिव पावें हाल ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्सम्बन्धिनीभ्यः मानस्तम्भ-स्थित जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

अडिल्ल- जो बाँचैं यह पाठ सरस मन लायकें,
सुने भव्य धरि ध्यान सु मन हरषायकें ।
धन धान्यादिकपुत्र पौत्र सम्पति धरें,
नरसुर के सुखभोग बहुरि शिवतिय वरें ।।

इत्याशीर्वादः ।

प्रथम प्रसाद भूमि पूजा

(सुन्दरी छन्द)

प्रथम भूमि गली की जानिये तँह सु मानस्तम्भ प्रमानिये ।
तासु बाँई दाहिनी ओर जू सरस दरवाजे शुभ जोर जू ।।
जान आभ्यन्तर अन्तर गली प्रथमभूमि महाछवि-सौं रली ।
भूमि चैत्य सु मन्दिर की कही परम सुन्दरता कवि बनि रही ।।

ॐ ह्रीं प्रथम-गलीद्वारोभयपार्श्वभागे अन्तर्गलीमध्ये चैत्यमन्दिरस्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दोहा- प्रथमकोटवेदी प्रथम, दो-दो भाग बखान ।
चैत्यभूमिता बीच में बाइस भाग-प्रमान ।।

ॐ ह्रीं सालवेदी-चैत्यमन्दिरभूमि-वलयव्यास-संयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

(मदअवलिप्तकपोल छन्द)

पाँच-पाँच मन्दिरन, बीच जिनमन्दिर जानो ।
प्रथम जानि आग्नेय, सु नैर्ऋत दूजा आनो ।।
वायव अरु ईशान, चार विदिशा सु बखानों ।

इन ही में जिनभवन, जजें सुर शिवसुखदानो ।।

ॐ ह्रीं चतुर्विदिशासु पंच-पंचमन्दिरमध्य-जिनमन्दिरसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सोरठा- तासु भूमि को जान वलय व्यास सु विचार णू ।
वायव भा बखान भाषो जिन सुखकार णू ।।

ॐ ह्रीं वायव्यदिशायां वलय-व्याससंयुक्त चैत्य भूमि संयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

चैत्यभूमि मन्दिर सु तनी तुम जानियो, बनी बावड़ी तालवृक्ष परमानियों ।
नानाविध रचना करि शोभित भूमि णू, देवी-देव-विद्याधर छाये झूमि णू ।।

ॐ ह्रीं सरोवर-वापिका-ताल-वृक्षयुक्त-चैत्यभूमि-मन्दिरसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सर-सरोवर सार वापिका पेखिये, तिन में बने सिवान सु नैनन देखिये ।
आभ्यन्तर वापी के ऊपर जानियो, बनी बैठकें सुन्दर परम प्रमानियो ।।

ॐ ह्रीं चैत्यभूमि-सरोवर-वापिका-सोपान-विष्ठरसंयुक्ते समवसरणे स्थिताय जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वापी के चौकोने थम्भ सु चार जू,
ताके ऊपर छतरी शोभादार जू ।
शिखर-बन्द कलशा सु ध्वजा लहकें तहां,
मन्द पवन मिरदंग पाय नाचें जहां ।।

ॐ ह्रीं वापिकायाः कोणस्थ-स्तम्भेषु शिखर-ध्वजा-कलशयुक्त-चैत्यमन्दिर स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

नानाविध के वृक्ष बद्ध-श्रेणी कहे,
छह ऋतु के फल-फूल बहुत सो लहलहे ।
मनहुँ जिनेश्वर-चरण पूजिवे कों चले,
ऐसी शोभा लिये सरस सुन्दर रले ।।

ॐ ह्रीं षड्ऋतु-फलपुष्पयुक्तश्रेणीबद्धवृक्षचैत्यमन्दिरस्थ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जिन वृक्षन की शाखा सुन्दर सारजू,मन्द-पवन को पाय परमहित धार जू।
नम्रीभूत सु भई मनो नाचें सही, शोभें वृक्ष महान् सु सुन्दरता लही ।।
ॐ ह्रीं चैत्यभूमि-वृक्षतलेषु अनेकशिलासु दिगम्बरमुनिसमूहसहित-चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कैसे हैं मुनिराज दया के धाम जू, संसारी जो भोग-त्याग अभिराम जू ।
परम-उदासी-दशा धरें जो जनिये, देखि दशा वैराग्य जगे परमानिये ।।
ॐ ह्रीं चैत्यभूमि-दिगम्बर-मुनिसंयुक्त-चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

ऐसी शिला विशाल सुथिर हैं तासु पै,निजआतमको दर्शन देखत जासु पै।
जीवन-समूहन कों सो धरम बतावते, अनागार-सागार भेद द्वै गावते ।।
ॐ ह्रीं चैत्यभूमिशिलासु द्विविधधर्मोपदेशक-दिगम्बरर्यतिसंयुक्त-चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

करमपुंज छय करें महामुनिराज जू,
तिन वचनामृत सुने सु आतम-काज जू ।
तुरत जगे वैराग्य सु दरश विशाल जू,
ऐसे श्री मुनिचरण नमें कवि 'लाल' जू ।।
ॐ ह्रीं चैत्यभूमिकर्मविध्वंसकदिगम्बरयतिसंयुक्त-चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

सरस शोभा करि सो जानिये पांच मन्दिर परम प्रमानिये ।
बनि रहीं तिनमें गोखें तहाँ लसत छज्जा थम्भ सु हैं जहाँ ।।
बँधीं बंधनवार विशाल जू लसत मोती रतन सु माल जू ।
भरि रहे सुर विद्याधर जहां राग-रंग अनेक करें तहाँ ।।
ॐ ह्रीं अनेकशोभासंयुक्तचैत्यभूमिस्थ-पंचमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

बनि रहे चित्राम सु सार जू पाँच मन्दिर में सुखकर जू ।
भूमि-मन्दिर को वर्णन कहो सार-सुन्दरता लखिकें गहो ।।
ॐ ह्रीं अनेकरचनासंयुक्त-चैत्यभूमिमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

आग्नेयदिशा चैत्यभूमिमन्दिर जिनस्थापना

(सुन्दरी छन्द)

प्रथम भूमि सु मन्दिर की कही जानि दिश आग्नेयविषैं सही ।
पूजिये जिन-बिम्ब सु जानिके करहु आह्वनन विधि ठानिके ।।

नैर्ऋत्यदिशा चैत्यभूमिमन्दिर जिनस्थापना

अडिल्ल- प्रथम भूमि मन्दिर तनी शोभे जहाँ,
दिशा जानि नैर्ऋत्य परम सुन्दर तहाँ ।
श्री जिनवर के बिम्ब मनोहर पूजिये,
करहुँ थापना भव्य सु सन्मुख हूजिये ।।

वायव्यदिशा चैत्यभूमिमन्दिर जिनस्थापना

(जोगीरासा छन्द)

भूमि मन्दिरन कर सुखकारी, पहली जानो भाई ।
पूजों वायव दिशा, अनूपम, जिनमन्दिर सुखदाई ।।
श्रीजिनमन्दिर सोहत सुन्दर, सुर-नर-मुनि मिल पूजें ।
आह्वनन करिये मन देकें, श्री जिन-सन्मुख हूजें ।।

अथ ईशानदिशा चैत्यभूमिमन्दिर जिनस्थापना

(गीता छन्द)

अब प्रथम भूमि निहार भविजन, जान मन्दिर सोहनो ।
श्री जिन सु बिम्ब विराजमान सु, ध्यान धर मनमोहनो ।।
पूजों सु मन-वच-काय लाय, दिशा गिनो ईशान जू ।
करों आह्वनन सु सुन्दर, जजों जिन शुभथान जू ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक (मदावलिप्तकपोल छन्द)

हिमवन पर्वत सार, जहाँ यह पदम निहारो,
ताको उज्ज्वल नीर, लाय जिन-सन्मुख धारो ।

भूमि मन्दिरन-तनी, जहाँ जिनभवन विराजें,
पाँच मन्दिरन-बीच, जजों सुर शिवपद-काजें ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

कुमकुम चन्दन सार, तासु में केशर गारों ।
श्री जिनसन्मुख जाय, पूज भवताप निवारों ।। भूमि.

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

देवजीर सुखदास, सरस मुक्ताफल अक्षत ।
अक्षयपद को पाय, सु पूजत हों अघ-गच्छत ।। भूमि.

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।

कमल - केतकी - कुन्द, चमेली-बेला सारं ।
ले गुलाब जिन जजों, तुरत भवि जात सु मारं ।।भूमि.

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

फेनी-गोझा सरस, पुआ धर पापर तात ।
जजों जिनेश्वर-चरण, क्षुधादिक-रोग नशाते ।।भूमि.

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

मणिमय दीप अमोल, कनकथाली में धारे ।
जगमग-जगमग ज्योति,मोहतम नशत उजारे ।। भूमि.

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

कृष्णागरु-करपूर, कूट धर धूप-दशंगी ।
करम-पुंज जर जाँय, खेयकें धूप सुरंगी ।। भूमि.

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

श्रीफल अरु बादाम-लोंग सुन्दर जु सुपारी ।
जजों जिनेश्वर-चरण, वरों शिवसुन्दर नारी ।। भूमि.

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जल-फल अर्घ्य बनाय, परम उतकृष्ट सु धारी ।
अर्घ्य देहिं कवि'लाल',सु जिनपद जज बलिहारी ।।

भूमि मन्दिरन-तनी, जहाँ जिनभवन विराजे,
पाँच मन्दिरन-बीच, जजों सुर शिवपद-काजे ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

जयमाला

दोहा- चैत्यभूमि मन्दिरन की पूजा भई विशाल ।
जयजयजय सुर करत है, लाल' भनि जयमाल ।।

जय-जय-जय मध्यम सु भूमि, जाम जय जिन मन्दिर चारों खान ।
जय ताके वर्णन बहु-विशाल, सुनियो भवि मन-वच-तन निकाल ।।
जय नील-रत्नमय भूमि सार, जय तापर जिनमन्दिर अपार ।
श्रेणीबँध पाँच कहे विचार, जय बीच तिनेश्वर-भवन धार ।।
जय तुंग भूमि सोहे विशाल, तापर जिनमन्दिर बहु रसाल ।
जय जिनगृह तोरण सहित द्वार, जय तिनके आगे चौक सार ।।
जय लहो सिवान सु शोभकार, जय मणिमय रत्न जड़े निहार ।
जय चार जु दरवाजे अनूप, आभ्यन्तर रचना सुनो भूप ।।
जय पूजक जिनके थित सु थान, वृत्ति रहे जहां मणि रज्यमान ।
जय कोठा तीन दिशा सु जान, जय बारें दश बारह प्रमान ।।
जय तिन पर गुमटीं शोभकार, जय कलशा ता ऊपर निहार ।
जय तापर ध्वजा अनूप सार, लहकें मानों हों नृत्यकार ।।
जय आसपास कोठा सु जान जय, रह्यो बीच में चौक मान ।
ताके सु बीच में पीठ तीन, जिन शिखरबन्ध मण्डप सु कीन ।।
तापर कलशा अरु ध्वजा जानु, जय जगमगात आनन्द-खान ।
जय आभ्यान्तर-मण्डप सु सार, जय तीन पीठ शोभे निहार ।।
जय तापर गन्धकुटी अनूप, जय सिंहासन सोहे सुरुप ।
जय तापर कमल विराजमान, जय सहसपत्र ताके प्रमान ।।

मणिजड़ित सु ज्योति जगी अपार,मनु पूरब दिश रवि-उदय सार ।
जय तापर श्री अरिहन्त देव, शिर तीन छत्र शोभें स्वमेव ।।
जय राजत जिन बहु विभौ धीर, जय तिनकों मेरो नमन वीर ।
जय रतनमाल मोती सु माल, लटके शोभा दीखे विशाल ।।
जय इन्द्रदेव चारों प्रकार, जय पूजे जिनवर हरष धार ।
जय वसुविध पूजा करें सार, जय थेइ-थेइ-थेइ आरति उतार ।।
जय नचें देव-देवी अपार, बाजत समाज आनन्दकार ।
जय सुन-नर-विद्याधर महान्, जय जिन-गुणगान करें महान् ।
जय नानाविद्य चित्राम सार, बनि रहे सु जगमग-ज्योतिकार ।।
कहुँ तेरह द्वीप-तनो प्रमान, कहुँ ढाई द्वीप-तनो सुजान ।।
जय चौ-शत अठवन भवन पेखि,बनि रहे चित्र नयनन सु देखि ।
जय-जय तुम देव दयानिधान, कवि कौन करे ताको बखान ।।
गणधर थुति करत हिये विचार, जपते तुम गुण पावत न पार
जय तुच्छबुद्धि मेरी निहार, बुधिमन्त लोग लीजो सुधार ।।
उपदेश दयो सब सुख जुराय, कवि 'लाल' जीत भाषा बनाय ।

दोहा- श्री जिनमन्दिर भूमि की कही आरती गाय ।
जो नर बाँचे भाव-सों होय जु मंगलदाय ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशा चैत्यभूमिमन्दिरस्थजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

अडिल्ल

जो बाँचै यह पाठ सरस मन लायके,
सुनै भव्य दे कान सु मन हरषायके ।
धन-धान्यादिक पुत्र-पौत्र सम्पत्ति करे,
नरसुर के सुखभोगि बहुरि शिवतिय वरे ।।

इत्याशीर्वादः ।

खातिका भूमि सम्बन्धी वर्णन

अडिल्ल- दूजो गली विशाल भूमि की जानिये,
वाम दाहिनी ओर अन्तरगलि मानिये ।
दरवाजे आभ्यन्तर भूमि सु दूसरी,
नाम'खातिका'जानि स्वच्छ जल-सों भरी ।।

ॐ ह्रीं मार्गे वामदक्षिणापार्श्वे अन्तर्गलिमध्ये द्वितीयखातिकाभूमि-संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तासु वलय अरु व्यास भाग बाईस जू,
भाषो श्री सर्वज्ञ परम जगदीश जू ।
खाई रतनन जड़ित शिवानन करि रली,
शोभा सहज बखान कहे कवि को बली ।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशतिभागवलय-व्याससंयुक्त-द्वितीयखातिकाभूमिरत्नसोपान- संयुक्तसमवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

पहलो दूजी वेदी बीच सु जानिये,
भरी खातिका उज्ज्वल जल परमानिये ।
तिन दोऊ वेदिन की परिधि-विषें लहे,
शोभा बहुत विशाल सु दरवाजे कहे ।।

ॐ ह्रीं प्रथमद्वितीयपरिधौ अनेकलघुद्वारसंयुक्तसमवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

लघु द्वारे बहु शोभें सुन्दर सार जू,
छोटी-छोटी गुमठीं ऊपर धार जू ।
तिन पर कलशा शोभें परम विशाल जू,
तिन पर लहकें ध्वजा कहें कवि'लाल' जू।।

ॐ ह्रीं सकल-शतक्षुद्रगुमठी-संयुक्तसमवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

लघु सु दरवाजे आगे कही, खातिका ऊपर पुल है सही ।
सहज शोभा सो पुल देत है, रतनजड़ित सु उज्जवल खेत है ।।

ॐ ह्रीं लघुद्वारागेरलखचित-सेतुयुक्त-खातिकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

(अडिल्ल छन्द)

चैत्य सु मन्दिर भूमि गगन तातें लहें, भूमि खातिका-विषें जाय आयो चहैं।
ता वेदी के द्वारन में ह्वैकें कही, पुल के ऊपर जाय परमसुख सों सही ।।
सोरठा- वेदी कोट-मँझार द्वार बने लघु -बहुत हैं ।
तिन द्वारन ह्वैं जाँय गन्धकुटी-लग देव नर ।।

ॐ ह्रीं चैत्यभूमेः अग्रे वेदिकालघुद्वारसेतुमार्गेण सुगन्धकुट्या भूमिपर्यन्त- सुगममार्गसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

अडिल्ल

दूजी वेदी दरवाजे में जानिये,
निकसें सो नर देव परमसुख मानिये ।
ऐसे सो अन्तर गलियन में होयकें,
चले जाँय सो गन्धकुटी लखि जायकें ।।

ॐ ह्रीं द्वितीयवेदिकाद्वारमध्यतः गन्धकुटीपर्यन्त-सुगममार्गसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

पुल के ऊपर बैठक बहुत बनी सही,
दोऊ तरफा जानि परम सुख की मही ।
तिन पर गुमटी कलशा कंचनमय कहे,
तिनपर ध्वजा विशाल सुन्दर लहलहे ।।

ॐ ह्रीं सेतोः उपरि उभयपार्श्वे कलश-ध्वजा-बहुशिखरयुक्त-बहुविष्ठरसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सोपवान दल-परदा करि शोभैं तहीं,
नानाविध अभिराम चित्र अंकित जहीं ।
ऐसी बैठक बनी परम छवि सो लहे,
झलकें खाई नीर-विषैं दुति को कहे ।।

ॐ ह्रीं सेतोः उपरि अनेकविष्ठरसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

उदधि क्षीर समान सु नीर जू, सरस खाई नीर गहीर जू ।
लसत हैं नौकायें सार जू, बहुत छोटी-बड़ी सु धार जू ।।

ॐ ह्रीं अनेकलघुविशालनौकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

बने बँगला तिन ऊपर सही, सुभग छतरी मनमोहें वही ।
। सिंह-हय-गज आदिक मुद्रा कहे, रतनजड़ित पहुम छवि को लहे ।।

ॐ ह्रीं यवनिशोभाशोभितनौकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिन सु नौकाओं में सुर जानिये, सुभग विद्याधार परमानिये ।
बजत साज सु जिनगुण गावते, करहिं नृत्य सु पुण्य उपावते ।।

ॐ ह्रीं जिनगुणगायकदेवविद्याधरयुक्तनौकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

बैठ सुर सु नौकाओं में तहाँ, सहज दौड़ा दौड़ि करें जहाँ
दोय पार सु खाई की कही, चलत भव्य सु आनंद-सौं सही ।।

ॐ ह्रीं खातिकासु अतिशीघ्रगामिनौकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(मदअवलिप्तकर्णाट छन्द)

तहां नृत्य अरु गान, करैं सुरा बहुविधि भाई ।
कहीं सु स्वच्छ तरंग, बहुत शोभा अधिकाई ।।
शोभा बहुत विशाल, धन्य जे नयनन पेखें ।
श्री जिन पुण्य महान् जान 'कवि लाल' सु देखें ।।

ॐ ह्रीं अनेकातिशययुक्त-पुण्यसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तृतीय पुष्पवाटिका भूमि वर्णन प्रारम्भ

अखिल तीजी भूमि सजी बने बाँई ओर जू,
और दाहिनी ओर अन्तर मलि ओर जू ।
दरवाजे आभ्यन्तर वेदी बनी,
भाग चार की जानि बनी सुन्दर खरी ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमिस्थितदेवादिनिर्मितचतुर्थवीथीप्रथमदिशाविदिक्-संयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

और दूसरो कोट बहुत सुन्दर बनो,
चार भाग परमान लिये शोभा घनो ।
विदिशा में पहिचान जानके देखिये,
तीजी भूमि सपुष्प-वाटिका लेखिये ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमि चतुर्थभागद्वितीयसालसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

भूमि तीसरी कोट वलय अरु व्यास जू,
भाग चवालिस जान परम सुखकार जू ।
तहँ नाना-परकार सु फुलवारी बनी,
ताको वर्णन सार सुनो चित दे गुनी ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमि-चत्वारिंशद्भाग-वलयव्यासपुष्पवाटिकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

भाग चवालिस में फुलवारी जानियो,
नानाविध के पुष्प-वृक्ष मन आनियो ।
तिनकी सुरभि-प्रवाह पाय अलि आइयो,
विषयशक्ति परमान सु मदकर छाइयो ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमि-चत्वारिंशद्भागपुष्पवाटिकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सो फुलवारी ऐसी विध-सों देखिये, भूमि तीसरी अन्तरगली सु देखिये ।
प्रथम जान दरवाजों ताको लीजिये, ताके आगे भूमि सु सार गनीजिये ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ अन्तर्गल्याःद्वाराग्रे रम्यभूमिसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

रौंस-तने चौतरफा दरवाजे कहे, शोभें सार उतुंग सहज शोभा लहे ।
तिन पर गोखें सार सु तहिरी जानिये,ऊपर कलशा ध्वजासहित परमानिये।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौपुष्पवाटिका चतुर्दिसु अनेक रचनायुक्त-चतुर्द्वार-संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

चली रौंस चौतरफा बीच चबूतरा,चार ओर सोपान जान मणिमय खरा ।
तापर बारहदरी लहें शोभा खरी, ऊपर गोखें सार जु सुन्दरता भरी ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौअन्तर्गल्याःद्वाराग्रे ससीमद्वादशद्वारीयुक्त-चतुःचतुष्क-संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

बन रहे कलशा तिन पर तहां, जानियो सुन्दर सु ध्वजा जहां ।
चार कोण सु खम्भा चार जू, बन रहे बंगला सुखकार जू ।।

ॐ ह्रीं अनेकप्रकोष्ठयुक्ततृतीयभूमिसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सुभग कलशा ता-ऊपर कहे, परम सुन्दर मण्डप बन रहे ।
रहे है तहँ अलिगण आयके, सहज सार सुगन्ध सु पायके ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमि-पुष्पवाटिका-मण्डपसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

रौंस चौतरफा ऐसी बनी, रतनजडित सु क्यारी है घनी ।
बीच में सुरवृक्ष सु फूल के, बन रहे सुन्दर बिन शूल के ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमिरत्नखचितसीमाचतुरालवालसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

कहुँ सु 'वेला' सुंदर देखिये, कहुँ सु सार गुलाब सु पेखिये ।
कहुँ 'गुलमेंहदी' शोभा लही, कहुँ चमेली फुल्लित है सही ।।
कहुँ सु 'गेदा' सुन्दर सार जू, खिल रहे जु हजारों द्वार जू ।
फूलियो 'मचकुन्द' सुहावनो, 'केवरो' मँहके मनभावनो ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ अनेकपुष्पयुक्तपुष्पवाटिका संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

सरस 'मरुआ' नैन निहारिये, 'कुन्द' 'गुलतुरा' सु विचारिये ।
सरस 'पाडल'और'जुही'की, 'सेवती' फुलवारि जु बन रही ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ अनेकपुष्पयुक्तवाटिकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

फूल उत्तम जो जग में कहे, सुरभिता करि लीन जु लहलहे ।
फैलियो जसुगन्ध दिशा दशों,करत क्रीड़ा देखि जु मन बसों ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ देवादिक्रीड़ायुक्तपुष्पवाटिकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

रौंस के दोऊ तट जानिये, वृक्ष केला के परमानिये ।
सहज श्रेणीबद्ध चले गये, सघन बंगला-लों चहुँदिश गये ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ सीमातट-श्रेणीबद्धकदलीवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्रायअर्घ्यं।

रौंस दाहनी बाईं ओर जू, सरस सुन्दर वृक्ष सु जोर जू ।
लग रहे सु 'अनार' निहारिये, 'आम'-'नारंगी'-फल धारिये ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ सीमायाः वामदक्षिणभागयोः अनेकवृक्षफलपुष्पसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सुभग बिल्लुओं की पंक्ति कहो, सुभग 'संतरा' फलियो सही ।
'नारियल' सु 'छुहारे' के कहे, 'आमिली' 'जामुन' झुक लहलहे ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ सीमापार्श्वद्वय-निम्बुक-सगंलाम्रमुखवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जान तरु 'सीताफल' सोहने, 'नायफल' 'बादाम' सु मोहने ।
और वृक्ष अनेक सु जानिये, बीच में बँगला परमानिये ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ अनेकरचनासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(भुजंगप्रयात छन्द)

सुनों रौंस की चार विदिशा जु माँही, बनी वापिका तीन सुन्दर सुहायीं ।
बनी सार बैठक सु मीखें विराजें, लसें तुंग कलशा ध्वजा सार छाजें ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ सीमाचतुर्विदिशासु वापिका-सरोवर-संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

लसें सार झालरि बँधी रत्नमाला, धरें कान्ति भारी सु सुन्दर विशाला ।
भरी नीर उज्ज्वल मनो दूध-धारा, लसें कुन्ज के फूल सुन्दर अपारा ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ वापी-सरः-संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तहां रत्न मणिमय बनी पैरकारी, रहीं वृक्ष की झूमि शाखा विचारी ।
तलें सार सुन्दर शिला शुद्ध सोहें, विराजें मुनी तास पै भव्य मोहें ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ वापिका-प्रमुखस्थल-विराजित-संयमिसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

धरें जोग भारी अनागार धीरी, वरें मुक्तिनारी सु सोहें शिला-पै ।
चले भव्य आवें मुनीधर्म गावें, भले भव्य धावें सुनें धर्म ता-पै ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ धर्मवृष्टिकारकदिगम्बरमुनिसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

अब सु बँगला को वर्णन सुनो, तीन योग सुथिर करके गुनो ।
चार दिश प्यारे शुभ जानिये, लटकते गुच्छा परमानिये ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ मनोहरपुष्पोष्ठसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

रतनमाल सु मोतीमाल जू, बांध के सु झकाझक लाल जू ।
बन रहीं झँझरी सुखकार जू, परम सुन्दरता नित धार जू ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ धर्मोपदेशकयतियुक्त-पुष्पोष्ठसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

चन्द्रकान्त-शिला तहँ देखिये, मुनि सु-ध्यान धरें तहँ पेखिये ।
करें भव्यन को उपदेश जू, नमत आय सु देव नरेश जू ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ चन्द्रकान्तशिलोपरि-ध्यानस्थ-यतिसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जान आभ्यन्तर बँगला-विषें, देव-विद्याधर बैठे दिखें ।
तहँ बाजत साज समाज सो, करत नृत्य सु जिन गुणगान सो ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ देवीदेवनृत्ययुक्त-प्रकोष्ठसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

देव रासन पर इत-उत फिरें, परम सुन्दरता तन पै धरें ।
सहज पुण्य सु उत्तम पायकें, करत जिनदर्शन इत आयकें ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ देवक्रीडायुक्तसीमासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

सुभग बेलन के मण्डप तने, वृक्ष श्रेणीबद्ध खड़े घने ।
एक फुलवारी वर्णन कह्यो, अन्य तीनों में यों ही अह्यो ।।
बहुत फुलवारी ऐसी सही, आसपास सु विदिशा में कही ।
अन्य पुण्य सु जिनवरदेव को, लाल जान सु कीजे सेवको ।।

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ अनेकरचनासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

चतुर्थ भूमि वर्णन प्रारम्भ

(अडिल्ल छन्द)

चौथी गली विशाल सु नैनन देखिये, वाम सु दक्षिण अन्तरगली सु पेखिये।
तहँ दरवाजें तुंग सु सुन्दर जानिये, सुभग नाट्यशाला जु आगे मानिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थवीथिकायां वाम-दक्षिणान्तर-वीथिकाद्वारसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तहां नाट्यशाला सुन्दर सु विचारिये, नाचें देवी-देव हरष उर धारिये ।
एक नाटयशाला में बतीस सु जानिये,बने अखाड़े सुभग नृत्य परमानिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ सुभगनाट्यशालासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

एक अखाड़े सुरीं बतीस नचें खरीं,
बजें बीन मिरदंग सु थेइ-थेइ धुनि खिरी ।
श्री जिन के गुणसार गावतीं भाव-सों,
हाव-भाव बहु करें धरें पग चाव-सों ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ द्वारे नाट्यशालासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

ताके आगे कोट दूसरी जानिये, भाग चार परमान सु मन में आनिये ।
तीजो वेदी सुभग सु नैन निहारिये, भाग चार सौ परम उर धारिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ तुर्यभागप्रमाणद्वितीयदुर्गतृतीयवेदिकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिन दोउन के बीच सु विदिशा में कही,
चौथी उपवनभूमि जान सुन्दर सही ।
वलय व्यास के भाग चवालिस लीजिये,
ताके आगे वर्णन और सुनीजिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ द्वितीयदुर्गतृतीयवेदिका-चत्वारिंशद्भागोपवनसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

जान दिश 'आग्नेय' सु हेत है, वन अशोक महाछवि देत है ।

दिश सु 'नैर्ऋत' देख विचारिये, सप्तवर्ण सु वन मन धारिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ 'आग्नेयदिशि' अशोकवनेन, 'नैर्ऋतदिशि' सप्तपर्णवनेन संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दिश सु 'वायव' में चम्पक कहो, आम्रवन 'ईशान' सु दिश लहो ।
वृक्ष और अनेक तहाँ घने, सहज शोभा कर मण्डित ठने ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ वायव्यदिशायां चम्पकवनेन, ईशानदिशायाम् आम्रवनेन संयुक्तसमवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वृक्ष जाति अनेक सु देखिये, भूप-वृक्ष सु चार विशेषिये ।
गिन अशोक सु चम्पक दूसरो, सप्तपर्ण सु आम्र लसे खरो ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ अशोक-चम्पक-सप्तपर्ण-रसालवन-मध्यस्थ-भूपवृक्ष संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सहज शोभा वन में जानिये, लसत मन्दिर वापी आनिये ।
सुभग पर्वत-ताल-विताल जू, करत क्रीड़ा देव सु 'लाल' जू ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ अनेकरचनायुक्तचतुर्वन संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

भूपवृक्षन की शोभा सुनो, बने हैं जा विध सेती भनो ।
वन अशोक सु बीच विशेखिये, लसत बारहदरी सु देखिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ अशोकवनेद्वादशद्वारीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दर सु बारह ऊपर जानियो, बन रहीं बैठक परमानियो ।
लसत कलशा और ध्वजा कहीं, बन रही सुन्दर शोभा सही ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ अनेकरचनायुक्तद्वादशद्वारी संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिन सु बैठक की गोखें कहीं, सुभग दर-परदा शोभा लहीं ।
रतनमाल सु मोतीमाल जू, झकमकात सु जगमग लाल जू ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ द्वादशद्वार्याः उपरि अनेकरचनायुक्त-त्रियलगवाक्ष संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

अडिल्ल- तिन गोखिन में सुर विद्याधर जायके,
बैठत हर्ष बढ़ाय सु जिनगुन गायके।
अब सो वर्णन और सुनो न विलोकिये,
सोगत्य सु लगाय जु मन में धोकिये।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ अशोकवने द्वादशद्वार्याः उपरि देवाद्यधिष्ठित गवाक्ष संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

(सुन्दरी छन्द)

बन रही बारहदरि सार जु, तास आभ्यन्तर सु विचार जु।
चौक-बीच सु कोट जुतीन जु, बीच पीठ सु तीन नवीन जु।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ द्वादशद्वार्याः आभ्यन्तरे दृग्गत्रयमध्ये पीठत्रय संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

तीन पीठ सु ऊपर राजई, भूपवृक्ष अशोक विराजई।
सरस सीधे वृक्ष सु जानिये, परम सुन्दरता परमानिये।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ जिनदेहप्रमाणतः द्वादशगुणात्तुंगाशोकवृक्षयुक्त-पीठत्रय संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

फिर सु कैसो वृक्ष अशोक है नयन देख सु भाजत शोक है।
मूल में हीरा सु जड़े सही, हेममय सुन्दर शाखा कही।।

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ विविधशोभायुक्ताशोकवृक्ष संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

पत्र पन्ना के रँग जानिये, लाल फूल खिले परमानिये।
फल महारमणीय सुहावने, झुक रहे सु सरस मनभावने।।

ॐ ह्रीं विविधशोभायुक्ताशोकवृक्ष संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

(भुजंगी छन्द)

लखो सार विविधि वृक्षसार, गणी भूप वृक्ष सुशोभा अपार।
लसें चार वन मानक ऊपर सु, भाखे सोई भूपवृक्ष भाले इन्द्र राखे।।
लसें सार शोभा सु देखो निहारि, भाजें पाप ताकि लहे सौख्य भारी।

करे देव पूजा भलीभाँति भाई, जजे लाई जी धन्य नर सो कहाई ।।
ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ चतुर्वनेषु चतुर्भूपवृक्षशोभा संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं

अशोक वृक्ष पूजा प्रारम्भ

(सुन्दरी छन्द)

वन अशोक मन्नोछवि देत है, सकलजीव तमो सुख-हेत है ।
भूपवृक्ष अशोक सुहावनो, जिन सुपूज परमसुख पावनो ।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षस्थ जिनप्रतिमा: अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

द्रहनीर निर्मल परम पावन, कनक-झारी में भरें ।
जिनराज-चरण-प्रक्षाल भविजन, जन्म-मरण-व्यथा हरें ।

'आग्नेय' दिशा अनूप सोहत, वन अशोक सुहावनो ।
तहँ भूपवृक्ष अशोक जानो, पूज जिन निज-अघ-हनो ।।

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

कर्पूर केशर मलय घिसकर, सुरभि दशदिश में भई ।
श्री जिन सु पूजत पूज हूजत, भव सु दाह विलय गई ।। आ.

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः सुगन्धं ।

अति सरस तन्दुल चन्द्र-सम वन, श्वेतवर्ण सु लीजिये ।
प्रक्षाल कें प्रासुक सु पानी, पुंज सुन्दर दीजिये ।। आ.

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतानं ।

कमल-केतकी अरु गुलाब सु, गन्ध-महकत लाइये ।
श्री जिन सु अग्र चढ़ाय के भवि, समरबाण विलाइये ।। आ.

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

पकवान नीको शुद्ध घी को, कनकभाजन धारिये ।
श्री जिन चढ़ाय सु गाय जिनगुण, क्षुधारोग निवारिये ।। आ.

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

दीप मणिमय होत जगमग, ज्योति सुभग सुहावती ।
तम मोह-नाश भयो सु पूजत, शची जिनगुण गावतीं ।।आ.

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

कर्पूर अगर सुगन्ध ले वसु, कूट जिनपद खेइये ।
वसु दुष्टकर्म अनादि के ही, दाह शिवसुख लेइये ।।आ.

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

श्रीफल-सुपारी-लोंग सारी, फल-समूह सुलाइये ।
श्रीजिन चढ़ाय सु गाय जिनगुण, मोक्षफल शुभ पाइये ।।आ.

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-नैवज-दीप-धूप-सु खेइये ।
फल लेय अर्घ्य करो सु भविजन, पूज प्रभु-पद सेइये ।।आ.

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवनवृक्षस्थ जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

सप्त पर्णवन वृक्षस्थ जिनपूजा प्रारम्भ

दोहा- सप्तपर्ण-वन सोहनो समवसरण में जान ।
भूपवृक्ष सोइ नाम है, 'नैर्ऋत' दिशा प्रमान ।।

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशि सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः अत्र अवतरतावरत संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वष्ट् सन्निधापनम् ।

अष्टक (त्रिभंगी छन्द)

उज्ज्वल शुभ पानी प्रासुक छानी सुरभि-समानी सुखकारी ।
भरि कंचनझारी जिनपद-धारी जन्म-नशानी हितकारी ।।
श्री सप्तपर्णवन समवसरण-धन नैर्ऋतदिशा सु हूजीजे ।
जय भव-भव शरणं शिवमुख-करणं श्री जिनचरण सु पूजीजे ।।

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

मलयागिरि चन्दन दाह-निकन्दन सहज सुवासी ले हेरा ।
जिनचरण चढ़ायो मन हरषायो दाह मिटायो भव-केरा ।।श्री.

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

सुखदास कमोदं धार प्रमोदं प्रासुक जलसों प्रक्षालों ।
उज्ज्वल शुभ कीजे पुंज सु दीजे जिन पूजीजे अघ टालों ।।श्री.

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।

शुभ फूल सुवासी परिमल खासी चित्त हुलासी कर लावो ।
श्री जिनपद पूजों नर-सुर हूजों काम-नाश दिव शिव-पावों ।।श्री.

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

पकवान सु साजे मोदक खाजे बहुविध ताजे मालपुआ ।
देखत दृग-नारा परम हुलासा ले शुभ खासा सुकृत हुआ ।।श्री.

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

मणिदीप-उद्योतं तम-क्षय होतं जगमग ज्योतं जयकारी ।
मो तिमिर-विनाशे स्व-पर-प्रकाशे ज्ञान सु भासे भवतारी ।।श्री.

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

शुभ गन्ध दशों-कर अग्निमाँहि-धर अष्टकर्म-हर धर खेवो ।
अतिपुण्य कमावो बलि-बलि जावो निज दरशावो प्रभु सेवो ।।श्री.

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

ले श्रीफल भारी लोंग-सुपारी-दाख-छुहारे ले आवो ।
जिनचरण-चढ़ावत जिनगुण-गावत ताल-बजावत शिव पावो ।।श्री.

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जल-चन्दनगारं अक्षतधारं पुहुप-चरु-सारं दीप धरौं ।
कवि 'लाल' सु धूपं फल सु अनूपं जज जिनभूपं मुक्ति वरों ।।श्री.

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायां सप्तपर्णवनवृक्षस्य-जिनप्रमिमाभ्यः अर्घ्यं ।

चम्पक वनवृक्षस्थ जिनप्रतिमा पूजा प्रारम्भ

वन मनोहर चम्पक जानिये,
भूपवृक्ष सु चम्पक मानिये ।
दिशा वायव सुन्दर सार जू,
जिन सु पूज भये भवपार जू ।।

ॐ ह्रीं वायव्यदिशायां चम्पकवनवृक्षस्थजिनप्रतिमाः अत्र अवतरतावरत संवौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अष्टक (चाल-नन्दीश्वरपूजा भाषा की)

उज्ज्वल जल सुन्दर लाय वास अनेक लई।
धर मणिमय झारी-माँहि अघहर धार दई।
चम्पकवन सोहे सार सुर-नर गुण-गावें।
वायवदिश सुभग सुहाय पूजत शिव-पावें।।

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः जलं।

मलयागिरि चन्दनवास फैली सुखकारी।
नाशत भवताप सु त्रास जय जय बलिहारी।।च.

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं।

उज्ज्वल अक्षत सु प्रक्षाल पुंज करो भाई।
अक्षयपद हो तत्काल पूजत जिन राई।।च.

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान्।

बहुविध उत्तम ले फूल जिनपद पूजीजे।
रहे कामबाण नहिं मूल सन्मुख हूजीजे।।च.

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं।

फेनी-घेबर बहु आनं मोदक ले ताजे।
पूजत जिनराज सु पाँय रोग-क्षुधा भाजे।।च.

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं।

दीपक मणिमय प्रकाश जुगमग ज्योति धरे।
भयो मोह-अंधेरो नाश ज्ञान-प्रकाश करे।।च.

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः दीपं।

करपूर सु अगुरु मँगाय धूप सु खेईजे।
हर अष्टकर्म दुखदाय जिनपद सेईजे।।च.

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः धूपं।

श्रीफल-बादाम सुलाय पिस्ता धोय धरों ।
फल पूज सु जिनगुण गाय श्रीधर मोक्ष वरों ।।च.

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जल-चन्दन ले इत्यादि वसुविध अर्घ्य करों ।
कवि'लाल'सु पूजत पाँय श्रीजिन मुकतिवरों ।।
चम्पकवन सोहे सार सुर-नर गुण-गावें ।
'वायव' दिश सुभग सुहाय पूजत शिव-पावें ।।

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

आम्रवनस्थ जिनपूजा प्रारम्भ

अडिल्ल- शोभत वन सु विशाल आम्र को जानिये ।
भूपवृक्ष तँह आम परम परमानिये ।।
तहँ जिन भवन अनूपम शोभित थान जू ।
पूजें सुर-नर आनि दिशा ईशान जू ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि आम्रवृक्षस्थजिनप्रतिमाः अत्र अवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वष्ट् सन्निधापनम ।

अष्टक (सुन्दरी छन्द)

परम पावन नीर सु लाइये धार तीन सु दे हरषाइये ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहने सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः जलं ।

मलय-केशर-गन्ध मिलायके भव सु दाह चढ़ाय बुझायके ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहनो सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः चन्दनं ।

धवल शोभित तन्दुल सार जू करत पुंज अखयपद धार जू ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहने सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः अक्षतान् ।

प्रसव केतकि-चम्पक पावने काम-नाश सु जिनगुण-गावने ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहनो सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः पुष्पं ।

चरु मनोहर सुन्दर देखिये जिन चढ़ाय परमसुख पेखिये ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहनो सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः नैवेद्यं ।

दीप मणिमय सुन्दरता लहे मोह-नाश सु निज-पर को कहे ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहनो सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः दीपं ।

सरस धूप दशांग सु खेइये करम जारि सु जिनपद सेइये ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहनो सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः धूपं ।

फल सु नयनन को प्रियता करें फल चढ़ाय सु शिवफल को धरें ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहनो सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः फलं ।

जल सु आदि गनो फल अन्त जू 'लाल' अर्घ्य चढ़ावत सन्त जू ।
वन सु आम्र जु सुन्दर सोहनो सुर सु पूजत तन-मन-मोहनो ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशायाम् आम्रवनवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाः अर्घ्यं ।

जयमाला

दोहा- चौथी भूमि सुहावनी पूजा भई विशाल ।
शुभ-शुभ शब्द मिलायके 'लाल' भने जयमाल ।।

(पद्धरि छन्द)

जय-जय श्री वृक्ष अशोक जान जय वर्णन ताको हृदय-आन ।
जय वृक्ष अशोक जु दिपे सार सब वृक्षन में भूपति निहार ।।
जय ताकी चारो दिश बखान जिनमन्दिर चार कहे सुजान ।
जय पीठ तीन तापर जु सार शोभे श्री गन्धकुटी विचार ।।

जय ता-बिच सिंहासन अनूप जय तापर कमल रचो सरूप ।
जय तापर प्रतिमा जिन सु देव जय राजत एक करो जु सेव ।।
जय चारों दिश ऐसे सु जान जय श्री अरिहन्त विराजमान ।
जय तीन छत्र शिर शोभकार त्रिभुवन के ईश्वर कहत सार ।।
मोतिन की झल्लरि बहुविशाल जय छत्रन में लटकैं जु लाल ।
जय प्रातिहार्य-वसु दिपें सार तिनकों लख सुर नाचें अपार ।।
जय बड़ी विभूति विलोक देव ता थेइ-थेइ-थेइ-थेइ करत सेव ।
बाजत मृदंग-बीनादि सार जय सब समाज बाजत सु धार ।।
जय चारों दिश फिरिकें सढ़ार जिनराज सुगुण जय-जय उचार ।
जय क्षीरोदधि उज्ज्वल सु नीर झट लाय करत जिन न्हव वीर ।।
जय फिर पूजत वसु द्रव्य लाय जय नृत्य करत जिनगुण सु गाय।
जय-जय परदक्षिण देहि तीन जय चारों दिश थिरकें प्रवीन ।।
जय-जय श्री जिनवर-गुण विशाल तिनकौं मैं नमन करो त्रिकाल ।
तिन आगे मानस्तम्भ सार जय शोभें बहु आनन्दकार ।।
जय-जय मुख इन्द्र करें उचार अस्तुति-जिनराज पढ़ें विचार ।
जय चक्रवर्ति-बलदेव जान जय नारायण-प्रतिहरि प्रमान ।।
जिनशासन में आनन्द-धार परदक्षिण देहि अनेक बार ।
ज्यों मेघ-घटा को देख मोर नाचत ऐसे सुर-नर सु जोर ..
जय हाथ जोर सनमुख सुरेश जिनराज-छवी देखें विशेष ।
दो नैनन तृप्तभयो न इन्द्र तब सहसनेत्र रचियो सुरेन्द्र ।।
जय फिर-फिर जिनको नमस्कार कर गावत जिनगुण हरषधार ।
वह समयो जिन देखो विशाल धनि जीव कहें तिनकों सु 'लाल' ।।
जय या विध पूजत हैं त्रिकाल जय-जय जिन-चरनन नमत भाल।
जय एक अशोक सु वृक्ष-सार ताको वरनन भाषो विचार ।।
ऐसे ही चारों भूप-वृक्ष पूजत मिलिके सुर-नर-प्रतक्ष ।

श्री जिनमहिमा-वर्णन अपार कवि कौन लहे ताको सु पार ।।
पर तुच्छबुद्धि हमने सु पाय जय-जय-जय जिनगुण कहे गाय ।
उपदेश दियो सबसुख जु राय कवि'लाल'भक्त बलि-बलि सु जाय।।

दोहा- चौथी उपवन-भूमि की पूजा अरु जयमाल ।
जो बाँचे मन-लायके पावे शिवपद हाल ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थदिशासम्बन्धि-चतुर्थोपवनभूमिवृक्षस्य-जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

अडिल्ल- जो बाँचे यह पाठ सरस मन लायके,
सुने भव्य दे कान सु मन हरषायके ।
धन-धान्यादिक पुत्र - पौत्र- सम्पति बढ़े,
नर-सुर के सुख भोग बहुरि शिव-तिय वरे ।।

इत्याशीर्वादः ।

पंचम भूमि वर्णन प्रारम्भ

अडिल्ल

भूमि पंचमी गली सु नैनन पेखिये, वाम-दाहिने भाग गली दो देखिये ।
दरवाजे आभ्यन्तर वेदी तीसरी, चार भाग परिमान सु सुन्दरता धरी ।।

ॐ ह्रीं पंचमगल्यां वाम-दक्षिणभागयोः आभ्यन्तरगल्यां चतुर्थभागप्रमाणान्तरवेदिकासंयुक्त समवसरणस्थितजिनेनद्राय अर्घ्यं ।

कोटि तीसरो भाग चार को सार जू,
सुवरण-वर्ण विचार हिये में धार जू ।
तहाँ पांचवीं भूमि महा-सुन्दर कही,
ध्वजा-समूह सु लहकें सुन्दरता लही ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ चतुर्थभागस्वर्णमयमहासुन्दर-तृतीयसालसंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

भूमि पाँचईं भाग चवालिस जानिये,
वलय व्यास पहिचान हिये में आनिये ।
वेदी कोट विशाल महाशोभा-शचो,

नानाविध चित्राम चित्र करिके खचो ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ चतुःचत्वारिंशद्-भागवलयव्यासवेदिका-चित्रसमूह-संयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

समवसरण चित्राम कहीं सु बने सही,
कहिं तीर्थंकर देव भवान्तर शुभ लही ।
इनके चित्र बने सुन्दर सु निहारिये,
झकझकात सुखकार हिये में धारिये ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ समवसरण-शालवेदिकायां-तीर्थकरपूर्वभव-चित्रसंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कहिं जिनमाता सुपने देखें सार जू,
तिनके फल पूँछत पति-सों सुविचार जू ।
कहिं तीर्थंकर पंचकल्याणकरूपजू,
तिनके चित्र-निहार सु परम अनूप जू ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ शालवेदिकाचित्र-संयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

तीर्थंकर को नहुन भयो गिरि पर जहां,
नागदत्त हाथी चढ़ इन्द्र गयो तहां ।
कर जिनवर को नहुन बड़े आनन्द-सों,
नृत्य करत हरषायु सु गावें छन्द-सों ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ जिनस्नपनचित्रसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

इन ही के चित्राम बने तहँ पेखिये, चक्रवर्ति की विभव कहूँ दृग देखिये ।
षड्विध सेनाजाति तने चित्राम जु,सोहं सरस विशाल परम अभिराम जु ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ चक्रवर्तिभव-चित्रसंयुक्तसमवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

नारायण-बलभद्र सु नयन निहारिये, प्रतिनारायण जान परम उर धारिये।
तिनकी बड़ी विभूति और भव पाछिले,इनके भी चित्राम दिखावत हैं भले।।

ॐ ह्री पंचमभूमौशालवेदिकायानारायण-बलभद्रादि-विभवचित्रसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

भोगभूमि त्रय उत्तम-मध्यम जानिये,और जघन्य मिलाय सु हियमें आनिये।
इनमें राजें सार जुगलिये देखिये, ऐसे ही चित्राम मनोहर पेखिये ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ शालवेदिकायां भोगभूमियुगलचित्रसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कल्पवृक्ष दशभेद बने चित्राम जू, कहूं स्वर्ग 'सौधर्म' महा अभिराम जू ।
दूजों लख'ईशान'सहज सुखकार जू,'सनतकुमार-महेन्द्र'स्वर्ग ये चार जू ।।
दो-दो बीच विचार खड़े सुखकार जू, सेवें देवी-देव परम मुद-धार जू ।
तिनको वर्णन सार विशेष सु जानिये,परम-ग्रंथ -सिद्धान्तसार' से जानिये।
ऐसे-मानस्तम्भ'छत्र'शिर तीन जू, सिंहासन जिनबिम्ब विराजत तीन जू ।
रतनन की जंजीर मँजूषा लटकते, तिन मँजूषाविषैं सु भूषण मटकते ।।
तिनमें तीर्थंकर होवत हैं सुखकार जू, इन्द्राणी आभूषण-वस्त्र निहार जू ।
पहिरावत जिनराज हरष उरधारके,श्री जिनरूप-निहार सु नैन विचारके ।
ऐसे भी चित्राम बने तहाँ जानिये, नानाविध सुखकार हरष उर-आनिये ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ प्राक्चतुःस्वर्गमध्य-मानस्तम्भे सुन्दरवस्त्राभूषणयुक्त-मंजूषाद्वययुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कहुँ सागर के बीच सु पर्वत जानिये,बनी कुभोग सु भूमि तहाँ परमानिये।
तहँ के होहैं मानुष-मुख ऐसे बने, हाथी-घोड़ा-मेढ़ा-बैल गिनो घने ।।
इन आदिक चित्राम सु वेदी कोटमें,बने सरस सुखकार सु झलके ओटमें।
वेदी कोट विशाल सु ऊपर जानिये, बने कँगूरा-गुरज परम परमानिये ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ वेदिकाशालकँगूरागुरजादिसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

बनी बैठकें तिहरीं ऊपर पेखिये, तिन में चित्र विशाल बने तहँ देखिये ।
कलशाध्वजा विशाल सु लहकें सारजू,बैठत देवी-देव सु मुख जयकार जू।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ कोटशालवेदिकोपरि देवी-देवयुक्तत्रितल-विष्ठरसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

लसतभूमि ध्वजा की जानिये, धरहिं चिन्ह ध्वजा परमानिये ।
सिंह-हाथी-वृषभ-सु मोर जू, गगनमाला-गरुड़ सु जोर जू ।।
हंस-चक्र सु कमल निहारिये, चिन्ह ये दशभेद विचारिये ।
लहकतीं सुध्वजा सुन्दर तहाँ,कथन कों कवि को समरथ तहां ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ सिंहादिदशभेदचिन्हयुक्त ध्वजासंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

लसत चिन्ह सु एक ध्वजा कहो, एकसौ अरु आठ गिनो सही ।
चिन्ह दश की ध्वजा गिनीजिये, सहस एक असी गिन लीजिये ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ एकदिशासम्बन्ध्यशीत्यधिकसहस्रध्वजासंयुक्त- समवसरण स्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

एकदिश की भाषीं गायकें, चार दिश की जोड़ो ध्यायकें ।
सहस चार सु तीन सौ गाइये, बीस ऊपर गिन मन आनिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्षु त्रिंशतविंशत्यधिकचतुः सहस्रमहाध्वजासंयुक्त-समवसरण स्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दोहा

महाध्वजा जो एक है ताके संग निहार ।
कहीं एक सौ आठ जो छोटी ध्वजा विचार ।।
चारों दिश छोटीं ध्वजा चार लाख मनलाय ।
छयासठ सहस सु पांचसौ साठ अधिक सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासु महाध्वजाभिः सह ४६६५६० लघुध्वजासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेनद्राय अर्घ्यं ।

चार सहस अरु तीन सौ बीस अधिक सब जान ।
महाध्वजा चारों दिशा भाखीं श्री भगवान् ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ चतुर्दिशासु ४३२० महाध्वजासंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

सब ध्वजा गिनियो मन-लायकें लाख चार कही जिन गायकें ।
सहस सत्तर वसु सौ जानिये गिन सु अस्सी ऊपर मानिये ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ चतुर्दिशासु ४७०८८० ध्वजासंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कनक-थम्भ ध्वजा के पेखिये सहज सुन्दरता कर देखिये ।
वृषभजिन के थम्भ जु सार जू गिन अठासी अंगुल धारजू ।।

ॐ ह्रीं वृषभजिनस्य अष्टाशीत्यंगुलप्रमाण-सुवर्णमयध्वजा-स्तम्भसंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तासु ऊपर दण्ड सु मणिमयी धनु पचीस सु अन्तरता लई ।
सहस लहकत ध्वजा सु जानिये करत नृत्य मनों उर आनिये ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ ध्वजासमूहसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(भुजंगप्रयात छन्द)

बनी भूमि सुन्दर ध्वजा की सु जानो, तहां ताल-वापी-सु पर्वत बखानो ।
बनी सार सुन्दर लसैं पैरकारीं, करें देव क्रीड़ा धरें कान्ति भारी ।।
वहाँ वृक्ष जानो फले फूल मानों, झुकी डार आनो भली शोभ-धारा ।
मनो कल्पवृक्षं सु सोहे प्रतक्षं, लखे सौक्ख अक्षं क्षुधा-दोष टारा ।।
तहां मुनि विहारी धरें योग भारी, सु आतम-विचारी भली-भाँति भाई ।
बुरे कर्म नाशी, स्व-पर-ज्ञान भासी,सु आतम-विलासी जगी ज्योति पाई ।।
चले भव्य आवें भली-भाँति ध्यावें, विनय शीश नावें सुने धर्म-वानी ।
कोई ध्यान 'लाल' सु पूजैं त्रिकालं, सु दीखें विशालं भली बुद्धि ठानी ।।

दोहा

पंचम भूमि सुहावनी वर्णन कियो सु धार ।
धन्य सु नरभव 'लाल' जो देखत नयन निहार ।।

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ विविधरचनासंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

समवसरण षष्ठभूमि पूजा प्रारम्भ

अडिल्ल- छट्ठी भूमि गली की बाँई ओर जू,
जान दाहिनी तरफ अन्तरगलि जोर जू ।
दरवाजे आभ्यन्तर भाखे गायके,
बनी नाट्यशाला सुन्दर सुख पायके ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमेःगल्यांवामदक्षिणभागेअन्तरगल्याःद्वारे नाट्यशाला-संयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

आगे तीजो कोट भाग सै चार जू,
चौथी वेदी जान भाग दो धार जू ।।
तास बीच की भूमि चवालिस भाग जू,
वलय व्यास उरआन देख दृग राज जू ।।

ॐ ह्रीं तुर्यभाग-तृतीयसालभागद्वय-चतुर्थवेदिकामध्येचतुः चत्वारिंशद्भाग-वलयव्यासभूमि संयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तीजो कोट विशाल वर्ण कंचन-तनो,
बनो कँगूरा सहज ध्वजा लहकें बनो ।।
बनी बैठकें तिहरी गौख विचारिये,
नाचें देवी-देव हरष उर-धारिये ।।

ॐ ह्रीं विविधरचनायुक्त-तृतीयसालयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

रही बीच में भूमि तासु वर्णन कहो,
चारों विदिशा-माँहि सु वन सुन्दर लहो ।।
कल्पवृक्ष के जान संमूह चले गये,
आसपास चौतरफा सुन्दर शोभये ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमिं परितः कल्पवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कल्पवृक्ष काहे तें नाम सु पाइयो,
जो मनवांछित वस्तु देय हर्षाइयो ।।

कहे सु दश परकार भेद तिनके सुनो,
श्री जिन-पुण्य महान् विभव ऐसो गुनो ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ मनोवांछितवस्तुदायक-कल्पवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

सुभग भाजन एक सु देत है गृह बने दूजो सुख-हेत हैं ।
सुभग आभूषण तीजे दये वस्त्र सुन्दर चौथी तरु लये ।।
पाँचमो भोजन सुखकार जू पेय-वस्तु छठी उर-धार जू ।
जोति जगमग जान सु सातमों सुभग माला देता आठमों ।।
देत बाजे नवमों जानिये देत दीपक दशमों मानिये ।
वस्तु मनवांछित शुभ सार जू देत हैं तरु आनंदकार जू ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ दशप्रकारकल्पवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

लसत वन सुन्दर सुखकार जू कल्पवृक्षन को दिश चार जू ।
बन रहे मन्दिर तहाँ देखिये वापिका अरु ताल सु पेखिये ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ वापिकाद्रहमन्दिरसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(भुजंगप्रयात छन्द)

धरें ध्यान भारी सु आतम विचारी, महापुण्यधारी लसें संयमी जू ।
हनी मोह-फाँसी सदा सौख्य-राशी, स्वपर-भेद-भाषी कषायें दमी जू ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ आत्मध्यानयुक्त-पुण्यसम्पादक-महामुनिसंयुक्त-समवसरण स्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

लखें नर जू देवा करें चर्ण-सेवा, सुनें धर्म भेवा भले भेद गाई ।
चले भव्य आवें तिन्हें शीश नावें, भले सौख्य पावें लहें ज्ञान भाई ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ विविधस्थानेषु धर्मोपदेशकदिगम्बरयतिसंयुक्त-समवसरण स्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कहूं सार पर्वत बने सौख्यकारी,सु तिनकी शिखर पर शिला शुद्ध भारी ।
तहाँ मुनि विराजे धरे ध्यान गाजे, सवै पाप भाजे सु एकाविहारी ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ ध्यानारूढ़यतियुक्त-पर्वतसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तहां देव क्रीड़ा करें भाँति नीकी, जजें चर्ण मुनि के जु पूँछत सु जी की।
करैं वर्न गुरु जी सुनो सार सुर जी, जगे भाव उर जी भली-भाँति जाके।।
लखें भेद आपं भने पुण्य-पापं, जपैं भव्य जापं नशें पाप ताके ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ स्वपरोपकारीदिगम्बरयतिसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

बनें वन सु चारों दिशा-माँहि धारों,सु बीचैं निहारो अहो भव्य भाई ।
बने भूप वृक्षं लखें पाप गच्छं, सु देखें प्रतक्षं रहे सुर सु छाई ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ चतुर्दिशासु वनमध्ये चतुर्भूपवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं । (सुन्दरी छन्द)

भूप-वृक्ष सु वर्णन मैं भनो,तीन योग लगाय सु भवि सुनो ।
एकदिश वन बीच विचारिये, सुभग बारहदरि सु निहारिये ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ एकदिशिवनमध्ये द्वादशद्वारीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं

लसत कुरसीदार सु जानिये,खचित मणि-सोपान प्रमानिये ।
दरन ऊपर बैठक देखिये, सरस गौखें तिहरी पेखिये ।।

ॐ ह्रीं विविधरचनायुक्त-द्वादशद्वारीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जान ऊँचे शिखर सुहावने, लसत कलशा जगमग भावने ।
तुंग जान ध्वजा लहकें तहां, मनहुँ भव्य बुलावत हैं जहाँ ।।

ॐ ह्रीं विविधरचनायुक्त-द्वादशद्वारीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

रतनमाल सु मोतीमाल जू, झकझकात सु लाल विशाल जू ।
देव विद्याधर सुर गावते, बजत साज सु पुण्य उपावते ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रगुणगायकदेवयुक्त-द्वादशद्वारीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दर सु बारह भीतर जानिये, लसत चौक सु मन में आनिये ।
तीन कोट बने सुन्दर तहाँ, बीच पीठ सु तीन बनी जहाँ ।।

ॐ ह्रीं द्वादशद्वार्यां सालत्रयमध्ये सिंहासनत्रय-पीठत्रय-संयुक्तसमवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

रत्न मणिमय पीठ तहाँ बनी, जगमगात सु ज्योति सुहावनी ।

भूपवृक्ष सु मेरु सुहावनो, पीठ तीन सु ऊपर गावनो ।।

ॐ ह्रीं पीठत्रयोपरि भूपवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जड़-विषें सुन्दर हीरा जड़े, सुभग दिश सीधे चारों खड़े ।
मणिमई शाखा परमानिये, पत्र पन्ना के रंग जानिये ।।

ॐ ह्रीं विविधरचनायुक्त-भूपवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

लाल फूलन के गुच्छा कहे,फल मनोहर मिष्ट सु लह लहे ।
लसत शोभाकर शुभ जानिये, भूप वृक्ष मनोहर मानिये ।।

ॐ ह्रीं विविधपुष्पयुक्त-भूपवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जिन-समाज सु ऊँची जानिये, वृक्ष बारह गुन परमानिये ।
सरस शोभाकार सो सार जू, बन रहो सुन्दर आकार जू ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ जिनशरीरद्वादशगुणोच्च-भूपवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वृक्ष की चारों दिश जानिये, चार जिनमन्दिर उर आनिये ।
लसत मानस्तम्भ सु देखिये, भूपवृक्ष सु एक विशेषिये ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौचतुर्दिशासुचतुःचतुःमन्दिरस्थित-भूपवृक्षसंयुक्त- समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

एक वृक्ष-तनों वर्णन करों, चारदिश चारों ऐसे धरों ।
धन्य पुण्य जिनेश्वरको सही,देखके भवि पुण्य करो यही ।।

ॐ ह्रीं प्रथमभूपवृक्षसमान-शेषभूपवृक्षत्रयसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(मदअवलिप्तकपोल छन्द)

मेरुवृक्ष 'आग्नेय' दिशा-माँही परमानो,
'नैर्ऋत' में मन्दार सुभग शोभाकार जानो ।
'वायव' में सन्तान जानके सन्मुख हूजे,
पारिजात 'ईशान' दिशा कवि 'लाल' सु पूजे ।।

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ चतुर्विदिशासु मेरुवृक्ष-द्विचतुर्भूपवृक्षसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

मेरुवृक्ष भूपकल्पवृक्षस्थित जिनपूजा प्रारम्भ

दोहा

कल्पवृक्ष की भूमि तहँ समवसरण में जान ।
मेरुवृक्ष जहँ भूमि हैं पूजें श्री भगवान् ।।

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षचतुर्दिशि जिनमन्दिरप्रतिमाः अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं मेरुवृक्षचतुर्दिशि जिनमन्दिरप्रतिमाः अत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं मेरुवृक्षचतुर्दिशि जिनमन्दिरप्रतिमाः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक (जोगीरासा छन्द)

पदम-द्रह को नीर सु ले के मणिमय झारी धारो ।
जन्म-जरादिक नाशन कारण श्री जिनपद पर ढारो ।।
समवसरण में कल्पवृक्ष की भूमि रत्नमय सोहे ।
मेरुवृक्ष आग्नेय' दिशामें जिन-पूजत दिव-शिव होहे ।।

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः जलं ।
मलयागिर कर्पूर मिलावो केसर रंग सुवासी ।
श्री जिनवर के चर्ण चढ़ावो भव-आताप-विनाशी ।।समव.

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।
देवजीर सुखदास अटूटे अक्षत उज्ज्वल लीजे ।
अक्षयपद-उपजावन-कारन जिन-ढिंग पुंज सु दीजे ।।समव.

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।
कमल-केतकी-कुन्द-चमेली सहज गुलाब सुहाया ।
जिनपद-पूज मदनशर-क्षयकर निज आतमपद पाया ।।समव.

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।
बाबर-घेवर-मोदक- खाजे- गोझा फेनी लाजे ।
श्री जिन--चरन चढ़ाय मनोहर रोग-क्षुधादिक भाजै ।।समव.

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

दीप रत्नमय कनकथाल में जगमग ज्योति उजारी ।
मोहितिमिर के नाशन-कारण जिन-चरणन-तल धारी ।।समव.

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

कृष्णागरु कर्पूर मिलाके धूप दशांग सु लाओ ।
जिनपद पूजों खेय अग्नि में कर्म-जारि सुख पावो ।। समव.

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

लोंग-सुपारी-दाख-छुहारे-पिस्ता धोय धरीजे ।
श्री जिनचरण जजें भवि-प्राणी भवसागरैं सीजे ।। समव.

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जलचन्दन-चावल शुभ लेके फूल सु लाल निहारो ।
नेवज-दीप-धूप-फल उत्तम अर्घ्य पूजि अघ टारो ।। समव.

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्य आग्नेयदिशि जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

मन्दारभूपकल्पवृक्षस्य जिनपूजा प्रारम्भ

अडिल्ल

कल्पवृक्ष की भूमि विराजत सोहनी,
समवसरण मैं जान सु जगमग मोहनी ।
भूपवृक्ष मन्दार परम शोभा धरे,
'नैर्ऋतदिशा' प्रमाण सु सुर पूजा करे ।।

ॐ ह्रीं मन्दारभूपवृक्षस्य चतुर्दिशि चतुर्जिनप्रतिमाः अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं मन्दारभूपवृक्षस्यचतुर्दिशि चतुर्जिनप्रतिमाः अत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं मन्दारभूपवृक्षस्यचतुर्दिशि चतुर्जिनप्रतिमाः अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् ।

अथाष्टक (गीता छन्द)

श्री सार पदम-द्रह अनूपम नीर तातें लाइये ।
जिनराज चरण चढ़ाय भवि जिय जिन सुमंगल गाइये ।।

'मन्दार' नाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद-पूजिये ।
सुन्दर दिशा 'नैर्ऋत्य' जानी हरष सम्मुख हूजिये ।।

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः जलं ।
कर्पूर केसर मलय-सँग घसि सरस वास सुहावनी ।
संसारताप-निवार प्रभु जी जजों प्रीति उपावनी ।।मं०

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः चंदनं ।
तन्दुल अमल अक्षत अखण्डित परम पावन लीजिये ।
पद अखय कारण जिन सु आगे पुंज सुन्दर दीजिये ।। मं०

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।
चम्पक-चमेली-केवरो-मचकुन्द जिन आगे धरों ।
गुलदावदी सु गुलाब ले के मदनबाण व्यथा हरों ।। मं०

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।
फेनी सु घेवर सरस मोदक सिता बहु तामें परी ।
जिनराज-चरण चढ़ाय के तत्काल रोग-क्षुधा हरी ।। मं०

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।
दीप मणिमय ज्योति जगमग कनक-भाजन पायके ।
प्रभुचरण पूजत ज्ञान हूजत मोह जात पलायके ।। मं०

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।
वर धूप सुन्दर ले दशांग सु अग्निमाँहिं जलाइये ।
जिनचरण पूज अनादि के वसु कर्म-पुंज जराइये ।। मं०

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।
उत्तम सु फल जगमाँहिं जेते ढूँढ़कर भवि लावहीं ।
जिनराज पूजत भाव सेती मोक्षफल तहं पावहीं ।। मं०

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः फलं ।
जल-गंध-अक्षत-फूल-नेवज-दीप- धूप सु खेवते ।
कवि'लाल'फल प्रासुक सु लेकर अर्घ्य धर प्रभुसेवते ।।

'मन्दार' नाम सु भूपवृक्ष अनूप जिनपद-पूजिये ।
सुन्दर दिशा 'नैर्ऋत्य' जानी हरष सम्मुख हूजिये ।।
ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशायाः मन्दारभूपवृक्षस्थ-जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

सन्तानभूपवृक्षस्य जिनपूजा

सोरठा

कल्पपृक्ष की भूमि भूपवृक्ष सन्तान है ।
पूजत सुर-नर झूमि 'वायव' दिशा प्रमान है ।।
ॐ ह्रीं सन्तानभूपवृक्षस्य चतुर्दिशानां जिनप्रतिमाः अत्र अवतर २ संवौषट् ।
ॐ ह्रीं सन्तानभूपवृक्षस्य चतुर्दिशानां जिनप्रतिमाः अत्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं सन्तानभूपवृक्षस्य चतुर्दिशानां जिनप्रतिमाः अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् ।

अष्टक (त्रिभंगी छन्द)

पदम-द्रह नीरं गन्ध-गहीरं कंचनझारी भरि लावो ।
जिनचरणन पूजो तन-मन हूजो और न दूजो प्रभु पावो ।।
सन्तान सु वृक्षं जिन-परतक्षं दरशत गक्षं पाप महा ।
सुरनर सब पूजें तनमन हूजें 'वायव' विदिश में जु कहा ।।
ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः जलं ।
मलयागिरि चंदन दाह-निकंदन केशर घसि तामें लीजे ।
भवताप-विनाशी परम-लखासी श्रीजिन आगे धरि दीजे ।। सं०
ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।
अक्षत शुभ लीजे पुंज सु दीजे जिन पूजीजे सुखकारी ।
अक्षयपद पावे विलम न लावे जिनगुण-गावे बलिहारी ।। सं०
ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।
श्री पुष्प सुसारं परिमल-धारं मधु-झंकारं धरि खासे ।
जिन-अग्र सु धारों काम-निवारों सुख-विस्तारों अघ नाशे ।।सं०
ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

धरि बाबर-घेवर-मोदक-खाजे बहुविध ताजे तुरत करे ।
धर जिनपद आगे अघसब भागे क्षुधा न लागे ले सुथरे ।।सं०

ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

जगमगत दिवालो दीप प्रजालो जिनपद बालो सुखकारी ।
मो तिमिर विनाशे स्व-परकाशे आतम-भाषे भवहारी ।। सं०

ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

वर धूप दशंगी परिमल चंगी अग्नि सुरंगी में खेवो ।
वसु-कर्म जरावो जिनगुण-गावो तूर बजावो प्रभु-सेवो ।। सं०

ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

श्री लोंग-सुपारी-श्रीफल भारी दाख-छुहारे धोय धरों ।
जिनराज चढ़ावों मन हरषावों पुण्य कमावों मोक्ष वरों ।। सं०

ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जल-चंदन-अक्षत-फूल सु लक्षित नेवज-दीप सु धूप धरी ।
जिन अर्घ्य चढ़ासी चित्त हुलासी शिवफल-पासी तुरत धरी ।। सं०

ॐ ह्रीं वायव्यदिशायाः सन्तानभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

पारिजातभूपवृक्षस्य जिनपूजा प्रारम्भ

दोहा- कल्पवृक्ष की भूमि में भूपवृक्ष परमान ।
'पारिजात' शुभ नाम है विदिशा गिन 'ईशान' ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाः अत्र अवतर २ संवौषट् ।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाः अत्र अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक (सुन्दरी छन्द)

गिरि सु हिमवनतें धारा ढरी,जल सु लाय जजों जिन अघहरी ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

सरस चन्दन-केसर गारिये, जिन सु पूजत दाह-निवारिये ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

परम पावन अक्षत लीजिये, पद अखय लहि पुंज सु दीजिये ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।

कमल-केतकि फूल सुहावने, जन सु पूजि परमपद पावने ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

चरु मनोहर उत्तम लाइये, जिन सु पूजि क्षुधादि विलाइये ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

कनक-भाजन दीप सु लहलहे,स्व-पर-भेद चढ़ावत हो गये ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

अगुरु-चन्दन-कुंकुम खेइये, करम-नाशि सु जिनपद-रोइये ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

जल सु प्रासुक ले उत्तमधरो,जिन चढ़ाय सु शिवतिय कों वरो ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

वसु सुद्रव्य सँजोय विशालजी,जिन चढ़ावत अर्घ्य सु'लाल'जी ।
पारिजात सु वृक्ष महान् है, जिन सु पूज दिशा ईशान है ।।

ॐ ह्रीं ईशानदिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

चारों भूपवृक्ष सम्बन्धी जयमाल

दोहा

छठवीं भूमि सुहावनी देखत नयन अघात ।
तीन योग दे के सुनो 'लाल' कुँवर बलि जात ।।

(पद्धरि छन्द)

जय मेरुवृक्ष भूपति बखान, सब वृक्षानि में नृप-सम सुजान ।
जय सुर-नर लख नाचत प्रवीन, जय तसु वर्णन भाषों नवीन ।।
जय शोभा वृक्ष-तनी अपार, ऊपर जैसी ही कही सार ।
जय वृक्ष सु चारों दिश-प्रमान, जिनभवन सु चार कहे बखान ।।
जय गन्धकुटी शोभे अनूप, जय जगमगात रवि ज्योतिरूप ।
जय सिंहासन शोभे सु तीन, जय तापर कमल रचो नवीन ।।
जय तापर प्रतिमा एक जान, श्री सिद्धस्वरूप तनी बखान ।
जय तीन छत्र शोभें महान् जय चमर ढुरें आनन्द-खान ।।
जय तिन द्युति उज्ज्वल जगमगात, मानो दुग्धोदधि लहलहात ।
जय सुर-नर पूजा करत गाय, जय वसुविध द्रव्य सु ले चढ़ाय ।।
जय अर्घ्य देत आनन्द पाय, जयमाल पढ़त हरषत अघाय ।
जय फिर सुर नृत्य करें बनाय,ता-थेइ-थेइ-थेइ जिनगुण सु गाय ।।
जय बाजत बीन-मृदंग साज, सुरताल लिये मुहचंग बाज ।
जय नाचत प्रभुगुण मनविचार,झम-झमकि चाले थई-थई सु धार।।
जय फिर परदक्षण देहिं तीन, चारों जिनमन्दिर की प्रवीन ।
जय फिर-फिर प्रभु को दरश सार,नयनन भरि निरखत हर्ष धार।।
जय जिनथुति फिर मुखतें उचार,जय-जय जिन जगतें करहु पार ।
जय सुर वरषावत सुमनसार, गन्धोदक बरषा हृदय धार ।।
जय रतनधार बरषे विशाल, जय जगमग नभ दीखे सु लाल ।
जय दुन्दुभि-बाजे बजें धीर, तिनकी धुनि सुन सुर नचें वीर ।।

जय ता आगे जानो सु सार, जय मानस्तम्भ हृदय विचार ।
देखत मानी मो मद विलाय, जय-जय श्री मानस्तम्भ गाय ।।
इक भूपवृक्ष जिनभवन चार, जय या-विध भाषत हरष धार ।
जय ऐसे चारों दिश बखान, जय सोलह जिनमन्दिर प्रमान ।।
ये सोलह जिनमन्दिर विशाल, सुर नर मिल पूजत हैं त्रिकाल ।
जय पूरव पुण्य उदय सु आय, जय जिन पूजत आनन्द पाय ।।
जय जिन मंदिर बाहर निहार, तरु झूमि रहे शाखा-पसार ।
तहँ चन्द्रकान्तमणि-शिला जान,शशि की द्युति लज्जित भई मान ।।
जय तापर श्री मुनि गुण-निधान, धर ध्यान विराजत क्षमावान् ।
जय दर्शन कर भविमुनि सु पास, वृष-वचन सुनें आनन्दरास ।।
धर्मामृत मुनि-वच सुन प्रवीन, निजआतम का चिन्तवन कीन ।
जय कोई मुनि-ढिंग जो माँड, बैठे सब-विध परिग्रह सु छाँड।।
ऐसी शोभा जिनभवन-द्वार, सुर-नर लख क्रीडा करत सार ।
जय जिन-गुण-महिमा अगम जान, कवि कौन कहें ताको बखान ।।
पर तुच्छबुद्धि मेरी सु जान, सोधी जो पण्डित बुद्धिमान् ।
उपदेश पाय सब सुख सु राय,कवि'लाल' सु जिन-पद शीश नाय।।

दोहा- श्री जिन-महिमा अगम है को कवि पावे पार ।
तुच्छबुद्धि कवि 'लाल' जी भाषा रची विचार ।।

ॐ चतुर्दिशि पारिजातभूपवृक्षस्य जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

अडिल्ल

जो बाँचे यह पाठ सरस मन लाय के,
सुने भव्य दे कान सु मन हरषाय के ।
धन-धान्यादिक पुत्र-पौत्र-सम्पति धरे,
नरसुर के सुख भोग बहुरि शिव-तिय वरे ।।

इत्याशीर्वादः ।

सप्तम भूमि वर्णन प्रारम्भ

(भुजंगप्रयात छन्द)

गिनो सातवीं भूमि सुन्दर सु खासी, बने तूप जानों महा सौख्य-रासी ।
गिनो ओर बाँई गिनो और दाँई , सु अन्तर-गली बीच के माँहि भाषी ।।
बने द्वार-सारं आभ्यन्तर निहारं, सु चौथी विचारं सु वेदी प्रमानो ।
कँगूरा विराजें भले बुरज राजें, सु सुन्दर जु छाजें हृदय-माँहि आनो ।।

ॐ ह्रीं सप्तमभूमिगल्याःस्तूपवामदक्षिणाभागे अन्तरगल्याः द्वारे आभ्यन्तरे चतुर्थवेदिकासंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

जान वेदी में चित्राम जू, लसत सुन्दर हैं अभिराम जू ।
कहीं श्री मुनि-संघ विराजते, देखिये चित्राम सु राजते ।।

ॐ ह्रीं विविधचित्रयुक्त-चतुर्थवेदिकासंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कहुँ सु मुनिवर ध्यान सु धर रहे, कहुँ सु वृष-उपदेश भले कहे ।
गिरि-विषें ठांढ़े धरि जोग जू, चित्र ऐसे विरकित-भोग जू ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ चतुर्थ वेदिका चतुर्थशालमध्ये धर्मोपदेशक-यतिचित्र-संयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

चलत भूमि सु नयन निहारिकें, देखियत मुनिराज विचारकें ।
देत श्रावक दान सु जानकें, रतन बरषत तिन घर आनकें ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ चतुर्थवेदिकाचतुर्थशालमध्ये आत्मलीन-दिगम्बरयतिसंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

देव लौकान्तिक पाड़े-विषें, वसत ते सुन्दर चित्रित दिखें ।
कहुँ सु नभ चित्राम सु देखिये,छिपत बादरमें रवि पेखिये ।।
निकसि ज्योतिसु जगमग जानिये,लाल-श्याम सु श्वेत प्रमानिये ।
बैंगनी कहुं जरद निहारिये, कहुं सुरंग प्रियंगु विचारिये ।।

श्याम देख घटा सु निहारिकें, चमकती बिजली लख धारिकें ।
देखि कुहकत मोर सु आनियो, नृत्य करत सु चित्र प्रमानियो ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ नानाविधचित्रचित्रित-चतुर्थवेदिकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

अडिल्ल

वेदी भाग सु चार हृदय में आनिये,
श्वेत-वरन हैं कोट सु चौथो मानिये ।
हीरा ही को बनो भाग सो चार जू,
रचो धनद निज-हाथ महासुखकार जू ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ चतुर्थशाल-चतुर्भागसमवेत-वर्णचतुर्थवेदिकासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वलय व्यास बाईस भाग सो पेखिये,
नानाविध मन्दिर-पंक्ति तह देखिये ।
कंचनमय खम्भा तिनके परमानिये,
हीरन-करि सो जड़ित हिये में आनिये ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ द्वाविंशतिभाग-वलयव्यासंयुक्त-मन्दिरपंक्तिसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दुखनी तिखनी और चौखनी सार जू, बनीं बैठकें सुन्दर शोभादार जू ।
दल-परदा मोतिन की झालर पेखिये, नाचें देवी-देव-विद्याधर देखिये ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ विविधरचनायुक्त-जिनमन्दिरसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

तिन मन्दिर के शिखर चले आकाश में,
ऊपर कलशा सुन्दर सोहें तासतें ।
दण्ड धरें सो ध्वजा लहकती देखिये,
सुर-नर टेरत मनो सु नैनन पेखिये ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ विविधरचनायुक्त-जिनमन्दिरसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

कहुँ मन्दिर में देव सु पौढें सार जू,

सुन्दर शय्या परम सुखकार जू ।
कहुँ मन्दिर में बीन बजें सुरताल सों,
कहुँ बाजें मुहचंग मृदंग सु ढार सों ।।
कहुँ मन्दिर में थेइ-थेइ-थेइ ध्वनि हो रही,
गावें जिनगुण सुरी हरष हिय में सही ।
कहुँ बनी हैं सार नृत्यशाला जहाँ,
करें सु सुन्दर गान नचें सुर-तिय तहाँ ।।

ॐ ह्रीं एवंविधानेकरचनासंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

तिन सु मन्दिर बीच निहारिये, चौक कुरसीदार विचारिये ।
रतन-जड़ित लगे सोपान जू, चढ़ि मन्दिर ऊपर मान जू ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ मन्दिरमध्यचतुष्कोपरि मण्डपसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

सहस एक सु खम्भा जानिये, चौक ऊपरतें परमानिये ।
बनरहो मण्डप सुखकार जू,ध्वजा कलशा लसत निहार जू ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ मध्य चतुष्कोपरि मण्डपसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

लसत तोरण सुन्दर पेखिये, रतनमाल सु लहकत देखिये ।
झकझकात सु जोति उदय कही, पुण्य जान सु जिनवर को सही ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ श्रीमण्डपसंयुक्तसमवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सुभग गन्धकुटी तहँ जानिये, तीन सिंहासन परमानिये ।
छत्र तीन सु शिर पर सोहने, लसत केवलज्ञानी मोहने ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ श्रीमण्डप-केवलिजिनसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

ताही में श्रुतकेवलि बैठे देखिये, परम धरम दातार सु नैनन पेखिये ।
चारों कोने चार सु छोटे जानिये, लघु-मण्डप-परमान हृदय में आनिये ।।

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ श्री मण्डपे श्रुतकेवलिसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिनही में मोतिन की झालर सार जू,बँधी सु बन्दनवार रतनमय धार जू।
तँह जिनवाणी सार सुशास्त्र बखानते,सुने भव्य जे जीव लहें वर जानते ।।
ॐ ह्रीं सप्तभूमौ विविधरचनासंयुक्तसमवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

ज्ञानगम्य सो जान देख सब अघ हरे,
वचनगम्य सो नाहिं कथन कां लों करे ।
श्री जिन-महिमा सार निहार विशालजी,
भाषों वर्णन गाय नाम कवि 'लाल' जी ।।

दोहा- जो कछु चूक विलोकिये शोधो श्री गुणवान् ।
क्षमाभाव मो पर करो कवि लघुताई जान ।।
ॐ ह्रीं सप्तभूमौ विविधरचनासंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

केवलज्ञान पूजा प्रारम्भ

दोहा

भूमि सप्तमी के विषैं कहे केवली गाय ।
तिन पद सुर-नर मिल सबै पूजत निर्मल भाय ।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानसंयुक्तजिनेन्द्राः अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक ('सुगुण हम ध्यावें, सुगुण हम ध्यावें'-इस चाल में)

जय समवसरण में केवलज्ञानी सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।
पूजत सुर-नर मिल भवि प्राणी सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।।
जय पद्म-द्रह को नीर सु ले के सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।
जय पूजत जिन-पद धार सु दे कें, सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

जय मलयागिरि चन्दन घसि वासी सुगुण हम ध्यावें.... सुगुण.
जय भव आताप हरें जगवासी सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।।जय.

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

जय मुक्ताफल-सम अक्षत लावो सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।
जय जिनपद पूज अखयपद पावो सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।।जय.

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।

जय कमल-केतकी फूल सुखासे सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।
जय जजत जिनेश्वर अघ-मल नासे सुगुण हम ध्यावें ...सुगुण. ।।जय.

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

जय फेनी-मोदक-खाजे लावों सुगुण हम ध्यावें.....सुगुण. ।
जय क्षुधा नशे जिन-चरन चढ़ावो सुगुण हम ध्यावें .....सुगुण. ।।जय.

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

जय मणिमय दीप जले शुभ वाती सुगुण हम ध्यावें.....सुगुण. ।
जय जजत जिनेश्वर मोह सु घाती सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।।जय.

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

जय धूप मनोहर खेय दशांगी सुगुण हम ध्यावें..... सुगुण. ।
जय कर्म जरें जिनपूज अष्टांगी सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।।जय.

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

जय उत्तमफल जगमाहिं सु जेते सुगुण हम ध्यावें.....ध्यावें ।
जय पूज जिनेश्वर शिवफल देते सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।।जय.

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जय जल-फल-अर्घ्य चढ़ाय सु ज्ञानी सुगुण हम ध्यावें .... सुगुण. ।
जय 'लाल' सदा जिन-पूजत प्राणी सुगुण हम ध्यावें ..... सुगुण. ।।जय.

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलिजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

जयमाला

दोहा

भूमि सातवीं जानिये मन्दिर-बीच विशाल ।
श्रीमण्डप में केवली राजत है जयमाल ।।

(पद्धरि छन्द)

जय-जय जिन कर्म-हने दयाल, जय केवलिपद-पायो विशाल ।
जय श्रीमण्डप शोभें अनूप, रचि सहस-थम्भ सुन्दर स्वरूप ।।
जय तिन पर तोरण बने सार, झालर मोतिन की बँधी धार ।
रत्नन की वन्दनवार जान, जय झकझकात आनन्द-खान ।।
जय श्रीमण्डप तापर निहार, जय ऊंचे कलशा लसें सार ।
लहकें सु ध्वजा मनों नचें सोय, ऐसी आशंका हृदय होय ।।
जय मण्डप-विच जानो प्रवीन, जय गन्धकुटी शोभे नवीन ।
जय तीन पीठ पर लसत सोय कलशा अरु ध्वजा उतुंग जोय ।।
जय सिंहासन ता-बीच तीन, शिर छत्र तीन शोभे नवीन ।
निकसो द्युति रश्मि चली अशेष, दशदिश में फैल रही सुवेष ।।
तहँ केवलज्ञानी जिन अनूप, जिनराज विराजत सुभग रूप ।
जय वानी वरषत मेघधार, जय भव्यजीव आनन्दकार ।।
जय सुर ढोरत हैं चमर जान, जय-जय-जय मुख बोलत प्रमान ।
जय सुर-नर-मुनि बैठें अपार, जिनराज-सुगुण गावें विचार ।।
जय सुरपति पूजा करत आय, वसु-द्रव्य सु उज्जवल ले बनाय ।
फिर स्तुति इन्द्र करे सु गाय, भवसागर-तारक जग तराय ।।
जय तुम देवन के देव ईश, सुर-नर अरु इन्द्र नवाँय शीश ।
तुमकों पूजत मन लाय देव, फिर-फिर मुख-देख करें जु सेव ।।
जय पूजा कर जयमाल गाय, परदक्षण तीन दई सु जाय ।
फिर-फिर सुर नृत्य करें बनाय, ता थेई-थेई-थेई ताल लाय ।।
जहँ बाजत वीन-मृदंग साज, मुहचंग-मुरज-मुरली अवाज ।
जय सुर गावत धुनि रहौ पूर, गावत सु ख्याल झुरमुट हजूर ।।
जय छमछमछम घुँघरू बजाय,जय ठम-ठम-ठम कि चलें सु धाय ।
जय द्रम-द्रम-द्रम बाजत मृदंग,जय झुक-झुक-झुक नाचत अभंग।।

जँह झुमरे खेलत सुर अपार, बाजत समाज आनन्दकार ।
जय फिर-फिर जिन को शीस-नाय,बहु पुण्य लहावत सुर सुराय ।।
जय ताही मण्डप में निहार, श्री श्रुतकेवलि हृदयें विचार ।
जय मण्डप-वर्णन कियो गाय, मण्डप के चारों कोन लाय ।।
सब छोटे मण्डप चार जान, मणिमयी रतन-सों जड़े मान ।
जय तिनमें शास्त्र बचत निहार, छह द्रव्यन की चर्चा विचार ।।
जय भव्यजीव समझें सुधार, जिनधर्म परम आनन्दकार ।
जय भूमि सातवीं को बखान, जय भाषो सुन अघ होय हान ।।
जय जय केवलज्ञानी जिनेश, जय तिन-पद पूजत हैं सुरेश ।
जय-जय-जय वर्णन बहु विशाल,जय शीश नाय पूजत सु'लाल' ।।

दोहा- भूमि सातवीं की कही पूजा सरस सुजान ।
केवलज्ञानी दर्शकर पूजत हैं मतिमान ।।

ॐ ह्रीं सप्तमभूमौ केवलज्ञानिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

अडिल्ल- जो बाँचे यह पाठ सरस मन लायकें,
सुने भव्य दे कान सु मन हरषायकें ।
धन-धान्यादिक पुत्र-पौत्र-सम्पति धरे,
नर-सुर के सुख भोग बहुरि शिवतिय वरे ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

पूर्वदिशा नवस्तूप पूजा प्रारम्भ

दोहा

समवसरण जिनराज को पूरब दिशा बताय ।
शोभित तूप सुहावनै पूजों नव हरषाय ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूप-जिनप्रतिमाः अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक (सोरठा छन्द)

नीर सु द्रह को सार रत्न-जड़ित झारी भरों ।
तूप सु नव सुखकार पूरब-दिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

चन्दन केसर गार रत्न-कटोरी में धरों ।
तूप सु नव सुखकार पूरबदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

मुक्ताफल-उनहार अक्षत जिन आगे धरों ।
तूप सु नव सुखकार पूरबदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।

महकें फूल अपार काम देख आपहिं डरों ।
तूप सु नव सुखकार पूरबदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

फेनी गोझा सार उत्तम षट्रस संचरों ।
तूप सु नव सुखकार पूरबदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

जगमग दीप अपार मोहनाश जगतें तरों ।
तूप सु नव सुखकार पूरबदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

धूप अग्नि में डार अष्टकर्म आपहिं जरें ।
तूप सु नव सुखकार पूरबदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

फल उत्कृष्ट सम्हार शिवसुन्दरि क्षण में वरों ।
तूप सु नव सुखकार पूरबदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जलफल अर्घ्य बनाय'लाल'सु जिन-पायन परें ।

तूप सु नव सुखकार पूरबदिश पूजा करें ।।

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूपस्थजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

दक्षिण दिशा नवस्तूप जिनपूजा प्रारम्भ

दोहा

समवसरण जिनराज को दक्षिण-दिशा बताय ।
शोभित तूप सुहावने पूजों नव सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाः अत्र अवतरतावतरत संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक (सोरठा छन्द)

नीर सु द्रह को सार रतनन की झारी भरों ।
तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

चन्दन केशर गार भव-आताप-व्यथा हरों ।
तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

मुक्ताफल उनहार अक्षत जिन आगे वरों ।
तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।

महकें फूल अपार काम देख आपहिं डरों ।
तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

फेनी-गोझा सार उत्तम षट्रस संचरों ।
तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

जगमग दीप निहार मोह-नाश जगतें करों ।

तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

धूप अग्नि में डार दुष्ट कर्म आपहिं जरें ।

तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

फल उत्कृष्ट सम्हार शिवसुन्दरि क्षण में वरों ।

तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जल-फल अर्घ्य सु धारि'लाल'पूजि पांयन परें ।

तूप सु नव सुखकार दक्षिणदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

पश्चिम दिशा नवस्तूप जिनपूजा प्रारम्भ

दोहा- समवसरण जिनराज को पश्चिम दिशा बताय ।

शोभित तूप सुहावने पूजों नव सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशा-नवस्तूपजिनप्रतिमाः अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशा-नवस्तूपजिनप्रतिमाः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशा-नवस्तूपजिनप्रतिमाः अत्रमम सन्निहितो भव२ वषट् ।

अथाष्टक (सोरठा छन्द)

नीर सु द्रह को सार रतनन की झारी भरों ।

तूप सु नव सुखकार पश्चिमदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

चन्दन केशर गार भव-आताप व्यथा हरों । तूप.

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

मुक्ताफल-उनहार अक्षत जिन आगे धरों ।

तूप सु नव सुखकार पश्चिमदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतं ।

महकें फूल अपार काम देखि आपहिं डरों । तूप.

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

फेनी-गोझा सार उत्तम षट्रस संचरों । तूप.

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

धूप अग्नि में डार दुष्ट कर्म आपहिं जरें । तूप.

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

फल उत्कृष्ट सम्हार शिवसुन्दरि आपहिं वरों । तूप.

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जलफल अर्घ्य बनाय लाल सु जिन-पायन परें । तूप.

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

उत्तर दिशा नवस्तूप जिनपूजा प्रारम्भ

(दोहा छन्द)

समवसरण जिनराज को उत्तरदिशा बताय ।
शोभित तूप सुहावने पूजों नव सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाः अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक (सोरठा छन्द)

नीर सु द्रह को सार कंचनझारी में भरों ।
तूप सु नव सुखकार उत्तरदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः जलं ।

चन्दन केशर गार भव-आताप-व्यथा हरों ।।तूप.।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः चन्दनं ।

मुक्ताफल उनहार अक्षत जिन-आगे धरों ।
तूप सु नव सुखकार उत्तरदिश पूजा करों ।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः अक्षतान् ।

महकें फूल अपार काम देख आपहिं डरें ।।तूप.।।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः पुष्पं ।

फेनी-गोझा सार उत्तम षट्रस संचरों ।।तूप.।।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं ।

जगमग दीप निहार मोह नाश जगतैं तरों ।।तूप.।।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः दीपं ।

धूप अग्नि में डार दुष्टकर्म आपहिं जरें ।।तूप.।।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः धूपं ।

फल उत्कृष्ट सम्हार शिवसुन्दरि क्षण में वरों ।।तूप.।।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः फलं ।

जलफल अर्घ्य सु धार लाल सुजिन-पांयन परें ।।तूप.।।
ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूपजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं ।

जयमाल

दोहा

गली सातवीं के विषें चारों दिशा विशाल ।
तूप सु छत्तिस जानिये सुनो सु भवि जयमाल ।।

(पद्धरि छन्द)

जय जय छत्तीसों तूप जान, जय चारों दिश के कहे मान ।
जय तिनकों नमन करों त्रिकाल, जय वर्णन भाषो बहु विशाल ।।
जय भूमि सातवीं बीच जान, जय नव -जव चारों दिश बखान ।
जय पूरब दिश नव जान तूप जय दरवाजें सोहें अनूप ।।
तिनमें इक तूप-तनी सु वर्न, जय भाषत हैं शिव-सौख्य-कर्म ।
जय तीन पीठ जानो प्रमान, मणिमयी रतनसों जड़े जान ।।
तिनमें श्रीतूप लसें विशाल, जय लसें सु मोती-रतन-माल ।
जय जिन-तनतें ऊँचो निहार, जय बारह-गुणो हिये विचार ।।

जय ऊँचो शिखर लसे सु जान, तापर कलशा सुन्दर प्रमान ।
शुभ दण्ड धरें सुध्वजा विचार, लहके नभ में आनन्दकार ।।
जय तिन में तोरण शोभमान, मणिमयी रतनसों जड़े जान ।
जय मोतिन की झालरि रसाल, जय जगमग-जगमग होत लाल ।।
जय तिस पर तोरण तीन सार, जय सिंहासन शोभे अपार ।
जय तिन दुति देख छिपो जु सूर,निकसी द्युति दश-दिश रही पूर ।।
जय तिन पर राजत जिन सु देव,जय-जय अरिहन्त जु सिद्ध देव ।
इनकी प्रतिमा जानो विचार, भवि जीवन को आनन्दकार ।।
जय तिनसु शीश पर छत्र तीन 'त्रिभुवन के पति' भाषत प्रवीन ।
जय वसुविध मंगलद्रव्य आन, जय राजत मंगल की सु खान ।।
जय देवी-देव तहाँ अपार, वैताढ्य-तने नर बहु विचार ।
जय वसुविध द्रव्य जु सार लाय, जय पूजत श्रीजिन के सु पाय ।।
जय-जय-जय जिन-गुणमाल गाय, जय स्तुति फिर भाषत बनाय ।
जय सब मिल नृत्य करें सु जान, जय बजत मृदंग सु ताल मान ।।
मुहचंग-बीन इन आदि साज, सुरताल-सहित निकसे अवाज ।
जय थेइ-थेइ-थेइ धुनि होत सार, जय सुर-नर-तिय नाचें निहार ।
जय जिनगुण गावत हरष-धार, बहु पुण्य-बढ़ावत सुर विचार ।
जय धन्य जन्म तिनको बखान, जय जिन-दर्शन देखत सुजान ।।
जय सफल जन्म तिनको प्रमान, जिन-पूजि सुपावन तन सुजान ।
जय एक तूप वर्णन-निहार, जानो इकदिश में नव विचार ।।
चारों दिश छत्तिस कहे गाय, सुर-नर पूजत आनन्द पाय ।
छत्तीस तूप वर्णन विशाल, जय शीश नाय भाषत सु 'लाल' ।।

दोहा- गली सातवीं चार दिश, तूप सु छतीस जान ।
शुभ-शुभ अक्षर लायकें पूजा करो बखान ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि-षट्त्रिंशत्स्तूपस्थ-जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

अडिल्ल

जो बाँचे यह पाठ सरस मन लायकें,
सुने भव्य दे कान सु मन हरषायकें ।
धन - धान्यादि-पुत्र- पौत्र- सम्पति बढ़े,
नर-सुर के सुख भोग बहुरि शिवतिय वरे ।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्रीमण्डप वर्णन प्रारम्भ

(अडिल्ल छन्द)

चौथा नाम सु कोट वज्रमय जानिये,हीरा कैसी कान्ति श्वेत मन आनिये।
ऊँचो जिन-तनतें जु चौगुनो देखिये, एक भाग मोटाई परम विशेखिये ।।

ॐ ह्रीं जिनतनुतः चतुर्गुणोतुंगभागात्-वज्रमय-श्वेतवर्ण-चतुर्थप्राकारसंयुक्त समवसरण- स्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

फिर कैसो है कोट किरण तातें कढ़ी,
जगमग-जगमग-ज्योति होत दश दिश बढ़ी।
तहाँ रात-दिन को कुछ भेद न जानिये,
पंचवरन के रतन-जड़ित मन आनिये ।।

ॐ ह्रीं चतुर्थप्राकारप्रबुद्धकान्तिसंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वुरज-कँगूरा ध्वजा-सहित शोभे तहाँ,
नाचे कुरसा सुभग विराजत हैं जहाँ ।
भूमि सातवीं-तें सोपान लगे सही,
सुवरण-मणिमय-जड़ित चढ़त शोभा लही।

ॐ ह्रीं चतुर्थप्राकार-वुरज-कँगूरा-ध्वजासुशोभित-विष्ठरविशिष्ठ-सप्तमसोपानसंयुक्त समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

चढ़ि शिवान पै चौक सु आगे देखिये,कैसा है सो चौक सु मणिमय पेखिये।
चौक छोड़िकें कोट वज्र के जानिये,दरवाजे सु विशाल लसें उर आनिये ।।

ॐ ह्रीं द्वारयुक्तचतुर्थप्राकारसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

दरवाजे तोरण-युत शोभे सार जू, नानाविध के रतन जड़े सुखकार जू ।
लगे किवार निहार हरित पन्नामई, झलकें सब चित्राम सुभग शोभा लई ।।

ॐ ह्रीं अनेकरचनायुक्तद्वारसहित-चतुर्थप्राकारसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

तिनमें शोभें जालबंद रूमी जहाँ, और जाल सुन्दर सु विराजत है तहां ।
द्वारपाल सुर जान कल्पवासी सही,पुण्यसहित सो खड़े गदा हाथन लही ।।

ॐ ह्रीं द्वारपालसहितद्वारयुक्त-चतुर्थप्राकारसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

द्वारपाल शिर मुकुट महाशोभा धरें,
पद्मरागमणि-जड़ित कान्ति जगमग करें ।।
कानन कुण्डलसार हार हृदयें लसें,
रतन-जड़ित कर कथा हाथ मुंदरी बसें ।
पहुँची पहुँचन-माँहि विराजत नग-जड़े,
नये वस्त्र तन पहिर सु सुन्दर सुर खड़े ।
आभ्यन्तर सुन्दर गिन वेदी पांचई,
ताको भी वर्णन ऐसे ही साँचई ।।

ॐ ह्रीं द्वारपालयुक्तद्वारसहित-पंचमवेदिकायुक्त-चतुर्थप्राकारसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वज्रकोट वेदी सु पांचई जानिये, भूमि आठवीं गली सु नैनन आनिये ।
गली भूमि बाँई अरु दाहिनी ओर जू,तासु भूमिमें चार सुअन्तर जोर जू।।

ॐ ह्रीं वज्रप्राकारपंचमवेदिकायाः अष्टमगल्याः भूमौ उभयपार्श्वभूमेः चतुरन्तराल-संयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तिनमें दो-दो गली-तनी वेदी कहीं,दोय-दोय बिच भीति फटकमय हैं सही।
चार भीति विच अन्तर तीन सु पेखिये, तेई कोठा तीन सु नैनो देखिये ।।
चार दिशा की सोलह भीति विचारिये,भये सु बारह कोठा नैन निहारिये ।
तिनकोठनमें शिखर सु गुमटीदार जू,तिनपर कलशा ध्वजाविराजे सार जू।।
कोठन के दरवाजन पै रचना रची,वंदरवार सु बँधी रतन मोतिन खची ।

घण्टन को पंकति सुन्दर शोभे जहाँ,सुनिके देव सु शब्द नृत्य ठाने तहाँ ।

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ विविधरचनायुक्त-द्वादशशालप्रकौष्ठसंयुक्त-समवसरण स्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

गनि दिशा 'आग्नेय'-विषें सही, लसत कोठा तीन प्रभू कही ।
मुनि सुरीं सु कल्पवासिनि गिनो, तिय मनुष्यन की तीजी भनो ।।

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि कोष्ठत्रये दि.मुनि-कल्पवासिनी-मनुष्यनीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

दिश सु 'नैर्ऋत्य' कोठा तीन जू सुभग ज्योतिषिनी भरि लीन जू ।
सुनहिं जिन-वच व्यन्तरसुर-तिया, भवनवासिनी तीजे में लिया ।।

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यदिशि कोष्ठत्रये-ज्योतिष्क-वयन्तरणी-भवनवासिनी संयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तीन कोठा 'वायव' में कहा, भवनवासी व्यन्तर-सुर लहा ।
ज्योतिषी-सुर बैठे सार जू, सुनत जिनवाणी हितकार जू ।।

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि कोष्ठत्रये ज्योतिष्कभवनव्यन्तर-सुरवास-संयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

सुभग दिश ईशान विचारिये, लसत कोठा तीन निहारिये ।
कल्पवासी-सुर-नर देखिये, बारवें तिर्यंच सु देखिये ।।

ॐ ह्रीं नैर्ऋत्य दिशि कोष्ठत्रये कल्पोपपन्न-देव-नर-तिर्यंच संयुक्त-समवसरण स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

वज्रकोट सु सूची जानिये, भाग अड़तालीस प्रमानिये ।
तिस-विषें गिन चौथा कोट जू, वज्रमय सुन्दर शुभ जोट जू ।।
आठमीं गिन भूमि सभा सही, पाँचवीं वेदी सुन्दर लही ।
वलय व्यास दुतरफा के गहो, भाग चौबिस तामें घटि लहो ।।

ॐ ह्रीं वज्रशालाष्टचत्वारिंशद्भागे व्रजमयचतुर्थसालतः चतुर्विंशतिभागवेदिका संयुक्त- समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

रहे भाग सु चौबिस जानिये, सहस चार सु धनुष प्रमानिये ।

जान सूची मन में लायकें, धनुष आठ सु ऊँची गायकें ।।
लसत सोलह पैड़ी सार जू, प्रथम पीठ सु हृदय में धार जू ।
रतन वैडूरज-मय बन रहीं, सुभग शोभा कर सुन्दर कहीं ।।

ॐ ह्रीं अष्टचापोच्चसूचीयुक्त-चतुःसहस्रचाप-प्रथमपीठ संयुक्त-समवसरण स्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

प्रथम पीठ-विषें अबह जानियो, यक्ष-देव खड़े परमानियो ।
हाथ जोड़ सु भक्ति करें खड़े, धरमचक्र सु मस्तक पर मड़ें ।।

ॐ ह्रीं बद्धकर-मस्तकस्थधर्मचक्रयक्षयुक्त-प्रथमपीठसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

धर्मचक्र सु नयन निहारिये, सुभग पहियाकार विचारिये ।
बन रहे आरे सु हजार जू, सुभग कान्ति-विशेष सुधार जू ।।

ॐ ह्रीं विचित्रधर्मचक्रसंयुक्त-समवसरणस्थित-जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

प्रथम पाठ-विषैं दिश चार जू, धर्मचक्र सु चार निहार जू ।
वसु सु मंगल द्रव्य बने तहाँ, प्रथमपीठ विराजत हैं जहाँ ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि-वसुमंगलद्रव्य-धर्मचक्रसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

पीठ दूजे पर चढ़ ना लहें, जान जिनवाणी को इह कहें ।
पुण्य श्री जिनदेव विशाल जू, करत पूजा इन्द्र त्रिकाल जू ।।

ॐ ह्रीं द्वितीयपीठे इन्द्रगत्यभावातिशय-व्यवस्थासंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जान ऊपर पीठ सु दूसरो, धनुष पच्चिस सौ सूची धरो ।
धनुष चार सु ऊँचो जानिये, लसत आठ शिवान प्रमानिये ।।

ॐ ह्रीं सुवर्णमयोच्चद्वितीयपीठसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

पीठ दूजी परिध निहारिये, लसत खम्भ अनेक विचारिये ।
बन रहे सु सुराहीदार जू, सरस सुन्दर पहल सुधार जू ।।

ॐ ह्रीं विवित्रविविधिरचनायुक्तद्वितीयपीठसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

लसत कंचनमय खम्भा खड़े, पांच-वर्ण सु रतननसों जड़े ।
बन रही मरगोले सार जू, शिखर-सहित सु नैन निहार जू ।।
ॐ ह्रीं स्तम्भशिखरामरगोलायुक्त-द्वितीयपीठसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं।
बन रह्यो श्री मण्डप देखिये, बँधिय झालरि मोतिन पेखिये ।
और रचना बहुत बनी तहाँ, लसत कलशा तुंग ध्वजा जहां ।।
ॐ ह्रीं विविधरचनायुक्त-श्रीमण्डपसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।
तरु अशोक सु नयन निहार कें, नशत शोक महाभय धार कें ।
जड़ित हीरा मूल सु जानिये, कनकमय शाखा परमानिये ।।
पत्र पत्रा के रँग देखिये, फूल लाल सु नयनन पेखिये ।
फल मनोहर सुन्दर गाइये, लसत मण्डप पर सो छाइये ।।
ॐ ह्रीं श्रीमण्डपोपरि विविधरचनायुक्ताशोकवृक्षशोभासंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।
पीठ दूजी आठ दिशा गनो, तहँ सु आठ ध्वजा लहकें भनो ।
चक्र-हाथी-सिंह विशेषिये, नभ सु माला वृषभ सु पेखिये ।।
गरुड़-कमल-पताका के विषें,लसत चिन्ह सु लहकतही दिखें ।
वसु सु-मंगलद्रव्य धरी तहाँ, धूप-घट सुन्दर सोहे जहाँ ।।
ॐ ह्रीं अनेकरचनयुक्तद्वितीयपीठसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।
पीठ तीजी नयन निहारिये, धनुष एक हजार सु मानिये ।
कही सूची सुन्दर गाय कें, धनुष चार सु ऊंची पाय कें ।।
ॐ ह्रीं एकसहस्रधनुरायत-चतुर्धनुरुच्चतृतीयपीठसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं।
बन रहे वसु जाम शिवान जू, रतनजड़ित सु निहचे आन जू ।
लसत है जु कटहरा सार जू, पीठ तीजी पर सु विचार जू ।।
ॐ ह्रीं महाशोभायुक्त-तृतीयपीठसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।
पीठ तीन सु ऊपर जानिये, लसत गन्धकुटी मन आनिये ।
गन्धकुटी चौकोर निहारिये, बनि रहो सुन्दर सु विचारिये ।।
ॐ ह्रीं पीठत्रयोपरि समचतुष्कोणगन्धकुटीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्रायअर्घ्यं।

(अडिल्ल छन्द)

अब जु गन्धकुटी को वर्णन जानिये,लम्बी छहसौ धनुष वृषभके मानिये ।
इतनी ही चौड़ाई नयन निहारिये, नवसै धनुष उतुंग जु यह मन धारिये ।।

ॐ ह्रीं गन्धकुटीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

तेइस के क्रमहीन जान सुखकार जू,फिर कैसी है गन्धकुटी सु विचार जू।
सार सुगन्ध-समूह पूर तामें रह्यो, 'गन्धकुटी' यह नाम जान तातें कह्यो ।।

ॐ ह्रीं अन्तिमत्रयोविंशतिजिनेन्द्राणां क्रमहीनविस्तारापन्न-गन्धकुटीसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जहाँ विराजत श्री जिनदेव सुहावने,सो सुथान को वर्णन सुन गुणगावने ।
ज्ञानगम्य सो जान कहै को सारजू,वचननद्वार को बाँचे सो सुखकार जू ।।

ॐ ह्रीं वचनागोचर-गन्धकुटीसिंहासनसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं

गन्धकुटी में सिंहासन त्रय जानिये,श्वेत फटिकमय जान हृदयमें आनिये ।
नानाविध के रतन जड़े तहँ पेखिये,लटकत घण्टा आदिक नैनन देखिये ।।

ॐ ह्रीं विविधरत्नमयगन्धकुटी-सिंहासनसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सुन्दरी छन्द)

लसत सिंहासन पर सोहने, कमल सुर-नर को मन-मोहने ।
वर्ण लाल लसें सुखकार जू, सहसपत्र विलोक विचार जू ।।

ॐ ह्रीं सहस्रपत्रयुक्त-सुवर्णकमल-विशिष्टसिंहासनसंयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

कमल-बीच करणिका जानिये, चार अंगल ऊंची मानिये ।
लसत श्री जिनराज विशाल जू, करत पूजा इन्द्र त्रिकाल जू ।।

ॐ ह्रीं कमलोपरि चतुरंगुलान्तरीक्षजिनसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं

(अडिल्ल छन्द)

जैसी श्री जिनदेव-कान्ति तैसी कही, ताही को भामण्डल पूर रह्यो सही ।
अब तीर्थंकरदेव ऊँचाई जानिये, सो कहने परिमाण हृदय में आनिये ।।

ॐ ह्रीं जिनतनुसमान-कान्तियुक्त-भामण्डलसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

(सवैया छन्द)

पांच साढ़े चार-चार साढ़े तीन-तीन ढाई,
दोय डेढ़ एक सौ धनुष उर आनिये ।
नवै असी सत्तरि धनुष साठि जानिये,
पचास गिन पैतालीस चालिस प्रमानिये ।।
पैतिस जु तीस अरु पचीस बीस पन्द्रहदश,
सवा-द्वै-पौने-द्वै धनुष सु पेखिये ।
चौबिस जिनेश-काय तुंगता दई बताय,
भव्यजीव हिये लाय शीश नाय देखिये ।।

ॐ ह्रीं एतत्पद्योक्त-जिनकायोच्चता-शोभासंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

चार कोट वेदी पांच चौगुने जिनेश जु,
ऊंचे कहे गात भैया देखो मन लाय कें ।
मन्दिर जिनेश-थान कोट वेदी द्वार जान,
तूप मानस्तम्भ धरें पर्वत बनाय कें ।।
क्रीड़ा के सु थान नृत्यशाला कल्पवृक्ष जान,
सिद्धारथ वृक्ष सार सुन्दर सु लीजिये ।
बारे कोठा बीच श्री मण्डप विराजमान,
बारह गुणे ऊंचे जान देख प्रभू जीजिये ।।

ॐ ह्रीं समवसरणरचना-तुंगताप्रमाणसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

श्रीमण्डप पूजा प्रारम्भ

(अडिल्ल छन्द)

श्री मण्डप में जान विराजें देव जू,
सुर-नर पूजत पांय करें नित सेव जू ।

हम पूजत शिरनाय यहां कर थापना,
जजत जिनेश्वर-पाय लहें हित आपना ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राः अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं समवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं समवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक (श्री शान्तिनाथ जी की पूजा की चाल में)

सु तारक पूजत हों जय समवसरण में जाय सु तारक पूजत हों ।
श्री चौबिस जिन के पाय सु तारक पूजत हों ।। (अचरी-इस चाल में)

कंचन की झारी में भरि कें उज्जवल नीर सु लावो ।
जन्म-जरा दुःख नाशन-कारण श्री जिन-चरण चढ़ावो ।।
सु तारक पूजत हों जय समवसरण में जाय सु तारक पूजत हों ।
श्री चौबिस जिन के पाय सु तारक पूजत हों ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय जलं ।

केशर में कर्पूर मिला के मलयागिर सुखराशी ।
चरण पूज जिनराज प्रभु के भव-आताप-विनाशी ।।सु.।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय चन्दनं ।

देवजीर सुखदास सु अक्षत मुक्ताफल-सम आनों ।
पुंज मनोहर जिनपद आगे देत अखय-पद जानो ।।सु.।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अक्षतान् ।

कमल-केतकी-जुही-चमेली-बेला सुभग सुहावे ।
ले गुलाब जिनवर-पद-पूजों काम-नाश शिव पावे ।। सु. ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय पुष्पं ।

फेनी-घेवर-मोदक-लाडू-गोझा सरस सुहाते ।
क्षुधारोगी-निर्वारन-कारन पूजत कर धर ताते ।। सु. ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय नैवेद्यं ।

मणिमय दीप अमोलक लेकर बाती तुरत प्रजालो ।
मोहतिमिर भहरात फिरे तहँ जगमग होत दिवालो ।। सु. ।।
ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय दीपं ।
कृष्णागरु कर्पूर कूट के धूप दशांगी खेवो ।
अष्टकर्म छिनमाँहि सु जरि के छार होंय प्रभु सेवो ।। सु. ।।
ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय धूपं ।
श्रीफल-लोंग-सुपारी भारी पिस्ता नये चढ़ावो ।
कहत जिनेश्वर-मुखतैं वानी तुम हू सुर शिव जावो ।। सु. ।।
ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय फलं ।
जल-फल अर्घ्य बनाय गाय गुण पढ़ि जयमाल सु नाचों ।
तुच्छबुद्धि कवि 'लाल' पाय के वाँचत मन धर सांचो ।। सु. ।।
ॐ ह्रीं समवसरणस्थितजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जयमाल

दोहा- समवसरण के बीच में श्रीमण्डप सुविशाल ।
बीच विराजें शम्भु जी 'लाल' भने जयमाल ।।

(त्रिभंगी छन्द)

जय जय गुण-सुन्दर नमत पुरन्दर धरम-धुरन्धर जगतपते ।
जगमग तसु ज्ञानं दुर्णय भानं जोग-निधानं देव-नते ।।

(पद्धरि छन्द)

जय चार घातिया घात नमस्ते, राग-द्वेष दो टारि नमस्ते ।
केवलदर्शन पाय नमस्ते, परमौदारिक-काय नमस्ते ।।
इन्द्र आय आनन्द नमस्ते, पूजा करत सु छन्द नमस्ते ।
क्षीरोदधि जल लाय नमस्ते, नहुन करत गुण-गाय नमस्ते ।।
वसुविध द्रव्य चढ़ाय नमस्ते, स्तुति करत बनाय नमस्ते ।
सब देवन सिरताज नमस्ते, गुणमण्डित जिनराज नमस्ते ।।

महामोह-हतिकार नमस्ते, भव्यन को सुखदाय नमस्ते ।
पर-परिणति-परिहार नमस्ते, ज्ञाननिधान सु भान नमस्ते ।।
निस्पृह हो जगतें जु नमस्ते, धरि समाधि वैराग्य नमस्ते ।
सिद्ध-चिदानंदराय नमस्ते, शिवमारग दरशाय नमस्ते ।
सुर-नर मिल नित ध्याय नमस्ते, करुणासागर देव नमस्ते ।
अशरण-शरण जिनेश नमस्ते, वचन दयारस लीन नमस्ते ।।
हरि-हर करि प्रभु-पूज नमस्ते, लोकालोक-विलोक नमस्ते ।
जय-जय जग-आधार नमस्ते, सुर जय-जय उच्चार नमस्ते ।।
पंचाचार सु पाय नमस्ते, इन्द्र सु स्तुति गाय नमस्ते ।
फिर निज भाल नवाय नमस्ते, मण्डित नृत्य सु ध्याय नमस्ते ।।
थेइ-थेइ-थेइ धुनि होत नमस्ते, जगमग जिन-तन-ज्योति नमस्ते ।
बाजत बीन-मृदंग नमस्ते, दे परदक्षिण तीन नमस्ते ।।
बहुविध पुण्य उपाय नमस्ते, जय-जय-जय सुखदाय नमस्ते ।
प्रातिहार्य वसु पाय नमस्ते, तरु अशोक हो पास नमस्ते ।।
सुर वरषावत पुष्प नमस्ते, वाणी-खिरत जिनेश नमस्ते ।
तीन छत्र शिरधार नमस्ते, ढोरत चौंसठ चमर नमस्ते ।।
सिंहासन थिर देख नमस्ते, भामण्डल छवि-पेख नमस्ते ।
बाजत दुन्दुभि द्वार नमस्ते, श्रावक-श्राविका करें नमस्ते ।।
देव असंख्यातें सु नमस्ते, गुण अनन्त विख्यात नमस्ते ।
श्रावकगण सुखदाय नमस्ते, क्षमावान् गुणवान् नमस्ते ।।
जय-जय भाल नवाय नमस्ते, तुच्छबुद्धि 'कवि लाल' नमस्ते ।
भव-वारिधितें तार नमस्ते, यह विनती उरधार नमस्ते ।।

दोहा- श्री अरिहन्त जिनेश की, गूँथी शुभ जयमाल ।
जो पहिरे भवि कण्ठ में, तिनके भाग्य विशाल ।।

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपकेवलिसंयुक्त-समवसरणस्थितजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं ।

अडिल्ल

जो बाँचे यह पाठ सरस मन-लायकें,
सुनें भव्य दे कान सु मन हरषायकें ।
धन-धान्यादिक पुत्र-पौत्र-सम्पत्ति वरे,
सुरनरके सुख भोगि बहुरि शिवतिय वरे ।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण, कामदेव आदि अनेक राजाओं व भव्य जीवों द्वारा समवसरण में क्रियमाण पूजा का वर्णन

दोहा

छहों-खण्ड त्रय-खण्डपति भूप सु मन हरषाय ।
समवसरण में जायकें पूजत श्री जिनराय ।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक (कुसुमलता छन्द)

पद्म-द्रह को नीर अनुपम कंचन-झारी में भर लाय ।
श्री जिन-चर्ण चढ़ावत भविजन जन्म-जरा-दुःख दूर पलाय ।।
तीनखण्ड छहखण्ड-भूप मिल पूजत श्री जिनवर के पाँय ।
ताल-मृदंग साज तब बाजत जय-जय-जय जिनवर सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय जलं ।

केशर अरु कर्पूर मिला कें रतन कटोरा में धर सार ।
भव-आताप-विनाशन-कारन श्री जिन-चर्ण चढ़ावत गार ।।तीन.।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय चन्दनं ।

देवजीर सुखदास अटूटे अक्षत सुन्दर धोय बनाय ।
पुँज धरों श्रीजिनवर के ढिंग अक्षयपद पावों गुण गाय ।।

तीनखण्ड छहखण्ड-भूप मिल पूजत श्री जिनवर के पाँय ।
ताल-मृदंग साज तब बाजत जय-जय-जय जिनवर सुखदाय ।।
ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय अक्षतान् ।
कमल-केतकी-बेल-चमेली-श्रीगुलाब सुन्दर सुखकार ।
श्री जिनवर पद-पूजत भविजन भावसहित भाजे खल मार ।। तीन. ।।
ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय पुष्पं ।
बाबर-घेवर-मोदक- खाजे- फेनी- गोझा सरस सुहाय ।
श्री जिन-चर्ण चढ़ावत भविजन देखत क्षुधा सु दूर पलाय ।। तीन. ।।
ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय नैवेद्यं ।
दीप रतनमय कनक रकेबी जगमग ज्योति सु होत विशाल ।
श्री जिन-चर्ण चढ़ाय गाय गुण मोह-तिमिर भाजे तत्काल ।। तीन. ।।
ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय दीपं ।
कृष्णागरु वर धूप अग्नि में खेवत भविजन मन-हरषाय ।
अष्टकर्म के नाशन-कारण श्री जिनवर पद-पूजत आय ।। तीन. ।।
ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय धूपं ।
श्रीफल-दाख-छुहारे-पिस्ता-लोंग-सुपारी आदिक लाय ।
भाव सहित श्री जिन पद पूजे मुक्ति श्री पावे हरषाय ।। तीन. ।।
ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय फलं ।
जल-चन्दन धरि फूल मनोहर अक्षत-नेवज-दीप विशाल ।
धूप-श्रीफल अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाय गाय गुणमाल ।। तीन. ।।
ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

जयमाल

छन्द

जय-जय-जय जिनराज जी तीर्थंकर सु विशाल ।
तिन पद वन्दों भाव-सों 'लाल' भने जयमाल ।।

(पद्धरि छन्द)

सुर-नर-मुनिगण गावत जय-जय, श्री आदीश्वर ध्यावत जय-जय ।
अजितनाथ जिनराज सु जय-जय, सब देवन सिरताज सु जय-जय ।।
सम्भवजिन जगनायक जय-जय, गुणमंडित अघघातक जय-जय ।
श्री अभिनन्दन देव सु जय-जय, करत अमरगण सेव सु जय-जय ।।
सुमति सुमति दातार सु जय-जय, भविजीवन-सुखकार सु जय-जय ।
पद्मप्रभ शिवदायक जय-जय, मुकतिवधू वरनायक जय-जय ।।
श्री सुपार्श्व वरज्ञान सु जय-जय, लोकालोक सु ज्ञायक जय-जय ।
चन्द्रप्रभ द्युति-चन्द्र सु जय-जय, पूजत पातक मन्द सु जय-जय ।।
पुष्पदन्त परमेश्वर जय-जय, पूजा करत सुरेश सु जय-जय ।
श्री शीतल जिनराज सु जय-जय, छत्र सु तीन विराजित जय-जय ।।
श्री श्रेयांस जिनेन्द्र सु जय-जय, पूजत सर्व सुरेन्द्र सु जय-जय ।
बजत दुन्दुभी-साज सु जय-जय, वासुपूज्य जिननाथ सु जय-जय ।।
विमल शीश पर अमर सु जय-जय, ढोरत चौंसठ चमर सु जय-जय ।
ज्ञान अनन्तो पाय सु जय-जय, श्री अनन्त जिनराज सु जय-जय ।।
धर्मनाथ पद परसत जय-जय, शिवसुन्दरि को दरसत जय-जय ।
शान्ति शान्ति-करतार सु जय-जय, भवि जीवन आधार सु जय-जय ।।
कुन्थुनाथ सुखकारण जय-जय, श्री परमेश्वर तारण जय-जय ।
अर जिनवर यशवान सु जय-जय, परमपुरुष गुणखान सु जय-जय ।।
मल्लि मुक्ति-कान्तावर जय-जय, शिव सु थान में वास सु जय-जय ।
मुनिसुव्रत जगदीश्वर जय-जय, सब विद्या के ईश्वर जय-जय ।।
नमि जिनवर जिनराज सु जय-जय, पूजत भवि सिर नाय सु जय-जय ।
नेमिनाथ रजमति-वर जय-जय, छोड़े बन्दि दयाधर जय-जय ।।
श्री पारस पद-वन्दत जय-जय, तीन लोक आनन्दित जय-जय ।
निज आतमहित-कारण जय-जय, वर्धमान भवतारक जय-जय ।।

चौबीसों जिनराज सु जय-जय, पूजत मन-वच-काय सु जय-जय ।
पावत शिवपद हाल सु जय-जय, नमन करतु कवि 'लाल' सु जय-जय ।।

(दोहा छन्द)

चौबीसों जिनराज के समवसरण में जाय ।
नारायण षट्खण्ड-पति पूंज करी सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

जो बाँचे यह पाठ सरस मन लाय कें,
सुने भव्य दे कान सु मन हरषाय कें ।
धन-धान्यादिक पुत्र-पौत्र-सम्पति करे,
नर-सुर के सुखभाग बहुरि शिवतिय वरे।।

इति आशीर्वादः

चतुर्विंशति जिनपूजा प्रारम्भ

(सुन्दरी छन्द)

फिर सु इन्द्र प्रभु-पूजा करे नाय शीश सु भक्ति हिये धरे ।
करत पूजा इन्द्र सु गायके हम यहाँ पूजत मन लायके ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्राः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथ अष्टक (कार्तिक की चाल में)

प्राणी पद्म-द्रह को नीर ले उज्ज्वल शशि की उनहार ।
प्राणी श्री जिन-चरण चढ़ाय के दुःख जन्म-जरा निरवार ।।
प्राणी इन्द्र सुरग-तें आय के पूजत शिवनायक-पाँय ।
प्राणी चौबीसों जिन पूजिये, प्राणी चौबीसों जिन पूजिये ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रभ्यः जलं ।

प्राणी केशर-अगरु-कपूर ले मलयागिर-गन्ध अपार ।
प्राणी श्री जिन-चरण चढ़ायकें भवताप-नाश-निर्धार ।
प्राणी इन्द्र सुरग-तें आय कें पूजत शिवनायक-पाँय ।।प्रा.चौ.।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः चन्दनं ।

प्राणी अक्षत आछे लाय कें अनबीधें मोती आन ।
प्राणी श्री जिन-चर्ण चढ़ाय कें अक्षयपद पावे जान ।।
प्राणी इन्द्र सुगर-तें आय कें पूजत शिवनायक-पाँय ।।प्रा.चौ.।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अक्षतान् ।

प्राणी बेल-चमेली-केवरो इन आदिक फूल गुलाब ।
प्राणी श्री जिन-चर्ण चढ़ाय कें काम-बाण मिट जाय ।।
प्राणी इन्द्र सुरग-तें आय कें पूजत शिवनायक पाँय ।
प्राणी चौबिसों जिन पूजिये प्राणी चौबिसों जिन पूजिये ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं ।

प्राणी फेनी-घेवर आदि ले बहु भाँतिन के पकवान ।
प्राणी श्री जिन-चर्ण चढ़ाय के क्षुधा-नशे दुःखदान ।।
प्राणी इन्द्र सुरग-तें आय के पूजत शिवनायक-पाँय ।।प्रा.चौ.।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः दीपं ।

प्राणी कृष्णागरु कर्पूर ले धरि धूप दशांग बनाय ।
प्राणी श्री जिन-चर्ण चढ़ाय कें वसुकर्म दये सु जराय ।।
प्राणी इन्द्र सुरग-तें आय कें पूजत शिवनायक-पाँय ।।प्रा.चौ.।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः धूपं ।

प्राणी लोग-सुपारी-लायची-बादाम सु पिस्ता सार ।
प्राणी श्री जिन-चर्ण चढ़ाय के शिवफल पावे सुखकार ।।
प्राणी इन्द्र सुरग-तें आय कें पूजत शिवनायक-पाँय ।।प्रा.चौ.।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः फलं ।

प्राणी जल--फल अर्घ्य बनाय कें जिनराज चढ़ावत लाय ।
प्राणी आठों कर्म-विनाश कें 'कवि लाल' सदा बलि जाय ।।
प्राणी इन्द्र सुरग-तें आय कें पूजत शिवनायक-पाँय ।।प्रा.चौ.।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं ।

जयमाल

दोहा- चौबीसों जिनराज की कही समुच्चय गाय ।
जय-जय-जय जयमाल यह नित-नित मंगलदाय ।।

(पद्धरि छन्द)

जय चौबीसों जिनराज देव, सुर-नर-इन्द्रादिक करें सेव ।
जब बलि-बलि जाय नवाय शीश,जय-जय-जय त्रिभुवनतार ईश ।।
जय समवसरण तिनको रसाल, जय सुरनि-रचायो बहुविशाल ।
जय वृषभ आदि महावीर जान, क्रम-हान सु ऊपर कही मान ।।
जय कर्म छार कीने जिनेश, सुर-नर-मुनि मिल ध्यावत जिनेश ।
चौबीसों जिन समवादिसर्न, सब संग विराजत सुनो वर्न ।।
जय गणधर चौदह सौ विशाल, त्रेपन वानी झेलत त्रिकाल ।
सब संग-भेद गनि सात सार, अट्ठाइस लख हृदयें विचार ।।
अड़तालिस सहस कहे बखान, जा भिन्न-भिन्न वर्णन सुजान ।
जय नव सै सेंतिस सहस आन, पूरबधारी चालीस मान ।।
जय बीस लाख सौ पाँच गाय,पचपन मुनिशिष चित में सु लाय ।
इक लाख सताइस सहस गाय, धारें जु अवधि छह सै सु लाय ।।
वसु सौ पौने दो लाख जान, केवलज्ञानी जिनवर समान ।
इक लाख सु पैंतालिस हजार, नव सौ सु पाँच चित में विचार ।।
पर के मन की जानत सु बात, जे धरों विक्रिया सुनो भ्रात ।
पैंतीस सहस दो लाख धार, नव सौ जिनराज कहे निहार ।।

चौबीस सहस सौ तीन जान, इक लाख वाद जीतें प्रमान ।
जय सात संघ भाषे सु गाय, जय सुनो आर्यिका मन-मिलाय ।।
जय लाख चवालिस गनि हजार, चौरानव जान लिखो सुधार ।
जय साढ़े छह सौ धर्म-लीन, जय लसें आर्यिका शुभ प्रवीन ।।
श्रावक अड़तालिस लाख जान, जिनधर्म हृदय तिनके समान ।
श्राविकनी छ्यानव लाख सार, मिथ्यात्व-त्याग बैठीं निहार ।।
जिनराज दरश देखें विलोक, उन्हीं के गुण मन में सु धोक ।
अनुबन्ध केवली लेहु जान, तेरह सौ आठ कहे बखान ।।
ग्यारह सौ ब्यासी परम जान, गति सन्त केवली हृदय आन ।
गत सिद्ध यती चौबीस लाख, चौंसठ हजार चौ चार भाख ।।
अनउत्तर गति दो लाख जान, वसु सौ सतहत्तरि सहस आन ।
सौधर्म अनुत्तर गति-मँझार, इक लाख सहस गनि पंच सार ।।
वसु सौ मुनि भाषिक हेजिनेश ! चौबीस यक्ष भाषे मुनेश ।
जय यक्षिणि चौबिस कहीं गाय, अब सिद्धक्षेत्र भाषों बनाय ।।
चम्पापुरि पावापुरि निहार, गिरनार शिखर कैलाश धार ।
सम्मेदशिखर जग में महान, जो बीस जिनेश्वर मोक्षस्थान ।।
जय एक बार वन्दै जु कोय, तिर्यंच-नरकगति तजे सोय ।
चौबीसों जिन संग मोक्ष पाय, गनि ग्यारह सहस दिये बताय ।।
इक घाट पाँच सौ कहे वीर, जिन-संग मोक्ष पहुँचे सु धीर ।
दिन चौदह वृषभ सु योग ध्यान, छह दिन श्री वीर-जिनेशमान ।।
बाइस जिन महिमा बीस दोय, ज़िन जोग ध्यान जानो सु लोय ।
शुभ दिन जिन मोक्ष गये निहार, मोक्षासन सुनि मन में विचार ।।
जय आदिनाथ जिन नेमिनाथ, जब वासुपूज्य भवि नमों माथ ।
पद्मासन मोक्ष गये सु मान, जिन इक इस आसन ऊर्ध्व जान ।।
शिव जाय विराजे सुख अनन्त, सब लोकालोक-विलोक सन्त ।

जय तिन गुण-गावत हरष-पाय,सुरनर थेइ-थेइ-मिलि कर लजाय।।
जय-जय जयवन्ते होउ देव, इन्द्रादिक सब मिल करें सेव ।
जय श्रावक सब सुख रायमान, गुणवान् बड़े विरले सु जान ।।
तिन मुख-तें वाणी अर्थ पाय, शुभ छन्द रचे अक्षर मिलाय ।
पण्डित पढ़ शोध धरो बनाय, लखि तुच्छबुद्धि 'कवि लाल' पाय ।।

दोहा

समवसरण को पाठ यह, जो बाँचे मन लाय ।
सम्यक्-सहित सुभाव-सों, सूधो शिवपुर जाय ।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

(अडिल्ल छन्द)

जो बाँचे यह पाठ सरस मन लायके,
सुने भव्य दे कान सु मन हरषायके ।
धन-धान्यादिक-पुत्र-पौत्र-सम्पति करे,
नरसुर के सुख भोग बहुरि शिवतिय वरे ।।

इत्याशीर्वादः

।। इति समवसरण पूजा विधानं सम्पूर्णम् ।।

श्री कविवर पं. टेकचन्द्रजी कृत

श्री पंचपरमेष्ठी विधान

दोहा

मनरंजन भंजन करम, पंच परम गुरु सार ।
पूजत हैं सुर नर खगा, पावत हैं भवपार ।।

सोरठा- प्रथमदेव अरिहन्त, गर्भ आदि षटमास के ।
मणिमय नगर करन्त, पीछे जिन अवतार ले ।।

चौपाई छन्द

पर परजाय छांड़ि जिनराय, गरभ विषें अवतार धराय ।
तब षोडश सुपना मा लेय, तिनकी कथा सुनो पुनि जेय ।।

अडिल्ल छन्द

ऐरावत गज वृषभ, सफेद सुजानिये ।
सिंह पहुप की माल, लक्ष्मि हित दानिये ।।
पूरण शशि रवि कुम्भ, दोय शुभ देखिया ।
मच्छ जुगल जल थान, केलिजुत पेखिया ।।

पद्धरि छन्द

सरवर कमलन करि पूर्ण जोय, जलराशि समुद्र फिर लख्योसोय ।
सिंहासन सुरग विमान जान, धरणेंदर देख्यो जानमान ।।

गीता छन्द

रतनराशि निहार अगनी, धूम बिन जोई सही ।
ये स्वप्न लखि मा हरष पायो, फेरि जिन जन्में सही ।।

पुन ठानि तप भवतरण अघहरि, ज्ञान केवल पाय हैं ।
तब होय अतिशय नाम सुनि अब जन्मते दश थाय हैं ।।

छन्द बेसरी

तब होय दश जिन लहे सु ज्ञानो, चौदह अतिशय सुरकृत मानो ।
आठ प्रतीहारज शुभ होवें, अनन्त चतुष्टय सब मल धोवें ।।

चाल छन्द

ये छ्यालीसों गुण जुत देवा, विचरें संग द्वादश भेवा ।
छवि देखि समोसर्ण केरी, हरि सुर पूजें करि फेरी ।।

चाल जोगीरासा की

फेरि सिद्धगुण आठ जु पाये, आठ करम के जारे ।
होय निरंजन चेतन मूरति, लोकशिखर थिति धारे ।।
आचारज गुण धार छतीसों, सुनि तिन कथा सुहाई ।
दशधा धर्म तप द्वादश गाये, पंच अचार सुभाई ।।

जिनजय की चाल

गुप्ति तीन षट आवसी, सब मिलि होंय छतीसा जी ।
बहुश्रुतगुणपच्चीस हैं, अँगपूरवसबपूराजी, बहुश्रुतपूजों भावसों,
बीस आठ गुन साधुके, तहां पंचमहाव्रत सारोजी, पंचसमिति
पंचअक्षिदमें, षटआवशि भेंट सुधारोजी।।तेगुरुअतिसुखकार हैं ।।

कड़खा छन्द

भूमि सोवें, सदा मंजन ते ना करें, त्याग वस्त्र तनों शीशलुंचें ।
खांय इकबार थिति, सुभग ठाने सदा, दंतधोवन तजें, साधुमानें ।।

चाल (सुन भाई रे)

ये ही पँचगुरु पूजिये, सुनि भाई रे ।
जो चाहे भव पार, चेत मन भाई रे ।
ये ही भवदधि नाव हैं सुनि भाई रे ।
को पुण्यतें यह पाय, चेत मन भाई रे ।।

कड़खा, छन्द

ये ही परमेष्ठी पाँच जग पूज्य हैं, मोहसो सुभट इन हेरि मार्‌यो ।
शेष कर्म सात तब,परे किस गिनति में,मारि के पलक में काज सार्‌यो ।।
आप भव तिर गये, और तारत भये, धारि करुणा, जगत जीव केरी ।
दीन को तार, संसार-हर देव हैं, मेटि हैं भगत की जगत फेरी ।।

।। इति भक्ति स्तुतिः समाप्ता ।।

अथ समुच्चय पूजा

(चाल पंचमंगल)

पंच परम गुरु सब सुखदाई, पूजों भविजन हर्ष बढ़ाई ।
तिनके पद सुर हरि नित सेवें, पूरब अघवन को धो देवें ।।
देवें जो अग्नी सकल वन कों, और कहो कहा गाइये ।
ताके सुफल भव छांड़ि भवि जन, मुकति रमणी पाइ़ये ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठि जिनसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टक

चाल (जोगीरासा की)

झारी कनक सुघाट मनोहर, निर्मल नीर भराई ।
जिन सिद्ध अचारज अरु बहुश्रुत धर, साधु जजों हरषाई ।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

चन्दन बावन निर्मल पानी, घसि कर लेकर लाई । जिन.

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनम् ।

अक्षत नखसिख शुद्ध सुगन्धित नैनन को सुखदाई । जिन.

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

सुरद्रुमपहुप सुगन्ध मनोहर, मोहत अलि चित भाई । जिन.

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

षट्रस जुत नैवेद्य पवित्तर, क्षुधा विनाशनाय लाई । जिन.
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

रतन दीप धरि थाल आरती , हर्षित चित्त ले भाई । जिन.
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशधा धूप मिलाय अग्नि मधि, खेऊँ अति उमगाई । जिन.
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

श्रीफल लोंग सुपारी खारक, सुर शिव फलदा भाई । जिन.
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फलदाई ।
जिन सिद्ध अचारज अरु वहुश्रुतधर, साधु जजों हरषाई ।।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् ।

अडिल्ल छन्द

अरिहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्या साधु जी ।
ये ही पन भवतार भव्य अघघाति जी ।
पूजत सुर नर खगा मुकत फल कारने ।
तातें मैं भी जजों पाप शठ टारने ।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हदादिपंचपरमेष्ठिभ्यः महार्घ्यम् ।

अरिहन्त परमेष्ठि पूजा प्रारम्भ

प्रत्येक गुण के पृथक् पृथक् अर्घ्य

जन्म के दश अतिशय, चौपाई

जनमत दश अतिशय जिन लेय, पूजत सुर नर हर्ष धरेय ।
नाहिं पसेव होय तन मांहि, सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ांहि ।।
ॐ ह्रीं स्वेदरहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।१।।

मल नहिं होय तास तन माँहि, निर्मल देह होय सुखदाँहि ।
यह अतिशय जिनतन में थाँहि, सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ांहि ।।
ॐ ह्रीं मलरहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।२।।

संस्थान समचतुर जु होय, ओछ घाट कबहूँ नहिं जोय ।
यह अतिशय जो जन्मत पाँहि, सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ांहि ।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।३।।

वज्रवृषभ संहनन जु होय, अद्भुत महिमा धारे सोय ।
यह अतिशय जिन जन्मत पाहिं,सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ांहि ।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसहननसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।४।।

होय शरीर सुगन्ध अपार, नासा विषें हर्ष करतार ।
ऐसी शोभा अन्य न पांहि, सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ांहि ।।

ॐ ह्रीं सुगन्धितशरीरसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।

ऐसो रूप जिनेश्वर लहें, कामदेव कोटिक झवि जहें ।
यह अतिशय जन्मत जो पांहि,सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ांहि ।।

ॐ ह्रीं महारूपातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।

भले भले लक्षण सो जान, गुण अनेक तनों है खान ।
यह शुभ छवि सो जन्मत पांहि,सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ांहि ।।

ॐ ह्रीं शुभलक्षणातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।

जन्मत ही तिनके तन होय, शोणित स्वेत वरन अवलोय ।
यह अतिशय धारें तन मांहि, सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ांहि ।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णशोणितातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।

ऐसो वचन कहें मुख सोय, जिनकों सुनि जन मोहित होंय ।
मधुर मिष्ट वच अतिसुख दाय,सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं मधुरवचनातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।

ताके बल सम और न धाम,है बल अतुल्य जिनेश्वर ठाम ।
जन्मत ही बल अतिशय पाय, सो जिन पूजों अर्घ्य चढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबलातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।

केवलज्ञान के दस अतिशय

(अडिल्ल छन्द)

समोसरण जुत जहां, जिनेश्वर थिति करें,
तँहतें योजन इक शत, दुरभिख ना परे ।
ऐसो अतिशय केवल, उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा, जजें मद खोय है ।।

ॐ ह्रीं शतयोजनदुर्भिक्षनिवारकजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।१।।

जब जिन केवल लहें, गमन नभ में करें ।
देव असंख्ये गैल, भक्ति मुख उच्चरें ।।ऐसो.।।

ॐ ह्रीं आकाशगमनातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।२।।

जिनवर जहाँ थिति करें, सदा हितदाय जी ।
तिस थानक नहिं कोय, मारने पायजी ।।ऐसो.।।

ॐ ह्रीं दयाभावातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।३।।

देव नरा पशु खगा, और को दुठ तनी ।
इन उपसर्ग सु नाहिं वानि जिन यों भनी ।।ऐसो.।।

ॐ ह्रीं उपसर्गरहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।४।।

क्षुधा अधिक दुख करे,जगत इस वश पर्‌यो ।
सो जिन कबलाहार, खान सब परिहर्‌यो ।।ऐसो.।।

ॐ ह्रीं कवलाहाररहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।५।।

समोशरण तँह देव, जिनेश्वर थिति करें ।
जब मुख दीखें चार, भविन को सुख करें ।।ऐसो.।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखशोभितजिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यम् ।।६।।

ऐसो अतिशय केवल, उपजे होय है ।
ताके पद सुर नरा, जजें मद खोय है ।।
प्राकृत संस्कृत देश, सकल भाषा सही ।
सब विद्या अधिपत्य,सकल जानत सही ।।

ॐ ह्रीं सकलविद्याधिपत्ययुतजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।७।।

पुद्गल तन आकार, मूरती, बन रह्यो ।
ताकी छाया नहीं, महा अचरज भयो ।।ऐसो.।।

ॐ ह्रीं छायारहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।८।।

नख कच तन जो होंय,बँधन तिनको रह्यो ।
हैं जैसे ही रहें, एक गुण यह लह्यो ।।ऐसो.।।

ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिरहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।९।।

नेत्रों का टिमकार, नाँहि भौं कच हलें ।
नासापर दिठ सदा, कालजिन ध्रुव तुले ।।ऐसो.।।

सोरठा

ये दश अतिशय सार, केवल उपजे जिन लहें ।
सो जिन हैं भवतार, सेवो भवि वसु द्रव्यतें ।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानस्य दशातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।११।।

देवकृतचतुर्दशातिशय वर्णन

अर्ध-मागधी वान, सब जीवन सुखदाय है ।
अतिशय जिन को मान, देवनिमित्तिक धुनि कहें ।।

ॐ ह्रीं अर्धमागधीभाषासहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।१।।

जँह जिनकी थिति होय, सकल जीव मैत्री समा ।
अतिशय जिनके जोय, देव निमित्तिक वरनयो ।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावयुतजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।२।।

षटरितु के फल फूल, फलें जहां जिन थिति करें ।
जिन अतिशय सुखमूल, निमित मात्र सुर हों सही ।।

ॐ ह्रीं षड्ऋतुफलपुष्पसहोपलब्धिसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।३।।

दर्पण सी सब भूमि, होय जहां जिन विचरि हैं ।
जिन अतिशय अघ-होमि, देवनिमित मातर कहे ।।

ॐ ह्रीं दर्पणसमभूम्यतिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।४।।

मन्द सुगन्धी पौन, होय जीयको हितकरी ।

जिन अतिशय शुभ सौनि, मोक्षगमन को है सही ।।
ॐ ह्रीं सुगन्धितपवनातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।५।।

सर्व जीव आनन्द, होय जहाँ जिन विचरि हैं ।
कटत पाप के फन्द, देव निमित-मात्तर सही ।।
ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारकजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।६।।

गतकंटक भू होय, अतिशय सो जिनदेव को ।
देव-निमित्तिक सोय, पूजों शिवसुख अवतरे ।।
ॐ ह्रीं कण्टकरहितधरातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।७।।

गन्धोदक - शुभवृष्टि, देव करें अतिशुभ लहे ।
सुख पावत लखि सृष्टि,महिमा जिनवर देव की ।।
ॐ ह्रीं गन्धोदकवृष्ट्यतिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।८।।

जिनपद पूजें देव, कमल रचें हित कारने ।
अद्भुत महिमा लेव,भाषित जिन सब भवि करो ।।
ॐ ह्रीं पदतलकमलरचनासहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।९।।

निर्मल होय अकाश, सब जीवन सुखकार जी ।
अतिशय जिन सुखराश, देव करें उर भक्ति तें ।।
ॐ ह्रीं निर्मलगगनातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।१०।।

सब दिश निर्मल होय, धूम मेह वर्जित सुभग ।
अतिशय जिनको जोय, देव करें वश भक्ति के ।।
ॐ ह्रीं सर्वदिशानिर्मलतातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।११।।

देव करें जयकार, ता करि नभ बहरो कियो ।
अतिशय जिनको सार, देव भक्तिवश उच्चरें ।।
ॐ ह्रीं जयजयशब्दातिशयसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।१२।।

धर्मचक्र सुर लेय, अगवानी नित संचरें ।
अतिशय जिनको जेय, देव करें वश भक्ति के ।।
ॐ ह्रीं धर्मचक्रातिशयसहितजिनेभ्य. अर्घ्यम् ।।१३।।

मंगल द्रव वसु जान, देव लेय आगे चलें ।
अतिशय जिनको मान, देव सहायक भक्ति के ।।
ॐ ह्रीं वसुमंगलद्रव्यसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।१४।।

केवलज्ञान हुये हों भाई, ये चौदह श्रुतज्ञान बताई ।
इनमें देव निमित्त बखानो, यातें ये देवोंकृत मानो ।।
ॐ ह्रीं देवकृतचतुर्दशातिशयसहितजिनेभ्यः महार्घ्यम् ।

अष्टप्रातिहार्य वर्णन (भुजंगीछन्द)

कहो प्रतिहार्य वसु हर्षदाई, तहाँ बिरछ अशोक नहीं शोकदाई ।
लखे तास को शोक हेरो न पावें,ये महागुण जिन बिना नाहिं आवें ।।
ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।१।।

देव सुरद्रुम के फूल ल्यावें, महाभक्तिवशमेघ ज्यों ते चलावें ।
मनो ज्योतिषी ध्यान नभ से सुध्यावें, ये महागुण जिन. ।।
ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।२।।

दिव्यधुनी सकल जीय को सुहाई,सुनें पापछय हो भला पुण्यदाई ।
नमें देव खग और सबै पाप जावे, ये महागुण जिन. ।।
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।३।।

चमर गंध धारा जिमें शोभदाई, चलें देवकरि वोपमा भूरि थाई ।
घने जीव मुखतें प्रभू भक्ति गावें, ये महागुण जिन. ।।
ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरवीज्यमानजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।४।।

जगपूज्य सिह पीठ भगवान केरो,नमें ता सको नाशिहै जगत फेरो ।
लगे कनक जुत रतन बहुशोभ द्यावें, ये महागुण जिन. ।।
ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।५।।

महा जोति जिन तनतनो चक्र थायो,प्रभा पूजता ने भलो नाम पायो ।
लखे तास को सात भौ दरसि आबें, ये महागुण जिन. ।।
ॐ ह्रीं प्रभामण्डलप्रातिहार्यसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।६।।

घनी जाति के देव बाजे बजावें, तिको दुंदुभि शब्द शुभ नाम पावें ।
भने देव मुख वीनती हर्ष ल्यावें, ये महागुण जिन. ।।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभिप्रातिहार्यसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।७।।

जड़े कनक नग छत्र मणि दंड धारें,लगी माल मोतिन की लिपटि सारें ।
मनोतीन जगजीव को छांय आवे, ये महागुण जिन. ।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविभूषितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।८।।

अडिल्ल छन्द

वृक्ष अशोक सिंहासन भामण्डल चमर,
पुहुपवृष्टि दिव्यधुनि, दुन्दुभि छत्र वर ।
ये वसु प्रातीहार्य, जिनों के होय हैं,
इन बिन ये नहिं, और देव के होय हैं ।।

ॐ ह्रीं वसुप्रातिहार्यविभूषितजिनेभ्यः महार्घ्यम् ।।

अनन्तचतुष्टयों का वर्णन

(वेसरी छन्द)

दर्शन अनन्त अनन्तहि जोवे, जो जो भई होय वा होवे ।
यातें पद सर्वज्ञ सु होई, ये गुण जिन विन लहे न कोई ।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।१।।

ज्ञान अनन्तानन्त जनावे, तीन लोक त्रयकाल लखावे ।
पद सर्वज्ञ तास तें होई, ये गुण जिन विन लहे न कोई ।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।२।।

सुख अनन्त मनोहर होवे, बाधा अनन्तकाल नहिं जोवे ।
सुख अनन्त बिन देव न होई,ये गुण जिनविन लहे न कोई ।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुखसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।३।।

अन्तराय भट जिन जय लीनो,तिनभव दुख हर कारज कीनो ।
अनन्तवीर्य परकाशन होई, ये गुण जिन विन लहे न कोई ।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यसहितजिनेभ्यः अर्घ्यम् ।।४।।

दश जन्मत दश केवल उपजे होय हैं,
चौदह सुरकृत अनन्त चतुष्टय सोय हैं ।।
प्रातिहार्य वसु सब मिलि गुण छियालीस जी,
इन अतिशय जुत होय सोय जगदीश जी ।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहितजिनेभ्यः महार्घ्यम् ।

जयमाला

बेसरी छन्द

जिन अतिशय छ्यालीस सुपावे, ताकी कथा सकल मन भावे ।
सो भवि चित दे सुनो बखानों, तातें होय पापमल हानों ।।
जन्मत दश ये स्वेद न होई, संस्थानक समचतुर सुजोई ।
सँहनन वज्रवृषम नाराचै, मलनहिंतन सुगन्ध शुभ माचै ।
महापुरुष शुभ लक्षण हो हैं, स्वेत रुधिर वच मधुर सुसोहैं ।
बल अनन्त जिन तन में पावे, जन्मत तो ये दशगुण थावे ।।
केवलज्ञान भये दश जानो, शतयोजन दुर्भिक्ष न मानो ।
नभ में गमन दया सब ल्यावे, ना उपसर्ग देव के थावे ।।
कबलाहार नहीं जिन केरो, चौमुख दीखे छांह न हेरो ।
सब विद्या के ईश्वर होई, नख अरु केश बढ़े नहिं कोई ।।
आंखिन की भों टिमकें नांही, ये दश केवल उपजे थाहीं ।
अब सुनि देव चतुर्दश ठाने, अर्द्धमागधी भाषा माने ।।
सकल जीव के मैत्री भावो, सब रितु के फल फूल फलावो ।
दर्पणतुल्य भूमि तहां होई, मन्द सुगन्ध पवन शुभ जोई ।।
सब जीवन को आनंद होवे, भूमि कंटिकारहित सु होवे ।
गन्धोदक की वरषा जानो, पदतल कमल रचत हितथानो ।।
निर्मल गगन देव जयवानी, दशो दिशा निर्मल अधिकानी ।
धर्मचक्र वसु मंगल ठानो, ये चौदह देवोंकृत मानो ।।
अब सुनि प्रातिहार्य वसुभाई, तरु अशोक सुमवर्षा थाई ।

दिव्यधुनी सिंहासन जानो, भामण्डल दुन्दुभि सुखदानो ।।
छत्र चमर वसु जानो भाई, फिर ये चार चतुष्टय थाई ।
दर्शन ज्ञान वीर्य सुख वेवा, ये छ्यालीस सुगुणयुत देवा ।।
ये गुण जामें देव कहावे, इन विन देवपना ना पावे ।
यातें देव परख करि सेवो, सुरग मुकति सुख को भवि वेवो ।।

घत्ता- जँह ये गुण होई, देव सु सोई, मंगलकारी भव्यन को ।
सो मोकों तारो, पार उतारो, शिवसम्पति दे सव जनको ।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशदगुणसहितजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सिद्धपरमेष्ठि पूजा

अडिल्ल- आठों कर्म निवारि, धारि गुण आठजू,
भये निरंजन छिन में सुख के ठाठ जू ।
बातबलै तनु ठये, लोकत्रयपति भये,
ते सिध नमों सुभाय ज्ञानमूरति ठये ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

पद्धरि छन्द

ये ज्ञानावरणी पंच वीर, जिन घात्यो जियगुण ज्ञान धीर ।
सब घाति अज्ञता लयो ज्ञान, ते सिद्ध जजों त्रय जग प्रधान ।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारज्ञानावरणकर्मविनाशकसिद्धेभ्यः अर्घ्यम् ।

नवदर्शन वरनी दरश छाय, इन घातें तें भगवान थाय ।
सो धरे अनन्त दर्शन सुथान,ते सिद्ध जजों त्रय जग प्रधान ।।

ॐ ह्रीं नवप्रकारदर्शनावरणकर्मविनाशकसिद्धेभ्यः अर्घ्यम् ।

कर्म एक वेदनी दोय भेव, जिनकों सुख दुख देवे स्वमेव ।
हो वेदनि विजय अबाध थान,ते सिद्ध जजों त्रय जग प्रधान ।।

ॐ ह्रीं द्विप्रकारवेदनीयकर्मरहितसिद्धेभ्यः अर्घ्यम् ।

मोह दो प्रकार वश जगत जोर,तिनजिय सम्यक गुण जयोसोर ।
ता मोह विजय सम्यक्त्ववान, ते सिद्ध जजों त्रय जग प्रधान ।।

ॐ ह्रीं द्विविधमोहकर्मविनाशकसिद्धेभ्यः अर्घ्यम् ।

कर्म आयु चार वश जगत जेर, पोड़े पग ज्यों परवश पड़ेर ।
तिन आयुघाति अवगाह ठान,ते सिद्ध जजों त्रय जग प्रधान ।।

ॐ ह्रीं चतुःप्रकारायुःकर्मविनाशकसिद्धेभ्यः अर्घ्यम् ।

कर्म नाम चतेरा ज्यों बखान, इन घाति अमूरति भये सुजान ।
गति स्वांग धरन त्यागो महान, ते सिद्ध जजों त्रय जग प्रधान ।।

ॐ ह्रीं त्रिनवतिप्रकारनामकर्मविनाशकसिद्धेभ्यः अर्घ्यम् ।

ये गोत्रकर्म दोविध सरूप, ता वशि कबहूँ फिर रँकभूप ।
ये नाशि अगुरुलघु गुण समान,ते सिद्ध जजों त्रय जग प्रधान ।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मविनाशकसिद्धेभ्यः अर्घ्यम् ।

विधि अन्तरायकर्म पाँच भेव, जिन जियको गुन धात्योस्वमेव ।
ताको हति के बल अनन्त ठान,ते सिद्ध जजों त्रय जग प्रधान ।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारान्तरायकर्मविनाशकसिद्धेभ्यः अर्घ्यम् ।

गीता छन्द

ज्ञान दरशनावरण वेदनी, मोह जुत चारों हनी ।
आयु नाम रु गोत्रकर्म अन्त-राय हर कीनी मनी ।।
ये आठ कर्म हरि दाहि आतम, आपको पद शुध कियो ।
ये भये तीनों लोक नायक, नमों, ध्रुव चाहो जियो ।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशकसिद्धेभ्यः महार्घ्यम् ।

जयमाला

चाल पंचमंगल की

तीन लोक त्रय शत तेताली, घनाकार ताके मधि नाली ।
चौदह राजू त्रस तहां होई, चारों गति रचना मधि सोई ।।
अधोभाग नर्क सात बताये, नर तिर्यंच मध्य में गाये ।

ज्योतिषी भी इस ही में गाये, ऊपर वैमानिक बतलाये ।।
गाये ऊपर सिधदेव थानक, ऊर्ध्वकों फिर सिधशिला ।
ता ऊपरे सिधदेव राजे, पवन इकथल में मिला ।।
ते कर्म कोटि सुवाट जावें, ते सकल इस थल में रहें ।
रहि हैं अनन्ते काल सुस्थिर, फेरि भवतन ना लहें ।।
एक एक शिवथानक माहीं, सिद्ध रहें हैं अनन्ता ठाहीं ।
भिनभिन रहें मिलें नहिं कोई, गुण पर्याय द्रव्य निज सोई ।।
लोक शिखर पर जाय विराजे, भवसागर से हो निरवारे ।
सब ही चेतनगुण बहु धारे, सुखमय तिष्ठत कर्म कुजारे ।।
जारे जु आठों कर्म भवदा, आठ गुण परकाशये ।
तिन ज्ञान में त्रयलोक घटपट, आनि के सब भासये ।।
ते नमों सब सिधचक्र उर धरि, तास फल शिवथल लहों ।
और थुति फल नाहि बांछा, नांहि अन मुखतें कहों ।।

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

आचार्य परमेष्ठि पूजा

दोहा

गुण छतीस तिन ढिंग रतन, भववनसंकट टार ।
नमों चरण तिनके सही, तिन गुण जांचन सार ।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताचार्यपरमेष्ठिन् ! अत्रावतरावतर संवौषट् ! अत्र तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चाल छन्द

जे सब तें करुना आनें, सो उचित क्षमा को जानें ।
ते आचारज सुखदाई, सों पूजों अर्घ्य चढ़ाई ।।

ॐ ह्रीं उत्तममक्षमाधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जो मान रंच नहिं लावें, सो मार्दव गुनको पावें ।

ते आचारज सुखदाई, सों पूजों अर्घ्य चढ़ाई ।।

ॐ ह्रीं उत्तमार्दवधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जाके उर माया नाहीं, सो आर्जव भाव कहाहीं ।।ते आ.

ॐ ह्रीं उत्तमार्जवधर्मसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

तन जावे तो भी भाई, ते झूठ न कहहिं कदाई ।। ते आ.

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जाके उर वांछा नाहीं, सो निर्मल शौच कहाहीं ।। ते आ.

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

वश प्राण सुइन्द्री राखे, सो सँजम दो विधि भाखे ।। ते आ.

ॐ ह्रीं द्विविधसंयमधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जो द्वादशविधि तप ल्यावे, परतन नहिं खेद लगावे ।। ते आ.

ॐ ह्रीं द्वादशतपः सहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

परद्रव्य नहीं अपनावे, सो त्यागधर्म चित भावे ।। ते आ.

ॐ ह्रीं त्यागधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जो अन्तर बाहिर नागा, सो आकिंचन भय भागा ।। ते आ.

ॐ ह्रीं आकिंचन्यधर्मसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

निजपरतिय को शुभत्यागी, सो ब्रह्मचर्य अनुरागी ।। ते आ.

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यधर्मसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

कड़खा छन्द

एक दोय चार षट्, अष्ट दिन पक्ष लगौ, खानपानी तनो त्याग ल्यावे ।
माह दो एक षट, चारवासी भलो, धीर तजि अशन, उर सासो ध्यावे ।।
इनहिं आदिकतिको, वास दुद्धर करें, नाहिं परणति विषें, खेद आने ।
जीय के घोर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरन फल पाप भाने ।।

ॐ ह्रीं अनशनतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

भूखतें अर्ध खावे, तथा भागत्रय, भाग चौथो भखै व्रत्तधारी ।
एक दो ग्रासले, भाव समता धरे, तास तें जाय अघ सूर हारी ।।

नाम ऊनोदरी वृत्ति याकों कह्यो,तास के धार गुरु जगत जाने । जी.

ॐ ह्रीं ऊनोदरतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

धरे जो व्रत तामें महादृढ़ रहे, रोज को तास परमान ल्यावे ।
तास कूंयाद रखि, सकल कारज करे,नेम परमानता विधि निभावे ।।
खान अरुपानगमनादि परिमाण ले, वृत्त परिसंख्यान सूर आने ।
जीय को धार, व्रतधार आचार्य है,नमों तिनचरणफल, पापभाने ।।

ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यानतपोधारकाचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

रोज षटरस विषें,रसन को त्यागि हैं, नाहिंसबरसा एक बार खावें,
मोह बल विषें विनराग चित्तरागि हैं, नाहिंरसनावशी आप आवें ।
भोग अछरसनतजि, आप भोगी भयो, रैन दिन ध्यानधी मांहिं आने । जी.

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपोधारकाचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जाहि आसन थकी, धीर तँह थिति करे, तास विधि लों नहीं ठाम क्षोरे
काल जेते तनो, नेम धारें बुधा, वार तेतो वपू, प्रीति तोरे ।
देव खगनर पशूकृत जो दुख मिलें, तों हुते धीर दुःखनां हिमाने । जी.

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

तन विषें खेद को निमित जा विध मिले सोहि विध ठानि सम भाव लावे।
त्याग तन को किये, व्रत ऐसो बने, मोहवश जीव इह नांहि पाबे
वीतरागी विना व्रत को सिर धरे, रागजुत जीवतो हारि माने । जी.

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

बोल परमादवश, दोषपरणतिविषें तथा चलहलन को, पाप लागे ।
तास को छेद कारन लहे दँड मुनि, धीरता देखि अघ, नांहिं जागे ।।
आप ही आप को, दंड लेते मुनी, धीरता देखि अघ, नांहिं जागे ।

ॐ ह्रीं प्रायश्चिततपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

आपतें गुनी तिन, कोविनय जे करें, ते महव्रत को, ओपल्यावें
विगरनबनी किये, हानिसबगुणनकी तासतेंदेखिबुधि, मानढावें ।
सकलसंजमतनी, वाढिदिढ है यही जतन तें, गुनी, याहि आने,

जीयकोधीर, व्रतधार आचार्य हैं नमोंतिन चरणफलपापभाने ।।

ॐ ह्रीं विनयतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

आपतें महंत गुणधार हैं जे जती, तथाश्रुतदेव महासौख्यदाई
तिनहिं वंदगीरूप, परणती जानिये, सोइवैयावृत्यवा निगाई ।
वृत्तऐसोबने, मोक्षमारंगलहे, होयमन्दमोहयह, रीतिठाने । जी.

ॐ ह्रीं वैयावृत्यतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

रैनदिन वानि जिन, पाठ मुखतें करें, तथा उपदेशदे, हरष लाई,
उरविषेंवानिजिनसदाचिन्तवनकरे, रहे जिनआनिमें भक्ति भाई
करें गुरुपाद परसनविनैठानिके, याविधीपांच स्वाध्यायआने, जी.

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

त्याग तनको करें, वृत्त एसो धरें, सूर उपसर्गतें, नाहिं भागे,
लिखे कर्मकेठाठ दुख सुखसहे जगत में छांड़ि पर मोहनिज मांहिंजागे
राग तन माहिं सो दिढत पानांहि व्युत सर्ग तप धारितन प्रीतिहाने, जी.

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

मन वचन काय त्रय जोग इक ठाम करि आप शुध ध्याय पर भाव त्यागे
तथा देव अरिहन्त, परमेष्ठि सिध के गुण, तनी मान शुभ भाव लागे ।
रोक चित्त मृग शुभ ध्यान जाली विषें एकथल राखि शिव ठांहि आने, जी.

ॐ ह्रीं ध्यानतपः सहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

कहे तप अन्तर बाहिर करो द्वादश, धीर तन त्याग बिन राग ध्यावें,
जीव रागी विषें, चाह ताकी रहे, सो नवों इन दसी भाव ल्यावे ।
यह जानि रागी, बिना राग की परीक्षा ठानि, तप धारिते, धीर आने ।
जीय को धीर व्रत धार आचार्य हैं, नमों तिन चरण फल पाप भाने ।।

ॐ ह्रीं द्वादशतपः सहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

षट् आवश्यकों का वर्णन

पद्धरि छन्द

जे षट् आवशि धारें सदीव, ते शुद्ध सरूपी होंय जीव ।

गुणधारि जारि कर्माष्ट वीर, निज तिरें और तारक सुधीर ।।

ॐ ह्रीं षडावश्यकसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

सब जीव सुत्रस, थावर सुजान,समभाव सकल पै चित्त ठान ।
तजि आरत रौद्र सुभाव सोय, ममता सामायिक सुखद होय ।।

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यकसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

अरिहन्त सिद्ध आदिक महंत, तिनकी थुति नित मुनि वर करंत ।
उर निर्मल करि शुध भाव ठान, ता फल पावे शिव लोक थान ।।

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

ते शुद्ध भाव कारण महान, बंदन विधि करि हैं देव थान ।
तातें अघरज धोवें सुवीर, ता फल पावें भव समुद तीर ।।

ॐ ह्रीं वन्दनावश्यकसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

मुनि के मन वच तन दोष लाय, सो दूरि करे प्रतिक्रमण भाय ।
उर आलोचन करि शुद्ध होय, ते सूरि नमों मद टारि जोय ।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

मनवच तन अघ विधि त्याग होय,लखि आवशि प्रत्याख्यान सोय ।
ये करें रोज आचार्य जान, ता फल चिन्ते अघ होय हान ।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

तन त्याग होंय थिर थान सोय, कायोत्सर्गावशि कर्म होय ।
ये करें रोज आचार्य मान, ताफल चिन्ते अघ होय हान ।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

पंचाचार का वर्णन

सोरठा- सकल पदारथ सोय, देखे शुध करि सरदहें ।
तातें शिव सुख होय, सो दर्शन आचार है ।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

शुद्ध पदारथ भाव, जाने गुण पर्याय सब ।
ताकरि हो शिव वास, ज्ञानाचार सो जानिये ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

छोड़े सकल कषाय,गुप्ति समिति व्रत आदरै ।
बरतै नगन सुभाय, सो चरित्राचार है ।।

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

कर्म हरण के काज, बल परकासै आपनो ।
तप संजम बहु साज,सो वीरज आचार है ।।

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

द्वादश विध तप ठानि,समता भाव सु परिणये ।
सो करि हैं कर्महानि, तपाचार सो जानिये ।।

ॐ ह्रीं तपाचारसहिताचार्य परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

गुप्तियों का वर्णन (गीता छन्द)

मन चपल है करि काय जैसो, कपि तने पद को लहें ।
ताकी विकलता लहर दधि ज्यों, जगत जिय वशि ना रहे ।।
ते धन्य गुरु विश किया याको, आप या वशि ना रहे ।
मनगुप्ति याको जानि भविजनि, या फलै शिव सुर ठहे ।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

वचन निजवश राखि भाषत, जिन तनी वानी कहे ।
परमाद वच कबहूं न भाषे, ता थकी जिय अघ लहे ।।
यह वचन गुप्ति सदीव आचारज, जिको पावें सही ।
मन वचन तन वसुद्रव्य ले करि, पद जजों इनके सही ।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जो काय अपने हाथ राखे, चपलता मेंटे सही ।
परमाद टारि सुधारि थिरता, जारि अघ, ले शुभ मही ।।
लखि कायगुप्ति सुनाम याको, सदा आचारज करें ।
ते धीर या फल कर्म हरके, मुक्ति सी रमणी वरें ।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

धर्म दशविध वरत बारह, गुप्ति तीन बखानिये ।

आचार पांचों महा सुन्दर, षट् आवशि शुभ मानिये ।।
ये गुण छत्तीसों, धरें सोही सूर आचारज कहे ।
तिन चरण कमल सुद्रव्य वसु ले, जजों मन वच तन ठहे ।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशदगुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा

आचारज गुण आरती, कहूं हिये थुति आन ।
ताकों नमि पुनि फल लहें, होय पाप की हान ।।

पद्धरि छन्द

उत्तमक्षमा को कोपभट मार्‌यो,मार्दव मान जिसो अरि टार्‌यो ।
आर्जव माया कुटनी टारी, सत्पथ कौ सब झूठ निवारी ।।
शौच सकल उर को शुचि कीनो, संयम तें अव्रत जय लीनो ।
तप तपि सकल पाप निरवारे, त्यागभाव पर तें परवारे ।।
आकिंचन परिग्रह परिहारे, ब्रह्मचर्य तिय भाव निवारे ।
ये ही धर्म दशों सुखदाई, अब सुनि द्वादश तप मन लाई ।।
अनशन वास तनी विधि सोही, अवमौदर्य खान लघु हो ही ।
व्रत परिसंख्या नित व्रत ठाने, रस परित्यागी रस नहिं जाने ।।
विविक्त शय्या थल दिढ़ होहे, कायकलेश कष्टविध जोहे ।
ये तो बाह्य तने षट् जानो, अब षट् अंतरतप सुनि कानो ।।
प्रायश्चित अपराध सम्हारे, विनय बड़ों की नमन सुधारे ।
वैयावृत गुरु को सुख ठाने, सो स्वाध्याय वानि मुख आने ।।
व्युत्सर्ग काय त्याग विधि होई, ध्यान धर्म मन चिन्ते सोई ।
अब सुनि षट आवशि की बातें, तातें होय महा शुभदा तें ।।
सामायिक सब तें समभावा,स्तवन जिन सिध की थुति चाबा ।
वंदन सो जिनके सिर नावे, प्रतिक्रमण जो पाप मिटावे ।।

प्रत्याख्यान त्याग सो जानो, कायोत्सर्ग तन त्याग बखानो ।
अब सुनि पंचाचार सुभाई, तिन बल बहु जीवन शिव पाई ।।
ज्ञानाचार ज्ञानविध ठाने, दर्शन सो दर्शन विधि आने ।
चारित चारु चरित विधि लावे, तपाचार तप रीति करावे ।।
वीर्याचार पुरुषारथ जानों, अब सुनि तीनों गुप्ति बखानों ।
मन वच तन वश राखे सोई, गुप्ति नाम जाने भवि होई ।।

दोहा

इन छत्तिस गुण सहित जो, नमों सूरि मन लाय ।
ताके गुन पावन निमित, भव भव होहु सहाय ।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताचार्यपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

उपाध्याय परमेष्ठि पूजा

दोहा

अंग पूर्व धारक मुनी, नमों तास पद जान ।
ता फल अघ मिट शुभ बने,लहे शुद्ध शिव थान ।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा

चौदह पूरब सार, एकादश अंग जुत सही ।
ये पच्चिस गुण धार, होय उपाध्या सो नमों ।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

मरहठा छन्द

आचारँग में यों बतलायो, सुनो भविक चित आन ।
काज सकल ही करो जतनतें, महाशुद्ध उर आन ।।
या अँग रहस सकल ही पावें, उपाध्याय हैं सोय ।
जिनके पद वसुद्रव्य थकी भवि, पूजो मन शुध होय ।।

ॐ ह्रीं आचारांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

सूत्रकृतांग दूसरो अँग है, तामें यों व्याख्यान ।
धर्म तनी किरिया सब यामें, भाषी है भगवान ।। या.

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जानों तीजो अँग सथाना, ता मधि जीव सुथान बताय ।
एक दोय आदिक उन्नीसों, चौसठ षट जिय ठाम सुपाय ।। या.

ॐ ह्रीं स्थानांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

है समवाय अँग चौथो यह, या मधि सकल वस्तु सम गाय ।
धर्म अधर्म द्रव्य सम भाषे,जगत जीव सम सम सिध भाय ।। या.

ॐ ह्रीं समवायांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

व्याख्याप्रगपति अंग पंचमों, तिन में ऐसो कथन चलाय ।
अस्ती जीव नास्ती जानो, एक अनेक सुवस्तु सुभाय ।। या.

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञत्यंगसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

छठवाँ ज्ञातृकथा अँग जानो, तामें सकल कहो व्याख्यान ।
चक्री कामदेव तीर्थंकर, इन आदिक पहुँचे शुभ थान ।। या.

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जान उपासकाध्ययन सातमों, तामधि श्रावक कथन कहाय ।
एकादश प्रतिमा आदिक बहु, किरिया का समुदाय बताय ।। या.

ॐ ह्रीं उपासकाध्यनांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

अन्तकृतांग दशांग महाअँग, अष्टम यामधि यों लिख पाय ।
इक इक जिनबारे अन्तःकृत,दश दश केवलि कथन चलाय ।। या.

ॐ ह्रीं अंतः कृद्दशांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

अनुत्तरोत्पादक दशांग अँग, तामें इक इक जिनकी बार ।
दश दश मुनि अति सहो उपद्रव, गये अनुत्तरयों लखसार ।। या.

ॐ ह्रीं अनुत्तरोत्पादकदशांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

प्रश्न व्याकरण `ंग विषें या,'गई वस्तु इत्यादि बताय ।
जीवन मरण सौख्य दुख की विधि,सब प्रश्नोंके भेद दिखाय ।। या.

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

सूत्र विपाक अँग एकादश, तामें कर्म विपाक बखान ।
तीव्र मन्द भावतें बाँधे, सो रस दे इत्यादि सुजान ।। या.

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

चौदहपूर्वों का वर्णन

अडिल्ल- अब चौदह पूरब की कथा सुहावनी,
तिन यह पाई रिद्धि जिने अघरज हनी ।
इनके धारी उपाध्याय जगगुरु कहे,
तिनके पद वसुद्रव्य थकी जजि अघ दहे ।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

गीता छन्द

पूर्व है उत्पाद पहला, कथन तामें यों सही ।
वस्तु के उत्पाद व्यय ध्रुव, आदि महिमा अति लही ।।
इस पूर्व को जो अर्थ जाने, उपाध्याय सो जानिये ।
वसुद्रव्यतैं पद जजों मन वच, भक्ति उर अति आनिये ।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

पूर्व अग्रायण सु दूजो, कथन नय दुर्णय करे ।
तत्त्व द्रव्य पदार्थ के पर-माण जाने उर धरे ।। इस.

ॐ ह्रीं अग्रायणीपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

पूर्व वीर्य प्रवाद तीजों, कथन वीरज को चले ।
आत्मवीर्य सु काल क्षेतर,ज्ञान चारित पर मिले ।। इस.

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

अस्ति नास्ति सुपूर्व चौथो, सप्त भंग बखानिये ।
द्रव्य तत्त्व पदार्थ के सब,अस्ति नास्ति सुजानिये ।। इस.

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

पूर्व ज्ञान प्रवाद पंचम, ज्ञान वसु लक्षण कहे ।
सब ज्ञानफल परमान इनको,आदि सबविधि तें लहे ।। इस.

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
पूर्व सत्य प्रवाद षष्ठम, गुप्ति भेद बखानिये ।
सत्य असत्य अनेक वैन, सुभेद तातें जानिये ।। इस.
ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
आत्मप्रवाद सुपूर्व सप्तम, जीव लक्षण तँह कह्यो ।
जीव आयो वा गयो इन, आदि इस पूरब ठह्यो ।। इस.
ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
पूर्व कर्म-प्रवाद जु तामधि,कर्म की सब विधि कही ।
सत्त्व बन्ध उदय प्रकृतियाँ, आदि सब भाषीं सही ।। इस.
ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
पूर्व प्रत्याख्यान नवमों, वस्तु इत्यादिक कही ।
अरु द्रव्य क्षेत्र सुकाल सँवर,वास मत्यादिक सही ।। इस.
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
पूर्व है विद्यानुवाद सु, अष्ट निमित्त बखानिये ।
विद्या सुसाधन रूप फल बल,आदि रीति सु मानिये ।। इस.
ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
पूर्व है कल्याणानुवाद सु, वहां इस विधि वरणयो ।
कल्याण पांचों जिन तने,ज्योतिष गमनको फल चयो ।। इस.
ॐ ह्रीं कल्याणानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
पूर्व प्राणावाद मांहीं, मन्त्र तन्त्र सुविधि कही ।
फिर वैद्य ज्योतिष भूतनाशन,की सकल विधिहै सही ।। इस.
ॐ ह्रीं प्राणानुवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
पूर्व क्रिया विशाल के मधि, गीत छन्द सुविधि कही ।
शास्त्र नय लंकार चौसठ, कला तियकी तहां सही ।। इस.
ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।
पूर्व चरम त्रिलोक-बिन्दू, सुकथन तँह यों वरनयो ।

लोकत्रय के सुखदुखों का, मुकुरसम वर्णन कियो ।। इस.

ॐ ह्रीं लोकबिन्दुपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

पद्धरि छन्द

अंगएकदश अद्भुत सुज्ञान, फिर पूर्व चौदह और जान ।
इनके गुण वेत्ता ते महन्त, जिन उपाध्याय पूजों सुसन्त ।।

ॐ ह्रीं एकादशांगचतुर्दशपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- बीस पाँच गुण धार गुरु, उपाध्याय हितदाय ।
तिन बन्दे थुति के किये, महापुण्य उपजाय ।।

बेसरी छन्द

आचारांग भने सुखदाई, सूत्रकृतांग रहस सब पाई ।
थाना अंग सथान बताये, समवाया अँग के गुण थाये ।।
व्याख्याप्रगपति अँग को जाने,ज्ञातृकथा को भेद बखाने ।
अंग उपासकाध्यन सुधायो, अन्तकृतांगदशांग सुझायो ।।
अनुत्तरपाददशांग सुजानो, अंग प्रश्न व्याकरण बतानो ।
सूत्र विपाक अंग हितकारी, ताको रहस लियो गुरुसारी ।।
ये एकादश अँग तिन पाये,उपाध्याय सो सब मन भाये ।
अब पूरब चौदह सुन भाई, प्रथम पूर्व उत्पाद कहाई ।।
अग्रायणि पूरब कों धारे, वीर्यप्रवाद पूर्व अघ जारे ।
अस्ति नास्ति परवाद सु जानो, ज्ञानप्रवाद पंचमों मानो ।।
सत्यप्रवाद पूर्व को पावे, आत्मप्रवाद पूर्व समझावे ।
कर्मप्रवाद पूर्व सुखकारी, प्रत्याख्यान पूर्व को धारी ।।
पूर्व विद्यानुवाद को जाने, पूर्व कल्याणवाद अघ हाने ।
प्राणवाद पूरब हरि पायो, पूर्व क्रियाविशाल उर जायो ।।
अन्तिम लोक बिन्दु है भाई, ये चौदह पूरब सुखदाई ।
इनके धार उपाध्या होवें, तिनके जजें सुरग शिव जोवे ।।

सोरठा- जो पूरब अँग धार, तिन जग पूजत पद लयो ।
सो करि है अघछार, तिन पूजे जिनपद जयो ।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

साधु परमेष्ठि पूजा

दोहा

बीस आठ गुण साधु के, नमों तास कर जोर ।
ताके बन्दे पाप सब, जाय सकल ढिग छोर ।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन् ! अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टाविंशति गुणजुत होय, साधु हुये जग के गुरु जोय ।
आतम रँग राचे मुनिनाथ, पाऊँ इन पद भव भव साथ ।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

तिरस थावर जीव सबही, आज सम जाने सही ।
मन वचन तन जियको न दुखदा,सकल पै समता लही ।।
जो दुष्ट कोई आय पीड़े, तो न कबहूं दुख करें ।
ते साधु पूजों अर्घ्य कर ले, तास फल सुख संचरें ।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

तन जाय तो नहिं असत भाषत, कहे सतवच सारजू ।
चवै सम्यक वैन सोहू, सूत्र के अनुसार जू ।।
तिस वचन को सुनि सकल प्रानी,पापमति अपनी हरे । ते.

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

बिन दिये पर को माल कबहूं, मन वचन छूवें नहीं ।
तन आपने हू तें सुविरकत, दिये तें भोजन लही ।।
काय नग्न चालें सुचर्या, याचनामति ना करें ।। ते.

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

नारि, देव मनुष्य पशु की, मन वचन तन करि तजें ।
सो शीलधर हो बालसम, निर्दोष अपनी पद सजें ।।
ते जगत तिय तजि मुकति नारी, वरन को उद्यम करें ।। ते.

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जे तजें दो विध ही परिग्रह, बाह्य अन्तर जानिये ।
तिलमात्र पुद्गल बन्ध सेती, ममत की विधि भानिये ।।
जे रहे विमुख सुभाव तन ते, सोहि ममता उर धरें ।। ते.

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

चार कर भू शोधकें पद, धर शुभचित लायके ।
जो बने कारन जोर इत उत,तो लखें नहिं भायके ।।
त्रसजीव थावर सकल सेती, भाव समता उर धरें ।। ते.

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जो बोलि हैं वच सकल हितदा,खेद को जिय ना लहे ।
जिन बैन भाषित ध्याय भाषत, फेरि समता जुत रहें ।
तिन वचनको सुनि भव्य प्राणी, आपने अघ कों हरें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं भाषासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जे लहें अनजल शोधि शुभचित, एकटक ठाँड़े भखें ।
नहिं सैन अँगुरी नैन मुखतें, बोल हू नाँही अखें ।।
फिर दोष षट्चालीस टालें, और दूषण बहु टरें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं एषणासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जे धरें वस्तु सँभाल पृथ्वी, लेंय भू तें जोयकें ।
परमाद तें लें धरें नाहीं, महाशुभ-चित होयके ।।
तिन माहिं नाहिं प्रमाद राखें, लगे अगले अघ हरें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं आदाननिपेक्षणसहितासाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

मल मूत्र छोड़ें थान लखि के, तिरस थावर पालिया ।
निजभाव मीतो करम रीतो, और के अघ टालिया ।।

तिस बने राजे आप जोगी, वैर जिय सब परिहरें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जे लघु भारी उष्ण शीतल, नरम कर्कश जानिये ।
रुखो रु चिकनों आठ लक्षण, फरस इन्द्री मानिये ।।
या फरस इन्द्री जगत जीत्यो,तासु को जे वश करें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

मिष्ट खट्टा कटु कषायल, चरपरों पाँचों सही ।
ये रसन इन्द्री विषय जियको,जकड़ि करि बाँधें मही ।।
इन्द्री जु रसना जगत जीत्यो, ता सकूं जे वश करें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

शुभगन्ध अरु दुर्गन्ध दो विध, गन्ध इन्द्रिय जानिये ।
इस विषयवश जिय होय रागी, द्वेष उर महिं आनिये ।।
इन जीय जग के सकल जीते, तास को जे वश करें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

पीत श्याम सुफेद सब्ज सु, लाल यह पाँचों कहे ।
इनके वशी जिय देखि पुद्गल, राग द्वेष स्वचित लहें ।।
जो नेत्र इन्द्री विषय वश करि, आज निरअंकुश फिरें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

सचित अचित सु मिश्र तीनों, विषय श्रवण तने कहे ।
शुभ सुने रागी अशुभ सुनिके, दोष जुत उरमें थहे ।।
जिनविषें कर्ण जु आप वश करि,भाव विच समता धरें ।। ते. सा.

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

चाल (जोगीरासा की)

समताभाव सकल जीवन तें, आप सदृश सब जाने ।
संयम तप शुभ रहे भावना, राग द्वेष नहिं आने ।।
आरत रौद्र न भोग भूमही, निर आकुल रस रीझे ।

तिन साधुन के नित प्रति जुगपद,पूजे तें अघ सीझे ।।

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

अरहत सिधकी जो थुति कीजे, भक्तिभाव उर आनी ।
ताही रस आतमरँग ल्यावे, सो अस्तुति विधि जानी ।।
सो साधु भी निश दिन ठाने, मनवचकाय लगाई ।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी मैं, पूजों इकचित लाई ।।

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

मनवच तन अरिहन्त सिद्ध को,कर धर शीश नवावें ।
सो वंदन विधि मुनिनित ठाने, अगले पाप खिपावें ।।
ऐसे साधुन के पद पंकद, भक्ति भाव उर आनी ।
पूजन करहु दरव आठों से, अर्घ्य तनी विधि ठानी ।।

ॐ ह्रीं वन्दनावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

दोष लगे मन वच तन कोई, ताके क्षयविधि काजे ।
सो ही रीति करे उर आनी, अपनी शुधता साजे ।।
प्रतिक्रमण तें भाव शुद्ध करि, आलोचन मन आने ।
मैं ते साधु नमों सुख काजे,ता फल मो अघ भाने ।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

त्यागकरण परवस्तु सकत सम, प्रत्याख्यान सुजानो ।
जो विधि अशन रसादिक कोई, इन आदिक को मानो ।।
नितप्रति या विधि करे सु सबही, समता जुत चितठाने ।
ते गुरु मैं पूजों वसुद्रव ले, शत्रु मित्र सम आने ।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जँह थिति धार जपें जग पीहर, ऐसो साहस धारें ।
बहु शर ठाम छुड़ायो चाहत, कष्ट बहुत विधि पारें ।।
तो हु धीर तजें नहिं आसन, आतम-रस लिपटाये ।
मैं ते साधु नमों जुत कर शिर,मन वच शीश नवाये ।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

पद्धरि छन्द

जो ऊँच नीच भू लखे न कोय, तृण शिलखण्ड गिने ना कोय ।
शुध भूमि जीव बिन शयन लाय,ते साधु जजों उर हरष लाय ।।

ॐ ह्रीं भूमिशयनगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जे करें न तन आभरन सार, तन गन्धलेप त्यागत सुधार ।
इत्यादि कायरचना जु नाहिं, ते मुनिवर बन्दों हरष लांहिं ।।

ॐ ह्रीं मलत्यागमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जे रहें नगन तन मातजात, तिन पै नहिं तृणतुष वसन पात ।
नभ ओढ़ें भूतल तन बिछाय, ते साधु नमों वसुद्रव्य लाय ।।

ॐ ह्रीं वस्त्रत्यागमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

निजकर तें निज कच लोंच लेय, चितकरुणा करि उर धीर जेय ।
तन शोभा तजि मन शुद्धभाय, ते साधु नमों वसुद्रव्य लाय ।।

ॐ ह्रीं कचलुंचनगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

चौपाई

एक बार लघु भोजन खाय, रसविन तथा सहित रस पाय ।
भरना उदर ममत कछु नांय, ते मैं साधु जजों उमगाय ।।

ॐ ह्रीं एकभुक्तिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

एक ठाम थिति भोजन करे, तन थिर काज राग बिन भरे ।
मोक्षपन्थ साधन के काज, ते मैं साधु जजों शिवकाज ।।

ॐ ह्रीं स्थितिभुक्तिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

सूक्षम जीवदया के काज, दांतुन भी त्यागें मुनिराज ।
सकल जन्तु बन्धू सम जान, ते मैं साधु नमों अघहान ।।

ॐ ह्रीं दन्तधावनरहितगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

चाल जोगीरासा की

पंच महाव्रत समिति पाँच लखि, इन्द्री सब वश आने ।
आवशि षट् भू शयन नहुन तजि,वसन त्याग शुभ ठाने ।।

कचलोचन इकवार लघू अन, एकठाम थिति काजे ।
दन्त न धोबन बीस आठ इह, साधु सुभग गुण साजे ।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा- ये अठ्ठाइस गुण सकल, धरें मोक्षमग जान ।
तिनको सुनि व्याख्यान भवि, धारत उपजे ज्ञान ।।

चाल भरथरी की

ते गुरु पूजों भाव सों, जे करुणा प्रतिपाल ।
सो मुनि दीन दयाल, ते गुरु पूजों भाव सों ।।टेक ।।
पंच महाव्रत आदरें, पाँचों समिति समेत ।
इन्द्री पाँचों वश करें, षट आवश्यक हेत ।।
भूमि शयन मंजनतजन, पटके त्यागी जान ।
कचलुंचन लघु अशन है, असथिति है शुभ आन ।।
दांतुन कबहूं ना करें, हैं मुनि दीनदयाल ।
सब जिय रक्षक हित धनी, सब ही जग प्रतिपाल ।।
सत्य महाव्रत जे धरें, भाषें असत न वैन ।
त्याग अदत्तादान को, ब्रह्मचर्य सुख चैन ।।
नग्न वपू परिग्रह तजें, चालें भूमि निहार ।
खांय देखि धर लेय सो, जो हू ठाम विचार ।।
मल मूत्रादिक त्याग हैं, सो हू भूमि निहार ।
इन्द्री पाँचों वश करें, विरकत चित्त उदार ।।
सपरस इन्द्री वश करें, आठों विषय निवार ।
रसना के पांचों विषय, त्यागें ममत प्रहार ।।
गन्ध तने दोऊ विषय, जीते दुखदा जान ।
पाँच विषय नेत्रों तने, जीते शुभचित आन ।।

कारण-विषय तीनों हरे, मिश्र अचित्त सचित्त ।
कठिन भूमि सोवन बने, रक्षण जीव निमित्त ।।
मंजन-विधि नहिं तन विषें, झलके नसा सु जाल ।
वसनरहित तन सोहनो, पजत सुर सु विशाल ।।
शिर मुख डाढ़ी कच लुचें, बाधा लहे न कोय ।
एक बार भोजन लघू निरदूषण लें सोय ।।
तन थिति शिवसुख कारने, आनकाज ना जान ।
दन्त न धोवें दयानिधी, निजसम सबको मान ।।
ऐसे बीस अरु आठ, गुणधारी मुनि कोय ।
तिनके पद वसुद्रव्य तें, पूजों मनशुध होय ।।

सोरठा

तन विरकत शिवमिन्त, सकल जन्तु रखपाल हैं ।
निजसुख धारत सन्त, पूजें तें बहु सुख बढ़े ।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् ।

समुच्चय जयमाल

(कवित्त छन्द)

जन्मत दश दश केवल उपजें, चौदह देव करें थुति लाय ।
अनंत चतुष्टय प्रातिहार्य वसु, सब मिलि गुण छ्यालीस सुथाय ।।
इनको धरे देव सो मोकों, भव भव शरण होहु सुखदाय ।
सुर नर हरि पूजत भगवत पद, अपनो आतम सफल कराय ।।
समकित दरश ज्ञान वीरज गुण, सूक्षमत्व अवगाहन जान ।
अगुरुलघु सप्तम गुन जानो, अष्टम अव्याबोध बखान ।।
ये गुण आठ धरें बिन मूरति, चेतन एक सदा अखदान ।
ऐसे सिद्ध लोक शिर राजें, तिन पद 'टेक' नमों उर आन ।।
दशलक्षण शुभधर्म तने हैं, द्वादश भेद कहे तपसार ।

षट आवशि शुभ गुप्ति तीन लखि, पांच भेद जानों आचार ।।
ये शुभ छत्तीसों गुण धारे, आचारज सब जिय हितकार ।
तिनके पद मनवचन काय शुध, पूजों भव भव 'टेक' निवार ।।
एकादश अंग ज्ञान धरे उर, तिनको रहस सकल पहिचान ।
चौदह पूरब लही रिद्धि तिन, करुणाकरि उपदेश बखान ।।
आप पढ़ें शिष्यन पढ़वावें, समताभाव रागपद भान ।
ऐसे गुण को धरें उपाध्या, तिनपद 'टेक' भजे शिव जान ।।
पंच महाव्रत समिति पाँच गिन, इन्द्री पाँच करें वश घोर ।
षट आवश्यक करे नित्य ही, ताकरि पाप हरे वर वीर ।।
भूमि शयन आदिक गुण सात जु और मिलावो इनके तीर ।
अष्टाविंशति होय सकल मिल, इन धर साधु करें शिवसीर ।।
ये ही पंच गुरु परमेष्ठी, ये ही सकल हितु सुखकार ।
ये ही मंगलदायक जग में, ये ही करें भवोदधि पार ।।
ये ही पांचों पंचमगतिमय, ये ही पंच मुकति करतोर ।
इनके पद को भव भव सरनों, मागों उर की 'टेक' निवार ।।

दोहा

अरिहत सिद्ध आचार्य के, पांय उपाध्या पाय ।
साधु सहित पाँचों चरन, पूजों "टेक" लगाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यम ।

।। इति पंचपरमेष्ठि विधान समाप्तम् ।।

श्री वास्तु विधान

अर्हत्पूजा

(आर्या)

विदधामि सलिलमलयजकुसुमैः संपूर्णपाणिपत्रेण ।
आह्वाहानस्य करणं स्थितिकरण सन्निधीकरण ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिन् अत्र अवतरावतर संवौषट् स्वाहा आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ ठः ठः स्वाहा । स्थापनं
ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा सन्निधिकरणं ।

अष्टकम्

गंगादितीर्थह्रददिव्यतोयै गांगेयमुख्योज्वलकुंभ पूर्णः ।
शीतांशुशीतैर्भवतापहारैः संपूजयानौ जिनपादपदमौ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

काश्मीर कालागरु पुष्पकरेंदु व्यामिश्रितात्युक्तम् मगंध सारैः ।
तापापनोदैः सुरभीकृताशैः संपूजयामो जिनपादपद्मौ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने गन्धम् निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

शालीयशुभ्राक्षतमंजु पूंजैराविष्कृताराधन पुण्यपुजैः ।
पाथेयभूतैः सुदृशां सुमार्गे सपूंजयामो जिनपादपद्मौ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

आघ्राणनप्रीणनकरिपुरि सौरम्य संतपिंतसर्वलोकैः ।
सत्पुष्पमाल्यैः घ्रितपुय्पलिऽभिः संपूजयामौ जिनपादपद्मौ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

सुभक्ष्यसंव्यंजनसोपदंशैः शेषार्थतालस्थित शलिवद्भिः ।
सौरम्यवन्दिमधुरैः सदुब्गैः संपूजयामौ जिनपादपद्मौ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने चरुं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

कर्पूरधुलिकृतगर्भसर्पिं रम्याक्तवीतज्वलितप्रदीपैः ।
सदुज्वलैर्धूत तमः समूहैः संपूजयामो जिनपादपद्मौ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

ककेलिजातोफल पत्रकादि गंधोत्वण दृव्य कृतोद्‌ध धूपैः ।
अंगार संगप्रथवत्रधूपैः संपूजयामौ जिनपादपद्मौ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

जम्बीर जम्बू कदलीकपित्थ, नारगंधात्री सहकार पूर्वैः ।
फलोत्करैः पुण्यफलोपमानेः संपूजयामौ जिनपादपद्मौ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

वागंधपूर्वैर्वर्‌वस्तुजातैः सिद्धार्थ दूर्वादिसु मंगललैश्च ।
पवित्र पात्रे रचितं महार्घ्यं निवर्तयामाः पुरतो जिनस्य ।।अर्घ्यं।।

शान्ति करोतुं सततं पतिनां गणस्य ।
शान्ति करोतुं सततं जिन भक्तिकानां,
शान्ति करोतुं सततं जनयस्य दातुः
शान्ति करोतुं सततं कृतशान्तिधारा ।।

।। शान्तिधारा ।।

देवेन्द्रवृदमणि मौलिसर्मीचितांध्रे-।
देवाधि देव परमेश्वर कीति भाजः
पुष्पायुधप्रमथनस्य जिनेश्वस्य ।
पुष्पांजलिर्विरचितोऽस्तविने यशांत्यै ।।

।। पुष्पांजलिः ।।

अथ श्रुतपूजा

स्याद्वादकल्पतरु मूल विराजमानां,रत्नत्रयांबुजसरोवरराजहसौ ।
अंग प्रकीर्णकचर्तुदश पूर्वकाया,मार्हत्यसदगुणमयीं गिरमाहयामि ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ह्रसीरं ह्रौं ह्रः सर्वशास्त्र प्रकाशिनी वद वद वाग्वादिनि अत्र अवतरावतर सम्वौषट स्वाहा । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्ठम्

वरिताधैर्जलौधैश्च सत्तीर्थानि पवित्रितैः-
श्री मज्जैनेश्वरीं वाणीं यायजे ज्ञानसंपदे ।।

ॐ ह्रीं शब्द ब्रह्मणे जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

सौगन्धिबन्धुरैः सर्वानन्दनैर्हरिचन्दनैः ।
श्री मज्जैनेश्वरीं वाणीं यायजे ज्ञानसंपदे ।।

ॐ ह्रीं शब्द ब्रह्मणे गन्धं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

अक्षुण्णैः क्षोरवारशिवलक्षैः कलमाक्षतैः ।
श्री मज्जैनेश्वरीं वाणीं यायजे ज्ञानसंपदे ।।

ॐ ह्रीं शब्द ब्रह्मणे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

उत्फुल्लमल्लिकामल्यै रतुलै रलिझंकृतैः ।
श्री मज्जैनेश्वरीं वाणीं यायजे ज्ञानसंपदे ।।

ॐ ह्रीं शब्द ब्रह्मणे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

क्षीरान्नैश्चरूकैर्दिव्यैबष्पिमुद्वहमानकैः ।
श्री मज्जनेश्वरीं वाणीं यायजे ज्ञान संपदे ।।

ॐ ह्रीं शब्द ब्रह्मणे चरूं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

नादेयगंगायमुनाजिंतेषां मुनींद्रपादार्चनवारिधारा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्येभ्यों जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

भितोपमिश्रीकृत विश्वगंध परिस्फूरन्नूतनवासवृंदः
तपोधनादेशपदानुलेपो यशो भदीयं विशदीकरोति ।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्येभ्यों गन्धम् निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।

शशिप्रभाबीज समान रोचि-विनेयपुण्यांकुरजांलकान्तिः ।
क्षुधादिदुःखक्षतये मुनींद्र पादाब्जतस्तंडुल शशिस्तु ।।
ॐ ह्रीं पूर्वाचार्येभ्यों अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।३।।

प्रगल्भगंधाहतषट्पदालि-विना कृताशागज गंधभाजः ।
करोतु योगीन्द्रापदातीर्णो, मनः समाधि सुमनः समूहः ।।
ॐ ह्रीं पूर्वाचार्येभ्यों पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

सितांबुवाहाहित भक्ष्यभूषं निथर्मदाद् योगिपदार्चित नः ।
करोति तृप्तिं परिणामसद्य सुगंध शालीमायि बंधुवुद्धया ।।
ॐ ह्रीं पूर्वाचार्येभ्यों चरूं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

मधुव्रतालंबित कोटिभाग प्रत्युज्वलच्चंपंककुडमलश्रीः ।
सगर्जनो योगिवराध्र्य दीपः करोति तीतस्तमहापहारः ।।
ॐ ह्रीं पूर्वाचार्येभ्यों दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

मदन्मयविभूमिरोह स्तमालनीलः सुरभिः करोतु ।
विभास्वंदगार विरूढय श्रीर्गणेश्वरराधन घूपधूमः ।।
ॐ ह्रीं पूर्वाचार्येभ्यों धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

हस्तद्वये संकरनीरमूध्नि गंधच्छलाब्जांत नभोऽतराणि ।
मुनीश्वर श्रीचरणांचतानि स्वयं फलमनीष्ट फलाय संतु ।।
ॐ ह्रीं पूर्वाचार्येभ्यों फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

गुणगणमणिसिंधून भव्यलोकैकबंधून् ।
प्रकटित जिनमार्गान् तथ्य नित्यात्मवर्गान् ।।
परिचितनिजतत्वान् पादके शेषदत्तान् ।
समरसजिन चंद्रानर्ध्यधामो मुनींद्रान ।।अर्घ्यं।।९।।

ज्वलितसकललोकालोक लोकत्रय श्री ।
कलितललित मूर्ते कीर्तितेंद्रै मुनींद्रैः ।।
मुनिवर तव पादोपांततः पातयौमों ।
जिनसमय विधत्तान् वर्तितान् शान्तिधारां ।।शान्तिधारा ।।

देवासुरेन्द्र मनुजेंद्र भणीश्वरणाम् ।
रत्नोज्वलन्मुकुट कुंडल धृष्टपार्श्वे ।।
सिद्धेंदु पक्ष खचर स्तवनीय वन्दे ।
पुष्पांजलिपकरपादयुगं मुनीश ।। पुष्पांजलिं ।।

(इसके बाद यंत्र पूजा करके लाल वस्त्र के ऊपर सप्तधान्य का दिए गए चित्र अनुसार मॉडना पूरकर मण्डल के आगे तीर्थंकर कुण्ड बनाऐं, उसके आगे थापना स्थापन करें आगे पृथगिष्टि अनुसार प्रत्येक श्लोक पाठ के बाद आव्हान के पुष्प थापना पर क्षेपण करें । बलि विधान मंत्र की दशांग धूप की आहुति कुण्ड में देवें तथा अर्घ बोलकर बलिवस्तु पान के पत्ते पर श्रीफल जनेऊ ध्वजा रोली रक्षासूत्र तथा दीपक के साथ सप्तधान प्रथम खण्ड में चढ़ाऐं । इस प्रकार ४९ खण्डों में इसी क्रम से चढ़ाऐं ।)

वास्तु देवानां पृथगिष्टि

आराधना श्लोक-

ग्राम क्षेत्र गृहादि भेद विविधो वींभाग मध्याश्रय-
स्ततभ्दाग परिच्छिदा बहुविध स्वात्म प्रदेशो विभुः ।
ब्रह्मा दिक्पति पूर्व देवनि करैरात्मो न्मुखैर्वेष्टितो,
लाजाज्यानिवत दुग्ध भक्त मधुना गृण्हातु रक्त प्रभः ।।१।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्त वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे ब्रह्मन आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

बलि विधान- ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । ब्रह्म परिजनाय स्वाहा । ब्रह्मा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे ब्रह्मन् इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।१।।

बलिंवस्तु- चावल की घानी, शक्कर, घी, दूधपाक ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

ऐरावता स्कंधमधि श्रयन्तं व्रजायुधं रुच्यशची समेतम् ।
प्रत्यूह विध्वंसक मर्हदिष्टौ कुष्ट प्रसूनैः प्रयजामि शक्रम ।।२।।

आह्वान- ॐ आं क्रौं ह्रीं वर्ण स्र्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन- वधु चिन्ह सपरिवार हे इन्द्रदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा ।

बलि विधान- ॐ इन्द्राय स्वाहा । इन्द्र परिजनाय स्वाहा । इन्द्रा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे इन्द्रदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।२।

बलिं- उपलेछ, फूल या मुरमुरा (लाई)

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

ज्वाला कलापात्मक शक्ति हस्तो वस्ताधि रुढ़ सुपरिष्कृतांगः ।
स्वाहा महिष्या सम अग्निदेवः प्रीणातु दुग्धैत गरैस्त राज्यैः ।।३।।

आह्वान- ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन- वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्निे आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा।

बलि विधान- ॐ अग्ने स्वाहा । अग्नि परिजनाय स्वाहा । अग्नि अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे अग्ने इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।३।

बलिं- दूध, घी, तगर ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

छाया समेतं महिषाधि रुढं दडायुधं दंडित वैरिवर्गम् ।
वैवस्वतं विघ्नहरं तिलान्नैः सिंबान्य युक्तैः परितर्पयामि ।।४।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे यम आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा ।

बलि विधान- ॐ यमाय स्वाहा । यम परिजनाय स्वाहा । यमा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे यमदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।४।

बलिं- तिली का चूर्ण, अरहर, गुगरी

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

नैऋत्य देशो निऋतिः सुरुक्ष मृक्षांग वाह द्विष दास्य रक्षः ।
आरुढ़ बानुद्रत मुद्ररास्त्र पिण्या कमायच्छतु तैलमिश्रम् ।।५।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं नील वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे नैऋत्य आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा।

बलि विधान- ॐ नैऋताय स्वाहा । नैऋत परिजनाय स्वाहा । नैऋता अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे नैऋत इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।५।

बलिं- तिली का तेल, तिलपपडी ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

करधृतफणि पासो मंडनोद्योति ताशाः करिम करक मूर्तिलोक संक्रांत कीर्तिः।

सुरुचिर वरुणानी प्राणनाथः सयूथोवरुण इह समेतो लातु दुग्धान्य धान्यम् ।।६।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे वरुणदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ वरुणाय स्वाहा । वरुण परिजनाय स्वाहा । वरुणा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे वरुणदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।६।

बलिं- दूधपाक, रबडी

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-उर्वीरु होर्वायुध शस्त हस्तमर्वाधि रुढं परिमडितांगम् ।
तद्वा युवेगी मुखदत्त दृष्टिं पिष्टैर्निशायाः पवनं यजामि ।।७।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे पवनदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा।

बलि विधान- ॐ पवनाय स्वाहा । पवन परिजनाय स्वाहा । पवना अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे पवनदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।७।

बलिं- पिसी हल्दी ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

सद्रत्न रुक्पुष्पित पुष्पका भ्रयानाधि रुढस्फरितोग्र शक्तेः ।
सजानि यूथ्य व्रजय क्षराज प्रत्तं मया स्वीकुरु पायसान्नम् ।।८।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे कुवेरदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ कुवेराय स्वाहा । कुवेर परिजनाय स्वाहा । कुवेरा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे कुबेरदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।८।

बलिं- दूधभात

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

उनासमेतो वृषभादि रूढो जटाकिरीट प्रणि भूषितांगः ।
त्रिशूलहस्तः प्रथमाधिनाथो गृण्हातु दुग्धात्न मिदं ससर्पिः ।।९।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभ्र वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे ईशानदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ ईशानाय स्वाहा । ईशान परिजनाय स्वाहा । ईशाना अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे ईशानदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।९।

बलिं- घी, क्षीरान्न (दूधरोटी)

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

वेधः पुरोदेशम् वंत मार्यं, ध्वस्तात्म देशे प्रतिरोधि वीर्यम् ।
सत्पूरिका मोदक पूरिकादि र्भक्ष्यैः प्रहृष्टं विदधे फलैश्च ।।१०।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभ्र वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे आर्यदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा।

बलि विधान- ॐ आर्याय स्वाहा । आर्य परिजनाय स्वाहा । आर्या अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे आर्यदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१०।

बलिं- मैदा का गुगरा, फल ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

ब्रह्मापसव्यं पदमावसानो भाभासमानो मुकुटादिभाभिः ।
स्थामिष्य संवीत भुजिस्य वर्गो दीव्येत् माषान्न तिलैर्विवस्वान ।।११।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्त वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे विवस्वान आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ विवस्वते स्वाहा । विवस्वत् परिजनाय स्वाहा । विवस्वा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे विवस्वान इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।११।

बलिं-उड़द की गुगरी, तिल ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

शत्रुशक्ति विनिवारण क्षमो मित्र रक्षण विधान दक्षिणः ।
प्रत्यगीश इह मित्र निर्जरः स्वीकरोतु दधि दूर्विकामपि ।।१२।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे मित्र आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा ।

बलि विधान- ॐ मित्राय स्वाहा । मित्र परिजनाय स्वाहा । मित्रा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे मित्र इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१२।

बलिं-दही का वडा, मेदा का घुघरा ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

संविद्र देवाय सविक्रमाय, तनून पात्पक्ष मुपाश्रिताय ।
वनाम रानी कपूरःसराय ददामि पुंजीकृत धान्य लाजम् ।।१३।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे भूधर आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा ।

बलि विधान- ॐ भूधराय स्वाहा । भूधर परिजनाय स्वाहा । भूधरा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे भूधर इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१३।

बलिं-दूध ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

प्रजापतेः सव्य सुधासि भागे, मही मवंतं महिमान माप्तम् ।
महीधरं मंडन मंडितांगं महामहस्कं महयामि दुग्धैः ।।१४।।

आह्वान- ॐ आं क्रौं ह्रीं नील वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे सविन्द्र आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ सविन्द्राय स्वाहा । सविंन्द्र परिजनाय स्वाहा । सविंन्द्रा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे सविन्द्र इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१४।

बलिं-

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

वैश्वान रादित्य मुपाश्रिताय, सावित्र देवाय सविक्रमाय ।
कर्पूर काश्मीर लवंग कुष्टैरुपस्कृतं पुण्य जलं ददामि ।।१५।।

आह्वान- ॐ आं क्रौं ह्रीं धूम्र वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे सावित्र आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ सावित्राय स्वाहा । सावित्र परिजनाय स्वाहा । सावित्रा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे सावित्र इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१५।

बलिं-कपूर-केशर-लोंग मिश्रित जल ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

इन्द्र बनाभर्त्य कदंब केंद्रं मंद्राखं पुण्य जनस्य पक्षम् ।
प्रत्यूह जालं विनिपात यंतं मुद्रस्य चूर्णै प्रयजे सपूपैः ।।१६।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं अरुण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे इन्द्र आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा ।

बलि विधान- ॐ इन्द्राय स्वाहा । इन्द्र परिजनाय स्वाहा । इन्द्रा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे इन्द्रदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१६।

बलिं-मूंग का आटा, फूल ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

इन्द्र राजगततंद्र निर्जितारातिं वर्ग जिन वर्ग पोषक ।
कासराधि पति पक्षमाश्रिताऽऽतेहि पूपयुत मुद्रचूर्णकम् ।।१७।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे इन्द्रराज आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ इन्द्रराजाय स्वाहा । इन्द्रराज परिजनाय स्वाहा । इन्द्रराजा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे इन्द्रराज इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१७।

बलिं-चावल के वडे, मूंगचूर्ण ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

समीराग्र भूमौ समुद्रभासमानं निजदेश भागं सदापालयन्तम् ।
यजे रुद्रमक्षुद्र वन्या मरेन्द्र गुडापूपवर्गैरु पस्कारयुक्तैः ।।१८।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रवाल वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे रुद्र आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

बलि विधान- ॐ रुद्राकाय स्वाहा । रुद्रस परिजनाय स्वाहा । रुद्रसा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे रुद्र इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१८।

बलिं-गुड, मेंदा का गुगरा ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

रुद्रजराख्यं परिमितरौद्र क्षुद्र निकायं वन सुरमुख्यम ।
मारुत निघ्नं गुडपरिपुष्टैः पिष्टक वर्गैरिह महयामि ।।१९।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं पीत वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे रुद्रराज आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ रुद्रराजाय स्वाहा । रुद्रराज परिजनाय स्वाहा । रुद्रराजा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे रुद्रराज इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।१९।

बलिं-गुड, चावल का लोट, अम्बोली ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

आमोदमाप्नोति गुणाधिकेषु विद्वेष मुद्वृत जनेषुयश्च ।
आपः सदेवो गुडपिष्ट युक्तं सकैरवं शंख मुपैतु शैव ।।२०।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे आपदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ आपाय स्वाहा । आप परिजनाय स्वाहा । आपा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे आप इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२०।।

बलिं-चावल का लोट, सफेद कमल, शंख अंगोली, गुड़ ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

धमानु रक्ताननु मोद मानं पापानुषक्ता नप सारयन्तम् ।
महेश्वरायत्त मिहाप वत्सं संपूजयेयं बलिना तथैव ।।२१।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं शंख वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे आपवत्स आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ आपवत्साय स्वाहा । आपवत्स परिजनाय स्वाहा । आप वत्सा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे आपवत्स इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२१।।

बलिं- गुड चावल का लोट, सफेद कमल, शंख, अम्बोली ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा त्रस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

पर्जन्य पर्जन्य निनादतुल्य नादेन दुरीकृत वैरिलोक ।
स्वतर्जनी चालन तर्जितात्म वाचाट भृत्याज्य मुपैहि रौद्र ।।२२।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं जल वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे पर्जन्य आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ पर्जन्याय स्वाहा । पर्जन्य परिजनाय स्वाहा । पर्जन्या अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे पर्जन्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२२।।

बलिं- घी ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

जयं तनोति प्रतिरोधि रोधान्नयं तनोति स्व जनानुवृत्तेः ।
योऽसौ जंयतो हरि दक्षिणस्थो गृण्हातु पूजं नवनीत मेंतत् ।।२३।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे जयंत आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ जयंताय स्वाहा । जयंत परिजनाय स्वाहा । जयंता अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे जयंत इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२३।।

बलिं- मक्खन ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

संक्रंदना पष्टुपदेशितारं ताप प्रकाश प्रतिभासमानम् ।
तमो पहुं भास्कर देव मेतम् कुर्वे प्रहृष्टं मधुकंद दानात् ।।२४।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे भास्कर आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ भास्कराय स्वाहा । भास्कर परिजनाय स्वाहा । भास्करा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे भास्कर इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२४।।

बलिं- गुड़, सफेद फूल ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

सत्यामरं नित्यम सत्य दूरं गोत्र द्विषं द्वामपदे वसंतम् ।
सद्धर्भ निध्यानकृत प्रमोदं संपूजये पूर्व सपर्य यैव ।।२५।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं श्याम वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे सत्यक आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ सत्यकाय स्वाहा । सत्यक परिजनाय स्वाहा । सत्यका अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे सत्यक इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२५।।

बलिं- गुड़, सफेद फूल ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

भृशं विवक्षुर्गुण शास्त्रसंघं भृंशं दिट्टक्षुर मुनिमुख्य संगम् ।
भृशामरः संश्रुत वृत्त शत्रु रातु प्रमोदान्न वनति पिंडम् ।।२६।।

आह्वान- ॐ आं क्रौं ह्रीं पुष्प वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे भृष आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ भृषाय स्वाहा । भृष परिजनाय स्वाहा । भृषा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे भृषदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२६।।

बलिं- ताजा मक्खन ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

अथांत रिक्षो विहरन्विनोदं वनेषु पश्यन्सुजनोप सर्गम् ।
नुदन्बृहद् भानुसखों तरिक्षश्चूर्णं निशामाष जमाददातु ।।२७।।

आह्वान- ॐ आं क्रौं ह्रीं कुन्द वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे अंतरिक्ष आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ अंतरिक्ष स्वाहा । अंतरिक्ष परिजनाय स्वाहा । अंतरिक्षा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे अंतरिक्ष इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२७।।

बलिं- हल्दी, उडद का चूर्ण ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

पुष्णाति यः सज्जनतोपकारं मुष्णातु चासज्जन दुर्विलासम् ।
कृपीट योनेः सुहृदेष पूषा शिंबान्न मेतत्सपयः प्रतीच्छेत् ।।२८।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्त वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे पुष्प आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ पुष्पाय स्वाहा । पुष्प परिजनाय स्वाहा । पुष्पा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे पुष्प इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२८।।

बलिं- अरहर के वाकरे, दूध ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

विततास्यं वितथी कृतारि शक्ति प्रदनं साधुजनोपकार दक्षम् ।
प्रथितं दंड धराख्यं वरकट्वान्न समर्चितं करोमि ।।२९।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्रचाप वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे वितथ आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ वितथाय स्वाहा । वितथ परिजनाय स्वाहा । वितथा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे वितथ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।२९।।

बलिं- सुंढ, पीपल ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

रक्ष परिवारक सत्व रक्षा दक्षे सुमार्गे विहित प्रमोदम् ।
कला पसव्या श्रयराक्षसेंद्रं मधु प्रदाना त्सुखितो भवत्वम् ।।३०।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्दु वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे राक्षस आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ राक्षसाय स्वाहा । राक्षस परिजनाय स्वाहा ।राक्षसा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे राक्षस इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३०।।

बलिं- गुड ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

सगंध गंधर्व सुपर्वहस्त प्रशस्त वीणानु गगानगतिं ।
गंधर्व देवं धनसार पूर्व गंधैः समर्चे यममा श्रयन्तम् ।।३१।।

आह्वः- ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्म वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे गंधर्व आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ गंधर्वाय स्वाहा । गंधर्व परिजनाय स्वाहा । गंधर्वा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे गंधर्व इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३१।।

बलिं- कपूर, चंदन मिश्रित गंध ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

यो विक्रमाक्रांत जन प्रसंग स्तपोधना धीश पदाब्ज भृंगः ।
स भृंगराजः श्रित धर्मराजः पवित्र दुग्धान्न मिदं ससर्पिः ।।३२।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं नील वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे भृंगराज आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ भृंगराजाय स्वाहा । भृंगराज परिजनाय स्वाहा । भृंगराजा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे भृंगराज इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३२।।

बलिं- रबडी ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

मृषीकृता धर्म पर प्रभावं मृषोक्ति दूरं मृषनाम धेयम् ।
रक्षोधि पायात्त मुदारशक्तिं माषान्न संतर्पित मातनोतु ।।३३।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं मेघ वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे मृषदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ मृषाय स्वाहा । मृष परिजनाय स्वाहा । मृषा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे मृषदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३३।।

बलिं- उडद की घूंघरी ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

तपोधनाजन्य निवारणार्थं वनाश्रमद्वारि सदा निषण्णम् ।
दौवारिकं संवितयातु धानं संतर्पः येऽह वरशालि पिष्टैः ।।३४।।

आह्वान- ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन- वधु चिन्ह सपरिवार हे दौवारिक आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ।

बलि विधान- ॐ दौवारिकाय स्वाहा । दौवारिक परिजनाय स्वाहा । दौवारिका अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे दौवारिक इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३४।।

बलिं- चावल का लोट ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

सुग्रीव यातानुत वीणया वै गायन्नितांतं गुणिनां गुणौधम् ।
सुग्रीव देवः श्रित पाशहस्तः प्रमोदवान मोदक दानतोऽस्तु ।।३५।।

आह्वान- ॐ आं क्रौं ह्रीं चन्द्र वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन- वधु चिन्ह सपरिवार हे सुग्रीव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ सुग्रीवाय स्वाहा । सुग्रीव परिजनाय स्वाहा । सुग्रीवा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे सुग्रीव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३५।।

बलिं- लड्डू ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

विभांति पुंसां गुण संक थायां पुष्पावदाताः खलु यस्य दंताः ।
स पुष्पदंतो वरुणान्ति कस्थः पुष्पाणि गृण्हातु जलान्वितानि ।।३६।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे पुष्पदंत आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ पुष्पदंताय स्वाहा । पुष्पदंत परिजनाय स्वाहा । पुष्पदंता अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे पुष्पदंत इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३६।।

बलिं- पुष्प, जल ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

असुरः कल्पसुराभवि क्रियो गिरिनद्या दिविहार लोलुपः ।
वरुणोपांत मही मुपाश्रितो भजतां लोहितमन्न मुत्तमम् ।।३७।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे असुर आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ असुराय स्वाहा । असुर परिजनाय स्वाहा । असुरा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे असुर इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३७।।

बलिं- लाल भात ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

संशुद्ध मार्ग प्रतिरोध वाहिनी शोषं सदा यः कुरुते प्रतापतः ।
शोषः सपक्षीकृत याद सांपति र्लातु प्रधौतं तिलमक्षतांश्च ।।३८।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं धवल वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे शोष आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ शोषाय स्वाहा । शोष परिजनाय स्वाहा । शोषा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे शोष इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३८।।

बलिं- तिल, अक्षत ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

रोगोपघातां गतपोघनानां दृष्टवा स्थितिं तामनुकंव्यमानाम् ।
रोगं मरुत्पक्ष कृतानुरागं सुखाकरोम्युत्तम कारिकाभिः ।।३९।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं सवितृ वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे रोग आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ रोगाय स्वाहा । रोग परिजनाय स्वाहा । रोगा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे रोग इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।३९।।

बलिं- मीठी पूडी ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

नागं समाराधित योगिनागं नागारिनादेन पलायितारम् ।
वाताप सव्याश्रय माश्रयन्तं मधु प्रदिग्धै र्महयामि लाजैः ।।४०।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं शंख वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे नाग आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्वाहा ।

बलि विधान- ॐ नागाय स्वाहा । नाग परिजनाय स्वाहा । नागा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे नाग इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४०।।

बलिं-शकर, दूधभात ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

मुख्यं यजे व्यंतर देव मुख्यं यक्षेण सत्रा कृतचारु मुख्यम् ।
विख्यात् कांतार बिहारसंक्त संतु प्रवेकैर्वर वस्तु युक्तैः ।।४१।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं मौक्तिक वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे मुख्य आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ मुख्याय स्वाहा । मुख्य परिजनाय स्वाहा । मुख्या अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे मुख्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४१।।

बलिं- श्रीखण्ड ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

भल्लाट देवं प्रतिमल्ल घट्ट संघट्ट नाविष्कृत सर्व शक्तिम् ।
वीरं कुबेरं प्रवलं प्रतीतं गुडान्न दानेन सुखाकरोमि ।।४२।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे भल्लाट आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ भल्लाटाय स्वाहा । भल्लाट परिजनाय स्वाहा । भल्लाटा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे भल्लाटदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४२।।

बलिं- ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

मृग गणै स्तपसाऽववशीकृतं मृगयते मुनि पंनयनायते ।
तमहमत्र मृगं धनदाश्रयं परिचरामि गुडान्वित पूषकैः ।।४३।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे मृगदेव आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ।

बलि विधान- ॐ मृगदेवाय स्वाहा । मृगदेव परिजनाय स्वाहा । मृगदेवा अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे मृगदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४३।।

बलिं- गुड़ के मालपुआ ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

धन दवाम धरातल भाग भागदिति नंदन मुख्यं सुरादृतः ।
अदिति रद्भवनामर पूजितो मुदित वान्भ वतादिह मोदकैः ।।४४।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं कपिल वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे अदिते आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ अदितये स्वाहा । अदिति परिजनाय स्वाहा । अदिता अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे अदितिदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४४।।

बलिं- मोदक ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

मोचाफंला यद्यु दितिर्य दास्यादधेति वांचा विनि वारणार्थम् ।
मुमुक्षु साक्षा दुदितिः सुभुंजां भक्षं तिरोपेत मुमापतीश ।।४५।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं कुंद वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे उदिति आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ उदितये स्वाहा । उदित परिजनाय स्वाहा । उदिति अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे उदितदेव इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४५।।

बलिं- तिलपपडी ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

विचारि सत्कृत्य विनोदशक्ते विचारियुक्ते सुजनानुरक्ते ।
कृशानु वाह्यावनि भाग भुक्त्यै गृहाण भक्ष्यं लवणोप युक्तम् ।।४६।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं अभि वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे विचारि आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ विचार्यै स्वाहा । विचारि परिजनाय स्वाहा । विचारि अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे विचारि इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४६।।

बलिं- नमक डाला भात ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

कायेन वाचा मनसा पवित्रमावर्जयंती तपसामधीशं ।
रक्षो बहिः स्थांतिलपिष्ट भुक्त्या संतुष्यतां संप्रति पूतनाख्या ।।४७।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं हेम वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे पूतने आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ पूतनायै स्वाहा । पूतना परिजनाय स्वाहा । पूतना अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे पूतने इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४७।।

बलिं- तिल, भात ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

पापान्महापुरुष कारिणोया या राक्षसी रूप धरा ह्यतर्जत् ।
सामारु ताशाबनि बाहय संश्रिता कुल्माष मायच्छतु पाप राक्षसी ।।४८।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं मेघ वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे पापराक्षसी आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा । पापराक्षसी परिजनाय स्वाहा । पापराक्षसी अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे पापराक्षसी इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४८।।

बलिं-मूंग की घुंगरी ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

यत्र तत्र मुनयो वसंति ते तत्र तत्र तदजन्य वारणे ।
या चरत्यनिशमीशबाह्यताः सा ददातु चरकी घृंत मधु ।।४९।।

आह्वन- ॐ आं क्रौं ह्रीं शंख वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन-वधु चिन्ह सपरिवार हे चरकी आगच्छ आगच्छ स्व स्थाने तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्वाहा।

बलि विधान- ॐ चरख्यै स्वाहा । चरकीय परिजनाय स्वाहा । चरकी अनुचराय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । सोमाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा । भुवः स्वाहा । भू र्भुव स्वाहा । स्वः स्वाहा स्वधा ।

अर्घ- हे चरकी इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा ।।४९।।

बलिं-घी गुड ।

यस्यार्थं क्रियते पूजा तस्य शान्तिं भवेत सदा,
शान्तिकं पुष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धिदः ।। (शान्तिधारा)

आराधना श्लोक-

ऐते वास्तु सुरःसमस्तधरणीं संवाहिनी वाहिताः ।
प्रत्यूहास्य विधायिनस्त्वपचिताः प्रत्यूह संहारकाः ।।
आद्याः प्रापित पूजना प्रमुदिताः सर्व प्रभा भान्विताः ।
यष्टुर्याजक भूपमन्त्रि शुभ वर्णानां च संतु श्रियै ।।५०।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं ब्रह्मेद्रादि चरकी वास्तुदेवत्यांल्य वास्तु देवता पूर्णार्घ्यदानेन बहुमानयेत् । पूर्णार्घ्यं ।

यस्यार्थे क्रियते पूजा वास्तुदेवाः धराधिपाः ।
शान्तिके पौष्ठके चैवसर्व विघ्नोपशान्तये ।। शान्तिधाराः

इत्थं प्रार्थनायऽअनुगृह्य विदितं सामान्यमन्यं बलिं ।
सर्वे वास्तुसुरः प्रसीदत भवद्धाव्यंतरायास्तु ये ।।
गेहे धाम्नि विधित्सते च विविधोत्साहेऽथवा विष्ठपै ।
संत्येतान् सकलान् निवारयत तत्सर्वं सदारक्षत ।।

जिनाधीश्वर यज्ञकाले । संतर्थिताः स्वस्वविभूतयुक्ताः ।।
वन्यामराः किभरदेवमुख्वाः । कुर्वंतुं शान्तिं जिनभक्तिकानाम् ।।१।।
संपूजितां इत्सुरेंन्द्रमुख्या । महामहैऽमी प्रतिभाषमानाः ।।
दस प्रकोराद्भूत भावनेन्द्राः । कुर्वंतुं शान्तिं जिनभक्तिकानां ।।२।।
मुख्याविमौ चन्द्रदिवाकरौ च । शेषागृहा अश्वयुगदितारारः ।।
प्रकीर्णकाज्योतिरमर्त्य वर्गाः । कुर्वंतुं शान्तिं जिनभक्तिकानां ।।३।।
जिन्नेंद्रं चन्द्रस्य महामेह अस्मिन् । सम्पूजिताः कल्पनिकायवासाः ।।
सौधर्ममुख्य स्त्रिदशाधिनाथः । कुर्वंतुं शान्तिं जिनभक्तिकानां ।।४।।
पृथ्वी विकारात् सलिल प्रदेशा, दग्नैश्च दाहात् पवन प्रकोपात् ।
चोर प्रयोगादपि वास्तुदेवाश्चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालं ।।५।।
तिर्यकप्रचारादर्शानप्रधाता द्वीजप्ररोहाद्रु मखमण्डपातात् ।
कीट प्रवेशादपि वास्तुदेवा श्चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालं ।।६।।

वास्तुमंत्र विधान

(मंदिर वेदी शिखर प्रतिष्ठा के समय जिनेन्द्र वेदी या शिखर के समीप सर्व प्रथम नीचे लिखे १४ मंत्रों को बोलकर अर्घ चढ़ायें पश्चात् ४७ मंत्रों को बोलकर शिखर या वेदी पर आठों दिशाओं में इन्द्र खड़े कर पुष्प क्षेपण करें ।)

(अर्घ अर्पण करें)

ॐ णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायणं णमो लोए सव्व साहूणं ह्रौं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा । १. ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसर्द्धिभ्यः स्वाहा । २. ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयर्द्धिभ्यः स्वाहा । ३. ॐ ह्रीं दशदिशात आगतविघ्नान् निवारय निवारय सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा । ४. ॐ ह्रीं दुर्मुहूर्त्तदुः शकुनादि कृतोपद्रवशांतिं कुरु कुरु स्वाहा । ५. ॐ ह्रीं सर्ववास्तुदेवेभ्यः स्वाहा । ६. ॐ ह्रीं परकृतमन्त्रतन्त्रडाकिनीशाकिनी भूतपिशाचां दिकृतोपद्रवशांति कुरु कुरु स्वाहा । ७. ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोपशांतिं कुरु कुरु स्वाहा । ८. ॐ ह्रीं सर्वाधि व्याधिशांतिं कुरु कुरु स्वाहा । ९. ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेमं आरोग्यतां विस्तारय विस्तारय सर्वं ह्रष्टपुष्टप्रसन्नचित्तं रक्ष रक्ष स्वाहा । १०. ॐ ह्रीं यजमानाचार्यादीनां सर्वसंघस्य शांतिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं समृद्धिं अक्षीणर्द्धिं पुत्रपौत्रादिवृद्धिं आयुर्वृद्धिं धनधान्यसमृद्धिं धर्मवृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा । ११. ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा । १२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । १३. ॐ ह्रीं क्रौं आं अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पादकाय उत्पन्नानां द्रव्याणां वृद्धिकराय चिन्तामणिपार्श्वनाथाय वसुदाय नमः स्वाहा । १४. ॐ ह्रीं इन्द्रवास्तुदेवाय स्वाहा ।

(पुष्प क्षेपण करें)

१ ॐ ह्रीं अग्निवास्तुदेवाय स्वाहा । २ ॐ ह्रीं क्रौं यमवास्तुदेवाय स्वाहा ३ ॐ ह्रीं क्रौं नैर्ऋत्यवास्तुदेवाय स्वाहा । ४ ॐ ह्रीं क्रौं वरुणवास्तुदेवाय स्वाहा ५ ॐ ह्रीं क्रौं पवनवास्तुदेवाय स्वाहा । ६ ॐ ह्रीं क्रौं कुवेर वास्तुदेवाय स्वाहा ७ ॐ ह्रीं क्रौं ऐशानवास्तुदेवाय स्वाहा । ८ ॐ ह्रीं क्रौं आर्यवास्तुदेवाय स्वाहा ९ ॐ ह्रीं क्रौं विवश्वान्वास्तुदेवाय स्वाहा १० ॐ ह्रीं क्रौं मित्रवास्तुदेवाय स्वाहा ११ ॐ ह्रीं क्रौं भूधरवास्तुदेवाय स्वाहा १२ ॐ ह्रीं क्रौं शचीन्द्रवास्तुदेवाय स्वाहा १३ ॐ ह्रीं क्रौं प्राचिइन्द्रवास्तुदेवाय स्वाहा १४ ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्रवास्तुदेवाय स्वाहा

१५ ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्रराजवास्तुदेवाय स्वाहा १६ ॐ ह्रीं क्रौं रुद्रवास्तुदेवाय स्वाहा १७ ॐ ह्रीं रुद्रवास्तुदेवाय स्वाहा १८ ॐ ह्रीं क्रौं आपवास्तुदेवाय स्वाहा १९ ॐ ह्रीं आपवत्सवास्तुदेवाय स्वाहा २० ॐ ह्रीं क्रौं पर्ज्जन्य वास्तुदेवाय स्वाहा २१ ॐ ह्रीं क्रौं जयन्तवास्तुदेवाय स्वाहा २२ ॐ ह्रीं क्रौं भास्करवास्तुदेवाय स्वाहा २३ ॐ ह्रीं क्रौं सत्यवास्तुदेवाय स्वाहा २४ ॐ ह्रीं क्रौं भृशवास्तुदेवाय स्वाहा २५ ॐ ह्रीं क्रौं अन्तरीक्षवास्तुदेवाय स्वाहा २६ ॐ ह्रीं क्रौं पुष्पवास्तुदेवाय स्वाहा २७ ॐ ह्रीं क्रौं वितथवास्तुदेवाय स्वाहा २८ ॐ ह्रीं क्रौं राक्षसवास्तुदेवाय स्वाहा २९ ॐ ह्रीं क्रौं गंधर्ववास्तुदेवाय स्वाहा ३० ॐ ह्रीं क्रौं भृंगराजवास्तुदेवाय स्वाहा ३१ ॐ ह्रीं क्रौं मृषदेववास्तुदेवाय स्वाहा ३२ ॐ ह्रीं क्रौं दौवारिकवास्तुदेवाय स्वाहा ३३ ॐ ह्रीं क्रौं सुग्रीववास्तुदेवाय स्वाहा ३४ ॐ ह्रीं क्रौं पुष्पदन्तवास्तुदेवाय स्वाहा ३५ ॐ ह्रीं क्रौं असुरवास्तुदेवाय स्वाहा ३६ ॐ ह्रीं क्रौं शेषवास्तुदेवाय स्वाहा ३७ ॐ ह्रीं क्रौं रोगवास्तुदेवाय स्वाहा ३८ ॐ ह्रीं क्रौं नागराजवास्तुदेवाय स्वाहा ३९ ॐ ह्रीं क्रौं मुख्यवास्तुदेवाय स्वाहा ४० ॐ ह्रीं क्रौं भल्लाटकवास्तुदेवाय स्वाहा ४१ ॐ ह्रीं क्रौं मृगदेववास्तुदेवाय स्वाहा ४२ ॐ ह्रीं क्रौं अदितिवास्तुदेवाय स्वाहा ४३ ॐ ह्रीं क्रौं उदितवास्तुदेवाय स्वाहा ४४ ॐ ह्रीं क्रौं विचारदेववास्तुदेवाय स्वाहा ४५ ॐ ह्रीं क्रौं पूतनावास्तुदेवाय स्वाहा ४६ ॐ ह्रीं क्रौं पापराक्षसीवास्तुदेवाय स्वाहा ४७ ॐ ह्रीं क्रौं चरकीवास्तुदेवाय स्वाहा ।

पृथ्वी विकारात्सलिल प्रवेशात्, अग्निर्विदाहात्पवन प्रकोपात् ।
चौर प्रयोगादपि वास्तुदेवाः, चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालं ।।
तिर्यक् प्रचारा दशनेः प्रपातात्, वीजप्ररोहा द्रुम स्त्रंडतापात् ।
कीट प्रवेशादपि वास्तुदेवाः, चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालं ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेयुः

(इसके बाद हवन शान्ति मंत्र की आहुतियां देकर शान्तिपाठ कर विधान समाप्त करना चाहिए ।)

हवन की विधि

मण्डप में वेदी के सम्मुख चौकोर, गोल और त्रिकोण ऐसे तीन कुण्ड बनाऐं । यदि तीन कुण्ड बनवाने की असुविधा हो तो एक चौकोर कुण्ड बनाकर शेष दो कुण्डों की उसी में स्थापना कर ले । यदि हवन में बैठने वालों की संख्या अधिक हो तो अलग से स्थण्डिल बना लेना चाहिये । कुण्डपर इन्द्र, इन्द्राणी और जप करने वाले बैठें । अन्य लोग स्थण्डिलों पर बैठ जावें । हवन के लिए साकल्य और सुविधाएँ पहले से तैयार कर लें । हवन में बैठने वाले एक वस्त्र पहिनकर न बैठें । प्रारम्भ में सब लोग अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर मंगलाष्टक पढ़ते हुए कुण्ड पर पुष्प छोड़ें ।

तदन्तर-

'ओं ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा' ।

(यह मन्त्र पढ़कर कुण्ड की भूमि में पुष्प छोड़ें तथा दर्भ की कूची से भूमिका मार्जन करें)

'ओं ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं ह्रं सं तं पं स्वं झं यं क्षः फट् स्वाहा' ।

(यह मन्त्र पढ़कर हवन की भूमि-कुण्ड पर जल सींचे)

'ओं ह्रीं अग्निकुमाराय ह्यभल्ब्यूं ज्वलय ज्वलयतेजापतये अमित तेज से स्वाहा'

(यह पढ़कर कपूर जलाकर भूमि को संतप्त करे)

'ओं ह्रीं अर्हं क्षं वं वं श्री पीठस्थापनं करोमीति स्वाहा'

(यह पढ़कर होम कुण्ड के पश्चिम में पीठ स्थापन करे)

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वशान्ति कुर्वन्तु श्री पीठयन्त्रस्थापनं करोमीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर पीठ पर विनायक यन्त्र विराजमान करें)

तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्रों से यन्त्र की पूजा करे, अर्घ चढ़ावे ।

ओं ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
ओं ह्रीं अर्हं नमः परमात्मभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
ओं ह्रीं अर्हं नमो नृसुरासुरपूजितेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तवीर्येभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तसुखेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तदन्तर-

ओं ह्रीं धर्मचक्रायाप्रतिहततेजसे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर धर्मचक्र के लिये अर्घ चढ़ावे ।)

ओं ह्रीं श्वेतछत्रयश्रियै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर छत्रत्रय को अर्घ देवे)

ओं ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं ह्रं सौ ह्रौं सर्वशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि अवतर अवतर, तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट् ।

(यह मन्त्र पढ़कर सरस्वती का आह्वान करते हुए कुण्ड में लौंग स्थापित करें)

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर सरस्वती जिनवाणी को अर्घ देवे)

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्र, चतुरशीतिलक्षोत्तर गुणाष्टदश सहस्त्रशील धरगणधरचरण ! आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट् ।

(यह पढ़कर निर्ग्रन्थ गुरु का आह्वान कर कुण्ड में लौंग स्थापित करें)

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर निर्ग्रन्थ गुरु को अर्घ चढ़ावे)

ओं ह्रीं स्वस्तिविधानाय पुण्याहवाचनार्थं च कलशं स्थापयामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर चावलों से बने स्वस्ति पर जल भरा एवं श्रीफल तथा तूल आदि से सुशोभित कलश स्थापित करे)

ओं ह्रीं ह्रों ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंच्छकेसरि पुण्रीकमहापुण्डरीकगंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीन रकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजलसुवर्णघटप्रक्षालितनवरत्न गन्धाक्षत पुष्पोर्जितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा ।

(यह पढ़कर कलश पर थोड़ा प्रासुक जल डाले)

ओं ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर घृत से प्रज्वलित कर चारों दिशाओं में चार दीपक रखे) तदन्तर-

(नीचे लिखे मन्त्र बोलकर क्रम से जल आदि आठ द्रव्य चढ़ावे)

ओं ह्रीं नीरज से नमः (जलम्)
ओं ह्रीं शीलगन्धाय नमः (चन्दनम्)
ओं ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतम्)
ओं ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पम्)
ओं ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यम्)
ओं ह्रीं ज्ञानद्योतनाय नमः (दीपम्)
ओं ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपम्)
ओं ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः(फलम्)
ओं ह्रीं परमसिद्धाय नमः (अर्घम्)

तदन्तर-

ओं ह्रीं होमार्थं अग्नित्रयाधारभूता समिधां स्थापयामि ।

(यह पढ़कर कुण्ड में समिधाएँ स्थापित करे)

ओं ओं ओं रं रं रं रं अग्निं स्थापयामि ।

(यह पढ़कर कपूर जलाकर कुण्ड में अग्नि स्थापन करे)

जिनेन्द्रवाक्यैरिव सुप्रसन्नै: संशुष्कदर्भाग्रधृताग्निकीलै: ।
कुण्डस्थिते सेन्धनशुद्धवह्नौ, संधुक्षणं संप्रति संतनोमि ।।

ओं ह्रीं श्रीं रं रं रं रं दर्भपूलेन ज्वलय ज्वलय नमः फट् स्वाहा।

(यह पढ़कर डाभ के फूल से अग्नि का संधुक्षण करें)

श्रीतीर्थनाथ परिनिर्वृतिपूतकाले, ह्यागत्य वन्हिसुरपामुकुटोल्लसद्भि: ।
वन्हिव्रजैर्जिनपदेहमुदार भक्त्या, देहुस्तदग्निमहमर्चयितुं दधामि ।।

ओं ह्रीं चतुरस्रे तीर्थंकरकुण्डे गार्हपत्याग्नौ कृतसंस्काराय तीर्थंकर परमदेवायार्घं स्वाहा ।

(यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावें)

गणाधिपानां शिवयातिकालेऽ ग्नीन्द्रौत्तमागस्फुरदुग्ररोचि: ।
संस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो विघ्नौघशान्त्यै विधिना हुताश: ।।

ओं ह्रीं श्रीं द्वितीयगणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नौ कृतसंस्काराय गणधरदेवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावें)

श्री दक्षिणाग्नि: परिकल्पितश्च किरीटदेशात्प्रणताग्निदेवै: ।
निर्वाणकल्याणकपूतकाले तमर्चये विघ्नविनाशनाय ।।

ओं ह्रीं श्रीं त्रिकाणे तृतीयसामान्यकेवलिकुण्डे दखिणाग्नौ कृतसंस्काराय सामान्यकेवलिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावें)

तदन्तर- शुद्ध घी से निम्नलिखित आहुतियाँ देवें ।

ओं ह्रीं अर्हद्भ्य स्वाहा । ओं ह्रीं सिद्धेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं सूरिभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं पाठकेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं साधुभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं जिन धर्मेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं जिनागमेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं जिनबिम्बेभ्य: स्वाहा। ओं ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्य स्वाहा । ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नम: । ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम: । ओं ह्रीं सम्यक् चरित्राय स्वाहा ।

(साकल्य से आहुतियाँ देवें । मन्त्र के बाद स्वाहा शब्द उच्चारण स्पष्ट करें) ।

पीठिकामन्त्राः

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा । ओं परम जाताय नमः स्वाहा । ओं अनुपमजाताय नमः स्वाहा । ओं स्वप्रधानाय नमः स्वाहा । ओं अचलाय नमः स्वाहा । ओं अक्षयाय नमः स्वाहा । ओं अव्याबाधाय नमः स्वाहा । ओं अनन्तज्ञानाय नमः स्वाहा । ओं अनन्तदर्शनाय नमः स्वाहा । ओं अनन्तवीर्याय नमःस्वाहा । ओं अनन्त सुखाय नमः स्वाहा । ओं नीरज से नमः स्वाहा । ओं निर्मलाय नमः स्वाहा । ओं अच्छेद्याय नमः स्वाहा । ओं अभेद्याय नमः स्वाहा । ओं अजराय नमः स्वाहा । ओं अमराय नमः स्वाहा । ओं अप्रमेयाय नमः स्वाहा । ओं अगर्भवासाय नमः स्वाहा । ओं अक्षोभाय नमः स्वाहा । ओं अविलीनाय नमः स्वाहा । ओं परमधनाय नमः स्वाहा । ओं परमकाष्ठा योगरूपाय नमः स्वाहा । ओं लोकाग्रनिवासिने नमोनमः स्वाहा । ओं परमसिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ओं अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । ओं ह्रीं केवलिसिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा । ओं अन्तःकृतसिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा । ओं परम्परासिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा । ओं अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा । ओं अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्यनिर्वाणपूजार्हअग्नीन्द्राय स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा ।

(यह काम्यमन्त्र पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य हवन करने वालों पर पुष्प फेंके। अथवा जल के छींटें देवे)

जातिमन्त्राः

ओं सत्यजन्मन शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अनादिगमनस्य शरण प्रपद्ये स्वाहा । ओं अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! ज्ञानमूर्ते ! ज्ञानमूर्ते ! सरस्वति ! सरस्वति ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा ।

निस्तारकमन्त्राः

ओं सत्यजाताय स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय स्वाहा । ओं षट्कर्मणे स्वाहा । ओं ग्रामपतये स्वाहा । ओं अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा । ओं स्नातकाय स्वाहा । ओं श्रावकाय स्वाहा । ओं देवब्राह्मणाय स्वाहा । ओं सुब्राह्मणाय स्वाहा । ओं अनुपमाय स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! निधिपते ! निधिपते ! वैश्रवण ! वैश्रवण ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा ।

ऋषिमन्त्राः

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा । ओं निर्ग्रन्थाय नमः स्वाहा । ओं वीतरागाय नमः स्वाहा । ओं महाव्रताय नमः स्वाहा । ओं त्रिगुप्ताय नमः स्वाहा । ओं महायोगाय नमः स्वाहा । ओं विविधयोगाय नमः स्वाहा । ओं विवर्द्धये नमः स्वाहा । ओं अंगधराय नमः स्वाहा । ओं पूर्वधराय नमः स्वाहा । ओं गणधराय नमः स्वाहा । ओं परमर्षिभ्यो नमो नमः स्वाहा । ओं अनुपमजाताय नमः स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! भूपते ! भूपते ! नगरपते ! नगरपते ! कालश्रमण ! कालश्रमण ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधि मरणं भवतु स्वाहा ।

सुरेन्द्रमन्त्राः

ओं सत्यजाताय स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय स्वाहा । ओं दिव्यजाताय स्वाहा । ओं दिव्यार्चिजाताय स्वाहा । ओं नेमिनाथाय स्वाहा । ओं सौधर्माय स्वाहा । ओं कल्पाधिपतये स्वाहा । ओं अनुचराय स्वाहा । ओं परम्परेन्द्राय स्वाहा । ओं अहमिन्द्राय स्वाहा । ओं परमार्हताय स्वाहा । ओं अनुपमाय स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! कल्पपते ! कल्पपते ! दिव्यमूर्ते ! दिव्यमूर्ते ! वज्रनामन् ! वज्रनामन् ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युनिशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

परमराजादिमन्त्राः

ओं सत्यजाताय स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय स्वाहा । ओं अनुपमेन्द्राय स्वाहा । ओं विजयार्च्यजाताय स्वाहा । ओं नेमिनाथाय स्वाहा । ओं परमजाताय स्वाहा । ओं परमार्हताय स्वाहा । ओं अनुपमाय स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! उग्रतेजः ! उग्रतेजः ! दिशाञ्जन ! दिशाञ्जन ! नेमिविजय ! नेमिविजय ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युनिाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

परमेष्ठिमन्त्राः

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा । ओं परमजाताय नमः स्वाहा । ओं परमार्हताय नमः स्वाहा । ओं परमरूपाय नमः स्वाहा । ओं परमतेजसे नमः स्वाहा । ओं परमगुणाय नमः स्वाहा । ओं परमस्थानाय नमः स्वाहा । ओं परमयोगिने नमः स्वाहा । ओं परमभाग्याय नमः स्वाहा । ओं परमर्द्धये नमः स्वाहा । ओं परमप्रसादाय नमः स्वाहा । ओं परमकांछिताय नमः स्वाहा । ओं परमविजयाय नमः स्वाहा । ओं परमविज्ञानाय नमः स्वाहा । ओं परमदर्शनाय नमः स्वाहा । ओं परमवीर्याय नमः स्वाहा । ओं परमसुखाय नमः स्वाहा । ओं परमसर्वज्ञाय नमः स्वाहा । ओं अर्हते नमः स्वाहा । ओं परमेष्ठिने नमः स्वहा । ओं परमनेत्रे नमो नमः स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! त्रैलोक्यविजय ! त्रैलोक्यविजय ! धर्ममूर्ते ! धर्ममूर्ते ! धर्मनेमे ! धर्मनेमे ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युनिाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

तदन्तर- जिस मन्त्र का जितना जप किया हो उसको दशांश आहुतियाँ देना चाहिये । यह मन्त्र प्रतिष्ठाचार्य मन में बोलकर स्वाहा शब्द का उच्चारण करे और तदनन्तर हवन करने वाले सब महाशय स्वाहा बोलकर आहुति देवें ।

हवन समाप्त होने पर जो घट स्थापित किया था, उसे हाथ में लेकर इन्द्र बृहच्छान्तिधारा दे । उसके बाद निम्नलिखित पुण्याहवाचन करे ।

पुण्याहवाचन

ओं पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागरप्रभृतयश्चतुर्विंशतिपरमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

ओं सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशतिपरमजिनेन्द्रा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

ओं भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मादिचतुर्विंशतिभविष्यत्परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

ओं त्रिकालवर्ति परमधर्माभ्युदय सीमन्धरप्रभृतयः विदेहक्षेत्र विरहमाण विंशति परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

ओं वृषभसेनादिगणधरदेवा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।(धारा)

ओं सप्तर्द्धिविशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु । दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु । सर्वजिनधर्मभक्तानां धन धान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्तन्ताम् ।

तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, इष्टसम्पत्तिरस्तु, काममांगल्योत्सवाः सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यं वर्धताम्, कुलं गोत्रं चाभिवर्धेताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, ह्रीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा । श्री मज्जिनेन्द्रचरणारविन्देष्वानन्दभक्तिः सदास्तु ।

श्री बुन्देलखण्ड स्याद्वाद परिषद के महत्वपूर्ण प्रकाशन

ग्रंथांक	ग्रंथ का नाम	लेखक/संपादक	मूल्य
१.	परिषद स्थापना स्मारिका	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	१० रु०
२.	अध्यक्षीय भाषण	श्री नीरज जी सतना	१ रु०
३.	कलातीर्थ मदनपुर ❖	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	२ रु०
४.	त्रिवार्षिक अधिवेशन भाषण	पं. पन्नालाल जी सा. आ.	१ रु०
५.	जीवन के आमंत्रण ⊕	श्री निहालचन्द्र जैन	३ रु०
६.	विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	१०१ रु०
७.	शोधवोध (प्रथम भाग)	पं. जयकुमार जी आत्मनिष्ट	१ रु०
८.	शोधवोध (द्वितीय भाग)	,,	१ रु०
९.	दहेज दानव (नाटक) ⊕	श्री लक्ष्मीचन्द्र जी जैन	३ रु०
१०.	भरत बाहुवलि (नाटक) ⊕	वैद्य हल्केलाल जी	३ रु०
११.	आध्यात्म लहरी (काव्य)	श्री सुरेन्द्रसागर प्रचण्डिया	३ रु०
१२.	जैन संस्कृति शतक ⊕	आर्यिका अभयमति जी	३ रु०
१३.	मधुर गीताञ्जलि (गीत संग्रह)	श्री गोकुलचन्द्र 'मधुर'	३ रु०
१४.	दशधर्म दोहावलि	श्री हुकमचन्द्र भायजी शास्त्री	५ रु०
१५.	एकान्की दर्शिका (नाटक)	श्री निहालचन्द्र जैन	५ रु०
१६.	भरत बाहुवलि (नाटक)	श्री रामचरण शुक्ल राही	५ रु०
१७.	आराधनाञ्जलि	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	३ रु०
१८.	स्वास्थ्य सद्बोधामृत	श्री हुकमचन्द्र भायजी शास्त्री	५ रु०
१९.	तास के तेरह पत्ते ❖	आचार्य श्री चन्द्रसागर जी	५ रु०
२०.	सन्मति चन्द्र प्रश्नोत्तर माला +	,, ,,	२ रु०
२१.	,, (द्वितीय भाग) +	,, ,,	२ रु०
२२.	,, (तृतीय भाग) +	,, ,,	२ रु०
२३.	भक्तामर आराधना	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	५ रु०
२४.	पंचकल्याणक महापूजन ❖	,, ,,	५ रु०
२५.	यागमण्डल विधान ❖	,, ,,	५ रु०

२६. प्रगतिके बढ़ते चरण (स्मारिका)	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	१५ रु०
२७. त्रिषष्ठि चित्रण दीपिका	पं. जम्बूप्रसाद जी शास्त्री	१५ रु०
२८. जिनेन्द्र पूजन विधि	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	१ रु०
२९. स्तोत्राराधन (संस्कृत)	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	१० रु०
३०. दशलक्षण महाधर्म	श्री हुकमचन्द्र भायजी शास्त्री	१० रु०
३१. पूजाञ्जलि (संस्कृत) ⊕	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	१५ रु०
३२. उपसर्ग धारा	श्री क्रान्तिकुमार जी 'करुण'	१० रु०
३३. अन्तिम दिव्य देशना ❖	आर्यिका गणिनी विजयमती जी	२५ रु०
३४. भक्तामर आराधना	डा. सर्वज्ञदेव जैन	१० रु०
३५. यतिकर्त्तव्य प्रबोध संग्रह	आचार्य श्री चन्द्रसागर जी	६० रु०
३६. जिनधर्म रहस्य	गणिनी आर्यिका विजयमति जी	१० रु०
३७. बीसवी सदी के महान आचार्य	प्राचार्य सनतकुमार जैन	१० रु०
३८. प्रवचनामृत संग्रह	पं. विमलकुमार जैन सोंरया	५१ रु०
३९. प्रवचनामृत सार	,, ,,	५१ रु०
४०. गणधरवलयपूजा विधान	,, ,,	५ रु०
४१. विधान संग्रह (प्रथम भाग)	पं. वर्द्धमान कुमार जैन सोंरया	६५ रु०
४२. ,, (द्वितीय खण्ड)	,, (प्रेस में)	५५ रु०
४३. श्री शान्तिनाथ विधान	श्री तारा चंद्र रेवाड़ी	५ रु०
४४. विधान संग्रह (तृतीय भाग)	पं. वर्द्धमान कुमार जैन सोंरया	७५ रु०
४५. विश्व का सूर्य (उपन्यास)	मुनि श्री सुनील सागर जी	३५ रु०
४६. छह ढ़ाला (महाकवि बुधजन)	आचार्य श्री चंद्रसागर जी	५ रु०
४७. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान	(श्री सन्तलाल जी)	३० रु०
४८. श्रुतस्कंध विधान	आचार्य श्री श्रुतसागर जी	१० रु०
४९. श्री भक्तामर विधान	आचार्य श्री सोमसेन स्वामी	१२ रु०
५०. श्री शान्तिनाथ-विधान	श्री ताराचंद जी रिवाड़ी	१० रु०
५१. बृहद निर्वाण विधान	कवि श्री जगतराम जी जैन	१० रु०
५२. सम्मेद शिखर विधान	श्री कवि जवाहर लाल जी जैन	८ रु०
५३. पंचमेरु पूजन विधान	श्री कवि टेकचंद जी	१० रु०
५४. कर्म दहन विधान	श्री कवि श्री चंद्र जी जैन	१५ रु०
५५. नंदीश्वर द्वीप विधान	श्री कवि रविलाल जी	२० रु०

५६. नवग्रह अरिष्ट निवारक विधान	श्री मनसुख सागर जी	१५ रु.
५७. रत्नात्रय विधान	पं.श्री कवि टेकचंद जी	२० रु०
५७. महामृत्युंजय विधान	पं. श्री आशाधर जी	२० रु.
५७. लब्धि विधान	(कवि श्री चंद्र जी)	१० रु०
५८. रविव्रत विधान	(श्री कल्याण कुमार जी शशि)	१० रु०
५९. दशलक्षण विधान	(कवि श्री टेकचंद जी)	१५ रु०
६०. जिनगुण सम्पत्ति विधान	(आर्यिका गाणिनी श्री ज्ञानमति जी)	१० रु०
६१. णमोकार मंत्र विधान	(श्री पन्नालाल जी शास्त्री)	१० रु०
६२. ऋषिमण्डल विधान	(आर्यिका गणिनी श्री नानमति जी)	१० रु०
६३. णमोकार पैंतीसी विधान	(सु. श्री सिद्ध सागर जी)	१० रु०
६४. चौंसठ ऋद्धि विधान	(श्री स्वरूप चंद्र जी)	१५ रु.
६५. पंचपरमेष्ठी विधान	(कवि टेकचंद्र जी)	२० रु.
६६. वास्तु विधान		३० रु०
६७. सोलह कारण विधान	(कवि श्री टेक चंद्र जी)	२५ रु०
६८. समवशरण विधान	(कवि श्री कुंअर लाल जी)	२५ रु०
६९. चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान	(श्री वृन्दावन वृत)	२५ रु०
७०. नवदेवता मंडल विधान	(ब्र. सूरजमल जी)	२५ रु०

नोट :- जिन ग्रन्थों के सामने ⊕ बना है वे दो बार छप चुके हैं जिनके सामने ❖ बना है वह चार बार छप चुके हैं। + चिन्ह वाले छह बार छप चुके हैं इस प्रकार परिषद द्वारा ग्रन्थों का प्रकाशन साकार हो चुका।

ग्रंथांक ३३ से ७० तक के ग्रन्थ प्राप्त हैं शेष समाप्त हैं।

- महामंत्री

-: मुद्रक :-
अरिहंत ऑफसैट प्रिंटर्स
सैलसागर, टीकमगढ़ (म.प्र.)
दूरभाष : 07683 - 32592